'श्री अभिधानराजेन्द्र' और 'शब्दाम्बुधि' प्राकृत (मागधि) महाकोश के कर्ता-



जैनाचार्य श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय कलिकालसर्वज्ञकल्प-

श्रीमद्भट्टारक श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज

Pravar Jainacharya-Shree Saudharma Vrahattapagashchhiya
Kalikalsarvajynakalpa Bhattarak—

Shrimad-Vijayarajendra Surishwarji Maharaj.

जयतु जयतु लोके श्रील-राजेन्द्रसूरि-र्हरतु हरतु तापं देहिनां क्लेशभाजाम् ।
नदतु नदतु वाद्यं तद्यशो दुन्दुभीनां, जयतु जयतु तस्या ऽऽख्यां सदा भव्यलोकः ॥१॥

जन्म-संवत् १८८३, स्थान-भरतपुर ।

स्वर्गवास-सं० १९६३, स्थान-राजगढ़ ।

जैनाचार्य-श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय-"श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी" महाराज के प्रधान शिष्य—

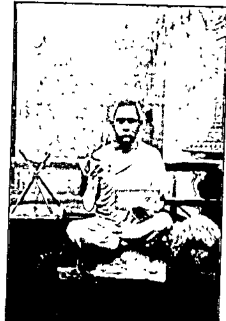


'श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरीश्वरजी' महाराज।

जन्म संवत् १८९६ — किसनगढ (मेवाड)

निर्वाण संवत् १९७७ — बागरा (मारवाड)





श्रीमदुपाध्यायजी 'श्रीमोहनविजयजी' महाराज।

जन्म संवत् १९२२ — सांचूरा (मारवाड)

निर्वाण संवत् १९७७ — कुक्षी (निमार)

आभारपत्र–

आ ग्रन्थने तैयार करतां स्वानुदयबन्धिनीप्रकृतिनुं १, स्वोदयबन्धिनी प्रकृतिनुं २, उभयबन्धिनी प्रकृतिनुं ३, समकव्यवच्छेद्यमानबन्धिनी प्रकृतिनुं ४, क्रमव्यवच्छेद्यमान प्रकृतिनुं ५, उत्क्रमव्यवच्छेद्यमान प्रकृतिनुं ६, सान्तरबन्धिनी प्रकृतिनुं ७, सांतरनिरन्तरबन्धिनी प्रकृतिनुं ८, निरन्तरबन्धिनी प्रकृति ९ एवं नव द्वारनुं खुलासो श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छाधिराज कलिकालसिद्धान्तशिरोमणी जंगमयुगप्रधान–प्रातःस्मरणीय–जैनाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्रीमद् भट्टारक श्रीविजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज जी के सुशिष्य अनेक अंजनशलाका–प्रतिष्ठाकारक, विद्वद्वृन्दस्तूयमान, श्रुतस्थविर आचार्य श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिजीमहाराज तरफथी मलेल छे अने आचार्य महाराजना प्रतापेज म्हने केटलोक शास्त्रीयज्ञान प्राप्त थवाथी आवा ग्रन्थों तरफ म्हारी अभिरुचि थई छे माटे एवा परमोपकारी आचार्य महाराजनो अत्रे आभार मानुं छुं.

शान्त, दान्त, सरलस्वभावी, आबाल ब्रह्मचारी श्री श्री १०८ श्रीमान् उपाध्यायजी श्री मोहनविजयजी महाराज साहेबे संवत् १९६९ना सालनो चातुर्मास अमारा गाममां कर्यो हतो ते दरमियान एक दिवसे म्हने फरमाव्युं के–श्रीसियाणाना ज्ञानभण्डारमां 'कर्मप्रकृत्यात्मक' नामक यंत्रनो एक भूंगलो छे. तेमां बासठमार्गणाने विषे एकसो अडतालीश (१४८) द्वार आलेखवामां (उतारवामां) आव्या छे. ते यंत्र बहु उपयोगी होवाथी जो सर्व साधारणने माटे तेनो विस्तारपूर्वक खुलासो थई जाय तो तेनो लाभ घणा लोक लई शकशे. तेथी ए कार्य तमोने करवुं जोइए. एवी रीते उपाध्यायजी महाराजनो उत्तेजन थवाथी ते यंत्रने जोवानो म्हारो आन्तरिक उत्साह थयो. पछी ते यंत्रने ज्ञानभण्डारमांथी मंगावी सारी रीते तेने मनन करवाथी जणायुं के यंत्र तो घणोज उपकारक छे.

पछी उपाध्यायजी महाराजना फरमानथी–अत्यन्त प्रेरणाथी 'कर्मप्रकृत्यात्मक' यंत्रना अने केटलाक बीजा ग्रन्थोना आधारे आ 'कर्मबोधप्रभाकर' नामनो ग्रन्थ तैयार कर्यो अर्थात्–बनाव्यो. माटे उपाध्यायजी महाराज साहेबनो पण अत्रे म्हारा अन्तःकरणथी आभार (उपकार) मानुंछुं.

प्रतिक्षणानुस्मरणीय व्याकरणवाचस्पति श्रीमान् मुनि श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज साहेबे आ ग्रन्थ माटे पोतानो अमूल्य समय निकाली शुद्ध करी आप्युं छे अने लेखक–लक्ष्मीचंद मंजीभवाडा पासे प्रेसकॉपी तैयार करावी आपी छे माटे मुनिमहाराजनो अन्तःकरणथी आभार मानुं छुं.

निवेदक–धर्जिंग सदाजी।

मिलने का पता—

शा. वर्जीगजी सदाजी जैन

मु. पो. बागरा (मारवाड़)

वाया एरनपुरारोड़.

श्रीअभिधानराजेन्द्र कार्यालय

ठे. जैनप्रभाकर प्रेस

मु. रतलाम (मालवा)

प्रस्तावना

दरेक जीवोए आत्मिकज्ञान संपादन करवा माटे बराबर प्रयत्नशील (उद्यमवंत) थवुं जोइए कारण के-दरेक जीवोने सुखनो अभिलाषा निरंतर प्रधान करे छे. कोईने पण दुःखनी अभिलाषा थती नथी. दुःख सहुने प्रतिकूल पडे छे. आत्मिक ज्ञान सिवाय पारमार्थिक सुख मळतुं नथी. अनादि काळथी अपारावार संसारचक्रमां परिभ्रमण करतां जीवने अनन्त-पुद्गल परावर्तन थया, तथापि अनन्तकाळथी परिभ्रमण करतां पण वास्तविक सुखनी संप्राप्ति थई नथी. तेनुं मुख्य कारण जोता जइए तो अनात्मिकज्ञाननी विजृंभणा करतो रही छे. आत्मज्ञान प्रगट थया बाद महाभयंकर जेनो पार पामवो पण घणोज दुष्कर एवो जे संसार-सागर तरवो पण कठिण थतो नथी. माटे परमसुखनुं कारण आत्मज्ञान प्रगट करवुं सर्वथा उचितज छे.

ते ज्ञान आत्मभिन्न पदार्थोने विषे आत्मीयत्व बुद्धिनो जे अभाव, स्वपरनो विवेक करी आत्मगुणमां रमणता तेवुं ज्ञान प्रगट करवा मुख्य रीते जोता जईए तो तेवी मनुष्यगतिमां सामग्री उपलब्ध थई छे. तेवी सामग्री बीजी गतिओमां मळवी प्रायः घणी मुश्केल छे. पूर्वे पण अनन्ताजीवो तेवा प्रकारनो आत्मिकज्ञान प्रगट करीने मनुष्यगतिमांथीज साध्यसिद्धिने अलंकृत करी जन्म मरणना दुःखनो सर्वथा विच्छेद (नाश) करी गया छे. ते हेतुथीज शास्त्रकार महाराजाओए संसारना स्वप्न सदृश-सुखमां आसक्त बनी महाशल्यारंभजनक, अपूर्व शत्रु तुल्य, वस्तुतत्त्वने अन्यथा प्रगट करे, आत्मलक्ष्मीने हरण करी ले तेवा अज्ञानथी सर्वथा अलग रहेवा माटे कथन (उपदेश) करेल छे.

सर्वज्ञ सर्वदर्शी चरमतीर्थपति परमात्मा श्रीमहावीरप्रभुनो कथन करेल वस्तुविषयक सर्व ज्ञान उपादेय (स्वीकार करवा लायक) अने परमोपकारक छे, तो पण तेमां आत्मिकज्ञाननो यथार्थ रीते विकास करवा माटे वास्तविक वस्तुस्थितिनो समर्थक द्रव्यानुयोग विषयक ज्ञान मुख्य छे. जेमके-द्रव्यानुयोगनो यथार्थ ज्ञान थया सिवाय गणितानुयोग, चरणकरणानुयोग अने धर्मकथानुयोग ए त्रणे परमार्थतः सार्थक थई शकता नथी. माटे आत्मिक ज्ञान संप्राप्त करवाना अभिलाषुक जीवोने द्रव्यानुयोग संबंधि ज्ञानने अने तत्संबंधि अनुभवने प्राप्त करवानी परमावश्यकता छे. द्रव्यानुयोगनो विषय अतिगहन छे. एमां जेम जेम प्रवेश करता जइए तेम तेम सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभवगम्य अनेक बाबतोनो ज्ञान दृष्टिगत थाय छे. एनाज विचारमां अनुत्तर विमानवासी देवोनो तेत्रीश सागरोपमनो आयुष्य परिपूर्ण थई जाय छे तो पण द्रव्यानुयोग विषयक ज्ञानना पार पामी शकातुं नथी, एवुं वृद्ध प्रवाद छे.

सप्तनय, निक्षेपविचार, प्रमाणस्वरूप, स्याद्वादसप्तभंगी, कर्मसंबंधिविषय, गुणस्थान अने मार्गणास्थान वगेरे द्रव्यानुयोगनाज पोषक अंग छे. माटे एतद्विषय संबंधि पूर्वाचार्योना अने आधुनिक विद्वानोना रचेला जेटला ग्रन्थ छे ते द्रव्यानुयोगनाज समर्थक समजवा जोइए.

प्रस्तुत ग्रन्थमां पण द्रव्यानुयोगना अंगभूत मार्गणास्थाननुंज स्पष्टीकरण करवामां आव्युं छे. मार्गणा–एटले जीवादि पदार्थोनो अन्वेषण–शोधवुं तेनुं जे स्थान ते 'मार्गणास्थान' कहेवाय छे. अथवा जीव शुभ या अशुभ कर्मोना संयोगथी पोताने रहेवा माटे स्थान नियत करी उत्थान अथवा पतन बीजा शब्दोमां कहिये तो ऊंच अथवा अधम अवस्थाने धारण करे छे तेने पण 'मार्गणास्थान' कहेवामां आवे छे. शास्त्रोमां मुख्यरूपे चौद मार्गणास्थान कहेला छे—

गइ इंदिए य काए, जोए वेए कसायनाणे य ।
संजम दंसण लेसा, भवसम्मे संनि आहारे ॥१॥

अर्थ–गति १, इन्द्रिय २, काय ३, योग ४, वेद ५, कषाय ६, ज्ञान ७, संयम ८, दर्शन ९, लेश्या १०, भव्य ११, सम्यक्त्व १२, संज्ञी १३, अने आहारी १४ एवं चौद मूल मार्गणास्थान जाणवा. गत्यादिनी अपेक्षायें एनाज उत्तरभेद बासठ थाय छे—

चउपणछतियतिय, चउअडसगचउछदुछगदोदुन्नि ।
गइयाइ मग्गणाणं, इय उत्तरभेय बासठी ॥१॥

अर्थ—गतिनी अपेक्षायें–चार, इन्द्रियनी अपेक्षायें–पांच, कायनी अपेक्षायें–छ, योगनी अपेक्षायें–त्रण, वेदनी अपेक्षायें–त्रण, कषायनी अपेक्षायें–चार, ज्ञाननी अपेक्षायें–आठ, संयमनी अपेक्षायें–सात, दर्शननी अपेक्षायें–चार, लेश्यानी अपेक्षायें–छ, भव्यनी अपेक्षायें–बे, सम्यक्त्वनी अपेक्षायें–छ, संज्ञीनी अपेक्षायें–बे अने आहारीनी अपेक्षायें–बे, एवी रीते चौद मार्गणास्थाननाज उत्तरभेद बासठ समजवा. मूल मार्गणाना उपभेद होवाथीज एने पण मार्गणानो संज्ञा आपवामां आवी छे.

आ ग्रन्थनी अंदर ग्रन्थकर्त्ता महानुभावें पूर्वोक्त बासठ मार्गणास्थानोने विषे एक सो एक द्वारोनी संयोजना करी, द्वारगत दरेक विषयने परिस्फुट करवा माटे यथासाध्य प्रयत्न कर्युं छे. अत्रे आ ग्रन्थनो विषय संदर्भनो दिग्दर्शनमात्र बतावी दउं तो अस्थान नहीं गणाय. माटे आ ग्रन्थमां नीचे लखेल विषयोनो समावेश थयुं छे.

बासठ मार्गणा पैकी प्रत्येक (एक एक) मार्गणामां–जीवना चौद भेदोमांथी केटला भेद लाभे ?, चौद गुणठाणामांथी केटला गुणठाणा लाभे ?, पंदर योगमांथी केटला योग लाभे ?, बार उपयोगमांथी केटला उपयोग लाभे ?, छ लेश्यामांथी केटली

लेश्या लाभे ?, कयी मार्गणाना जीव थोडा अने कयी मार्गणाना घणा–तत्संबंधि अल्पाबहुत्व, चार मूल बंधहेतु अने ५७ उत्तरबंध हेतुमांथी केटला हेतु लाभे ?, मूल पांच भाव अने ५३ उत्तर भेदोमांथी केटला भेद लाभे ?, सन्निपातिक भावना द्विक–त्रिक–चतुष्क–पंच संयोगिक संबंधि भेदोमांथी केटला भेद लाभे ?.

ध्रुवबंधिनी ४७, अने अध्रुवबंधिनी ७३ प्रकृतिमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, ध्रुवोदयिनी २७, अने अध्रुवोदयिनी ९५ प्रकृतिमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, ध्रुवसत्ताकी १२६–१३० अने अध्रुवसत्ताकी २२–२८ प्रकृतिमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, सर्वघातिबंधिनी २०, अने देशघातिबंधिनी २५, तथा अघातिबंधिनी ७५ प्रकृतिमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, परावर्तमानबंधिनी ९१, अपरावर्तमानबंधिनी २९ प्रकृतिमांथी केटली लाभे ?, क्षेत्रविपाकोदयिनी ४, भवविपाकोदयिनी ४, जीवविपाकोदयिनी ७८, पुद्गलविपाकोदयिनी ३६ प्रकृतिमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, पुण्यबंधिनी ४२, पापबंधिनी ८२, पुण्योदयिनी ४२, पापोदयिनी ८४ प्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, स्वानुदयबंधिनी ११, स्वोदयबंधिनी २७, उभयबंधिनी ८२ प्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, समकव्यवच्छेद्यमानबंधिनी २६, क्रमव्यवच्छेद्यमान ८६ अने उत्क्रमव्यवच्छेद्यमान ८ प्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, सान्तरबंधिनी ४१, निरन्तरबंधिनी ५२ अने सान्तर निरंतरबंधिनी २७ प्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, मूल आठकर्मना बंधमांथी केटला कर्मनो बंध लाभे ?, आठ कर्मनो बंधयोग्य १२० उत्तर प्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?

मूल आठकर्मना बंधस्थानकमांथी केटला कर्मनो बंधस्थानक लाभे ?, ज्ञानावरणीयनो–एक, दर्शनावरणीयना–त्रण, वेदनीयना–बे, मोहनीयना–दश, आयुना–चार, नामना–आठ, गोत्रना बे, अंतरायनो–एक ए आठ कर्मना ३१ बंधस्थानकमांथी केटला बंधस्थानक लाभे ?, आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना गुणठाणा आश्रयी २९ बंधस्थानकमांथी केटला लाभे ?, मूल आठकर्मना उदयमांथी केटला कर्मनो उदय लाभे ?, आठकर्मनी उदयवति १२२ प्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, मूल आठकर्मना उदयस्थानकमांथी केटला कर्मनो उदयस्थानक लाभे ?, ज्ञानावरणीय–दर्शनावरणीय–वेदनीय–आयु–गोत्र–अने अन्तराय ए छ कर्मनी प्रकृतियोना उदयस्थानकमांथी केटला उदयस्थानक लाभे ?, मोहनीयकर्मनी उत्तर प्रकृतिना ९ उदयस्थानकमांथी चौद गुणठाणा आश्रयी केटला उदयस्थानक लाभे ?, नाम कर्मनी उत्तर प्रकृतिना १२ उदयस्थानकमांथी गुणठाणा आश्रयी केटला उदयस्थानक लाभे ?, आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना २६ उदयस्थानकमांथी अधिकारी अने चौद गुणठाणा आश्रयी केटला उदयस्थानक लाभे ?.

मूल आठकर्ममांथी कया कया कर्मनी उदीरणा लाभे ?, आठकर्मनो उदीरणा

योग्य १२२ उत्तरप्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, मूल आठकर्ममांथी कया कया कर्मनी सत्ता लाभे ?, आठ कर्मनी सत्तागत १४८ प्रकृतियोमांथी केटली प्रकृति लाभे ?, मूल आठकर्मना सत्तास्थानकमांथी केटला कर्मना सत्तास्थानक लाभे ?, ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय वेदनीय, आयु गोत्र अने अंतराय ए छ कर्मनी उत्तरप्रकृतिना सत्ता स्थानकोमांथी केटला सत्तास्थानक लाभे ?, मोहनीयकर्मना १५ अने नामकर्मना १२ सत्तास्थानकमांथी गुणठाणा आश्रयी केटला सत्तास्थानक लाभे ?, आठकर्मनी सत्ता गत एकसौ अडतालीश उत्तरप्रकृतिना ४८ सत्तास्थानकमांथी गुणठाणा आश्रयी केटला सत्तास्थानक लाभे ?

मूल आठकर्मना सात संवेध भांगामांथी केटला भांगा लाभे ?, ज्ञानावरणीय अने अंतरायना-बे, दर्शनावरणीयना-तेर, वेदनीयना-आठ,मोहनीयना-एकवीश,आयुना-अठावीस अने गोत्रना-सात ए सातकर्मना ७९ संवेध भांगामांथी केटला भांगा लाभे ?, मोहनीयकर्मना उदयना भांगानी ५२ चोवीशीमांथी केटली चोवीशी लाभे ?, मोहनीयकर्मनी चोवीशीना उपजतां १२६५ भांगामांथी केटला भांगा लाभे?, मोहनीयकर्मना ३५२ चोवीशीपदमांथी केटला चोवीशीनापद लाभे ?, मोहनीय-कर्मना ८४७७ पदवृंद संख्यामांथी केटला पदवृंदनी संख्या लाभे ? मोहनीयकर्मना गुणठाणा आश्रयी सत्तावंध उदयना भांगामांथी केटला भांगा लाभे ?, नामकर्मनी प्रकृतिना बंधस्थानकना १३९४५ भांगामांथी केटला भांगा लाभे ?, नामकर्मना उदय स्थानकना ७७९१ भांगामांथी केटला भांगा लाभे? बंधहेतुना गुणठाणा आश्रयी ४६८२७७० भांगामांथी केटला भांगा लाभे ?.

चोराशी लाख जीवायोनीमांथी केटली योनी लाभे ?, एक कोडाकोडी, सत्ताणुं लाख, पचास हजार कुल कोटीमांथी केटली कुलकोटी लाभे ?, बासठमार्गणाओ-मांथी केटली मार्गणा लाभे ?, मूल चार ध्यान अने तेना सोल उत्तर भेदोमांथी केटला भेद लाभे ?, पांचसौ त्रेसठ जीवना भेदोमांथी केटला भेद लाभे ?, पांचसौ त्रेसठ भेदना जीवोनी आगतिमांथी केटला जीवोनीआगति लाभे ?, बासठमार्गणावाला पांचसौ त्रेसठ जीवना भेदोमांथी कया कया भेदना जीवोमां जाय ?, त्रेवीश पदवीमांथी केटली पदवी लाभे ?, कयी मार्गणानी केटली भवस्थिति होय ?, बासठमार्गणामां जघन्यो-त्कृष्ट कायस्थिति केटली होय ?, आ ग्रन्थमां आवेल प्रकृतियोनी संज्ञा, पंदर बंधनना अर्थ अने श्रीगुरुगुणाष्टकम.

१—एगा कोडाकोडी, सत्ताणउईभवे सयसहस्सा ।
पन्नासं च सहस्सा, कुलकोडीणं मुणेअव्वा ॥ ९८९ ॥
प्रवचनसारोद्धारे १६० द्वार ।

ए प्रमाणे द्वारगत विषयोनो सारो रीते खुलासो करवामां आव्युं छे अने दरेक द्वारनी शुरूआतमां पोत पोताना नाम प्रमाणे भेद उपभेद तथा ध्रुवबंधिनी, अध्रुवबंधिनी, ध्रुवोदयिनी, अध्रुवोदयिनी आदि प्रकृतिओ दर्शावी छे. आ सिवाय वीश अधिकारी आश्रयी नामकर्मना उदयस्थानकनुं यंत्र १, गुणठाणा आश्रयी आठ कर्मनी उत्तरप्रकृतिना उदयस्थानकनुं यंत्र २, गुणठाणा आश्रयी अठोर (छ कर्म) मोहनीय अने नामकर्म तथा सर्वांतर प्रकृतिना सत्तास्थानकनुं यंत्र ३, गुणठाणा आश्रयी मोहनीय कर्मनी प्रकृतिना सत्तावंत उदयस्थानकनुं यंत्र ४. अधिकारी आश्रयी नामकर्मना बंधस्थानकना भांगानुं यंत्र ५, अने अधिकारी आश्रयी नामकर्मना उदयस्थानकना भांगानुं यंत्र ६ एवं छ यंत्रो पण आपेला छे. तेथी उदयस्थानक अने भंग विकल्पादिनो विषय बहु सुगम थई गयुं छे.

एम तो आ ग्रन्थनी रचना कर्मप्रकृति, कर्मग्रन्थ, पंचसंग्रह अने यंत्रपूर्वककर्मादि विचार आदि ग्रन्थोना आधारे थयेली छे. परंतु मुख्यरूपे तो 'कर्मप्रकृत्यात्मक यंत्र' ना आधारे थई छे. आ यंत्र श्रीपार्श्वचन्द्र गच्छीय वाचक श्रीमोहनऋषीना शिष्य श्रीवीरचन्द्रऋषिये बनाव्युं छे. उक्त यंत्रनी अन्त्यप्रशस्तीमां लख्युं छे के:—

*श्रीपार्श्वजिनराजशासनमहातीर्थे सुतीर्थोपमं,
तज्ज्ञानोऽम्बरम्बूर्गमनजं सज्जीववृन्दैर्वृतम् ।
यत्रस्नान्ति सकृत्पुरा नरगणाः संसारविच्छित्तये,
क्षिप्यन्ते सुखमश्नुते गतमला सद्भावशीलोचिताः ॥ १ ॥
चिन्तनीयमिदं समुद्धृतमलं यत्नं त्रकुर्मभस्तनो,
नानाभङ्गिकमार्गगासु रचितं द्वाषष्टिसंख्यासु च ।
अल्पज्ञानवतापि सूत्रवशतश्चापि दृष्ट्वा च-
त्वारिंशच्छतसंख्याभेदरचनाभिः क्रमं या लेखनः ॥ २ ॥
घनबंधकठोरसंश्रितरसं बन्धोदयोदीरणा,
सत्कर्मादिककर्मरोगहरणे पीयूषविन्दूपमम् ।
कर्मग्रन्थविचारसारनिपुणाः कामं पिबन्तूत्सुका,
पानादस्य भवन्तु पण्डितजनाश्चित्सौख्यभाजश्चिरम् ॥ ३ ॥
इत्येवं लिखितं विचारगहनं कर्मप्रकृत्यात्मकं,
यंत्रं स्वोपगतं जिनप्रवचनाच्छ्रीपार्श्वचन्द्रगच्छे ।

* आ प्रशस्ति कंई पण फेरफार कर्या वगर यंत्रना अंतमां छे तेवीज रीते अत्रे टांकवामां आवी छे.

जैनाचार्य 'श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी' महाराज के



व्या० वाच० 'श्रीयतीन्द्रविजयजी' महाराज।

जन्म संवत् १९४०

स्थान–धवलपुर।

दीक्षा संवत् १९५४

स्थान साचोर।

The Bombay Art, Printing Works, Fort, Bombay.

विषयानुक्रमणिका.

बासठमार्गणाओमां एकसोएकद्वारनी विगत.

थायें १२, तथा चार काया गणतां पण १२ एवं चार प्रकारे बार हेतुना ९८००० भांगा थाय. पूर्वोक्त नव मध्ये भय, कुच्छा अने त्रण कायानो वध गणवाथी १३, अथवा भय अने चार कायायें १३, अथवा कुच्छा अने चार कायायें पण १३, तथा पांच कायानो वध गणतां १३ एवं चार प्रकारे तेर हेतुना ७८४०० भांगा थाय. तथा नव मध्ये भय, कुच्छा अने चार कायाना वधें १४, अथवा भय अने पांच कायाना वधें १४, अथवा कुच्छा अने पांच कायाना वधें १४, तथा छ कायानो वध गणतां १४ एवं चार प्रकारे चौद हेतुना ३९२०० भांगा थाय. तथा नवमध्ये भय, कुच्छा अने पांच कायायें १५, भय अने छ कायायें पण १५, कुच्छा अने छ कायायें पण १५, एवं त्रण प्रकारे पंदर हेतुना ११२०० भांगा थाय. तथा भय, कुच्छा अने छ काया समेत १६ हेतुना १४०० भांगा थाय.

एवं नवहेतुना ८४००, दशना ३७८००, अग्यारना ७८४००, बारना ९८००० तेरना ७८४००, चौदना ३९२००, पंदरना ११२०० अने शोलहेतुना १४०० ए प्रमाणे आठ स्थानकना सर्व मली चोथे गुणठाणे ३५२८०० भांगा उपजे" एम जाणवुं.

पृष्ठ २७४ पंक्ति ८ मां नवमार्गणामां अचक्षुदर्शन मार्गणा शामल गणी ते ठीक नथी. माटे अचक्षुदर्शनमार्गणामां तेरमां गुणठाणाना ७ भांगा विना बार गुणठाणें कह्या प्रमाणे–४६८२७६३ भांगा लाभे, एम जाणवुं.

पृष्ठ ३०३ पंक्ति १ मां अनाहारी मार्गणाएं–केवली आश्रयी त्रण योग कहिया ते संभवता नथी माटे अनाहारीपणे एक कार्मणकाय योगज समजवुं अने 'यंत्रपूर्वक कर्मादिविचार' पुस्तकना पृष्ठ २४० मां अनाहारीमार्गणाएं योगना कोठामां ३ नो आंक मांडेलो छे ते बहुश्रुतगम्य समजवुं.

पृष्ठ ३२० पंक्ति ४ मां चारकषाय मार्गणायें पण त्रेवीश पदवी कही ते ठीक नथी माटे कषाय मार्गणामां प्रथमना दश गुणठाणा होवाथी तीर्थंकर १ अने केवली १ ए बे पदवी विना २१ पदवी लाभे एम समजवुं जोइये।

आ ग्रंथमां बे जे ठेकाणे (?) एवो प्रश्न चिन्ह मांडेलो छे ते ते ठेकाणे शंकायुक्त जाणवी.

पृष्ठ (३३१) मां शुद्धिपत्रक आप्युं छे माटे वाचकोएं त्यां जोई सुधारीने वांचवा तस्दी लेवी.

विषयानुक्रमणिका.

बासठमार्गणाओमां एकसोएकद्वारनी विगत.

अन्य विषय.

श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः

श्रीकर्मबोधप्रभाकर।

मङ्गलाचरण-दोहा-

आदिनाथ आदे नमुं, युगल-निवारण स्वाम।
आदितीर्थ आ कालमां, स्थाप्यो भवि-विश्राम ॥१॥
शांतिनाथ प्रणमुं सदा, भवदुःख शांति काज।
मोहरिपुदल जीपवा, पुष्टालम्बन साज ॥ २ ॥
नेमनाथ समरुं सदा, शुद्धनिमित्त ए जाण।
कार्यसिद्धीसुख भणी, कारण मुख्य वखाण ॥ ३ ॥
पार्श्वप्रभु ए जगतनां, मिथ्यातिमिर हरनार।
सम्यकभानु प्रगटाविने, ज्ञानोद्योत करनार ॥ ४ ॥
शासननायक समरसुं, वर्द्धमान जिनचंद।
भव्यतिमिर हरवा भणी, प्रगट्यो पुहवी दिणंद ॥ ५ ॥
शारदमात मया करी, दीजे बुद्धि वरदान।
प्रगट प्रभावे ने सदा, होवे विश्व प्रमान ॥ ६ ॥
प्रणमुं 'सूरीराजेन्द्र'ने, रत्नत्रयी दातार।
बोधि धर्म मुज दाखीने, दीधो समकित सार ॥ ७ ॥
अनादि तणा अज्ञानने, भेद्यो श्रीगुरुराज।
हृदयभानु सुबोधता, प्रगटाव्यो महाराज ॥ ८ ॥
तेह भणी गुरुराजने, समरी मन वच काय।
'कर्मबोधप्रभाकर' भलो, उगमय-द्वार सुभाय ॥ ९ ॥
लेश अर्थ संग्रह करी, शास्त्र तणे अनुसार।
रचना अल्प मति थकी, कीनी जन-हितकार ॥ १० ॥

वालभाषा मय सुगम, न अति विस्तृत जाण।
वजिंग वासि–वागरा, गूंथे गुरु चित आण ॥ ११ ॥

अनंतरिद्धि अने अनंत (सदाशास्वत) सुखें करी विराजमान–सिद्ध परमात्माने तथा अज्ञानतिमिरना हरनार, भविक जीवने समकितरत्नना आपनार अने छत्तीस-छत्तीसी गुणें करी शोभायमान एवा जैनाचार्य गुरुवर्य 'श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी' महाराजने त्रिविध योगथी नमस्कार करीने बासठमार्गणास्थानकने विषे एकसौ एक द्वारोंनुं विवरण कहुं छुं.

बासठमार्गणाना नाम–

१ नरकगति	२२ क्रोधकषाय	४३ अवधिदर्शन
२ तिर्यंचगति	२३ मानकषाय	४४ केवलदर्शन
३ मनुष्यगति	२४ मायाकषाय	४५ कृष्णलेश्या
४ देवगति	२५ लोभकषाय	४६ नीललेश्या
५ एकेन्द्रिय	२६ मतिज्ञान	४७ कापोतलेश्या
६ बेइन्द्रिय	२७ श्रुतज्ञान	४८ तेजोलेश्या
७ तेइन्द्रिय	२८ अवधिज्ञान	४९ पद्मलेश्या
८ चतुरिन्द्रिय	२९ मनःपर्यवज्ञान	५० शुक्ललेश्या
९ पंचेन्द्रिय	३० केवलज्ञान	५१ भव्य
१० पृथ्वीकाय	३१ मतिअज्ञान	५२ अभव्य
११ अप्काय	३२ श्रुतअज्ञान	५३ उपशमसम्यक्त्व
१२ तेउकाय	३३ विभंगज्ञान	५४ क्षयोपशमसम्यक्त्व
१३ वाउकाय	३४ सामायिकचारित्र	५५ क्षायिकसम्यक्त्व
१४ वनस्पतिकाय	३५ छेदोपस्थापनीय	५६ मिश्रसम्यक्त्व
१५ त्रसकाय	३६ परिहारविशुद्धि	५७ शास्वादनसम्यक्त्व
१६ मनोयोग	३७ सूक्ष्मसंपराय	५८ मिथ्यात्व
१७ वचनयोग	३८ यथाख्यात	५९ संज्ञी
१८ काययोग	३९ देशविरति	६० असंज्ञी
१९ पुरुषवेद	४० अविरति	६१ आहारी
२० स्त्रीवेद	४१ चक्षुदर्शन	६२ अनाहारी
२१ नपुंसकवेद	४२ अचक्षुदर्शन	

१

१ बासठ मार्गणाने विषे जीवना चौदभेदनुं द्वार—

प्रथम जीवना चौदभेद—

सूक्ष्मएकेन्द्रिय पर्याप्ता १, सूक्ष्मएकेन्द्रिय अपर्याप्ता २, बादरएकेन्द्रिय पर्याप्ता ३, बादरएकेन्द्रिय अपर्याप्ता ४, बेइन्द्रिय पर्याप्ता ५, बेइन्द्रिय अपर्याप्ता ६, तेइन्द्रिय पर्याप्ता ७, तेइन्द्रिय अपर्याप्ता ८, चउरिन्द्रिय पर्याप्ता ९, चउरिन्द्रिय अपर्याप्ता १०, असंज्ञीपंचेंद्रिय पर्याप्ता ११, असंज्ञीपंचेंद्रिय अपर्याप्ता १२, संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्ता १३, संज्ञीपंचेंद्रिय अपर्याप्ता १४,

१५ नरकगति, देवगति, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, प्रथमना त्रण ज्ञान, विभंगज्ञान, अवधिदर्शन, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, उपशम, क्षायक, क्षयोपशमिक, संज्ञी ए पंदर मार्गणाएं—संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता अने संज्ञीपंचेंद्रिय अपर्याप्ता एवं बे भेद होय.

१८ तिर्यंचगति, काययोग, नपुंसकवेद, चारकषाय, प्रथमना बे अज्ञान, अविरति, अचक्षुदर्शन, प्रथमनी त्रण लेश्या, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, अने आहारी ए अढार मार्गणाए—उपरोक्त जीवना चौदभेद होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाए—असंज्ञी अपर्याप्ता, संज्ञी अपर्याप्ता, अने संज्ञी पर्याप्ता ए त्रण भेद होय.

६ एकेन्द्रियादि, प्रथमनी पांच काय एवं छ मार्गणाए—सूक्ष्म एकेंद्रिय अने बादर एकेंद्रिय ए बे भेदना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चार भेद होय.

१ बेइंद्रिय मार्गणाए—बेइंद्रिय पर्याप्ता, अपर्याप्ता ए बे भेद होय.

१ तेइंद्रिय मार्गणाए—तेइंद्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे भेद होय.

१ चउरिन्द्रिय मार्गणाए—चउरिन्द्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे भेद होय.

१ पंचेंद्रिय मार्गणाए—संज्ञी पर्याप्ता, संज्ञी अपर्याप्ता, असंज्ञी पर्याप्ता, असंज्ञी अपर्याप्ता, ए चार भेद होय,

१ त्रसकाय मार्गणाए—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, असंज्ञीपंचेंद्रिय, संज्ञीपंचेंद्रिय ए ५ भेद पर्याप्ताना अने पांच अपर्याप्ताना मली दश भेद होय.

११ मनोयोग, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, देशविरति, केवलदर्शन, मिश्र ए अगियार मार्गणाएं—संज्ञी पर्याप्तानो एक एक भेद होय.

१ वचनयोग मार्गणाएं—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, असंज्ञीपंचेंद्रिय, संज्ञी पंचेंद्रिय ए पांच भेद पर्याप्ताना होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—चउरिंद्रिय, असंज्ञीपंचेंद्रिय, संज्ञीपंचेंद्रिय ए त्रण भेद पर्याप्ताना होय अथवा अन्याचार्यने मते–ए त्रण भेद तो पर्याप्ताना अने त्रण अपर्याप्ताना एवं छे भेद होय एटले करणपर्याप्ति बांध्या पछी बीजी पर्याप्ति हजु नथी. बंधाणि तेनाश्रयी अपर्याप्ताना पण त्रण भेद कह्या.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—संज्ञीपर्याप्ता अने अपर्याप्ता, तथा बादरएकेंद्रिय अपर्याप्तानो एक भेद एवं त्रण भेद होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—बादरएकेंद्रिय १, बेइंद्रिय २, तेइन्द्रिय ३, चउरिन्द्रिय ४, असंज्ञीपंचेंद्रिय ५, ए पांच भेदना तो अपर्याप्ता अने संज्ञीपंचेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली सात भेद होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—संज्ञीपंचेंद्रियना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता विना बार भेद लाभे

१ अनाहारी मार्गणाएं—सातभेद अपर्याप्ता, अने एक संज्ञीपंचेंद्रिय पर्याप्तानो तेरमा गुणठाणें केवलसमुद्घात अवसरे वचली त्रण समय सुधी अनाहारीपणें होय तथा चौदमे गुणठाणें शरीरना अभावे अनाहारी होय माटे पूर्वोक्त सात भेदने मांहे एक संज्ञीपर्याप्तानो गणिये तेवारे ए मार्गणाएं जीवना आठ भेद होय.



२ बासठमार्गणाने विषे चौदगुणठाणानो द्वार—

प्रथम चौदगुणठाणाना नाम—

मिथ्यात्व १, सास्वादन २, मिश्र ३, अविरतिसम्यक्दृष्टि ४, देशविरति ५, प्रमत्त ६, अप्रमत्त ७, अपूर्वकरण ८, अनिवृत्तिबादर ९, सूक्ष्मसंपराय १०, उपशांतमोह ११, क्षीणमोह १२, सयोगी १३, अयोगी १४,

३ नरकगति, देवगति, अविरति ए त्रण मार्गणाएं—प्रथमना चार गुणठाणा होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—प्रथमना पांच गुणठाणा होय.

५ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, संज्ञी अने भव्य ए पांच मार्गणाएं—मिथ्यात्व गुणठाणाथी मांडी यावत् अयोगीकेवली गुणठाणा सुधी चौद गुणठाणा होय.

८ एकेंद्रिय, त्रणविकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय अने असंज्ञी ए आठ मार्गणाएं–मिथ्यात्व अने सास्वादन ए बे गुणठाणा होय.

४ तेउकाय, वायुकाय, अभव्य, मिथ्यात्व ए चार मार्गणाएं—एक मिथ्यात्व गुणठाणो होय.

६ त्रण वेद, लोभ विना त्रण कषाय ए छ मार्गणाएं—प्रथमना नव गुणठाणा होय.

१ लोभ मार्गणाए—प्रथमना दश गुणठाणा होय.

३ त्रण अज्ञान मार्गणाए—एक बे अथवा त्रण सुधीना गुणठाणा होय छे परंतु कोई जीव समकित गुणठाणाथी पडतो मिश्रगुणठाणे आव्यो तेने नजीक अभ्यासे तथा मिश्रना अल्पकाल माटे ज्ञान पलटे नहीं तेथी ज्ञान कहिये.

२ चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन ए बे मार्गणाए—प्रथमना बार गुणठाणा होय.

१ यथाख्यात मार्गणाए—छेल्ला चार गुणठाणा होय.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाए—प्रमत्तादिक सात गुणठाणा होय.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाए—छट्ठाथी नवमा गुणठाणा सुधीना चार गुणठाणा होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाए—प्रमत्त अने अप्रमत्त ए बे गुणठाणा होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाए—सयोगीकेवली अने अयोगीकेवली ए बे गुणठाणा होय.

४ प्रथमना त्रण ज्ञान अने अवधिदर्शन ए चार मार्गणाए—चोथाथी मांडी बारमा सुधीना नव गुणठाणा होय.

१ उपशम समकित मार्गणाए—चोथाथी अग्यारमा सुधी आठ गुणठाणा होय.

१ क्षयोपशमसमकित मार्गणाए—चोथाथी सातमा सुधीना चार गुणठाणा होय.

१ क्षायिकसमकित मार्गणाए—चोथाथी मांडी चौदमा पर्यंत ११ गुणठाणा होय.

१ सास्वादन मार्गणाए—एकज सास्वादन गुणठाणुं होय.

१ मिश्र मार्गणाए—एकज मिश्रगुणठाणुं होय.

१ देशविरति मार्गणाए—एकज देशविरति गुणठाणुं होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए—एकज सूक्ष्मसंपराय गुणठाणुं होय.

५ मनयोग, आहारी अने शुक्ललेश्या ए पांच मार्गणाए—प्रथमना तेर गुणठाणा होय.

३ प्रथमनी त्रण लेश्या मार्गणाए—प्रथमना ६ गुणठाणा होय.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाए—प्रथमना सात गुणठाणा होय.

१ अनाहारो मार्गणाए—मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरति, सयोगीकेवली, अने अयोगीकेवली ए पांच गुणठाणा होय.

---

३ बासठमार्गणाने विषे पंदरयोगनुं द्वार—

प्रथम पंदरयोगना नाम—

सत्यमनोयोग १, असत्यमनोयोग २, सत्यमृषामनोयोग ३, असत्यामृषामनोयोग ४, सत्यवचनयोग ५, असत्यवचनयोग ६, सत्यमृषावचनयोग ७, असत्यामृषावचनयोग ८, औदारिककाययोग ९, औदारिकमिश्रकाययोग १०, वैक्रिय काययोग ११, वैक्रियमिश्रकाययोग १२, आहारककाययोग १३, आहारकमिश्रकाययोग १४, कार्मणकाययोग १५.

२ नरकगति अने देवगति ए बे मार्गणाए—औदारिक काययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्रकाययोग ए चार योगविना अगियार योग पामिये.

१० तिर्यंचगति, स्त्रीवेद, त्रणअज्ञान, अविरति, अभव्य, उपशम, सास्वादन अने मिथ्यात्व ए दश मार्गणाए—आहारक अने आहारकमिश्र विना तेर योग होय.

२६ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, काययोग, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, चारकषाय, प्रथमना त्रणज्ञान, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, लेश्याछे, भव्य, क्षायक, क्षयोपशम, संज्ञी अने आहारी ए २६ मार्गणाए—पंदर योग होय.

२ एकेंद्रियजाति अने वायुकाय ए बे मार्गणाए—औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग, अने कार्मणकाययोग ए पांच योग होय.

३ त्रणविकलेंद्रिय मार्गणाए—औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग कार्मणकाययोग, अने असत्यामृषावचनयोग ए चार योग पामिये.

४ पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय अने वनस्पतिकाय ए चार मार्गणाए—औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, अने कार्मणकाययोग ए त्रण योग पामिए.

६ मनोयोग, वचनयोग, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, अने चक्षुदर्शन ए छे मार्गणाए—मनना चार, वचनना चार, औदारिककाययोग, वैक्रियकाय-

योग, वैक्रियमिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्रकाययोग एवं तेर
योग पामिए.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—औदारिककाययोग, औदारिक
मिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग, सत्यमनोयोग, असत्यअमृषा (व्यवहार) मनोयोग,
सत्यवचनयोग, असत्यअमृषा (व्यवहार) वचनयोग ए सात योग पामिए.

२ परिहारविशुद्धि अने सूक्ष्मसंपराय ए बे मार्गणाएं—मनना ४, वचनना ४,
अने औदारिककाययोग एवं ९ योग होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—मनना ४, वचनना ४, औदारिक, औदारिकमिश्र
अने कार्मण एवं ११ योग पामिए.

१ देशविरति मार्गणाएं—मनना ४, वचनना ४, औदारिक, वैक्रिय अने वैक्रि-
यमिश्रयोग ए ११ योग पामिए.

१ मिश्रमार्गणाएं—मनना ४, वचनना ४, औदारिककाययोग, अने वैक्रियका-
ययोग ए दश योग पामिए.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रिय, वैक्रियमिश्र, कार्मण
अने असत्यमृषावचनयोग ए छे योग होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—एकज कार्मणकाययोग होय.

---

४ बासठमार्गणाने विषे बारउपयोगनुं द्वार—

प्रथम बारउपयोगना नाम—

मतिज्ञान १, श्रुतज्ञान २, अवधिज्ञान ३, मनःपर्यवज्ञान ४, केवलज्ञान ५, मतिअ-
ज्ञान ६, श्रुतअज्ञान ७, विभंगज्ञान ८, चक्षुदर्शन ९, अचक्षुदर्शन १०, अवधि-
दर्शन ११, केवलदर्शन १२.

४ नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति अने अविरति ए चार मार्गणाएं—प्रथमना
त्रणज्ञान, त्रणअज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन ए ९ उपयोग होय.

१३ मनुष्यगति. पंचेंद्रिय, त्रसकाय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग, पुरुषवेद,
स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, शुक्ललेश्या, भव्य, संज्ञी, आहारी ए तेर मार्गणाएं—चार उपयो
पामिये अहीं भगवेद कह्या छे ते द्रव्यरूप ओलखवा अभिलाषारूप भाव वेद छे ते सं

नवमा गुणठाणासुधी छे तिहां तो केवलज्ञान अने केवलदर्शन केम होय ? ते भणी ते केवल्द्विक अवेदीने होय तेथी स्त्रीपुरुषाकाररूप द्रव्यवेदे चार उपयोग संभवे.

८ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, प्रथमनी कायपांच ए आठ मार्गणाएं—मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन ए त्रण उपयोग होय.

२ चतुरिंद्रिय अने असंज्ञी ए बे मार्गणाएं—मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, चक्षुदर्शन, अने अचक्षुदर्शन ए चार उपयोग पामिए.

११ चारकषाय, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, प्रथमनी लेश्या पांच, ए अगीयार मार्गणाएं—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान. विभंगज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन ए दश उपयोग प्रत्येकें होय. . .

११ प्रथमना ज्ञानचार, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, अवधिदर्शन, उपशम, क्षयोपशम ए अगियार मार्गणाएं—प्रथमना ज्ञान ४, अने चक्षुआदिदर्शन ३, एवं ७ उपयोग होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे उपयोग होय.

६ त्रणअज्ञान, अभव्य, शास्वादन, मिथ्यात्व ए छे मार्गणाएं—त्रणअज्ञान, चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन ए पांच उपयोग होय. ग्रन्थांतरे-शास्वादन मार्गणा मध्ये त्रण अज्ञानने बदले त्रण ज्ञान पण कह्या छे.

१ देशविरति मार्गणाएं—त्रणज्ञान अने त्रणदर्शन ए छे उपयोग होय.

२ यथाख्यात, अने क्षायिक मार्गणाएं—त्रण अज्ञान विना नव उपयोग होय.

१ मिश्रसमकित मार्गणाएं—त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन एवं छे उपयोग होय. अथवा मतान्तरे-बे दर्शन भमे तेवारे ५ उपयोग पण कह्या छे.

१ अनाहारी मार्गणाएं—मनःपर्यवज्ञान अने चक्षुदर्शन ए बे उपयोग विना बाकीना दश उपयोग पामिए.

---

५ बासठमार्गणाने विषे लेश्यानुं द्वार—

प्रथम छे लेश्याना नाम—

कृष्ण १, नील २, कापोत ३, तेजस ४, पद्म ५, अने शुक्लेश्या ६ ए छे लेश्या जाणवी.

६ नरकगति, बिकलेंद्रिय, तेउकाय, वाउकाय ए ६ मार्गणाएं—प्रथमनी त्रण लेश्या होय.

४१ तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रण योग, त्रण वेद, चार कषाय, प्रथमना ज्ञान चार, त्रण अज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, भव्य, अभव्य, उपशम, क्षायक, क्षयोपशम, मिश्र, सास्वादन, मिथ्यात्व, संज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ४१ मार्गणाएं–छे लेश्या होय.

५ एकेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय अने असंज्ञी ए पांच मार्गणाएं–प्रथमनी चार लेश्या होय.

५ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन अने शुक्ललेश्या ए पांच मार्गणाएं–एकज शुक्ललेश्या होय.

५ कृष्णलेश्यामां–कृष्ण, नीलमां–नील, कापोतमां–कापोत, तेजोमां–तेजो, पद्ममां–पद्म एवं पांच मार्गणाएं—निज निज नामनी एक एक लेश्या होय.

---

६ बासठमार्गणाने विषे अल्पबहुत्वनुं द्वार–

४–मनुष्य (संमूर्छिम मेलवतां) असंख्याता १, तेथी नारकी असंख्यातगुणा २, तेथी देवता असंख्यातगुणा ३ अने तेथी तिर्यंच (एकेंद्रिय मेलवतां) अनंतगुणा जाणवा ४.

५–सर्वथी थोड़ा पंचेंद्रिय १, तेथी चतुरिंद्रिय विशेषाधिक २, तेथी तेइंद्रिय विशेषाधिक ३, तेथी बेइंद्रिय विशेषाधिक ४ अने तेथी एकेंद्रिय अनंतगुणा जाणवा ५.

६–सर्वथी थोड़ा त्रसकायिक १, तेथी तेजस्कायिक (तेउकाय) विशेषाधिक २, तेथी पृथ्वीकायिक विशेषाधिक ३, तेथी अप्कायिक विशेषाधिक ४, तेथी वायुकायिक विशेषाधिक ५ अने तेथी वनस्पतिकायिक अनंतगुणा जाणवा ६.

३–सर्वथी थोड़ा मनयोगी १, तेथी वचनयोगी असंख्यातगुणा २ अने तेथी काययोगी अनंतगुणा जाणवा ३.

३–सर्वथी थोड़ा पुरुषवेदी १, तेथी स्त्रीवेदी संख्यातगुणा २ अने तेथी नपुंसकवेदी अनंतगुणा जाणवा ३.

४–मानकषायी अनंता १, तेथी क्रोधकषायी विशेषाधिक २, तेथी मायाकषायी विशेषाधिक ३ अने तेथी लोभकषायी विशेषाधिक जाणवा ४.

५–सर्वथी थोड़ा मनःपर्यवज्ञानी १, तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा २, तेथी

मति अने श्रुतज्ञानी मांहोंमांहे तुल्य अने तेथी विशेषाधिक ४ अने तेथी केवलज्ञानी अनंतगुणा जाणवा ५.

३–विभंगज्ञानी असंख्याता १, तेथी मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी मांहोंमांहे तुल्य अने तेथी अनंतगुणा जाणवा ३.

७–सर्वथी थोड़ा सूक्ष्मसंपरायी १, तेथी परिहारविशुद्धि संख्यातगुणा २, तेथी यथाख्याती संख्यातगुणा ३, तेथी छेदोपस्थापनीय संख्यातगुणा ४, तेथी सामायिकचारित्री संख्यातगुणा ५, तेथी देशविरति असंख्यातगुणा ६ अने तेथी अविरति (असंयत) अनंतगुणा जाणवा ७.

४–सर्वथी थोड़ा अवधिदर्शनी १, तेथी चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणा २, तेथी केवलदर्शनी अनंतगुणा ३, अने तेथी अचक्षुदर्शनी अनंतगुणा जाणवा ४.

६–सर्वथी थोड़ा शुक्ललेश्यी १, तेथी पद्मलेश्यी संख्यातगुणा २, तेथी तेजोलेश्यी संख्यातगुणा ३, तेथी कापोतलेश्यी अनंतगुणा ४, तेथी नीललेश्यी विशेषाधिक ५, अने तेथी कृष्णलेश्यी विशेषाधिक जाणवा ६.

२–सर्वथी थोड़ा अभव्य १ अने तेथी भव्य अनंतगुणा जाणवा २.

६–सर्वथी थोड़ा शास्वादनसम्यक्त्वी १, तेथी उपशमसम्यक्त्वी संख्यातगुणा २, तेथी मिश्रदृष्टि संख्यातगुणा ३, तेथी क्षयोपशमसम्यक्त्वी संख्यातगुणा ४, तेथी क्षायिकसम्यक्त्वी अनंतगुणा ५, तेथी मिथ्यादृष्टि अनंतगुणा जाणवा ६.

२–सर्वथी थोड़ा संज्ञी १, अने तेथी असंज्ञी अनंतगुणा जाणवा २.

२–सर्वथी थोड़ा अनाहारी १, अने तेथी आहारी अनंतगुणा जाणवा २.

---

७ बासठमार्गणाने विषे मूलबंधहेतुनुं द्वार–

प्रथम मुलबंधहेतुना नाम–

मिथ्यात्व १, अविरति २, कषाय ३, योग ४.

४४ गतिचार, इंद्रियपांच, कायछे, त्रण योग, त्रण वेद, चार कषाय, त्रण अज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, लेश्या छे, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ४४ मार्गणाएं–प्रत्येकें चार बंधहेतु होय.

१० प्रथमना त्रण ज्ञान, देशविरति, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, मिश्र, शास्वादन अने अवधिदर्शन ए १० मार्गणाएं–मिथ्यात्व विना त्रण बंधहेतु होय.

५ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय ए पांच मार्गणाए-कषाय अने योग ए बे हेतु होय.

३ यथाख्यात, केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाए-फक्त योग हेतु होय.

---

८ बासठमार्गणानेविषे ५७ उत्तरबंधहेतुनुं द्वार-

प्रथम ५७ उत्तरबंधहेतुना नाम-

मिथ्यात्व पांच—अभिग्रहिक १, अनभिग्रहिक २, अभिनिवेशिक ३, सांशयिक ४ अने अनाभोगिक ५.

अविरति बार-मनने वशकरी न राखे १, पांच इन्द्रियनी ५ अने छकायनी ६, एवं १२.

कषाय पचवीस-हास्यषट्क अने त्रणवेद एवं नव नोकषाय, अनंतानुबंधि-आदिक सोळ कषाय एवं २५.

योग पंदर-मनना ४, वचनना ४, कायाना ७, एवं १५. ए प्रमाणे ५७ उत्तरबंधहेतु जाणवा.

१ नरकगति मार्गणाए-मिथ्यात्व ५, अविरति १२, (स्त्रीवेद अने पुरुषवेद विना) कषाय २३, (औदारिकद्विक २, तथा आहारकद्विक २ ए चार विना) योग ११ एवं ५१ बंधहेतु होय.

१ देवगति मार्गणाए-मिथ्यात्व ५, अविरति १२, (नपुंसकवेद विना) कषाय २४ (औदारिकद्विक अने आहारकद्विक ए चार विना) योग ११ एवं ५२ बंध हेतु होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए-मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, (आहारकद्विक विना) योग १३, एवं ५५ बंध हेतु होय.

१४ मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, काययोग, अचक्षुदर्शन, लेश्या छ, भव्य, संज्ञी, आहारी ए चौद मार्गणाए-५७ बंधहेतु होय.

१ एकेन्द्रिय मार्गणाए-अनाभोगिक मिथ्यात्व, स्पर्शेन्द्रिय अने काय ६ ए ७ अविरति, (पुरुषवेद अने स्त्रीवेद विना) कषाय २३, औदारिकद्विक, वैक्रियद्विक, कार्मणकाययोग ए पांच योग एवं ३६ बंधहेतु होय.

१ बेइन्द्रियमार्गणाए-अनाभोगिक मिथ्यात्व, तथा इन्द्रिय बे, काय ६ ए आठ

अविरति, (बे वेद विना) कषाय २३, औदारिकद्विक, कार्मणकाययोग, असत्यमृषा-वचनयोग ए चार योग कुल ३६ बंधहेतु होय.

१ तेइन्द्रिय मार्गणाएं—अनाभोगिक मिथ्यात्व, तथा इंद्रिय ३, काय ६ ए ९ अविरति, (बे वेद विना) कषाय २३, योग (बेइन्द्रिय प्रमाणे) ४, एवं ३७ बंधहेतु होय.

१ चतुरिन्द्रिय मार्गणाएं—अनाभोगिक मिथ्यात्व, तथा इंद्रिय ४, काय ६ ए १० अविरति तथा (बे वेद विना) कषाय २३, योग पूर्ववत् ४ एवं ३८ बंधहेतु होय.

४ पृथ्वी, अप्, तेउ, वनस्पतिकाय ए चार मार्गणाएं—अनाभोगिक मिथ्यात्व, अविरति (एकेन्द्रिय प्रमाणे) ७, (बे वेद विना) कषाय २३, औदारिकद्विक, कार्मण काययोग ए ३ योग कुल ३४ बंधहेतु होय.

१ वायुकाय मार्गणाएं—पृथ्वीकाय प्रमाणे परन्तु वैक्रियद्विक सहित करीने (योग ५ लेवाथी) कुल ३६ बंधहेतु होय.

२ मनयोग अने वचनयोग मार्गणाएं—मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, (औदारिकमिश्र, कार्मणकाययोग ए बे विना) योग १३ कुल ५५ बंधहेतु होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—मिथ्यात्व ५, अविरति १२, (बे वेद विना) कषाय २३, योग १५, एवं ५५ बंधहेतु होय.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—पुरुषवेद प्रमाणे पण आहारकनावेयोग विना ५३ भेद होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—पुरुष प्रमाणे पण (पुरुष, स्त्री ए बे वेद विना) ५५ बंधहेतु होय.

१ क्रोध मार्गणाएं—मिथ्यात्व ५, अविरति १२, अनंतानुबंधियादि क्रोध ४, अने नोकषाय ९ ए १३ कषाय, योग १५ एवं ४५ बंधहेतु होय.

१ मान मार्गणाएं—क्रोधनी प्रमाणे, पण क्रोधने ठेकाणे मान ४ लेवां.

२ माया अने लोभ मार्गणाएं—ऊपर प्रमाणे, पण मानने ठेकाणे माया ४ लेवी मायाने ठेकाणे लोभ ४ लेवा ए प्रमाणे कषायनी मार्गणाएं ४५ भेद कहेवा.

३ प्रथमना त्रणज्ञान मार्गणाएं—अविरति १२, (अनंतानुबंधी कषाय ४ विना) कषाय २१, योग १५ एवं ४८ बंधहेतु होय.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—संज्वलन कषाय ४, नोकषाय ९ एवं कषाय १३, तथा (कार्मणकाययोग अने औदारिकमिश्र ए बे विना) योग १३ कुल २६ भेद.

१ केवलज्ञान मार्गणाएं—मनना २, वचन २, अने कायाना ३ एवं ७ योग बंधहेतु होय.

---

१ औदारिक १, औदारिक मिश्र २, अने कार्मण ३.

३ अज्ञान त्रण मार्गणाएं–मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, (आहारकद्विक विना) योग १३ एवं ५५ बंधहेतु होय.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय मार्गणाएं—संज्वलन ४, नोकषाय ९ ए १३ कषाय, (औदारिकमिश्र, कार्मण काययोग ए २ विना) योग १३ एवं २६ बंधहेतु होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—संज्वलन कषाय ४, (स्त्रीवेद विना) नोकषाय ८ ए १२ कषाय, मनयोग ४, वचनयोग ४, औदारिककाययोग ए नव योग, कुल २१ बंधहेतु होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—संज्वलनलोभ, योग ऊपर प्रमाणे ९ एवं १० बंधहेतु.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—(आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २ ए चार विना) योग ११ बंधहेतु होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—(त्रसनी अविरति विना) ११, (पहेला अने बीजा कषायनी चोकडी विना) कषाय १७, (आहारकद्विक २, कार्मण काययोग, औदारिकमिश्र ए चार विना) योग ११ एवं ३९ बंधहेतु होय.

२ अविरति तथा अभव्य मार्गणाएं—आहारकद्विक २ विना ५५ बंधहेतु.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—औदारिकमिश्र, कार्मणकाययोग ए २ विना ५५ बंधहेतु होय.

१ अवधिदर्शन मार्गणाएं—प्रथमना त्रण ज्ञाननी पेठे ४८ बंधहेतु होय.

१ केवलदर्शन मार्गणाएं—केवलज्ञाननी पेठे योग ७ बंधहेतु होय.

१ उपशम मार्गणाएं—अविरति १२, (पहेला कषायनी चोकडी विना) कषाय २१, (आहारकद्विक विना) योग १३ एवं ४६ बंधहेतु होय.

२ क्षायोपशमिक अने क्षायिक मार्गणाएं—अविरति १२, (पहेला कषायनी चोकडी विना) कषाय २१, योग १५, एवं ४८, बंध हेतु होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—अविरति १२, कषाय ऊपर प्रमाणे २१, (औदारिकमिश्र वैक्रियमिश्र, आहारकद्विक २, कार्मणकाययोग ए ५ विना) योग १० एवं ४३ होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—अविरति १२, कषाय २५, (आहारकद्विक विना) योग १३ एवं ५० बंध हेतु होय.

१ मिथ्यात्व मार्गणाएं–(आहारकद्विक विना) ५५ बंध हेतु होय.

१ असंज्ञीमार्गणाए–अनाभोग मिथ्यात्व, (मननी विना) अविरति ११, (बे वेद विना) कषाय २३, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, कार्मण काययोग, असत्यामृषा वचनयोग, ए योग ६, एवं ४१ बंधहेतु होय.

१ अनाहारी मार्गणाए–मिथ्यात्व ५, अथवा अनाभोग मिथ्यात्व, अविरति १२, अथवा छकायनी ६, कषाय २५, कार्मणकाययोग, एवं ४३ अथवा ३३ बंधहेतु होय.

---

१. बासठमार्गणाने विषे भावनुं द्वार–

मूळ पांच भावना उत्तर ५३ भेद–

उपशम–उपशमसमकित १, उपशमचारित्र २.

क्षायिक–केवलज्ञान १, केवलदर्शन २, क्षायिकसमकित ३, यथाख्यातचारित्र ४, दानलब्धि ५, लाभलब्धि ६, भोगलब्धि ७, उपभोगलब्धि ८, वीर्यलब्धि ९.

क्षयोपशम–मतिज्ञान १, श्रुतज्ञान २, अवधिज्ञान ३, मनःपर्यवज्ञान ४, मतिअज्ञान ५, श्रुतअज्ञान ६, विभंगज्ञान ७, चक्षुदर्शन ८, अचक्षुदर्शन ९, अवधिदर्शन १०, दानलब्धि ११, लाभलब्धि १२, भोगलब्धि १३, उपभोगलब्धि १४, वीर्यलब्धि १५, क्षयोपशमसमकित १६, देशविरतिचारित्र १७, सर्वविरतिसंयम १८.

औदयिक–अज्ञानत्व १, असिद्धत्व २, असंयमत्व ३, लेश्या ६, कषाय चार, गति चार, वेद त्रण, अने मिथ्यात्व १ एवं २१ भेद.

पारिणामिक–भव्यत्व १, अभव्यत्व २, जीवत्व ३, एवं सर्व मूळ पांचभावना ५३ भेद जाणवा.

१ नरकगति मार्गणाए—मूळभाव ५. उत्तरभेद–उपशमभावे–उपशमसमकित १, क्षायिकभावे–क्षायिकसमकित, क्षयोपशमभावे–(मनःपर्यवज्ञान, सर्वविरति, देशविरति ए ३ विना) १५ भाव. औदयिकभावे–(छेल्ली ३ लेश्या, गति ३, वेद २ ए ८ विना) १३ भाव. पारिणामिक भावे–भव्यत्व, अभव्यत्व, जीवत्व ए ३ भाव एवं ३३ भावहोय.

१ देवगति मार्गणाए–मूळभाव ५. उत्तरभेद–उपशमभावे–उपशमसमकित १, क्षायिकभावे–क्षायिकसमकित १, क्षयोपशमभावे–नारकीनीपेठे १५ भाव, औदयिक भावे—(गति ३, वेद १ ए चार विना) १७ भाव, पारिणामिकभावना–त्रण भावनी ३ एवं ३७ भाव होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद–औदयिक भावे–(देवतानी १, तिर्यंचनी १, अने नारकीनी १ ए त्रण गति विना) १८ भेद गणतां सर्व मली ५० भेद होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद–उपशमभावे–सम्यक्त्व, क्षायिकभावे–सम्यक्त्व, क्षयोपशमभावे–(मनःपर्यवज्ञान, सर्वविरति ए २ विना) १६, उदयिकभावे–(गति ३ विना) १८, पारिणामिकभावे–पूर्ववत् ३ एवं ३० भेद होय.

४ एकेन्द्रिय, पृथ्वी, अप् अने वनस्पतिकाय मार्गणाएं—मूलभाव ३. उपशम अने क्षायिक भाव न होय, उत्तरभेद– क्षयोपशमभावे–दानादिलब्धि ५, उपयोग ३ ए ८, उदयिकभावे–(गति ३, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या ए २, वेद २ ए ७ विना) १४, पारिणामिक भावे–पूर्ववत् ३, कुल २५ भाव होय.

४ बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, तेउकाय, वायुकाय मार्गणाएं—(उपशम अने क्षायिक विना) मूलभाव ३. उत्तरभेद–क्षयोपशमभावे–एकेन्द्रिय प्रमाणे ८, औदयिकभावे–(गति ३, वेद २, छेल्ली लेश्या ३, ए ८ विना) १३, पारिणामिक भावे–ऊपर प्रमाणे ३, कुल २४ भावहोय.

१ चतुरिन्द्रियमार्गणाएं—बेइन्द्रिय प्रमाणे, पण चक्षुदर्शन सहित २५ भाव कहेवा.

७ पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग, संज्ञी, आहारी ए ७ मार्गणाएं–मूलभाव ५ अने उत्तरभेद ५३ होय.

७ वेदत्रण, क्रोध, मान, माया, लोभ ए मान मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद–उपशमभावे–सम्यक्त्व अने चारित्र ए २, क्षायिकभावे–सम्यक्त्व, क्षयोपशम भावे–१८, औदयिकभावे–(गति १ वेद २ ए ३ विना) १८ (तेमां कषायनी मार्गणाएं क्रोधमां–मान माया अने लोभ विना कहेवुं, मानमां–क्रोध, माया अने लोभ विना कहेवुं, तथा लोभमां–क्रोध, मान अने माया विना कहेवुं. एम ३ विना १८ भाव होय). पारिणामिकभावे–३ कुल ४२ भाव होय.

४ मति, श्रुत, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद–उपशमभावे–सम्यक्त्व अने चारित्र २, क्षायिकभावे–सम्यक्त्व अने चारित्र ए २, क्षयोपशमभावे–(अज्ञान ३ विना) १५, औदयिक भावे–(अज्ञान, मिथ्यात्व, ए २ विना) १९, पारिणामिक भावे–(अभव्य विना) २, कुल चालिस भाव होय.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद–उपशमभावे–२, क्षायिकभावे–२, क्षयोपशमभावे–(अज्ञान ३, देशविरति १ ए ४ विना) १४, औदयिकभावे–

(गति ३, अज्ञान, असंयम, मिथ्यात्व, ए ६ विना) १५, पारिणामिक भावे-ऊपर प्रमाणे २, कुल ३५ होय.

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन, मार्गणाएं—(उपशम तथा क्षायोपशम विना) मूलभाव ३. उत्तरभेद-क्षायिकभावे-९, औदयिकभावे-शुक्लेश्या, मनुष्यगति, असिद्ध ए ३ भाव होय, पारिणामिकभावे-जीवत्व, कुल १३ होय.

३ त्रण अज्ञान मार्गणाएं—(उपशम अने क्षायिक विना) मूलभाव ३. उत्तर भेद-क्षायोपशमभावे-लब्धि ५, अज्ञान ३, प्रथमना दर्शन २ ए १०, औदयिकभावे-२१, पारिणामिकभावे-३ कुल ३४ होय.

२ सामायिक, छेदोपस्थापनीय मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद-उपशमभावे-सम्यक्त्व अने चारित्र, क्षायिकभावे-सम्यक्त्व, क्षयोपशमभावे-(अज्ञान ३, देशविरति ए ४ विना) १४, औदयिकभावे-(गति ३, मिथ्यात्व, असंयम, अज्ञान ए ६ विना)१५, पारिणामिकभावे-(अभव्य विना) २ कुल ३४ होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—मूलभाव ५ अथवा (उपशम विना) ४. उत्तरभेद-उपशमभावे-सम्यक्त्व, क्षायिकभावे-सम्यक्त्व, क्षयोपशमभावे-सामायिकनी पेठे १४, औदयिकभावे-(गति ३, मिथ्यात्व, अज्ञान, असंयम, स्त्रीवेद ए ७ विना) १४, पारिणामिकभावे-२, एवं ३२, अथवा उपशमभाव न लईए त्यारे ३१ होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद-उपशमभावे-सम्यक्त्व अने चारित्र, क्षायिकभावे-सम्यक्त्व, क्षयोपशमभावे-(अज्ञान ३, सम्यक्त्व, देशविरति ए ५ विना) १३, औदयिकभावे-लोभ, मनुष्यगति, असिद्धपणुं, शुक्लेश्या ए ४, पारिणामिकभावे-२, कुल २२ होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद-उपशमभावे-२, क्षायिकभावे-९, क्षयोपशमभावे-(अज्ञान ३, सम्यक्त्व, विरतिद्विक २, ए ६ विना) १२, औदयिकभावे-असिद्धपणुं, मनुष्यगति, शुक्लेश्या ए ३, पारिणामिकभावे २, कुल २८ होय.

१ देशविरति मार्गणाएं-मूलभाव ५. उत्तरभेद-उपशमभावे-सम्यक्त्व, क्षायिकभावे-सम्यक्त्व १, क्षयोपशमभावे-(अज्ञान ३, मनःपर्यवज्ञान, सर्वविरति ए ५ विना) १३, औदयिकभावे-(अज्ञान, मिथ्यात्व, गति २ ए ४ विना) १७, पारिणामिक भावे-(अभव्य विना) २ कुल ३४ होय.

१ अविरति मार्गणाएं-मूलभाव ५. उत्तरभेद-उपशमभावे सम्यक्त्व १, क्षायिकभावे-सम्यक्त्व १, क्षयोपशमभावे-(विरतिद्विक २, मनःपर्यवज्ञान १ ए तीन विना) १५, औदयिकभावे-२१, पारिणामिकभावे-३ कुल ४१ होय.

२ चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद—उपशमभावे—२, क्षायिकभावे—सम्यक्त्व अने चारित्र २, क्षयोपशमे—१८, औदयिके—२१, पारिणामिके—३ कुल ४६ होय.

३ प्रथमनी त्रण लेश्या मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद—उपशमभावे—सम्यक्त्व, क्षायिकभावे—सम्यक्त्व, क्षयोपशमभावे—१८, औदयिकभावे—(पांचलेश्या विना) १६, पारिणामिकभावे—३ कुल ३९ होय.

२ तेजो अने पद्मलेश्या मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद—उपशमभावे—सम्यक्त्व, क्षायिकभावे—सम्यक्त्व, क्षयोपशमभावे—१८, औदयिकभावे—(लेश्या ५, नरकगति ए छ विना) १५, पारिणामिकभावे—३ एवं ३८ होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद—उपशमभावे—२, क्षायिकभावे—९, क्षयोपशमभावे—१८, औदयिकभावे—(लेश्या ५, नरकगति ए छ विना) १५, पारिणामिकभावे—३ एवं ४७ होय.

१ भव्य मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद—(अभव्य विना) ५२ भाव होय.

१—अभव्य मार्गणाएं—(उपशम अने क्षायिक विना) मूलभाव ३,—उत्तरभेद—क्षयोपशमभावे—लब्धि ५, अज्ञान ३, दर्शन २ ए १० भाव, औदयिकभावे—२१, पारिणामिकभावे—(भव्य विना) २ एवं ३३ होय.

१ उपशम मार्गणाएं—मूलभाव ५. उत्तरभेद—उपशमभावे—२, क्षायिकभावे—सम्यक्त्व, क्षयोपशमभावे—(अज्ञान ३, क्षयोपशम सम्यक्त्व ए चार विना) १४, औदयिकभावे—(मिथ्यात्व, अज्ञान ए २ विना) १९, पारिणामिकभावे—(अभव्य विना) २, कुल ३८ अने कर्मप्रकृत्यादिकविवरण पंचमां क्षायिकसम्यक्त्व विना ३७ भेद गणेल छे.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—(उपशम अने क्षायिक विना) मूलभाव ३. उत्तरभेद—क्षयोपशमभावे—(अज्ञान ३ विना) १५, औदयिक भावे—उपर प्रमाणे १९, पारिणामिक भावे—उपर प्रमाणे २ कुल ३६ होय.

१ क्षायिक मार्गणाएं—मूल भाव ५. उत्तर भेद—उपशम भावे—चारित्र, क्षायिकभावे—९, क्षयोपशमभावे—(अज्ञान ३, क्षयोपशमसम्यक्त्व ए ४ विना) १४, औदयिक भावे—पूर्वनी पेठे १९, पारिणामिक भावे—२ कुल ४५ होय.

१ मिश्र मार्गणाए—(उपशम अने क्षायिक विना) मूल भाव ३. उत्तरभेद—

क्षयोपशमभावे-मिश्रज्ञान ३, दर्शन ३, दानादिलब्धि ५, मिश्रसमकित ए १२ होय. औदयिकभावे-पूर्ववत् १९, पारिणामिक भावे-२ कुल ३३ होय.

१ सास्वादन मार्गणाए—(उपशम अने क्षायिक विना) मूलभाव ३. उत्तरभेद-क्षयोपशमभावे-लब्धि ५, दर्शन २, अज्ञान ३, ए १०, औदयिकभावे-(मिथ्यात्व विना) २०, पारिणामिकभावे-२ कुल ३२ होय.

१ मिथ्यात्व मार्गणाए—(उपशम अने क्षायिक विना) मूलभाव ३. उत्तरभेद-क्षयोपशमभावे-उपर प्रमाणे १०, औदयिकभावे-२१, पारिणामिकभावे-३ कुल ३४ होय.

१ असंज्ञी मार्गणाए—(उपशम अने क्षायिक विना) मूलभाव ३. उत्तरभेद-क्षयोपशमभावे-लब्धि ५, अज्ञान २, दर्शन २ ए ९, औदयिकभावे-(गति २, वेद २, पद्म तथा शुक्ललेश्या २ ए छ विना) १५, पारिणामिकभावे-३, कुल २७ होय.

१ अनाहारी मार्गणाए—मूलभाव ५. उत्तरभेद-उपशमभावे-समकित, क्षायिकभावे-९, क्षयोपशम भावे-(मनःपर्यवज्ञान, विरतिद्विक २, चक्षुदर्शन ए चार विना) १४, औदयिकभावे-२१, पारिणामिकभावे-३ एवं ४८ भाव होय.

---

१० बासठमार्गणाने विषे सन्निपातिकभावनुं द्वार—

प्रथम सन्निपातिकना भेद—

१ द्विकसंयोगी, २ त्रिकसंयोगी, ३ चतुःसंयोगी, ४ पञ्चसंयोगी ए चार प्रकारें करी २६ भांगा उपजे तेमां २० भांगा तो शून्य छे अने क्षायिक पारिणामिक १, क्षायिक औदयिक पारिणामिक २, मिश्र औदयिक पारिणामिक ३, उपशम मिश्र औदयिक पारिणामिक ४, क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक ५, अने उपशम क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक ६, एवं छ भांगा जीवोने विषे पामिये हवे २६ भांगा कहे छे—

१ उपशमक्षायिक, २ उपशममिश्र, ३ उपशमऔदयिक, ४ उपशमपारिणामिक, ५ क्षायिकमिश्र, ६ क्षायिकऔदयिक, ७ क्षायिकपारिणामिक, ८ मिश्रऔदयिक, ९ मिश्रपारिणामिक, १० औदयिकपारिणामिक ए दश द्विक संयोगीना भेद जाणवा.

हवे त्रिकसंयोगीना दश भेद कहे छे—

१ उपशम क्षायिक मिश्र, २ उपशम क्षायिक औदयिक, ३ उपशम क्षायिक पारिणामिक, ४ उपशम मिश्र औदयिक, ५ उपशम मिश्र पारिणामिक, ६ उप-

शम औदयिक पारिणामिक. ७ क्षायिक मिश्र औदयिक. ८ क्षायिक मिश्र पारिणामिक. ९ क्षायिक औदयिक पारिणामिक. १० मिश्र औदयिक पारिणामिक.

चतुःसंयोगीना ५ भांगा कहे छे—

१ उपशम क्षायिक मिश्र औदयिक. २ उपशम क्षायिक मिश्र पारिणामिक. ३ उपशम क्षायिक औदयिक पारिणामिक. ४ उपशम मिश्र औदयिक पारिणामिक. ५ क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक.

पंचसंयोगीक–१ उपशम क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक. एवं द्विकसंयोगीनां १०, त्रिकसंयोगीनां १०, चतुःसंयोगीनां ५ अने पंचसंयोगीनो १ ए सर्व मिली २६ भांगा जाणवा.

द्विकसंयोगी नवमो भांगो सिद्धमां होय छे १, त्रिकसंयोगी नवमो भांगो केवलीने विषे १३–१४ गुणठाणे होय छे २, त्रिकसंयोगी दशमो भांगो चारे गति मध्ये होय ३, चतुःसंयोगीनो चोथो अने पांचमो भांगो चारे गति मध्ये होय ५, अने पंचसंयोगी एक भांगो मनुष्यने विषे उपशम श्रेणीवाला क्षायिकसमकितीने आठमाथी अगीयारमां गुणठाणा लगण होय ६.

ए छ भेदना चारगति आश्रयी पंदरभांगा सन्निपातिकनां कहे छे–

मिश्र औदयिक पारिणामिक १, उपशम मिश्र औदयिक पारिणामिक २, क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक ३ ए त्रण भांगा देवगति आदि चारगतिना साथे गुणतां सन्निपातिकनां १२ भांगा थया, तथा एक क्षायिक पारिणामिक ए द्विकसंयोगीक भांगो सिद्धनो ए १३, क्षायिक औदयिक पारिणामिक ए भांगो केवलीनो १४, अने उपशम क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक ए पंचसंयोगी एक भांगो उपशम श्रेणीवालाने होय १५ ए सर्व मली १५ भांगा थाय छे.

१ नरकगति मार्गणाए—त्रिकसंयोगीनो दशमो भेद १, चतुःसंयोगीनो चोथो भेद अने पांचमो भेद एवं ३ भांगा होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए–त्रिकसंयोगीनो दशमो भेद १, चतुःसंयोगीनो चोथो अने पांचमो भेद एवं त्रण भांगा होय.

१ देवगति मार्गणाए—पण उपरोक्त त्रण भेदना भांगा जाणवा.

१ मनुष्यगति मार्गणाए—त्रिकसंयोगीनो नवमो अने दशमो, तथा चतुःसंयोगीनो चोथो अने पांचमो, तथा पंचसंयोगिक एवं पांच भेदना ५ भांगा होय.

९ एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पृथ्वी, अप् तेउ, वायु, वनस्पतिकाय ए नव मार्गणाएं—त्रिकसंयोगीनो एकज दशमा भेदनो १ भांगो पामिये.

८ पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, मनयोग, वचनयोग, काययोग, भव्य, संज्ञी, आहारी ए आठ मार्गणाएं—पूर्वोक्त चारगतिना पंदरभेद मांहेलो एक सातमो द्विकसंयोगी मिश्रनो विना बाकीना ९ भेद ना चौद भांगा होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—(नरकगति विना) त्रणगति होय छे माटे तिर्यंचगतिने विषे कह्या प्रमाणे ३ भेद, तथा देवगतिना त्रण भेद अने मनुष्यगतिना पांच भेद ते मध्ये त्रिकसंयोगीक नवमो भेद न लिजे कारण ए भेद तो केवलीने होय अने पुरुषवेदतो नवमा गुणठाणा लगण उदय होय छे माटे ए एक भेद विना बाकी चार भेद, ऊपरोक्त छ भेद साथे मेलवतां १० भेदनां भांगा होय तथा कर्मप्रकृत्यात्मक यंत्रमां त्रणवेद मार्गणामां दश दश भेद लीधा छे ते देवांगना तथा तिर्यंचणी अने मनुष्यणीमां क्षायकसमकितने गण्यो छे तथा क्षायिक युगलिक तिर्यंचमां नपुंसकवेद गणे अथवा संख्यात वर्षायु तिर्यंच नपुंसकमां क्षायिक समकित गणे तो त्रण वेदमां दश दश भेद होय. नहीं तो एकज पुरुषवेदमां दश भेद होय छे माटे स्त्री अने नपुंशक ए बे मार्गणाने विषे बे मत छे.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—त्रिकसंयोगीक दशमो भेद नरक विना त्रणगतिनी स्त्रीमां छे माटे ए ३ भांगा लीजे तथा चतुःसंयोगीक चोथो भेद पण त्रण गतिनी स्त्रीमां छे माटे ए पण ३ भांगा लीजे तथा चतुःसंयोगीक पांचमो भेद एक मनुष्यणीमां लीधो कारण बीजी बे गतिना स्त्रीवेदमां क्षायिक समकित न गण्युं ते भणी एकज मनुष्यणीनो भांगा लीधो. तथा पंचसंयोगीकनो एक भांगो तो स्त्री मनुष्यणी क्षायिक समकितवंत उपशम श्रेणी आरंभे तेमने होय बीजीने नहीं. एवं त्रिकसंयोगीक ३, चतुःसंयोगीक ४, पंचसंयोगीक १ ए आठ भांगा यंत्रपूर्वककर्मादिविचारमां कहेल छे.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—नरक, तिर्यंच, मनुष्य ए त्रणगति छे माटे त्रिकसंयोगी दशमो भेद त्रणगतिमां छे तेना त्रण भांगा थाय तथा चतुःसंयोगी चोथो भेद पण त्रण गतिमां होय तेना पण त्रण भांगा, तथा चतुःसंयोगीक पांचमो भेद. मनुष्य नपुंसकवेदी अने नरक ए बे गतिना क्षायकसमकितीमां होय ते बे गतिना बे भेदना बे भांगा होय तिर्यंच नपुंसकवेदीने विषे क्षायकसमकित नथी माटे २ भांगा कह्या तथा क्षायिकसमकितवंत नपुंसक मनुष्य उपशमश्रेणी करे तेने उपशम क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक ए पंच संयोगीक एकज भांगो होय एवं सर्व मली ९ भांगा होय छे.

८ क्रोध, मान, माया, लोभ, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन ए आठ

मार्गणाएं–त्रिकसंयोगी दशमा भेदना चारे गतिनां चार भांगा ४, तथा चतुःसंयोगी चोथा भेदना पण चारे गतिना चार भांगा ८, तथा चतुःसंयोगी पांचमा भेदना चारे गतिना चार भांगा १२, ए बार भांगा तो चारे गतिना मली होय अने तेरमो एक भांगो पंचसंयोगीनो मनुष्यनेज होय बीजी त्रणगतिमां नथी एवं १३ भांगा होय.

२ अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन मार्गणाएं–उपरोक्त आठमार्गणाने विषे तेर भांगा कह्या ते थकी चतुःसंयोगी पांचमो भेद तिर्यंच युगलिक क्षायकसमकितीने अवधिज्ञान अने दर्शन नथी माटे तिर्यंचगति आश्रयी एकवाद कीजे त्यारे १२ भांगा पामिये.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, अने छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं–एकज मनुष्यगति छे माटे त्रिकसंयोगी दशमा भेदनो १ भांगो तथा चतुःसंयोगीना चोथा अने पांचमां भेदना बे भांगा होय तथा पंचसंयोगीना भेदनो १ भांगो होय एवं ४ भांगा पामिये.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–द्विकसंयोगी सातमो सिद्धनो, तथा क्षायिक औदयिक पारिणामिक ए त्रिकसंयोगीनो नवमो भेद एवं २ भांगा पामिये.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं–त्रिकसंयोगी दशमां भेदनो १ भांगो, तथा चतुःसंयोगी पांचमा भेदनो १ भांगो ए २ भांगा कह्या अने बीजे पक्षे–उपशमसमकित गणे तो चतुःसंयोगीना चोथा भेदनो पण १ भांगो गणीजे तो ३ भांगा कहेवा.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–उपशम अथवा क्षपकश्रेणीएं वर्त्ततां होय माटे चतुःसंयोगी चोथा भेदनो एक भांगो अने पांचमा भेदनो एक भांगो, तथा पंचसंयोगी भेदनो १ भांगो एवं त्रण भांगा होय.

८ त्रणअज्ञान, क्षयोपशम, मिश्र, शास्वादन, मिथ्यात्व अने अभव्य ए आठ मार्गणाएं–चारगति होय छे माटे त्रिकसंयोगीना दशमा भेदना चारेगतिना ४ भांगा होय.

१ यथाख्यातचारित्र मार्गणाएं–द्विकसंयोगी सातमां भेदनो १ भांगो, त्रिकसंयोगी नवमां भेदनो एक भांगो २, चतुःसंयोगी चोथा अने पांचमा भेदना बे भांगा ४, अने पंचसंयोगीक भेदनो एक भांगो ५, एवं सर्व ५ भांगा होय.

१ देशविरति मार्गणाएं–त्रिकसंयोगी दशमां भेदना मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गतिनां बे भांगा २, तथा चतुःसंयोगी चोथा भेदना बे गतिना बे भांगा ४, तथा चतुःसंयोगी पांचमा भेदनो मनुष्यगतिनोज एक भांगो होय कारण तिर्यंचने तो क्षायिक समकित असंख्यवर्षायु युगलिकने होय परंतु तेने विषे देशविरतिपणो नथी अविरति छे माटे तिर्यंचमां ए भांगो देशविरतिपणे न होय एवं ५ भांगा थाय.

१ अविरति मार्गणाएं–त्रिकसंयोगी दशमा भेदना चारे गतिना चार भांगा, चतुःसंयोगी चोथा अने पांचमा भेदना चार चार गतियें गणतां बे भेदनां आठ भांगा एवं त्रण भेदना मली १२ भांगा होय.

३ कृष्ण, नील, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं–त्रिकसंयोगी दशमा भेदना चारे गतिना चार भांगा ४, तथा चतुःसंयोगी चोथा भेदना पण चारे गतिना चार भांगा ८, तथा चतुःसंयोगी पांचमा भेदना (एक देवगति विना) त्रणगतिना त्रण भांगा ११, एवं नील अने कापोत बे लेश्यामां ११ भांगा छे अने कृष्णलेश्यामां चतुःसंयोगी पांचमा भेदनां मनुष्य अने नरक ए बे गतिना बे भांगाज गणीजे त्यारे १० भांगा उपजे. कारण तिर्यचगतिनो भांगो न होय एटले असंख्यवर्षायु तिर्यचमां क्षायक समकित होय छे तेने ए कृष्णलेश्या न होय माटे तिर्यचगति विना बे गतिना १० भांगाज पामिये.

२ तेजो अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाएं–त्रिकसंयोगी दशमा भेदना (एक नरकगति विना) त्रण भांगा होय. तथा चतुःसंयोगी चोथा अने पांचमां भेदना त्रण त्रण भांगा गणतां ६ भांगा त्रिकसंयोगी त्रण भांगा समेत ९ भांगा छे.*

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं–त्रिकसंयोगी नवमा भेदनो मनुष्य केवलीनो एक भांगो, तथा त्रिकसंयोगी दशमा भेदना (नरक विना) त्रणगतिनां त्रण भांगा ४, तथा चतुःसंयोगी चोथा भेदना पण त्रणगतिना त्रण भांगा ७, चतुःसंयोगी पांचमा भेदना कर्मप्रकृत्यात्मकयंत्र मध्ये तो ए मार्गणाना कोठामां त्रणगति मांडेली छे अने यंत्रपूर्वक कर्मादिविचारना यंत्रमां पद्म अने शुक्ललेश्या ए बे मध्ये ए पांचमा भेदना कोठामां बे गतिना बेज भांगा छे अहीं मनुष्य अने देवना क्षायकसमकितीने पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या छे अने तिर्यच क्षायकसमकितीमां ए बे लेश्या न गणी हशे माटे बे बे गतिना भांगा लख्या छे ए बहु श्रुतगम्य जाणवा, तथा पंचसंयोगी १ मनुष्यनो एक भांगो एवं १० भांगा थाय छे.

परंतु कर्मप्रकृत्यात्मक यंत्र प्रमाणे त्रण त्रण गतिने गणतां ए मार्गणाएं पांचमा चतुःसंयोगी भेदना पण त्रण भांगा होय, तथा पंचसंयोगीक भेदना एक मनुष्यश्रेणीवद्दनो एक भांगो एवं सर्वे मली ११ भांगा थाय अथवा पक्षांतरे–१० पण भांगा उपरोक्त प्रमाणे थाय.

---

* भावनगर 'जैनधर्मप्रसारकसभा'ना तरफथी छपायेल 'यंत्रपूर्वककर्मादिविचार' नामक किताबमां पृष्ट २४८ मां यंत्रना कोठामां पद्मलेश्यामां सान्निपातिक भावनां ९ भांगा कह्या छे. ते क्षायिक युगलिक तिर्यचमां पद्मलेश्याज गणी होय तेम लागे छे.

१ उपशमसमकित मार्गणाए–चतुःसंयोगी चोथा भेदना चारेगतिना ४ भांगा होय.

१ क्षायिकसमकित मार्गणाए–द्विकसंयोगी सातमा भेदनो सिद्ध परमात्माने विषे क्षायिक समकित छे माटे १ भांगो लीजे तथा त्रिकसंयोगी नवमा भेदनो केवलीनो मनुष्यगति भणी एकज भांगो लीजे तथा चतुःसंयोगी पांचमा भेदना चारेगतिना चार भांगा. तथा पंचसंयोगी भेदनो क्षायिक सम्यक्त्वी उपशमश्रेणी चढेला मनुष्यनो एक भांगो एवं ७ भांगा पामिये.

१ असंज्ञी मार्गणाए–त्रिकसंयोगी दशमा भेदना मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गतिना बे भांगा होय.

१ अनाहारी मार्गणाए–द्विकसंयोगी सातमां भेदनो सिद्ध परमात्मानो एक भांगो लीजे, तथा त्रिकसंयोगीनो नवमो भेद केवलसमुद्घात समयनो एक भांगो लीजे, तथा त्रिकसंयोगी दशमां भेदना चारगतिना चार भांगा, तथा चतुःसंयोगी पांचमां भेदना पण चारगतिना चार भांगा, तथा चतुःसंयोगी चोथो जे उपशमसमकिती फगत् उपशमश्रेणीये कोई एक जीव मरीने अनुत्तरदेव मध्यें उपजे तेमने देवपणें उपजतां पहेली भवांतराले अनाहारक पणो होय ते भणि ए एक भांगो कह्यो अन्यथा चोथा भेदना बीजी गतियोना भांगा न उपजे एवं ११ भांगा होय. बीजे क्यांहि पण उपशमसमकितपणें मरण न हुवे माटे

---

११ बासठमार्गणाने विषे ध्रुवबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम ध्रुवबंधिनी प्रकृतिना नाम–

१ मतिज्ञानावरणीय, २ श्रुतज्ञानावरणीय, ३ अवधिज्ञानावरणीय, ४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय, ५ केवलज्ञानावरणीय, ६ चक्षुदर्शनावरणीय, ७ अचक्षुदर्शनावरणीय, ८ अवधिदर्शनावरणीय, ९ केवलदर्शनावरणीय, १० निद्रा, ११ निद्रानिद्रा, १२ प्रचला, १३ प्रचलाप्रचला, १४ थीणद्धी, १५ अनंतानुबंधीक्रोध, १६ अनंतानुबंधीमान, १७ अनंतानुबंधीमाया, १८ अनंतानुबंधीलोभ, १९ अप्रत्याख्यानीक्रोध, २० अप्रत्याख्यानीमान, २१ अप्रत्याख्यानीमाया, २२ अप्रत्याख्यानीलोभ, २३ प्रत्याख्यानीक्रोध, २४ प्रत्याख्यानीमान, २५ प्रत्याख्यानीमाया, २६ प्रत्याख्यानीलोभ, २७ संज्वलनक्रोध, २८ संज्वलनमान, २९ संज्वलनमाया, ३० संज्वलनलोभ, ३१ मिथ्यात्वमोहनीय, ३२ भयमोहनीय, ३३ दुगंछामोहनीय, ३४ वर्ण, ३५ गंध, ३६ रस, ३७ स्पर्श,

३८ उपघात, ३९ निर्माण, ४० अगुरु, ४१ तैजस, ४२ कार्मण, ४३ दानांतराय, ४४ लाभांतराय, ४५ भोगांतराय, ४६ उपभोगांतराय, ४७ वीर्यांतराय, ए ४७ ध्रुवबंधिनी प्रकृति जाणवी.*

४४ गतिचार, इंद्रियपांच, कायाछे, योगत्रण, वेदत्रण, कषायचार, अज्ञानत्रण, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अविरति, लेश्याछे, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ४४ मार्गणाए-ध्रुवबंधिनी ४७ प्रकृति होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धि ए ४ मार्गणाए-अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४, मिथ्यात्व, स्त्यानर्द्धित्रिक ३ ए १५ विना ३२ होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, ए १४ प्रकृति होय.

३ यथाख्यात, केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाए-अबंधी जाणवी.

१ देशविरति मार्गणाए—अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानी ४, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, मिथ्यात्व १, ए बार विना ३५ होय.

८ मतिश्रुत अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिश्र ए ८ मार्गणाए-अनंतानुबंधी ४, मिथ्यात्व, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, ए ८ विना ३९ होय.

१ सास्वादन मार्गणाए—मिथ्यात्व विना ४६ होय.

---

१२ बासठमार्गणाने विषे अध्रुवबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम अध्रुवबंधिनी प्रकृतिना नाम—

वेदनीय—साता १, असाता २.

मोहनीयकर्म—हास्य १, रति २, शोक ३, अरति ४, पुरुषवेद ५, स्त्रीवेद ६, अने नपुंसकवेद ७.

आयुकर्म—देवायु १, मनुष्यायु २, तिर्यंचायु ३ अने नरकायु ४.

नामकर्म—देवगत्यादि ४, एकेंद्रियादि जाति पांच ९, औदारिकादि शरीर त्रण १२, औदारिकादि उपांग त्रण १५, वज्रऋषभनाराचादि संघयण छ २१,

---

* ए कर्मप्रकृति [illegible] ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहेवाय छे

समचतुस्रादि संस्थान छे २७, देवानुपूर्वी २८, मनुष्यानुपूर्वी २०, तिर्यंचानुपूर्वी ३०, नरकानुपूर्वी ३१, शुभविहायोगति ३२, अशुभ विहायोगति ३३, पराघात ३४, उच्छ्वास ३५, आताप ३६, उद्योत ३७, तीर्थंकर ३८, 'त्रस ३९, बादर ४०, पर्याप्त ४१, प्रत्येक ४२, स्थिर ४३, शुभ ४४, सौभाग्य ४५, सुस्वर ४६, आदेय ४७, यशःकीर्त्ति ४८' ए त्रस दशक. स्थावर ४९, सूक्ष्म ५०, अपर्याप्त ५१, साधारण ५२, अस्थिर ५३, अशुभ ५४, दौर्भाग्य ५५, दुस्वर ५६, अनादेय ५७, अयशःकीर्त्ति ५८.

गोत्रकर्म—नीचगोत्र १, ऊंचगोत्र २. एवं वेदनीय २, मोहनीय ७, आयुनी ४, नामनी ५८, गोत्रनी २ ए सर्वे मली ७३ प्रकृति अध्रुवबंधिनी जाणवी.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, चक्षुदर्शन, त्रसकाय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग, त्रणवेद, चारकषाय, अचक्षुदर्शन, भव्य, संज्ञी अने आहारी ए १८ मार्गणाएं–७३ होय.

१ नरकगति मार्गणाएं—जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, आताप १ ए १९ विना ५४ होय.

१ देवगति मार्गणाएं—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, आहारकद्विक २ ए १६ विना ५७ होय.

४ तिर्यंचगति अने त्रणअज्ञान ए ४ मार्गणाएं–आहारकद्विक २ अने जिननाम १ ए त्रण विना ७० होय.

७ एकेंद्रिय, त्रण विकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए सात मार्गणाएं–प्रत्येके देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, जिननाम १ ए ११ विना ६२ होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं–मनुष्यत्रिक ३, ऊंचगोत्र १, एकेंद्रियमांनी ११ एवं १५ विना ५८ होय.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशम, क्षायिक ए छे मार्गणाएं–तिर्यंचत्रिक ३, नरकत्रिक ३, दुर्भगत्रिक ३, जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, (प्रथम विना) संघयण ५, (प्रथम विना) संस्थान ५, आताप १, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, द्योत १, अशुभविहायोगति १ अने नीचगोत्र १ ए ३३ विना ४० होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धि ए चार मार्गणाएं—मतिज्ञाननी परें ३३ अने मनुष्यत्रिक ३, वज्रर्षभनाराच १, औदारिकद्विक २ ३९. विना ३४ प्रकृति होय.

४

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात मार्गणाएं—एकज शातावेदनीय होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—शातावेदनीय, ऊंचगोत्र, यशःकीर्ति ए त्रण होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—मतिज्ञाननी परें ३३ अने मनुष्यत्रिक ३, वज्रर्षभनाराचसंघयण, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २ ए ४१ विना ३२ होय.

४ अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए चार मार्गणाएं—आहारकद्विक २ विना ७१ होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३ ए ९ विना ६४ प्रकृति होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—तेजोलेश्यानी परें ९ अने एकेंद्रियजाति, स्थावर, आतप ए १२ विना ६१ होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—पद्मलेश्यानी परें १२ अने तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत ए १६ विना ५७ प्रकृति होय.

३ अभव्य, मिथ्यात्व अने असंज्ञी ए त्रण मार्गणाएं—आहारकद्विक २ अने जिननाम ए ३ विना ७० होय.

१ उपशम मार्गणाएं—मतिज्ञाननीपरें ३३ अने देवायु, मनुष्यायु ए ३५ विना ३८ प्रकृति होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—मतिज्ञाननी परें ३३ अने देवायु, मनुष्यायु, आहारकद्विक २, अने जिननाम ए ३८ विना ३५ प्रकृति होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, स्थावरचतुष्क ४, जाति ४, आतप, हुंडकसंस्थान, छेवटुंसंघयण, नपुंसकवेद, आहारकद्विक २ अने जिननाम ए १८ विना ५५ प्रकृति होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—आयु ४, नरकद्विक २, आहारकद्विक २ ए ८ विना ६५ प्रकृति होय.

---

१३ बासठमार्गणाने विषे ध्रुवोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम ध्रुवोदयिनी प्रकृतिना नाम—

ज्ञानावरणीयनी ५, अंतरायनी ५, चक्षुदर्शनावरणीय, अचक्षुदर्शना०, अवधिदर्शना०, केवलदर्शना० ए चार दर्शनावरणीयकर्मनी. तथा मिथ्या-

त्वमोहनीय अने 'निर्माण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरुलघु, तैजस, कार्मण, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श' ए नामकर्मनी १२ एवं २७ ध्रुवोदयिनी प्रकृति जाणवी.

४४ गति चार, इंद्रिय पांच, काय छ, योगत्रण, वेदत्रण, कषायचार, अज्ञानत्रण, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, लेश्या छ, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ४४ मार्गणाए—२७ प्रकृति होय.

१६ प्रथमना ज्ञान चार, (अविरति विना) संयम छ, अवधिदर्शन, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिश्र, सास्वादन ए १६ मार्गणाए—मिथ्यात्व विना २६ होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, मिथ्यात्व ए १५ विना १२ प्रकृति होय.

---

६२ बासठमार्गणाने विषे अध्रुवोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम अध्रुवोदयिनी प्रकृतिना नाम—

शाता, अशाता ए बे वेदनीयनी. अनंतानुबंधिक्रोधादि चार, अप्रत्याख्यानीक्रोधादि चार, प्रत्याख्यानीक्रोधादि चार, संज्वलनक्रोधादि ४, ए १६ कषाय. तथा हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा (दुगंछा), पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद ए नव नोकषाय. सम्यक्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय. देवायु आदि आयुकर्मनी चार, गतिचार, जातिपांच, औदारिकद्विक, वैक्रियद्विक, आहारकद्विक एवं त्रणद्विकनी ६ प्रकृति. वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलिका अने छेवट्टुं ए छ संघयण. तथा समचतुरस्र, न्यग्रोध, सादि, कुब्ज, वामन, हुंडक ए छ संस्थान. आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, पराघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, तीर्थंकर अने उपघात ए ६ प्रकृति प्रत्येकनी. त्रसदशक अने स्थावरदशक ए वीस मांहेथी स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ ए चार ध्रुवोदयिप्रकृति विना १६ प्रकृति एवं सर्वे नाम कर्मनी ५५ प्रकृति. नीचगोत्र १, उच्चगोत्र १, दर्शनावरणीयनी ५ निद्रा एवं सर्वे मलीने ९५ प्रकृति अध्रुवोदयिनी जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाए—मनुष्य, देव अने तिर्यंच ए ३ आयुष्य, उच्चगोत्र, स्त्रीपुरुषवेद, शरीर २, अंगोपांग २, जाति ४, गति ३, संघयण ६, संस्थान ५,

आनुपूर्वी ३, शुभविहायोगति, जिननाम, स्थावरचतुष्क ४, आताप, उद्योत, सुभगचतुष्क ४ ए ४३ विना ५२ होय.

१ देवगति मार्गणाएं—शरीर २, अंगोपांग २, आनुपूर्वी ३, गति ३, आयु ३, जाति ४, जिननाम, संघयण ६, संस्थान ५, नीचगोत्र, नपुंसकवेद, स्थावरचतुष्क ४, अशुभविहायोगति, आताप, दुस्वर, उद्योत ए ३९ विना ५६ होय.*

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—वैक्रियाष्टक ८, तिर्यंचत्रिक ३, जाति ४, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, आताप, उद्योत ए २० विना ७५ होय.†

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—वैक्रियाष्टक ८, मनुष्यत्रिक ३, आहारकद्विक २, ऊंचगोत्र, जिननाम ए १५ विना ८० होय.§

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं—वैक्रियाष्टक ८, मनुष्यत्रिक ३, ऊंचगोत्र, वेद २, जाति ४, आहारकद्विक २, संघयण ६, संस्थान ५, औदारिकअंगोपांग, विहायोगति २, समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय, जिननाम, सुस्वर, दुस्वर, त्रस, शुभग, आदेय ए ४२ विना ५३ होय.‡

३ विकलेंद्रिय मार्गणाएं—वैक्रियाष्टक ८, मनुष्यत्रिक ३, ऊंचगोत्र, वेद २, जाति निजनीप्रतिपक्षिनी ४, आहारकद्विक २, संघयण ५, संस्थान ५ शुभविहायोगति, जिननाम, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, आताप, आदेय, सौभाग्य, समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय ए ४० विना ५५ होय.

१ पंचेंद्रिय मार्गणाएं—जाति ४, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, आताप ए ८ विना ८७ प्रकृति होय.

१ पृथ्वीकाय मार्गणाएं—एकेंद्रियनीपरें ४२ अने साधारण ए ४३ विना ५२ होय.

१ अप्काय मार्गणाएं—पृथ्वीकायनीपरें ४३ अने आताप ए ४४ विना ५१ होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय मार्गणाएं—अप्कायनीपरें ४४ अने यशःकीर्ति, उद्योत ए ४६ विना ४९ होय. §

१ वनस्पतिकाय मार्गणाएं—पृथ्वीकायनीपरें ४३, साधारण नांखी आताप काढिये त्यारे ४३ विना ५२ होय.

* पक्षांतरे-देवनामां उद्योतनामकर्मनो उदय होवाथी ५७ प्रकृतिनो उदय होय.

† मनुष्यगतिमां वैक्रियद्विक अने उद्योत समेत ७८ प्रकृतिनो उदय होय.

§ तिर्यंचमां वैक्रियद्विक समेत ८२ प्रकृतिनो उदय होय.

‡ एकेंद्रियमां वैक्रियशरीर समेत ५४ प्रकृतिनो उदय होय.

§ वायुकायमां वैक्रियशरीर समेत ५० प्रकृतिनो उदय होय.

१ त्रसकाय मार्गणाएं—स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, आताप, एकेंद्रियजाति ए ५ विना ९० प्रकृति होय.

१ मनोयोग मार्गणाएं—जाति ४, आनुपूर्वी ४, स्थावरचतुष्क ४, आताप ए १३ विना ८९ प्रकृति होय.

१ वचनयोग मार्गणाएं—स्थावरचतुष्क ४, एकेंद्रियजाति, अनुपूर्वी ४, आताप ए १० विना ८९ प्रकृति होय.

२ काययोग अने भव्य मार्गणाएं—ध्रुवोदयिनी सर्वे ९९ प्रकृति होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, नरकत्रिक ३, जातिचतुष्क ४, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, आताप अने जिननाम ए १४ विना ८१ नो उदय होय.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—पुरुषवेद, नपुंसकवेद, आहारकद्विक २ ए चार अने पुरुषवेदमां कहेली १२ एवं १६ विना ७९ नो उदय होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—देवत्रिक ३, जिननाम, पुरुषवेद, स्त्रीवेद ए ६ विना ८९ नो उदय होय.

१ क्रोध मार्गणाएं–मान ४, माया ४, लोभ ४ अने जिननाम ए १३ विना ८२ होय.

१ मान मार्गणाएं–क्रोध ४, माया ४, लोभ ४ अने जिननाम ए १३ विना ८२ होय.

१ माया मार्गणाएं–क्रोध ४, मान ४, लोभ ४ अने जिननाम ए १३ विना ८२ होय.

१ लोभ मार्गणाएं–क्रोध ४, मान ४, माया ४ अने जिननाम ए १३ विना ८२ होय.

२ मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान ए बे मार्गणाएं–जाति ४, स्थावर ४, अनंतानुबंधी ४, जिननाम, आताप, मिश्रमोहनीय ए १५ विना ८० होय.

२ अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए बे मार्गणाएं—मतिज्ञाननीपरें १५ अने तिर्यंचानुपूर्वी ए १६ विना ७९. पक्षांतरे–ऋजुगतिनी अपेक्षायें तिर्यंचानुपूर्वीनो उदय [...]खवतां ८० प्रकृतिनो उदय मानवुं.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं—जाति ४, [स्था]वर ४, अनंतानुबंधि ४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४, आनुपूर्वी ४, जिन[ना]म, आताप, उद्योत, तिर्यंचगति, तिर्यंचायु, नरकगति, नरकायु, देवद्विक २, वैक्रिय[...]२, मिश्र, दुर्भग, अनादेय, अयशःकीर्ति, नीचगोत्र ए ४० विना ५९. पक्षांतरे–[...]यद्विक समेत ५७ होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—त्रसअष्टक ८, उंचगोत्र, जिननाम, [...]गति, मनुष्यायु, पंचेंद्रियजाति, वेदनीय २, संघयण, संस्थान ६, विहायोगति २,

औदारिकद्विक २, पराघात, उच्छ्वास, उपघात, दुस्वर ए ३० होय.

२ मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान ए बे मार्गणाएं—आहारकद्विक २, जिननाम, मिश्रमोहनीय, समकितमोहनीय ए ५ विना ९० होय.

१ विभंगज्ञान मार्गणाएं—जाति ४, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, आताप, आहारकद्विक २, जिननाम, समकितमोहनीय, मनुष्य अने तिर्यंचनी आनुपूर्वी २, अपर्याप्त ए १५ विना ८० अने जो अनुपूर्वी न काढिये तो १३ विना ८२ प्रकृति होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—मनःपर्यवज्ञाननीपेरें ४० अने आहारकद्विक २, स्त्रीवेद ए ४३ विना ९२ अने जो संघयण ५ काढिये तो ४८ विना ४७ होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—आहारकद्विक २, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, छेला संघयण ३, समकितमोहनीय, हास्यादिषट्क ६, वेद ३, संज्वलनादि ३ ए २१ मां मनःपर्यवज्ञाननी ४० सहित करवाथी ६१ विना ३४ होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—सूक्ष्मसंपरायनो ६१ मांथी लोभ काढी जिननाम भेलवाथी ६१ विना ३४ होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—जाति ४, स्थावर ४, अनंतानुबंधी ४, आनुपूर्वी ४, देवगति, देवायु, नरकगति, नरकायु, वैक्रियद्विक २, दुर्भगत्रिक ३, आहारकद्विक २, जिननाम, बीजा कषायनी ४, आताप, मिश्रमोहनीय ए ३४ विना ६१ प्रकृति होय.

१ अविरति मार्गणाएं—जिननाम, आहारकद्विक २ ए ३ विना ९२ होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—जाति ३, स्थावर ४, आनुपूर्वी ४, जिननाम अने आताप ए १३ विना ८२ होय.

१ अचक्षुदर्शन मार्गणाएं—जिननाम विना ९४ होय.

३ प्रथमनो त्रण लेश्या मार्गणाएं—जिननाम, आहारकद्विक २ ए ३ विना ९२ अने एकलुं जिननाम काढिये त्यारे १ विना ९४ होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, जिननाम, आताप ए ११ विना ८४ होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—तेजोलेश्यानी ११ अने एकेंद्रियजाती, स्थावर ए १३ विना ८२ प्रकृति होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—पद्मलेश्यानी १३ मांथी जिननाम रहित करवाथी १२ विना ८३ प्रकृति होय.

२ अभव्य अने मिथ्यात्व ए बे मार्गणाए—जिननाम, आहारकद्विक २, समकि-
तमोहनीय, मिश्रमोहनीय ए ५ विना ११७ होय.

१ उपशम मार्गणाए—जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, आनुपूर्वी ४, अनंतानुबंधी ४,
आहारकद्विक २, जिननाम, आतप, समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय ए २२ विना ७३.
मतांतरे–देवानुपूर्वीनो उदय गणतां ७४ प्रकृति पण होय.

१ क्षयोपशम मार्गणाए—जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, अनंतानुबंधी ४, जिन-
नाम, आतप, मिश्रमोहनीय ए १८ विना ८० होय.

१ क्षायिक मार्गणाए—जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, अनंतानुबंधी ४, आतप,
(पहेला विना) संघयण ५, समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय ए २० विना ७८ होय.

१ मिश्रमार्गणाए—जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, अनंतानुबंधी ४, जिननाम, आ-
हारकद्विक २, समकितमोहनीय, आतप, आनुपूर्वी ४ ए २१ विना ७४ होय.

१ सास्वादन मार्गणाए—सूक्ष्मत्रिक ३, आतप, समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय,
जिननाम, आहारकद्विक २, नरकानुपूर्वी ए १० विना ८९ होय.

१ संज्ञी मार्गणाए—एकेंद्रियनीपरे ८ विना ८७ अने जिननाम विना ८६ होय.

१ असंज्ञी मार्गणाए—वैक्रियाष्टक ८, संघयण ५, संस्थान ५, समकितमोहनीय,
मिश्रमोहनीय, आहारकद्विक २, जिननाम, वेद २, ऊंचगोत्र, शुभ, आदेय, शुभविहा-
योगति ए २९ विना ९६ होय. मतांतरे–संघयण ५, संस्थान ५, शुभग, आदेय
अने शुभविहायोगति ए १३ युक्त ७९ जाणवुं.

१ आहारी मार्गणाए—आनुपूर्वी ४ विना ११ होय.

१ अनाहारी मार्गणाए—संघयण ६, संस्थान ६, आहारकद्विक २, वैक्रियद्वि-
क २, औदारिकद्विक २, विहायोगति २, निद्रा ५, पराघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत,
प्रत्येक, सुस्वर, उपघात, साधारण, दुस्वर, मिश्रमोहनीय ए ३२ विना ९० होय.

---

१५ बासठमार्गणाने विषे ध्रुवसत्ता प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम एकसो छावीश प्रकृतिनी ध्रुवसत्ता ओळखवा माटे सामान्यपणे
एकसो अडतालीश प्रकृतिनी सत्ता होय तेना नाम–

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'मिथ्यात्व १, मिश्र २ अने
समकित ३' ए त्रण दर्शनमोहनीयनी अने 'सोळ कषाय १६, तथा नव नोक-
षाय ९' ए चारित्रमोहनीयनी २५ एवं मोहनीयकर्मनी २८, आयुनी ४ एवं ४८.

गति ४, जाति ५, 'औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, अने कार्मण' ए ५ शरीर. 'औदारिक, वैक्रिय अने आहारक' ए त्रण उपांग, औदारिकादि पांच शरीरना नामथीज बंधन ५, तथा संघातन ५, संघयण ६, संस्थान ६, श्वेतादिवर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८, देवादि आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, 'पराघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, अगुरुलघु, तीर्थंकर, निर्माण, उपघात' ए प्रत्येकाष्टक ८. त्रसदशक १०, अने स्थावरदशक १० एवं सर्वे ९३ प्रकृति नाम कर्मनी. नीचगोत्र, ऊंचगोत्र ए बे गोत्रकर्मनी. अंतरायकर्मनी ५. एवं १४८ प्रकृतिनी सत्ता सामान्यपणे होय. अथवा प्रकारान्तरे—औदारिकादि ५ बंधनने ठेकाणे औदारिक औदारिक बंधन १, औदारिक तैजस बंधन २, औदारिक कार्मण बंधन ३, औदारिक तैजस कार्मण बंधन ४, वैक्रिय वैक्रिय बंधन ५, वैक्रिय तैजस बंधन ६, वैक्रिय कार्मण बंधन ७, वैक्रिय तैजस कार्मण बंधन ८, आहारक आहारक बंधन ९, आहारक तैजस बंधन १०, आहारक कार्मण बंधन ११, आहारक तैजस कार्मण बंधन १२, तैजस तैजस बंधन १३, तैजस कार्मण बंधन १४, कार्मण कार्मण बंधन १५ एवं १५ बंधन गणिये तो १५८ प्रकृतिनी सत्ता होय. आमां अध्रुवसत्तानी २२ अथवा २८ प्रकृति विना १२६ अथवा १३० प्रकृति ध्रुवसत्तानी जाणवी.

हवे ध्रुवसत्तानी १२६ प्रकृतिना नाम—

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, समकितमोहनीय अने मिश्रमोहनीय विना २६, नीचगोत्र, अंतरायकर्म ५, तिर्यंचगति तिर्यंचानुपूर्वी ए तिर्यंचद्विक २, विहायोगति २, जाति ५, 'औदारिक शरीर, औदारिकउपांग, औदारिकबंधन, अने औदारिक संघातन' ए औदारिक चतुष्क ४. तथा तैजसशरीर, तैजसबंधन, तैजससंघातन, तथा कार्मणशरीर, कार्मणबंधन अनेकार्मण संघातन, संघयण ६, संस्थान ६, पराघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, अगुरुलघु निर्माण, उपघात, त्रसदशक १० अने स्थावरदशक १०, वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८ एवं नामकर्मनी ७८ प्रकृति. सर्वमळी १२६ प्रकृति ध्रुवसत्तानी जाणवी.

५७ गतिचार, इंद्रियपांच, कायछे, योगत्रण, वेदत्रण, कषायचार, (केवलज्ञान विना) ज्ञानचार, अज्ञानत्रण, (सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात विना) चारित्रपांच, (केवलदर्शन विना) दर्शनत्रण, लेश्याछे, भव्य, अभव्य, (क्षायिक विना) सम्यक्त्वपांच संज्ञी, असंज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ५७ मार्गणाए—१२६ प्रकृतिनी ध्रुवसत्ता होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—खगतिद्विक २, वर्णादि २०, औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, तेनाज औदारिकादि बंधन ३, तेनाज संघातन ३, निर्माण, संघयण ६, अस्थिरषट्क ६, संस्थान ६, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उच्छ्वास, वेदनीयद्विक २, औदारिक अंगोपांग, नीचगोत्र, सुस्वर, अपर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशःकीर्ति, आदेय, सुभग, पंचेंद्रियजाति ए ७० प्रकृतिनो ध्रुवसत्ता होय.

२ सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए बे मार्गणाएं—अनंतानुबंधिकषाय ४ विना १२२ प्रकृतिनी ध्रुवसत्ता क्षपकने अने १२६ नी उपशमिकने होय.

१ क्षायिक मार्गणाएं—अनंतानुबंधीकषाय ४, मिथ्यात्वमोहनीय, ए ५ विना १२१ प्रकृतिनी ध्रुवसत्ता होय.

---

१६ बासठमार्गणाने विषे अध्रुवसत्ता प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम अध्रुवसत्ता प्रकृतिना नाम—

समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियशरीर, वैक्रियअंगोपांग, वैक्रियबंधन, वैक्रियसंघातन, आहारकशरीर, आहारकोपांग, आहारकबंधन, आहारकसंघातन, तीर्थंकरनाम, देवादिआयु ४, उच्चगोत्र एवं २२ प्रकृति अध्रुवसत्तानी होय अने प्रकारांतरे—वैक्रियतैजसबंधन, वैक्रियकार्मणबंधन अने वैक्रियतैजसकार्मणबंधन, तथा आहारकतैजसबंधन, आहारककार्मणबंधन, आहारकतैजसकार्मणबंधन ए ६ प्रकृति भेगी गणीये तो २८ प्रकृति अध्रुवसत्ता होय.

३४ मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, योगत्रण, वेदत्रण, कषायचार, पहेला ज्ञान त्रण, देशविरति, अविरति, प्रथमना दर्शन त्रण, लेश्या छे, भव्य, उपशम, क्षयोपशम, मिथ्यात्व, संज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ३४ मार्गणाएं—२२ प्रकृति होय.

११ एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, त्रणअज्ञान[1], अभव्य ए अगियार मार्गणाएं—तीर्थंकरनाम अने आहारकद्विक २ ए ३ विना १९ प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—तीर्थंकरनाम, आहारकद्विक २, मनुष्यायु ए ४ प्रकृति विना १८ प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता होय.

---

१ त्रण अज्ञान मार्गणाएं-१९ अथवा २२ ए बे प्रकारे कहेल छे.

६ मनःपर्यवज्ञान अने प्रथमना संयम पांच ए ६ मार्गणाएं—तिर्यचायु अने नरकायु ए बे प्रकृति विना २० प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता होय अथवा २२ पण होय.

१ क्षायिक मार्गणाएं—समकितमोहनीय अने मिश्रमोहनीय ए बे प्रकृति विना २० प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—देवद्विक २, वैक्रियशरीर, आहारकशरीर, तेनाज बंधन २, तेनाज संघातन २, तेनाज अंगोपांग २, मनुष्यत्रिक ३, जिननाम, ऊंचगोत्र ए १९ प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता होय.

३ सास्वादन, मिश्र अने असंज्ञी ए त्रण मार्गणाएं—जिननाम विना २१ प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता होय.

३ देवगति, नरकगति अने तिर्यचगति ए त्रण मार्गणाएं—२१ प्रकृतिनो अध्रुवसत्ता होय. अहीं देवगतिमां-नरकायु विना २१, नरकगतिमां-देवायुविना २१ अने तिर्यचमां-जिननाम विना २१ प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता जाणवी.



१७ बासठमार्गणाने विषे सर्वघातिबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम सर्वघाति प्रकृतिना नाम—

केवलज्ञानावरणीय, केवलदर्शनावरणीय, निद्रा ५, प्रथमना कषाय १२, मिथ्यात्व ए २० प्रकृति सर्वघातीनी जाणवी.

४४ गतिचार, इंद्रिय पांच, काय छे, योग त्रण, वेद त्रण, कषाय चार, अज्ञान त्रण, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, लेश्या छे, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ४४ मार्गणाएं—२० नो बंध जाणवुं.

८ उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, मिश्र, प्रथमना ज्ञान त्रण अने अवधिदर्शन ए आठ मार्गणाएं—मत्येकें स्त्यानर्द्धित्रिक ३, प्रथमना कषाय ४, मिथ्यात्वमोहनीय ए आठ विना १२ नो बंध जाणवुं.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धि ए चार मार्गणाएं—आदिना कषाय १२, मिथ्यात्व, स्त्यानर्द्धित्रिक ३ ए १६ विना ४ नो बंध जाणवुं.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं—अबंध जाणवुं.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बेनो बंध जाणवुं.

१ देशविरति मार्गणाएं—पहेला अने बीजा कषाय ८, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, मिथ्यात्व ए १२ विना ८ नो बंध जाणवुं.

१ सास्वादन मार्गणाएं—मिथ्यात्व विना १९ नो बंध जाणवुं.

---

१८ बासठमार्गणाने विषे देशघातिबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम देशघाती प्रकृतिना नाम–

(केवलज्ञान विना) ज्ञानावरणीय ४, (केवलदर्शन विना) दर्शनावरणीय ३, संज्वलनकषाय ४, नो कषाय ९, अंतराय ५ ए २५ प्रकृति देशघातिनी जाणवी.

४४ गति चार, इंद्रिय पांच, काय छे, योग त्रण, वेद त्रण, कषाय चार, अज्ञान त्रण, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, लेश्या छे, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ४४ मार्गणाएं–२५नो बंध होय.

१३ प्रथमना ज्ञान चार, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायक, क्षयोपशम अने मिश्र ए १३ मार्गणाएं–स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद विना २३ प्रकृतिनो बंध होय.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं–अबंध जाणवुं.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—संज्वलन कषाय ४, नोकषाय ९ ए १३ विना १२ होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—नपुंसकवेद विना २४ होय.

---

१९ बासठमार्गणाने विषे अघातीबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम अघातीबंधिनी प्रकृतिना नाम—

प्रत्येकप्रकृति ८, शरीर ५, अंगोपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, जाति ५, गति ४, विहायोगति २, आनुपूर्वी ४, आयु ४, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०, गोत्र २, वेदनीय २, वर्णादि ४ एवं ७५ प्रकृति अघाती बंधिनी जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाएं—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, सूक्ष्मत्रिक ३, जाति ४, स्थावर, आतप, आहारकद्विक २ ए १९ विना ५६ नो बंध होय.

१ देवगति मार्गणाएं—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३ ए १६ विना ५९ नो बंध होय.

७ तिर्यंचगति, अज्ञान त्रण, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए ७ मार्गणाएं—जिननाम अने आहारकद्विक २ ए त्रण विना ७२ नो बंध होय.

७ एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए सात मार्गणाएं—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २ अने जिननाम ए ११ विना ६४ नो बंध होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—एकेन्द्रियादिनी ११ अने मनुष्यत्रिक ३, ऊंचगोत्र ए १५ विना ६० प्रकृतिनो बंध होय.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, योग त्रण, वेद त्रण, कषाय चार, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, भव्य, संज्ञी अने आहारी ए १८ मार्गणाएं—७५ नो बंध होय.

६ मत्यादि ज्ञान त्रण, अवधिदर्शन, क्षायक, क्षयोपशम ए ६ मार्गणाएं—नीचगोत्र, तिर्यंचत्रिक ३, नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, (प्रथम विना) संघयण ५, (प्रथम विना) संस्थान ५, आताप, उद्योत, अशुभविहायोगति, दुर्भगत्रिक ३ ए ३१ विना ४४ नो बंध होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धि ए चार मार्गणाएं—मतिज्ञाननी ३१, वज्रर्षभनाराचसंघयण, मनुष्यत्रिक ३, औदारिकद्विक २ ए ३७ विना ३८ नो बंध होय.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात मार्गणाएं—एकज शातावेदनीय होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—यशःकीर्ति, ऊंचगोत्र, शातावेदनीय ए ३ नो बंध.

१ देशविरति मार्गणाएं—मनःपर्यवज्ञाननी ३७ अने आहारकद्विक२ ए ३९ विना ३६.

४ अविरति अने प्रथमनी त्रण लेश्या मार्गणाएं—आहारकद्विक २ विना ७३ नो बंध.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रिय ३ ए ९ विना ६६.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—तेजोलेश्यानी ९ अने एकेंद्रिय, आताप, स्थावर ए १२ विना ६३ नो बंध होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—पद्मलेश्यानी १२ अने तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत ए १६ विना ५९ नो बंध होय.

१ उपशम मार्गणाएं—मतिज्ञाननी ३१ अने देवायु, मनुष्यायु ए ३३ विना ४२नो बंध.

१ मिश्र मार्गणाएं—मतिज्ञाननी ३१ अने मनुष्यायु, देवायु, जिननाम, आहारकद्विक २ ए ३६ विना ३९ नो बंध होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर ४, हुंडकसंस्थान, सेवार्तसंघयण, आताप, आहारकद्विक, जिननाम ए १७ विना ५८ होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—आयु ४, आहारकद्विक २, नरकद्विक २ ए ८ विना ६७ प्रकृतिनो बंध होय.



२० बासठमार्गणाने विषे परावर्त्तमानबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम परावर्त्तमान प्रकृतिना नाम–

वेद ३, बे युगलनी ४, कषाय १६, उद्योत १, आताप १, गोत्रकर्म २, वेदनीय २, निद्रा ५, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०, आयु ४, शरीर ३, अंगोपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, जाति ५, गति ४, विहायोगति २, आनुपूर्वी ४ एवं ९१ प्रकृति जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाएं—जाति ४, स्थावर ४, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, आताप १ ए १९ विना ७२ होय.

१ देवगति मार्गणाएं—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३, आहारकद्विक २ ए १६ विना ७५ होय.

११ तिर्यंचगति, त्रणअज्ञान, अविरति, प्रथमनी लेश्या त्रण, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए ११ मार्गणाएं—आहारकद्विक विना ८९ होय.

७ एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय ए ७ मार्गणाएं—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २ ए १० विना ८१ होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—एकेंद्रियनी १०, मनुष्यत्रिक ३, ऊंचगोत्र ए १४ विना ७७ होय.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, योग त्रण, वेद त्रण, कषाय ४, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, भव्य, संज्ञी अने आहारी ए १८ मार्गणाएं–९१ होय.

४ मत्यादित्रिज्ञान त्रण अने अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं—तिर्यंचत्रिक ३, नरकत्रिक ३, दुर्भगत्रिक ३, जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, (पहेला विना) संघयण ५, (पहेला विना) संस्थान ५, स्त्यानर्द्धिआदि निद्रा ३, अनंतानुबंधी ४, आताप १, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, उद्योत १, अशुभविहायोगति १, नीचगोत्र १ ए ४० विना ५१नो बंध होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि ए ४ मार्गणाएं—मत्यादि त्रण ज्ञानमां कहेली ४० अने बीजाकषायनी ४, त्रीजाकषायनी ४, मनुष्यत्रिक ३, वज्रर्षभनाराच संघयण १, औदारिकद्विक २ ए ५४ विना ३७ होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ऊंचगोत्र १, शातावेदनीय १, यशः कीर्ति १ ए ३ होय.

३ यथाख्यात, केवलज्ञान अने केवलदर्शन मार्गणाएं—एकज शातावेदनीय होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—मतिज्ञाननी ४० अने बीजाकषायनी ४, मनुष्यत्रिक ३, वज्रर्षभनाराचसंघयण १, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २ ए ५२ विना ३९.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३ ए ९ विना ८२ प्रकृतिनो बंध होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—तेजोलेश्यानी ९, एकेंद्रिय १, स्थावर १, आताप १ ए १२ विना ७९ प्रकृति होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—पद्मलेश्यानी १२, तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १ ए १६ विना ७५ प्रकृति नो बंध होय.

१ उपशम मार्गणाएं—देवायु १, मनुष्यायु १, नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर ४, आताप १, नपुंसकवेद १, स्त्री वेद १, तिर्यंचत्रिक ३, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, दुर्भगत्रिक ३, अनंतानुबंधी ४, संघयण ५, संस्थान ५, उद्योत १, नीचगोत्र १, विहायोगति १ ए ४२ विना ४९ होय.

२ क्षयोपशम, क्षायिक ए बे मार्गणाएं—उपशमनी ४२ मांथी देवायु, मनुष्यायु काढिये बाकी ४० विना ५१ होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—उपशमसमकितनी ४२ अने आहारकद्विक ए ४४ विना ४७ होय.

१ शास्वादन मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर ४, आताप १, हुंडकसंस्थान १, छेवट्ठं संघयण १, नपुंसकवेद १, आहारकद्विक २ ए १७ विना ७४ होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—आयु ४, नरकद्विक २, आहारकद्विक २ ए ८ विना ८३ प्रकृतिनो बंध होय.

---

२१ बासठमार्गणाने विषे अपरावर्त्तमानबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम अपरावर्त्तमान प्रकृतिना नाम—

वर्णादि ४, तैजसशरीर १, कार्मणशरीर १, निर्माणनाम १, उपघातनाम १, अगुरुलघुनाम १, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अंतराय ५,

पराघातनाम १, भयमोहनीय १, कुत्सामोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय १, उच्छ्वासनाम १, तीर्थंकरनाम १ एवं २९ अपरावर्तमान प्रकृति जाणवी.

२८ (तिर्यंचविना) गति त्रण, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, योगत्रण, वेदत्रण, कषायचार, लेश्या छे, भव्य, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, संज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए २८ मार्गणाएं–२९ नो बंध होय.

१६ तिर्यंचगति, एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, प्रथमनी काय पांच, अज्ञान त्रण, अभव्य, मिथ्यात्व अने असंज्ञी ए १६ मार्गणाएं—जिननाम विना २८ होय.

१२ प्रथमना ज्ञान चार, अवधिदर्शन, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक ए बार मार्गणाएं—मिथ्यात्व विना २८ नो बंध होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—वर्णादि ४, तैजस १, कार्मण १, निर्माण १, उपघात १, अगुरुलघु १, पराघात १, उच्छ्वास १, जिननाम १, भय १, कुत्सा १, मिथ्यात्व १ ए १५ विना १४ होय.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं—अबंध जाणवी.

२ मिश्र अने सास्वादन मार्गणाएं—जिननाम अने मिथ्यात्व विना २७ होय.

---

२२ बासठमार्गणाने विषे क्षेत्रविपाकोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम क्षेत्रविपाकी प्रकृतिना नाम—

चार आनुपूर्वीनी उदय प्रकृतिने क्षेत्रविपाकी जाणवी.

४ नरकगति, देवगति, मनुष्यगति अने तिर्यंचगति ए चार मार्गणाएं—पोत पोताना नामनी आनुपूर्वी होय.

९ प्रथमनी जाति चार, प्रथमनी काय पांच ए ९ मार्गणाएं—तिर्यंचानुपूर्वी १ होय.

६ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या अने सास्वादन ए छ मार्गणाएं—नरकानुपूर्वी विना ३ होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—देवतानी अनुपूर्वी विना ३ होय.

२३ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, काययोग, अविरति, अचक्षुदर्शन, कषाय चार, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, प्रथमनी त्रण लेश्या, भव्य, अभव्य, क्षायिक, क्षयोपशम, मिथ्यात्व, संज्ञी, मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान अने अनाहारी ए २३ मार्गणाएं—चारे गतिनी आनुपूर्वी ४ होय.

१ अवधिज्ञान मार्गणाएं—चारे गतिनी अनुपूर्वी ४ होय. तिर्यंचनी न होय तो ३.

१ विभंगज्ञान मार्गणाएं—पण ४, विशेप एटलो के मनुष्य अने तिर्यंचनी आनुपूर्वी न होय तो २.

१ अवधिदर्शन मार्गणाएं—३ अथवा ४ अनुपूर्वी होय.

१ उपशम मार्गणाएं—उपशमश्रेणीना मरीने देवगतिमां जाय त्यारे १ देवगतिनी अनुपूर्वी होय अथवा न होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—देव अने नारकी ए २ विना २ अनुपूर्वी होय.

१४ मनयोग, वचनयोग, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, देशविरति, चक्षुदर्शन, केवलदर्शन, मिश्र अने आहारी ए १४ मार्गणाएं—अनुपूर्वी नथी.

---

२३ बासठमार्गणाने विषे भवविपाकोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम भवविपाकी प्रकृतिना नाम–

आयुकर्मनी चार प्रकृति भवविपाकी जाणवी.

४ नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति अने देवगति ए चार मार्गणाएं—पोतपोताना नामनुं आयु होय.

९ एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय अने प्रथमनी काय पांच ए ९ मार्गणाएं—तिर्यंचायु १ होय.

३३ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, चारकषाय, प्रथमना त्रणज्ञान, त्रण अज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, प्रथमनी त्रणलेश्या, भव्य, अभव्य, समकित छे, संज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ३३ मार्गणाएं—आयु ४ होय.

५ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्लेश्या ए पांच मार्गणाएं—नरकायु विना ३ आयु होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—देवायु विना ३ आयु होय.

८ मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए आठ मार्गणाएं–एकज मनुष्यायु होय.

२ देशविरति अने असंज्ञी मार्गणाएं—मनुष्यायु अने तिर्यंचायु ए २ होय.

---

२४ बासठमार्गणाने विषे जीवविपाकोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार-

प्रथम जीवविपाकिनी प्रकृतिना नाम-

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, मोहनीय २८, अंतराय ५, गोत्र २, वेदनीय २, जिननाम १, त्रस-बादर-पर्याप्त ३, स्थावर-सूक्ष्म-अपर्याप्त ३, सुभगचतुष्क ४, दुर्भगचतुष्क ४, जाति ५, गति ४, विहायोगति २, श्वासोच्छ्वास १ एवं ७८ प्रकृति जीवविपाकिनी जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाएं—उंचगोत्र १, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १, गति ३, जाति ४, जिननाम १, सुभगचतुष्क ४, स्थावर ३, शुभविहायोगति १ ए १९ विना ५९ अने जो स्त्यानर्द्धित्रिक ३ काढिये तो उदयमां ५६ प्रकृति होय.

१ देवगति मार्गणाएं—नीचगोत्र १, नपुंसकवेद १, जाति ४, गति ३, अशुभविहायोगति १, जिननाम १, स्थावरत्रिक ३, दुस्वर १ ए १५ विना ६३. अथवा स्त्यानर्द्धित्रिक काढिये तो उदयमां ६० प्रकृति होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—जाति ४, गति ३, स्थावर १, सूक्ष्म १ ए ९ विना ६९.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—उचोत १, जिननाम १, गति ३ ए ५ विना ७३ होय.

४ एकेन्द्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय ए चार मार्गणाएं—उंचगोत्र १, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १, बेंद्रियादिजाति ४, गति ३, विहायोगति २, जिननाम १, त्रसकाय १, सुस्वर १, दुस्वर १, समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, सुभग १, आदेय १ ए २० विना ५८ प्रकृति होय.

३ विकलेन्द्रिय मार्गणाएं—उंचगोत्र १, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १, जाति ४, गति ३, शुभविहायोगति १, स्थावर १, सूक्ष्म १, सुभग १, आदेय १, समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, जिननाम १ ए १८ विना ६० प्रकृति होय.

२ पंचेंद्रिय अने संज्ञी मार्गणाएं—जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १ ए ६ विना ७२.

२ तेउकाय अने वायुकाय मार्गणाएं—एकेंद्रियनी २० अने यशःकीर्ति ए २१ विना ५७ प्रकृतिनो उदय होय.

१ त्रसकाय मार्गणाएं—स्थावर १, सूक्ष्म १, एकेंद्रिय १ ए त्रण विना ७५ होय.

१ मनोयोग मार्गणाएं—स्थावर ३, जाति ४ ए ७ विना ७१ होय.

१ वचनयोग मार्गणाएं—स्थावर ३ एकेंद्रिय ए ४ विना ७४ होय.

३ काययोग, भव्य अने आहारी ए त्रण मार्गणाएं—७८ प्रकृति होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, जाति ४, गति १, स्थावर १, जिननाम १, सूक्ष्म १ ए १० विना ६८ होय.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—पुरुषवेद १, नपुंसकवेद १, जाति ४, वगेरे ऊपर प्रमाणे १० विना ६८ प्रकृति होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—जिननाम १, (नपुंसकवेद विना) वेद २, देवगति १ ए ४ विना ७४ प्रकृति होय.

१ क्रोध मार्गणाएं-मान ४, माया ४, लोभ ४, जिननाम १ ए १३ विना ६५ होय.

१ मान मार्गणाएं-क्रोध ४, माया ४, लोभ ४, जिननाम १ ए १३ विना ६५ होय.

१ माया मार्गणाएं-क्रोध ४, मान ४, लोभ ४, जिननाम १ ए १३ विना ६५ होय.

१ लोभ मार्गणाएं-क्रोध ४, मान ४, माया ४, जिननाम १ ए १३ विना ६५ होय.

५ प्रथमना त्रणज्ञान, अवधिदर्शन अने क्षयोपशम ए पांच मार्गणाएं-स्थावर ३, जाति ४, जिननाम १, मिथ्यात्व १, मिश्र १, अनंतानुबंधी ४ ए १४ विना ६४ होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं—पहेला, बीजा अने त्रीजा कषायनी चोकडी १२, जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, जिननाम १, तिर्यंचगति १, मिश्रमोहनीय १, अपर्याप्त १, मिथ्यात्व १, दुर्भग १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १, नीचगोत्र १, देवगति १, नरकगति १ ए २९ विना ४९ होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन मार्गणाएं—मनुष्यगति १, पंचेन्द्रियजाति १, त्रसत्रिक ३, वेदनीयद्विक २, विहायोगतिद्विक २, ऊंचगोत्र १, यशःकीर्त्ति १, आदेय १, सुभग १, सुस्वर १, जिननाम १, उच्छ्वास १, दुस्वर १ ए १७ होय.

४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व ए चार मार्गणाएं—समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १ अने जिननाम १ ए ३ विना ७५ होय.

१ विभंगज्ञान मार्गणाएं-स्थावर ३, जाति ४, जिननाम १, समकितमोहनीय १ ए ९ विना ६९ होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं-मनःपर्यवज्ञाननी २९ अने स्त्रीवेद १ ए ३० विना ४८.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं-जाति ४, गति ३, स्थावर १, सूक्ष्म १, जिननाम १, समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय १, पहेला, बीजा अने त्रीजा कषायनी चोकडी १२, संज्वलन ३, दुर्भग १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १, नीचगोत्र १, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, हास्यादि ६, वेद ३, अपर्याप्त १ ए ४५ विना ३३ होय.

१ यथाख्यात मार्गणाए—सूक्ष्मसंपरायनी ४२मां संज्वलन लोभ उमेरी जिननाम रहित करवाथी ४२ विना ३३ होय.

१ देशविरति मार्गणाए—पहेला, बीजा कषायनी चोकडी ८, मिश्रमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय १, स्थावर १, सूक्ष्म १, जिननाम १, अपर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १, गति २, जाति ४ ए २३ विना ८८ होय.

५ अविरति, अचक्षुदर्शन, कृष्णनीललेश्या त्रण ए पांच मार्गणाए–जिननाम विना ७७.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाए—एकेंद्रियादि जाति ३, स्थावरत्रिक ३, जिननाम १ ए ७ विना ७१ प्रकृति होय

१ तेजोलेश्या मार्गणाए–सूक्ष्मद्विक २, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चतुरिंद्रिय, नरकगति १, जिननाम १ ए ७ विना ७१ होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाए—स्थावर ३, जाति ४, नरकगति १, जिननाम १ ए ९ विना ६९ प्रकृति होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाए–स्थावरत्रिक ३, जाति ४, नरकगति १ ए ८ विना ७१ होय.

१ उपशम मार्गणाए—स्थावरत्रिक ३, जाति ४, अनंतानुबंधि ४, समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, जिननाम १, मिथ्यात्व १ ए १५ विना ६३ होय.

१ क्षायिक मार्गणाए—जाति ४, स्थावर ३, समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय १, अनंतानुबंधी ४ ए १४ विना ६४ होय.

१ मिश्र मार्गणाए—जाति ४, स्थावर ३, समकितमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय १, जिननाम १, अनंतानुबंधि ४ ए १४ विना ६४ होय.

१ सास्वादन मार्गणाए—समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, जिननाम १ ए ६ विना ७२ होय.

१ असंज्ञी मार्गणाए–समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, जिननाम १, सुभग १, आदेय १, शुभविहायोगति १, ऊंचगोत्र १, स्त्रीवेद १, सुस्वर १, देवगति १, नरगति १ ए ११ विना ६७ होय. मतांतरे–सुभग, आदेय अने शुभखगति सहित ७०.

१ अज्ञानी मार्गणाए—विहायोगति २, उच्छ्वास १, सुस्वर १, दुस्वर १, मिश्रमोहनीय १ अने निद्रा ५ ए ११ विना ६७ होय.

---

२५ बासठमार्गणाने विषे पुद्गलविपाकोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम पुद्गलविपाकिनी प्रकृतिना नाम—

वर्णादि ४, निर्माणनाम १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, शरीर ३, अंगोपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, उपघात १, साधारण १, प्रत्येक १, उद्योत १, आताप १, पराघात १ एवं ३६ प्रकृति पुद्गलविपाकिनी जाणवी.

२ नरकगति अने देवगति मार्गणाएं—संघयण ६, संस्थान ५, आताप १, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २, साधारण १, उद्योत १ ए १८ विना १८ होय.

४ मनुष्यगति, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय ए चार मार्गणाएं—साधारण १, आताप १, उद्योत १, वैक्रियद्विक २ ए ५ विना ३१ होय. मतांतरे-वैक्रियद्विक २ अने उद्योत गणतां ३४ नो उदय होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—वैक्रियद्विक २ अने आहारकद्विक २ ए ४ विना ३२ होय.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं—संघयण ६, संस्थान ५, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, औदारिक अंगोपांग १ ए १६ विना २० होय.

३ विकलेंद्रिय मार्गणाएं—संघयण ५, संस्थान ५, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, आताप १, साधारण १ ए १६ विना २० होय.

१ पृथ्वीकाय मार्गणाएं—एकेंद्रियनी १६ अने साधारण १ ए १७ विना १९ होय.

१ अप्काय मार्गणाएं—पृथ्वीकायनी १७ अने आताप १ ए १८ विना १८.

१५ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, मनोयोग, वचनयोग, पुरुषवेद, प्रथमना त्रण ज्ञान, चक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, क्षयोपशम, संज्ञी ए १५ मार्गणाएं—साधारण १ अने आताप १ ए २ विना ३४ होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय मार्गणाएं—अप्कायनी १८ अने उद्योत १ ए १९ विना १७.

१ वनस्पतिकाय मार्गणाएं—पृथ्वीकायनी १७ मांथी साधारण काढी आताप सहीत करवाथी १७ विना १९ होय.

९ स्त्रीवेद, विभंगज्ञान, उपशम, मिश्र अने शास्वादन ए पांच मार्गणाएं—साधारण १, आताप १, आहारकद्विक २ ए ४ विना ३२ होय.

---

१ सार्कीन ईडक १ विना ५ टले अने देवमाने समचतुरस्र १ विना ५ संस्थान टले.

१२ नपुंसकवेद, कषायचार, अचक्षुदर्शन, काययोग, भव्य, प्रथमनी त्रण लेश्या
आहारी ए १२ मार्गणाएं ३६ होय.
१ केवलज्ञान, परिहारविशुद्धि अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—आहारक-
द्विक २, वैक्रियद्विक २, (प्रथम विना) संघयण ५, आताप १, उद्योत १, साधारण १
१२ विना २४ होय.
५ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अविरति, अभव्य अने मिथ्यात्व ए पांच मार्गणाएं—
आहारकद्विक २ विना ३४ प्रकृति होय.
२ सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात ए बे मार्गणाएं—आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २,
छेल्ला संघयण ३, आताप १, उद्योत १, साधारण १ ए १० विना २६ होय.
१ देशविरति मार्गणाएं—आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, साधारण १ आताप १
ए ६ विना ३० प्रकृति होय.
१ क्षायिक मार्गणाएं—प्रथमना संघयण ५, आताप १, साधारण १ ए ७ विना २०.
१ असंज्ञी मार्गणाएं—प्रथमना संघयण ६, प्रथमना संस्थान ५, आहारकद्विक २,
वैक्रियद्विक २ ए १४ विना २२ होय.
१ अनाहारी मार्गणाएं—तैजस १, कार्मण १, वर्णादि ४, अगुरुलघु १, निर्माण १,
स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १ ए १२ होय.

---

२६ बासठमार्गणाने विषे पुण्यबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम पुण्यबंधिनी प्रकृतिना नाम—

शातावेदनीय १, उंचगोत्र १ मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, देवगति १,
देवानुपूर्वी १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकशरीर १, वैक्रियशरीर १, आहारक-
शरीर १, तैजसशरीर १, कार्मणशरीर १, औदारिकांगोपांग १, वैक्रियांगो-
पांग १, आहारकांगोपांग १, वज्रऋषभनाराचसंघयण १, समचतुरस्रसंस्थान १,
शुभवर्ण १, शुभगंध १, शुभरस १, शुभस्पर्श १, अगुरुलघुनामकर्म १, पराघा-
तनामकर्म १, उच्छ्वासनामकर्म १, आतापनामकर्म १, उद्योतनामकर्म १, शुभ-
विहायोगति १, निर्माणनामकर्म १, त्रसनामकर्म १, बादरनामकर्म १, पर्याप्त-
नामकर्म १, प्रत्येकनामकर्म १, स्थिरनामकर्म १, शुभनामकर्म १, सौभाग्यनाम-
कर्म १, सुस्वरनामकर्म १, आदेयनामकर्म १, यशःकीर्तिनामकर्म १, देवायु १,
मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, तीर्थंकरनामकर्म १ एवं ४२ पुण्यबंधिनी प्रकृति जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाएं—वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, देवत्रिक ३, आताप १ ए ८ विना ३४ बांधे.

१ देवगति मार्गणाएं—नरकनी ३४ अने आताप ए ३५ बांधे.

७ तिर्यंचगति, त्रण अज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व अने असंज्ञी ए ७ मार्गणाएं—आहारकद्विक २ अने जिननाम १ ए त्रण विना ३९ बांधे.

७ एकेंद्रिय, विकलेंद्रियत्रण, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए सात मार्गणाएं–देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २ अने जिननाम १ ए ८ विना ३४.

२ तेउकाय, वायुकाय ए बे मार्गणाएं–देवत्रिक ३, मनुष्यत्रिक ३, आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, ऊंचगोत्र १, जिननाम १ ए १२ विना ३० बांधे.

७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन शुक्लेश्या, क्षायिक, क्षयोपशम ए ७ मार्गणाएं–तिर्यंचायु १, उद्योत १, आताप १ ए ३ विना ३९ बांधे.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि ए ४ मार्गणाएं–मनुष्यत्रिक ३, औदारिकद्विक २, आताप १, उद्योत १, तिर्यंचायु १, वज्रर्षभनाराच १ ए ९ विना ३३ बांधे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–यशःकीर्त्ति १, ऊंचगोत्र १, शातावेदनीय १ ए ३ बांधे.

१ देशविरति मार्गणाएं–आताप १, आहारकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३, तिर्यंचायु १, उद्योत १, औदारिकद्विक २, वज्रर्षभनाराच १ ए ११ विना ३१ बांधे.

४ प्रथमनीत्रणलेश्या, अविरति ए ४ मार्गणाएं–आहारकद्विक २ विना ४० बांधे.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं–एक आताप विना ४१ बांधे.

१ मिश्र मार्गणाएं–जिननाम १, आहारकद्विक २, आताप १, उद्योत १, देवायु १, तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ ए ८ विना ३४ बांधे.

१ सास्वादनमार्गणाएं–जिननाम १, आहारकद्विक २ आताप १ ए ४ विना ३८.

१ उपशममार्गणाएं–[1]आयु ३, उद्योत १, आताप १ ए ५ विना ३७ बांधे.

३ यथाख्यात, केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं–शातावेदनीय १ बांधे.

१९ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, वेदत्रण, योगत्रण, कषायचार, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, तेजोलेश्या, भव्य, संज्ञी अने आहारी ए १९ मार्गणाएं–४२ बांधे.

१ अनाहारी मार्गणाएं—(नरकायु विना) आयु ३ अने आहारकद्विक २ ए ५ विना ३७ प्रकृति बांधे.

---

[1] १ देवायु १ मनुष्यायु १ अने तिर्यंचायु.

२७ बासठमार्गणाने विषे पापबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम पापबंधिनी प्रकृतिना नाम—

ज्ञानवरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अशातावेदनीय १, (समकितमोहनीय १ अने मिश्रमोहनीय १ विना) मोहनीयकर्मनी २६, अंतरायनी ५, नीचगोत्र १, नरकायु १, तथा स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, अस्थिर १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, दुस्वर १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १, नरकद्विक २, तिर्यंचगति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, प्रथमनीजाति ४, अशुभवर्णचतुष्क ४, अशुभविहायोगति १, उपघात १, प्रथमनासंघयण ५, प्रथमनासंस्थान ५ ए नाम कर्मनी ३४. एवं ८२ प्रकृति जाणवी.

२ नरकगति, पद्मलेश्या ए बे मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३, एकेंद्रिय १, स्थावर १ ए ११ विना ७१ प्रकृति होय.

२ देवगति, अने तेजोलेश्या मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३ ए ९ विना ७३ होय.

२९ मनुष्यगति, तिर्यंचगति, त्रसकाय, योगत्रण, वेदत्रण, कषायनी चार, प्रथमनी त्रणलेश्या, त्रण अज्ञान, पंचेंद्रिय, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी अने आहारी ए २९ मार्गणाएं—८२ प्रकृति होय.

१० एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, प्रथमनीकाय पांच अने अनाहारी ए १० मार्गणाएं—नरकत्रिक विना ७९ नो बंध होय.

८ मत्यादि त्रण ज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक अने मिश्र ए ८ मार्गणाएं—स्त्यानर्द्धित्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्वमोहनीय १, नीचगोत्र १, नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर ४, संस्थान ५, संघयण ५, तिर्यंचद्विक २, दुर्भगत्रिक ३, अशुभविहायोगति १ ए ३८ विना ४४ होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धि ए चार मार्गणाएं—मतिज्ञाननी ३८ अने प्रत्याख्यानी ४, अप्रत्याख्यानी ४ ए ४६ विना ३६ होय.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं—अबंध जाणवी.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५ ए १४ प्रकृतिनो बंध होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—मत्यादिज्ञाननी ३८ अने प्रत्याख्यानी ४ ए ४२ विना ४०.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—नरकगतिनी ११ अने तिर्यंचद्विक २ ए १३ विना ६९ होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—नरकत्रिक ३ जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, हुंडकसंस्थान १, छेवट्ठसंघयण १, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्वमोहनीय १ ए १५ विना ६७ होय.

२८ बासठमार्गणाने विषे पुण्योदयिनी प्रकृतिनुं द्वार–

छत्रीशमांद्वारमां पुण्यबंधिनी ४२ प्रकृतिना जे नाम कह्या छे तेज अत्रे पुण्योदयिनी प्रकृतिना नाम समजवा.

१ नरकगति मार्गणाए–शातावेदनीय १, पंचेंद्रियजाति १, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, स्थिर १, शुभ १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १ ए १६ प्रकृति होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए–शातावेदनीय १, तिर्यंचायु १, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, पंचेन्द्रियजाति १, वज्रऋषभसंघयण १, समचतुरसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, त्रसदशक १० एवं ३२ होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाए–शातावेदनीय १, मनुष्यायु १, मनुष्यद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, शरीर ५, उपांग ३, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभविहायोगति १, तीर्थंकर १, निर्माण १, त्रसदशक १०, उंचगोत्र १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १ एवं ३७ प्रकृति होय.

देवगति मार्गणाए–शातावेदनीय १, देवायु १, देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभ विहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १ अगुरुलघु १, निर्माण १, त्रसदशक १०, ऊंचगोत्र १ एवं ३१ होय.

१ एकेंद्रिय मार्गणाए–शातावेदनीय १, तिर्यंचायु १, औदारिकशरीर १, तैजस १, कार्मण १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्ति १, वैक्रिय १, वर्णचतुष्क ४ एवं २२ नो उदय होय.

३ विकलेंद्रिय मार्गणाए–शातावेदनीय १, तिर्यंचायु १, औदारिकद्विक २ तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, त्रसादि ४, स्थिर १, शुभ १, सुस्वर १, यशःकीर्ति १ एवं २३ नो उदय.

९ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, क्षायक, संज्ञी, शुक्ललेश्या ए ५ मार्गणाए–पूर्वोक्त पुण्योदयिनी ४२ प्रकृति मांहेथी एक आतप विना ४१ प्रकृतिनो उदय होय.

१ पृथ्वीकाय मार्गणाए–एकेन्द्रिय मार्गणामां २२ प्रकृति कही तेमांथी शरीरवैक्रिय विना २१ प्रकृतिनो उदय होय.

२-अप्काय अने वनस्पतिकाय मार्गणाएं-एकेन्द्रियनी ३२ मांथी आतप १, वैक्रिय १ ए २ विना ३० प्रकृतिनो उदय होय.

१ तेउकाय मार्गणाएं-शातावेदनीय १, तिर्यंचायु १, औदारिक १, तैजस १, कार्मण १ ए त्रणशरीर, वर्णचतुष्क ४, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, बादरादि ९ एवं १८ प्रकृतिनो उदय होय.

१ वायुकाय मार्गणाएं-तेउकायनीपेठे १८ अने वैक्रियशरीर १ एवं १९ होय.

२ मनोयोग अने वचनयोग मार्गणाएं—मनुष्यानुपूर्वी १, देवानुपूर्वी १ अने जिननाम १ ए ३ विना ३९ प्रकृतिनो उदय होय.

२ काययोग अने भव्य मार्गणाएं—४२ प्रकृतिनो उदय होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—आतप १, जिननाम १ ए बे विना ४० नो उदय होय.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—आतप १, जिननाम १, आहारकद्विक २ ए ४ विना ३८.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—देवत्रिक ३ अने जिननाम १ एवं ४ विना ३८ होय.

४ क्रोध, मान, माया, लोभ ए चार मार्गणाएं—जिननाम १ विना ४१ होय.

७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशम, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या ए सात मार्गणाएं—आतप १, जिननाम १ ए २ विना ४० नो उदय होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं—देवत्रिक ३, आतप १, तिर्यंचायु १, मनुष्यानुपूर्वी १ जिननाम १ ए ७ विना ३५ होय.

५ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व, अविरति ए पांच मार्गणाएं—आहारकद्विक २, जिननाम १ ए ३ विना ३९ नो उदय होय.

१ विभंगज्ञान मार्गणाएं—आतप १, मनुष्यानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, जिननाम १ ए ५ विना ३७ नो उदय होय.

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं-शातावेदनीय १, मनुष्यायु १, मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, त्रसदशक १०, उच्चगोत्र १ एवं ३१ होय.

३ परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं-केवलज्ञान मार्गणामां कहेली ३१ प्रकृतिमांथी जिननाम १ विना ३० नो उदय होय.

१ देशविरति मार्गणाएं-देवत्रिक ३, आतप १, जिननाम १, आहारकद्विक २

मनुष्यानुपूर्वी १ ए ८ विना ३४ नो उदय होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाए–देवानुपूर्वी १, मनुष्यानुपूर्वी १, आताप १, जिननाम १ ए चार विना ३८ नो उदय होय.

४ अचक्षुदर्शन, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए चार मार्गणाए–जिननाम १ विना ४१ नो उदय होय.

१ उपशम मार्गणाए–आहारकद्विक २, आताप १, जिननाम १, मनुष्यानुपूर्वी १, ए ५ विना ३७ नो उदय होय.

१ मिश्र मार्गणाए–आहारकद्विक २, आताप १, जिननाम १, मनुष्यानुपूर्वी १, देवानुपूर्वी १ ए ६ विना ३६ नो उदय होय.

१ सास्वादन मार्गणाए–आताप १, जिननाम १, आहारकद्विक २ ए ४ विना ३८.

१ असंज्ञी मार्गणाए–देवत्रिक ३, जिननाम १, वैक्रियउपांग १, आहारकद्विक २, ऊंचगोत्र १ ए ८ विना ३४ नो उदय होय.

१ आहारी मार्गणाए–मनुष्यानुपूर्वी १, देवानुपूर्वी १ ए २ विना ४० नो उदय.

१ अनाहारी मार्गणाए–शातावेदनीय १, देवायु १, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, तथा तैजस १, कार्मण १ ए बे शरीर, अगुरुलघु १, निर्माण १, वर्णचतुष्क ४, स्थिर १, शुभ १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्ति १, जिननाम १, ऊंचगोत्र १ एवं २७ प्रकृतिनो उदय होय.

२९. बासठमार्गणाने विषे पापोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार–

सत्तावीसमां द्वारमां पापबंधिनी ८२ प्रकृति कहेली छे तेमां समकितमोहनीय १ अने मिश्रमोहनीय १ आ बे प्रकृति मिलाववाथी ८४ प्रकृति पापोदयिनी होय ते कई मार्गणामां केटली प्रकृतिनो उदय होय ते बतावे छे–

१ नरकगति मार्गणाए–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अशातावेदनीय १, (पुरुषवेद अने स्त्रीवेद ए बे विना) मोहनीयनी २६, नरकायु १, नीचगोत्र १, अंतराय ५, तथा नरकद्विक २, हुंडकसंस्थान १, अशुभवर्णादि ४, अशुभविहायोगति १, उपघात १, स्थावरदशक मांहेथी (प्रथमनी चार विना बाकीनी) अस्थिरादिक ६ ए नामनी १५ प्रकृति एवं ६३ प्रकृतिनो उदय पामिये.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए–नरकत्रिक विना ८१ प्रकृतिनो उदय होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अशातावेदनीय १, मोहनीयनी २८, अपर्याप्त १, नीचगोत्र १, अंतराय ५, (प्रथम विना) संघयण ५ संस्थान ५, अशुभवर्णादि ४, कुखगति १, उपघात १, अस्थिरादि ६ एवं ७२ होय.

१ देवगति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अशातावेदनीय १, (नपुंसकवेद विना) मोहनीयनी २७, अंतराय ५, उपघात १, अस्थिरषट्क मांहे (दुस्वर विना) ५ एवं ५३ प्रकृतिनो उदय होय.

२ एकेंद्रिय अने वनस्पतिकाय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अशातावेदनीय १, नीचगोत्र १, अंतराय ५ अने (पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १, समकित-मोहनीय १, मिश्रमोहनीय १ ए चार विना) मोहनीयनी २४, तिर्यचद्विक २, एकें-द्रियजाति १, हुंडकसंस्थान १, अशुभवरणादि ४, उपघात १, स्थावर दशक मांहे (दुस्वर विना) ९ एवं ६३ नो उदय होय.

३ विकलेंद्रिय मार्गणाएं—उपर कह्या प्रमाणे ६३ प्रकृतिनो उदय होय परंतु (स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १ ए तीन प्रकृतिने ठेकाणे) दुस्वर १, कुख-गति १ अने छेवट्ठसंघयण १ आ तीन प्रकृति लेवी जोइये.

४ पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय ए चार मार्गणाए—एकेंद्रिय मार्ग-णामां कहेली प्रकृतिओमांथी साधारणनाम १ विना बाकी ६२ प्रकृतिनो उदय होय.

१ पंचेंद्रिय मार्गणाए—एकेंद्रियादिजाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १ अने साधारण १ ए ७ विना ७७ प्रकृतिनो उदय होय.

१ त्रसकाय मार्गणाए—एकेंद्रियजाति १, स्थावर १, सूक्ष्म १ अने साधारण १ ए ४ विना ८० प्रकृतिनो उदय होय.

१ मनोयोग मार्गणाए—नरकानुपूर्वी १, तिर्यचानुपूर्वी १, एकेंद्रियादिजाति ४, स्थावरचतुष्क ४ ए १० विना ७४ प्रकृतिनो उदय होय.

१ वचनयोग मार्गणाए—मनोयोग मार्गणामां—कहेली ७४ अने बेइंद्रियजाति १, तेइंद्रियजाति १ चतुरिंद्रियजाति १ एवं ७७ प्रकृतिनो उदय होय.

७ काययोग, अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, भव्य, अचक्षुदर्शन ए ७ मार्गणाए—८४ प्रकृतिनो उदय होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, नरकत्रिक ३, एकेंद्रियादि-जाति ४ अने स्थावर चतुष्क ४ ए १३ विना ७१ प्रकृतिनो उदय होय.

१ स्त्रीवेद मार्गणाए—पुरुषवेद १, नपुंसकवेद १, नरकत्रिक ३, एकेंद्रियादिजाति

अने स्थावरचतुष्क ४ ए १३ विना ७१ प्रकृतिनो उदय होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाए—पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १ ए २ विना ८२ होय.

४ क्रोध, मान, माया, लोभ ए चार मार्गणाए—पांचेन्द्रियनी ८४ प्रकृतिमां पोत पोतानी प्रतिपक्षिनी १२ प्रकृति विना ७२ प्रकृतिनो उदय होय. अर्थात् क्रोध मार्गणाए—माननी ४, मायानी ४, लोभनी ४ ए बार विना ७२ नो उदय. मान मार्गणाए—क्रोधनी ४, मायानी ४, लोभनी ४ ए बार विना ७२. माया मार्गणाए—क्रोधनी ४, माननी ४, लोभनी ४ ए १२ विना ७२. अने लोभ मार्गणाए—क्रोध ४, मान ४, माया ४ ए १२ विना ७२ प्रकृतिनो उदय होय*

५ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशम ए पांच मार्गणाए—अनंतानुबंधिचतुष्क ४, मिथ्यात्वमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, एकेंद्रियादिजाति ४, अने स्थावर चतुष्क ४ एवं १४ विना ७० नो उदय होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असातावेदनीय १, संज्वलनचतुष्क ४, हास्यषट्क ६, वेदत्रिक ३, सम्यक्त्वमोहनीय १, (प्रथम संघयण विना) संघयण ५, (प्रथम संस्थान विना) संस्थान ५, अशुभवर्णादिचतुष्क ४, अशुभविहायोगति १, उपघात १, अस्थिर १, अशुभ १, दुःस्वर १ अने अंतरायकर्म ५ एवं ५३ प्रकृतिनो उदय होय.

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाए—असातावेदनीय १, (प्रथम विना) संस्थान ५, अशुभवर्णादिचतुष्क ४, अशुभविहायोगति १, उपघात १, अस्थिर १, अशुभ १, दुःस्वर १ ए १५ प्रकृतिनो उदय होय.

२ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान ए बे मार्गणाए—सम्यक्त्वमोहनीय १ विना ८३ होय.

१ विभंगज्ञान मार्गणाए—सम्यक्त्वमोहनीय १, एकेंद्रियादिजाति ४ अने स्थावरचतुष्क ४ एवं ९ विना ७५ प्रकृतिनो उदय होय. मतांतरे—तिर्यगानुपूर्वी विना ७४ नो उदय पण होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असातावेदनीय १, संज्वलनचतुष्क ४, हास्यषट्क ६, सम्यक्त्वमोहनीय १, पुरुषवेद १, नपुंसकवेद १, (प्रथम विना) संस्थान ५, अशुभवर्णादि ४, कुखगति १, उपघात १

* [illegible]

र १, अशुभ १, दुस्वर १, अंतराय ५ एवं ४७ प्रकृतिनो उदय होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (थिणद्धित्रिक विना) दर्शनावर-
६, संज्वलनलोभ १, असातावेदनीय १, ऋषभनाराचसंघयण १, नाराचसंघयण१,
संस्थान विना) संस्थान ५, अशुभवर्णादि ४, अशुभविहायोगति १, उपघात१,
ार १, अशुभ १, दुस्वर १ अने अंतरायनी ५ एवं ३४ प्रकृतिनो उदय होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (थिणद्धित्रिक विना) दर्शनावर-
६, असातावेदनीय १, ऋषभनाराचसंघयण १, नाराचसंघयण १. (प्रथम संस्थान
) संस्थान ५, अशुभवर्णादि ४, अशुभविहायोगति १, उपघात १, अस्थिर १,
१, दुस्वर १ अने अंतरायकर्म ५ एवं ३३ प्रकृतिनो उदय होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असातावेदनीय १,
(अनंतानुबंधिचतुष्क ४, अप्रत्याख्यानीचतुष्क ४, मिथ्यात्व अने मिश्र एवं १०
न विना) मोहनीयनी १८, तिर्यंचगति १, (प्रथम विना) संघयण ५ अने
प्रथम विना) संस्थान ५, अशुभवर्णादि ४, कुखगति १, उपघात १, अस्थिर १,
भ १, दुस्वर १, अंतराय ५, नीचगोत्र १ एवं ५९ प्रकृतिनो उदय होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—तिर्यंचानुपूर्वी १, नरकानुपूर्वी १, एकेंद्रियजाति १, बेइंद्रि-
ाति १, तेइंद्रियजाति १, स्थावरचतुष्क ४ ए ९ विना ७५ प्रकृतिनो उदय होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३ ए ९
ा ७५ प्रकृतिनो उदय होय.

२ पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, एकेंद्रियादिजाति ४,
वरचतुष्क ४ ए ११ विना ७३ प्रकृतिनो उदय होय.

२ अभव्य अने मिथ्यात्व मार्गणाएं—समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १
२ विना ८२ प्रकृतिनो उदय होय.

१ उपशम मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असातावेदनीय १,
अनंतानुबंधि ४ अने दर्शनमोहनीय ३ ए सात विना) मोहनीयनी २१, नरकायु १,
र्यंचगति १ अने नरकगति १, (प्रथम संघयण विना) संघयण ५, (प्रथम संस्थान
ना) संस्थान ५, अशुभवर्णादि ४, कुखगति १ उपघात १, अस्थिरादि ६,
ीचगोत्र १, अंतराय ५ एवं ६७ प्रकृतिनो उदय होय.

१ क्षायिकसमकित मार्गणाएं—(अनंतानुबंधि ४, समकितादि दर्शनमोहनीय
ण ए ७ विना) मोहनीयनी २१, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असाता० १,

नरकायु १, तिर्यंचद्विक २, नरकद्विक २, (प्रथम विना) संस्थान ५, अशुभवर्णादि ४, कुखगति १, उपघात १, अस्थिरादिषट्क ६, नीचगोत्र १, अंतराय ५ एवं ६४ होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—अनंतानुबंधि क्रोधादि ४, समकितमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय १, तिर्यंचानुपूर्वी १ अने नरकानुपूर्वी १, एकेंद्रियादिजाति ४ अने स्थावरचतुष्क ४ ए १६ विना ६८ प्रकृतिनो उदय होय.

१ शास्वादन मार्गणाएं–समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय, मिथ्यात्वमोहनीय १, नरकानुपूर्वी १, सूक्ष्मत्रिक ३ ए ७ विना ७७ प्रकृतिनो उदय होय*

१ संज्ञी मार्गणाएं—एकेंद्रियादिकजाति ४, स्थावरचतुष्क ४ ए ८ विना ७६ प्रकृतिनो उदय होय तथा प्रकारांतरे–अपर्याप्तनाम गणतायी ७७ प्रकृतिनो उदय होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं–समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १ अने नरकत्रिक ३ ए ७ विना ७७ प्रकृतिनो उदय होय.

१ आहारी मार्गणाएं—बे आनुपूर्वी विना ८२ प्रकृतिनो उदय होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (पांचनिद्रा विना) दर्शनावरणीय ४, असाता० १, (मिश्रमोहनीय विना) मोहनीयनी २७, नीचगोत्र १, अंतराय ५, तिर्यंचद्विक २, नरकद्विक २, एकेंद्रियादिजाति ४, अशुभवर्णादि ४, स्थावरत्रिक ३, दौर्भाग्य १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १, नरकायु १, स्थिर १, अशुभ १ एवं ६४.



३० बासठमार्गणाने विषे स्वानुदयीबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम स्वानुदयी प्रकृतिना नाम—

देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, जिननाम १, ए ११ प्रकृति स्वानुदयी जाणवी. अनुदयवति प्रकृतियोनो बंध होय तेने स्वानुदयी प्रकृति कहिये.

२ नरकगति अने देवगति मार्गणाएं—जिननाम १ प्रकृतिनो बंध होय शेष १० प्रकृतिनो बंध होय नहीं.

---

* शास्वादनमां जीव मिथ्यात्वी थई नरकमां जाय त्यां शास्वादनसमकितनो उदय होय कारण के उपशमसमकितथी पडेल जीवने नरकमां शास्वादननो उदय होय. पण शास्वादनसमकित थको जीव नरकमां नहीं उपजे माटे नरकानुपूर्वीनो उदय न होय तेथी समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय, मिथ्यात्वमोहनीय, नरकानुपूर्वी अने सूक्ष्मत्रिक ३ ए ७ विना ७७ प्रकृतिनो उदय लेवुं जोइये.

७ तिर्यंचगति, मत अज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व अने असंज्ञी ए ७ मार्गणाएं—
क्रियद्विक २, देवत्रिक ३ अने नरकत्रिक ३ ए ८ प्रकृतिनो बंध होय.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषाय चार,
चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन. भव्य. संज्ञी, आहारी ए १८ मार्गणाएं ११ प्रकृतिनो बंध.

१३ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय,
वनस्पतिकाय, केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन ए १३ मार्गणाएं—एके
प्रकृतिनो बंध नथी. उपरोक्त तेरमार्गणाने अबंधकभूमि कहेली छे.

१३ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय,
परिहारविशुद्धि, अवधिदर्शन, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, क्षायिक, क्षयोपशम
ए १३ मार्गणाएं—नरकत्रिक ३ विना ८ प्रकृतिनो बंध होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—नरकत्रिक ३, आहारकद्विक २ ए ५ विना ६ नो बंध होय.

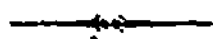
४ अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए ४ मार्गणाएं—आहारक-
द्विक २ विना ९ प्रकृतिनो बंध होय.

१ उपशम मार्गणाएं—नरकत्रिक ३ अने देवायु १ एवं ४ विना ७ नो बंध होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—आहारकद्विक २, नरकत्रिक ३, देवायु १, जिननाम १ एवं ७ विना ४.

१ अनाहारी मार्गणाएं—देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, जिननाम १ ए ५ होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २ ए ५ प्रकृतिनो बंध होय.



२१ बासठमार्गणाने विषे स्वोदयबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम स्वोदयबंधिनी प्रकृतिना नाम—

ज्ञानावरणीय ५, (निद्रापंचकविना) दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, वर्णचतुष्क ४,
शुभ १, अशुभ १, स्थिर १, अस्थिर १, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १,
निर्माण १ अने मिथ्यात्वमोहनीय १ एवं २७ प्रकृति स्वोदयबंधिनी जाणवी
एटले २७ प्रकृतिनो बंध तो एमना उदय पणामांज करे.

४४ गति चार, जातिपांच, काय छ, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषाय चार, त्रणअ-
ज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, लेश्याछे, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी,
असंज्ञी, आहारी, अनाहारी ए ४४ मार्गणाएं—२७ प्रकृतिनो बंध होय.

१४ मनपर्यवज्ञान चार, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति,

अवधिदर्शन, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशमिक, मिश्र, सास्वादन एवं १४ मार्गणाएं—मिथ्यात्व विना २६ प्रकृतिनो बंध होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (निद्रापांच विना) दर्शनावरणीय४, अने अंतरायकर्मनी ५ एवं १४ प्रकृतिनो बंध होय.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं—अबंध जाणवी.



३२ बासठमार्गणाने विषे उभयबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम उभयबंधिनी प्रकृतिना नाम—

निद्रा ५, जाति ५, संस्थान ६, संघयण ६, कषाय १६, नोकषाय ९, त्रसचतुष्क ४, स्थावरचतुष्क ४, वेदनीय २, गोत्रकर्म २, मनुष्यत्रिक ३, तिर्यंचत्रिक ३, औदारिकद्विक २, खगतिद्विक २, पराघात १, उपघात १, आताप १, उद्योत १, उच्छ्वास १, शुभगादिचतुष्क ४, दुर्भगचतुष्क ४ एवं ८२ प्रकृति उभयबंधिनी जाणवी. अनुदयवति अने उदयवति प्रकृतिनो बंध करे तेने उभयबंधिनी प्रकृति कहिये.

१ नरकगति मार्गणाएं—एकेन्द्रियादि जाति ४, स्थावरचतुष्क ४ अने आताप १ ए ९ प्रकृति विना ७३ प्रकृतिनो बंध जाणवो.

३६ तिर्यंचगति, मनुष्यगति, जातिपांच, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषाय चार, त्रणअज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन, लेश्यात्रण, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी एवं ३६ मार्गणाएं—८२ प्रकृतिनो बंध होय.

२ देवगति अने तेजोलेश्या मार्गणाएं–विकलेंद्रियत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३ ए ६ प्रकृति विना ७६ प्रकृतिनो बंध होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—मनुष्यत्रिक ३ अने ऊंचगोत्र १ ए ४ विना ७८ प्रकृतिनो बंध होय.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षायकसमकित, क्षयोपशमिक ए ६ मार्गणाएं—निद्रा १, प्रचला १, पंचेंद्रिय १, प्रथम संघयण १, प्रथम संस्थान१, (अनंतानुबंधि विना) कषाय १२, हास्यषट्क ६, पुरुषवेद १, त्रसचतुष्क ४, वेदनीय २, ऊंचगोत्र १, मनुष्यत्रिक ३, औदारिकद्विक २, शुभविहायोगति १, पराघात१, उद्योत १, उच्छ्वास १, सुभगादिचतुष्क ४, अयशःकीर्ति १ एवं ५२ प्रकृतिनो बंध होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सामायिक ए चार मार्गणाएं—निद्राद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, समचतुरस्रसंस्थान १, संज्वलनकषायचतुष्क ४, हास्यषट्क ६, पुरुषवेद १, त्रसचतुष्क ४, वेदनीय २, ऊंचगोत्र १, शुभविहायोगति १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, सौभाग्यचतुष्क ४, अयशःकीर्त्ति १. एवं ३१.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन मार्गणाएं—शातावेदनीय १ नो बंध.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ऊंचगोत्र १, यशःकीर्त्ति १, शातावेदनीय १ एवं ३ प्रकृतिनो बंध होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—निद्राद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, प्रथमसंस्थान १, प्रत्याख्यानीकषायचतुष्क ४, संज्वलनकषायचतुष्क ४, हास्यषट्क ६, पुरुषवेद १, त्रसचतुष्क ४, वेदनीय २, ऊंचगोत्र १, शुभविहायोगति १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, सौभाग्यचतुष्क ४, अयशःकीर्त्ति १ एवं ३८ प्रकृतिनो बंध होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—एकेंद्रियादिजातिचतुष्क ४, स्थावरचतुष्क ४, अने आताप १ एवं ९ विना ७३ प्रकृतिनो बंध होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—एकेंद्रियादिजाति ४, स्थावरचतुष्क ४, उद्योतचतुष्क ४, आताप १ ए १३ विना ६० प्रकृतिनो बंध होय.

२ उपशमसमकित अने मिश्रसमकित मार्गणाएं—मतिज्ञानादि छ मार्गणामां जे ४९ प्रकृतिनो बंध कहेल छे तेमांथी मनुष्यायु विना ४८ प्रकृतिनो बंध अहीं जाणवुं.

१ सास्वादन समकित मार्गणाएं—एकेंद्रियादिजाति ४, स्थावरचतुष्क ४, हुंडकसंस्थान १, छेवटुंसंघयण १, नपुंसकवेद १ अने आताप १ ए १२ प्रकृति विना ७२.

१ अनाहारी मार्गणाएं—मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १ ए २ विना ८० नो बंध होय.

---

३२ बासठमार्गणाने विषे स्वस्वकव्यवच्छेद्यमान—बंधोदयिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम स्वस्वकव्यवच्छेद्यमानबंधोदयिनी प्रकृतिना नाम—

(संज्वलनलोभ विना) कषायनी १५, मिथ्यात्वमोहनीय १, भय १, जुगुप्सा १, हास्य १, रति १, मनुष्यानुपूर्वी १, सूक्ष्मत्रिक ३, आताप १, पुरुषवेद १ एवं २६ प्रकृति स्वस्वकव्यवच्छेद्यमान बंधोदयिनी जाणवी. ए प्रकृतियोना

उदय अने बंध समकाले एकस्थानके विच्छेद होय तेने 'समकव्यवच्छेद्यमानबंधोदयवर्तिनी' प्रकृति कहिये.

१ नरकगति मार्गणाए–सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १ ए ४ विना २२ प्रकृतिनो बंध.

३८ तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति, जाति पांच, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पति, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषाय चार, त्रण अज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, कृष्णादिलेश्या त्रण, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी एवं ३८ मार्गणाए–२६ प्रकृतिनो बंध होय.

२ तेउकाय अने वाउकाय मार्गणाए–मनुष्यानुपूर्वी विना २५ नो बंध होय.

८ मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, वेदक एवं ८ मार्गणाए–(अनंतानुबंधिचतुष्क ४ अने संज्वलनलोभ १ ए ५ विना) कषायो ११, भय १, दुगंछा १, हास्य १, रति १, मनुष्यानुपूर्वी १, पुरुषवेद १ एवं १७ प्रकृतिनो बंध होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि एवं ४ मार्गणाए–संज्वलनक्रोध १, मान १, माया १, हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १, पुरुषवेद १ एवं ८ प्रकृतिनो बंध होय.

४ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन एवं ४ मार्गणाए–बंध नथी. माटे अहींयां [illegible].

१ देशविरति मार्गणाए–अनंतानुबंधिचतुष्क ४ अने अप्रत्याख्यानी चतुष्क ४ ए ८ विना १८ नो बंध होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाए–सूक्ष्मत्रिक ३ विना २३ नो बंध होय.

२ पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या मार्गणाए–सूक्ष्मत्रिक ३ अने आतप ए ४ विना २२.

१ सास्वादन मार्गणाए–सूक्ष्मत्रिक ३, मिथ्यात्व मोहनीय १ अने आतप १ ए ५ विना २१ प्रकृतिनो बंध होय.

---

३४ सामान्यमार्गणाने विषे क्रमव्यवच्छेद्यमान प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम क्रमव्यवच्छेद्यमान प्रकृतिना नाम–

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अंतराय ५, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघुचतुष्क ४, त्रसदशक १०, जाति ५, वेदनीय २, गोत्र २,

नरकत्रिक ३, तिर्यंचत्रिक ३, मनुष्यद्विक २, खगतिद्विक २, औदारिकद्विक २, स्थिरादि ५, तैजस १, कार्मण १, निर्माण १, उद्योत १, शोक १, अरति १, संज्वलन लोभ १, स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, स्थावर १, तीर्थंकर १ एवं ८६ प्रकृति क्रमव्यवच्छेद्यमान जाणवी जे प्रकृतियोंनो प्रथम बंधनो विच्छेद होय अने पछीथी उदयनो विच्छेद होय तेने 'क्रमव्यवच्छेद्यमान' प्रकृति कहिये.

१ नरकगति मार्गणाएं–एकेन्द्रियादिजाति ४, नरकत्रिक ३ अने स्थावर १ ए ८ प्रकृति विना ७८ प्रकृति होय.

७ तिर्यंचगति, त्रण अज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए ७ मार्गणाएं–जिननाम विना ८९ प्रकृतिनो बंध होय.

२२ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषाय चार, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, कृष्णादिलेश्या त्रण, भव्य, संज्ञी, आहारी ए २२ मार्गणाएं–८६ प्रकृतिनो बंध होय.

१ देवगति मार्गणाएं—विकलेंद्रियत्रिक ३, नरकत्रिक ३ ए ६ विना ८० नो बंध.

७ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय एवं ७ मार्गणाएं—नरकत्रिक ३ अने जिननाम १ ए ४ विना ८२ नो बंध होय.

२ तेउकाय अने वाउकाय ए बे मार्गणाएं—मनुष्यगति १, मनुष्यायु १, नरकत्रिक ३, ऊंचगोत्र १, जिननाम १ ए ७ विना ७९ प्रकृतिनो बंध होय.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षायिक, क्षयोपशम ए ६ मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५ (थीणद्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, अंतराय ५, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघुचतुष्क ४, त्रसदशक १०, पंचेन्द्रियजाति १, वेदनीय २, ऊंचगोत्र १, मनुष्यगति १, मनुष्यायु १, शुभविहायोगति १, औदारिकद्विक २, अस्थिर १, अशुभ १, तैजस १, कार्मण १, निर्माण १, शोक १, अरति १, संज्वलनलोभ १, तीर्थंकर १ एवं ५४ प्रकृतिनो बंध होय.

५ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति ए ५ मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिकविना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, संज्वलनलोभ १, शोक १, अरति १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघुचतुष्क ४, त्रसदशक १०, पंचेंद्रियजाति १, शुभखगति १, अस्थिर १, अशुभ १, तैजस १, कार्मण १, निर्माण १, जिननाम १, ऊंचगोत्र १, अंतराय ५ एवं ४९.

१ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन मार्गणाएं—सातावेदनीय १ नो बंध.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, (निद्रापंचकविना) दर्शनावरणीय ४,

अंतराय ५, शातावेदनीय १, ऊंचगोत्र १, यशःकीर्त्ति १ एवं १७ प्रकृतिनो बंध होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाए—विकलेंद्रियत्रिक ३ अने नरकत्रिक ३ ए ६ विना ८०.

१ पद्मलेश्या मार्गणाए—विकलेंद्रिय त्रिक ३, नरकत्रिक ३, एकेंद्रियजाति १, स्थावर १ ए ८ विना ७८ प्रकृतिनो बंध होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाए—विकलेंद्रियत्रिक ३, नरकत्रिक ३, एकेन्द्रियजाति १, स्थावरनाम १, उद्योतचतुष्क ४ एवं १२ विना ७४ प्रकृतिनो बंध होय.

१ उपशम मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिकविना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, संज्वलनलोभ १, शोक १, अरति १, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघुचतुष्क ४, त्रसदशक १०, पंचेंद्रिय १, मनुष्यगति १, शुभखगति १, औदारिकद्विक २, अस्थिर १, अशुभ १, तैजस १, कार्मण १, निर्माण १, जिननाम १, ऊंचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ एवं ५३ प्रकृतिनो बंध होय.

१ मिश्र मार्गणाए—उपशम मार्गणानो ५३ मांथी जिननाम १ विना ५२ नो बंध.

१ सास्वादन मार्गणाए—छेवट्ठसंघयण १, हुंडकसंस्थान १, एकेन्द्रियादिकजाति ४, नरकत्रिक ३, नपुंसकवेद १, स्थावरनाम १, जिननाम १ एवं १२ विना ७४.

१ अनाहारी मार्गणाए—नरकत्रिक ३, तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ ए ५ विना ८१.

---

३५ बासठमार्गणाने विषे उत्क्रमव्यवच्छेद्यमान प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम उत्क्रमव्यवच्छेद्यमान प्रकृतिनां नाम—

देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, अयशःकीर्त्ति १ एवं ८ प्रकृति उत्क्रमव्यवच्छेद्यमान जाणवी. जे प्रकृतियोंनो प्रथम उदयनो विच्छेद होय अने पछीथी बंधनो विच्छेद होय तेने 'उत्क्रमव्यवच्छेद्यमान' प्रकृति कहिये.

११ नरकगति, देवगति, एकेन्द्रियादिजाति चार, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय ए ११ मार्गणाए—अयशःकीर्त्ति १ नो बंध होय.

१३ तिर्यंचगति, त्रणअज्ञान, देशविरति, अविरति, कृष्णादि त्रण लेश्या, अभव्य, सास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं १३ मार्गणाए—आहारकद्विक विना ६ प्रकृतिनो बंध घटित कारण के आहारकद्विक नो विशुद्धचारित्रवालामां बंधिने ए १३ मार्गणामां आहारकद्विक बंधयोग्य हेतुनो अभाव छे तेथी न बंधिने.

११ मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषायचार,

मत्यादिज्ञान चार, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, भव्य, सायक, क्षयोपशम, संज्ञी, आहारी एवं ३१ मार्गणाएं—८ प्रकृतिनो बंध होय.

४ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन ए ४ मार्गणाएं—कोई प्रकृतिनो बंध नथी माटे अबंधक जाणवी.

१ उपशम मार्गणाएं—देवायु १ विना ७ प्रकृतिनो बंध होय.

२ मिश्र अने अनाहारी मार्गणाएं—देवायु १, आहारकद्विक २ ए त्रण विना ५.

---

३६ बासठमार्गणाने विषे सांतरबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम सांतरबंधिनी प्रकृतिना नाम—

असातावेदनीय १, स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, नरकद्विक २, आहारकद्विक २, (प्रथम विना) संघयण ५, (प्रथम विना) संस्थान ५, एकेंद्रियादिजाति ४, आताप १, उद्योत १, अशुभविहायोगति १, स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्ति १, स्थावरदशक १० एवं ४१ प्रकृति 'सांतरबंधिनी' जाणवी. जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त लगण जे कर्मप्रकृतिनो बंध होय अथवा बंधने अंगीकार करीने अंतर्मुहूर्तमाहें पण आंतरे आंतरे बंध होय अने अंतर्मुहूर्त पछी अध्यवसायना फरवाथी निश्चे विरोधिनी प्रकृतियोंनो बंध थाय पण पहेला बांधेल प्रकृतियोंनो बंध कायम न रहे तेने 'सांतरबंधिनी' प्रकृति कहिये.

१ नरकगति मार्गणाएं—नरकद्विक २, आहारकद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आताप १, स्थावर चतुष्क ४ ए १३ प्रकृति विना २८ प्रकृतिनो बंध होय.

११ तिर्यंचगति, त्रणअज्ञान, अविरति, कृष्णादि त्रण लेश्या, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए ११ मार्गणाएं—आहारकद्विक विना ३९ प्रकृतिनो बंध होय.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषायचतुष्कचार, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, भव्य, संज्ञी, आहारी ए १८ मार्गणाएं ४१ प्रकृतिनो बंध.

१ देवगति मार्गणाएं—असातावेदनीय १, स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, (प्रथम विना) संघयण ५, (प्रथम विना) संस्थान ५, एकेंद्रिय १, आताप १, उद्योत १, कुखगति १, स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्ति १,

स्थावर १, स्थिरादिषट्क ६ एवं ३१ प्रकृतिनो बंध होय.

९ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय एवं ९ मार्गणाएं—नरकद्विक २ अने आहारकद्विक २ ए चार प्रकृति विना ३७ प्रकृतिनो बंध होय.

११ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायक, क्षयोपशम एवं ११ मार्गणाएं—अशातावेदनीय १, हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, आहारकद्विक २, स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्त्ति १, अस्थिर १, अशुभ १, अयशःकीर्त्ति १ एवं १३ प्रकृतिनो बंध होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात, केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—कोई प्रकृतिनो बंध न होय कारण के ए त्रण मार्गणाएं अबंधक भूमि जाणवी.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—यशःकीर्त्ति १ नो बंध होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—अशातावेदनीय १, हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, अयशःकीर्त्ति १, यशःकीर्त्ति १ एवं ११ प्रकृतिनो बंध होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—नरकद्विक २, विकलेंद्रियत्रिक ३ अने सूक्ष्मत्रिक ३ ए ८ विना ३३ प्रकृतिनो बंध होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—तेजोलेश्यामां कहेली ३३ प्रकृतिमांथी एकेंद्रियजाति १, आतप १, स्थावर १ ए त्रण विना ३० प्रकृतिनो बंध होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—तेजोलेश्यामां कहेली ३३ प्रकृतिमांथी एकेंद्रियजाति १, आतप १, उद्योत १ स्थावर १ ए ४ प्रकृति विना २९ प्रकृतिनो बंध होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—अशातावेदनीय १, हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्त्ति १, अस्थिर १, अशुभ १, अयशःकीर्त्ति १ एवं ११.

१ सास्वादन मार्गणाएं—अशातावेदनीय १, स्त्रीवेद १, हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, वज्रऋषभनाराच ४, अने संस्थान ४, उद्योत १, कुखगति १, स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्त्ति १, अस्थिरादि ६ एवं २९ प्रकृतिनो बंध होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—नरकद्विक २ अने आहारकद्विक २ ए चार विना ३७

३७ वासठमार्गणाने विषे सांतरनिरंतर प्रकृतिनुं [illegible]

प्रथम सांतरनिरंतर प्रकृतिना नाम—

वज्रर्षभनाराचसंघयण १, समचतुरस्रसंस्थान १, पराघात १, [illegible]
पुरुषवेद १, पंचेंद्रियजाति १, शातावेदनीय १, शुभखगति १, [illegible]
औदारिकद्विक २, देवद्विक २, मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, गोत्र [illegible]
तुष्क ४, सौभाग्यत्रिक ३ एवं २७ प्रकृति 'सांतरनिरंतरबंधिनी' जाण[illegible]
एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त उपरांत संख्यात असंख्यातकाल [illegible]
प्रकृतियोंनो बंध होय तेने 'सांतरनिरंतरबंधिनी' प्रकृति कहिये।

९ नरकगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय [illegible]
वनस्पतिकाय एवं ९ मार्गणाएं—वैक्रियद्विक २, देवद्विक २ ए चार विना २[illegible]

३३ तिर्यंचगति, मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रो[illegible]
पायचतुष्कचार, त्रणअज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, (शुक्ल विना) [illegible]
भव्य, अभव्य, सास्वादन, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी [illegible]
मार्गणाएं—२७ प्रकृतिनो बंध होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय मार्गणाएं—वैक्रियद्विक २, देवद्विक २, मनुष्यद्वि[illegible]
अने ऊंचगोत्र १ ए ७ विना २० प्रकृतिनो बंध होय.

८ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायक, क्षयोप[illegible]
मिश्र ए ८ मार्गणाएं—तिर्यंचद्विक २ अने नीचगोत्र १ विना २४ प्रकृतिनो बंध [illegible]

५ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति [illegible]
पांच मार्गणाएं—प्रथमसंघयण १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक [illegible]
नीचगोत्र १ ए आठ प्रकृति विना १९ प्रकृतिनो बंध होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन मार्गणाएं—शातावेदनीय १ नो बंध [illegible]

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—शातावेदनीय १, ऊंचगोत्र १ ए बे प्रकृतिनो बंध होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—तिर्यंचद्विक २ विना २५ प्रकृतिनो बंध होय.

---

३८ बासठमार्गणाने विषे निरंतरबंधिनी प्रकृतिनुं द्वार—

प्रथम निरंतरबंधिनी प्रकृतिना नाम—

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, अंतराय ५, वर्णचतुष्क ४, तैजस १,
कार्मण १, उपघात १, निर्माण १, अगुरुलघु १, भय १, जुगुप्सा १, मिथ्या-

त्वमोहनीय १, कषाय १६, जिननाम १, देवायु १, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, नरकायु १ एवं ५२ प्रकृति निरंतरबंधिनी जाणवी. जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट संख्याता असंख्याता काळपर्यंत जे कर्म प्रकृतियोनो निरंतर बंध थाय तेने 'निरंतरबंधिनी' प्रकृति कहिये.

२ नरकगति, देवगति ए बे मार्गणाएं--देवायु १ नरकायु १ ए बे विना ५०.

७ तिर्यंचगति, त्रण अज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं ७ मार्गणाएं–जिननाम १ विना ५१ प्रकृतिनो बंध होय.

२२ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषायचतुष्क, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, कृष्णादि त्रण लेश्या, भव्य, संज्ञी, आहारी एवं २२ मार्गणाएं-५२ प्रकृतिनो बंध होय.

७ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय एवं ७ मार्गणाएं–नरकायु १, देवायु १ अने जिननाम १ ए ३ विना ४९.

२ तेउकाय, वायुकाय ए बे मार्गणाएं–एकेंद्रियादि मार्गणामां कहेली ४९ मांथी मनुष्यायु विना ४८ प्रकृतिनो बंध होय.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षायक, क्षयोपशम ए ६ मार्गणाएं-थीणद्धित्रिक ३, मिथ्यात्वमोहनीय १, अनंतानुबंधिचतुष्क ४, नरकायु १ अने तिर्यंचायु १ ए १० विना ४२ प्रकृतिनो बंध होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि ए ४ मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, अंतराय ५, संज्वलनकषाय ४, वर्णचतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, उपघात १, निर्माण १, अगुरुलघु १, भय १, दुगंछा १, जिननाम १, देवायु १ एवं ३३ प्रकृतिनो बंध पामिये.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात, केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं–कोई प्रकृतिनो बंध नथी.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन १, अवधिदर्शन १, केवलदर्शन १, अंतरायनी ५ एवं १४ प्रकृतिनो बंध होय.

१ देशविरति मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, अंतराय ५, प्रत्याख्यानीचतुष्क ४, संज्वलनचतुष्क ४, वर्णचतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, उपघात १, निर्माण १, अगुरुलघु १, भय १, दुगंछा १, जिननाम १, देवायु १ एवं ३७ प्रकृतिनो बंध होय.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या मार्गणाएं–नरकायु विना ५१ नो बंध होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं–नरकायु १ तिर्यंचायु १ एवं विना ५८ प्रकृतिनो बंध.

१ उपशम मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, अंतरायनी ५, (अनंतानुबंधि विना) कषाय १२, वर्णचतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, उपघात १, निर्माण १, अगुरुलघु १, भय १, जुगुप्सा १, जिननाम १ एवं ४०.

१ मिश्र मार्गणाएं–थीणद्धित्रिक ३, मिथ्यात्वमोहनीय १, अनंतानुबंधिचतुष्क ४, जिननाम १ अने आयुचतुष्क ४ ए १३ विना ३० नो बंध होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—मिथ्यात्वमोहनीय १, नरकायु १, जिननाम १ ए ३ विना ४९ प्रकृतिनो बंध होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं–आयुचतुष्क ४ विना ४८ प्रकृतिनो बंध होय.

---

३९ बासटमार्गणाने विषे मूल आठकर्मनाबंधनुं द्वार–

प्रथम आठकर्मना नाम–

ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयु ५, नामकर्म ६, गोत्र ७, अंतराय ८ ए आठ कर्मना नाम जाणवा.

५५ गतिचार, जातिपांच, काय छ, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषायचार, मत्यादिज्ञानचार, त्रणअज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, लेश्याछे, भव्य, अभव्य, क्षायक, क्षयोपशम, सास्वादन, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी ए ५५ मार्गणाएं–८ कर्मनो बंध.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात, केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं–एक वेदनीयकर्मनो बंध.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–मोहनीय अने आयु विना ६ कर्मनो बंध होय.

३ उपशम, मिश्र, अनाहारी ए त्रण मार्गणाएं–आयुविना ७ कर्मनो बंध होय.*

---

* कर्मप्रकृत्यात्मकविवरणयंत्रमां उपशम मार्गणाना कोठामां ८ आंक मांडेल छे [illegible] बीजा कर्मग्रंथे मिश्रगुणठाणे ७ कर्मनो बंध कहेलो छे अने उपशममार्गणाएं बंध[illegible]स्वामित्वनामक त्रीजा कर्मग्रन्थे आयुकर्म विना ७ कर्मनो बंध कहेलो छे तथा मूला-[illegible]क बंधना अधिकारमां पण ७ कर्मनोज बंध कहेलो छे, तेथी सातनो आंक होवो [illegible]ये; आठनो आंक ठीक नथी.

४० बासठमार्गणाने विषे बंधयोग्य अने बंधविच्छेद प्रकृतिनुं द्वार–

प्रथम बंधयोग्य प्रकृतिना नाम–

ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, 'अनंतानुबंधिचतुष्क ४, अप्रत्याख्यानीचतुष्क ४, प्रत्याख्यानीचतुष्क ४, संज्वलनचतुष्क ४, हास्यषट्क ६, वेदत्रिक ३, मिथ्यात्वमोहनीय १' ए २६ मोहनीयकर्मनी. 'देवद्विक २, मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, नरकद्विक २, जाति ५, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगतिद्विक २, प्रत्येकाष्टक ८, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०' ए ६७ नामकर्मनी. आयुनी ४, गोत्रनी २, अंतरायनी ५ एवं सर्वेमिली बंधयोग्य १२० प्रकृति जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९ वेदनीय २, मोहनीयनी २६, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, गोत्र २, अंतराय ५, मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगतिद्विक २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६ एवं १०१ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष १९ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

७ तिर्यंचगति, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व अने असंज्ञी ए ७ मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीयनी २६, आयु ४, गोत्र २, अंतराय ५, (आहारकद्विक २ अने जिननाम १ विना) नामकर्मनी ६४ एवं ११७ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष ३ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादिकषाय चार, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, भव्य, संज्ञी, आहारी ए १८ मार्गणाएं–१२० प्रकृतिनो बंध होय.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षायक, क्षयोपशम ए ६ मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २ अने (अनंतानुबंधि ४, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, मिथ्यात्वमोहनीय १ एवं ७ प्रकृति विना) मोहनीयनी १९, मनुष्यायु १, देवायु १, ऊंचगोत्र १, अंतराय ५, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ, १, अयशःकीर्ति १, शरीर ५, उपांग२ एवं ७९ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष ४१ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि ए ४ मार्गणाएं- ज्ञानावरणीय ५, (निद्रात्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, देवायु १, ऊंच- गोत्र १, अंतराय ५, संज्वलनचतुष्क ४, हास्यषट्क ६, पुरुषवेद १, देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, (औदारिक विना) शरीर ४, वैक्रियोपांग १, आहारकोपांग १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभखगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, जिननाम १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, अयशःकीर्ति १ एवं सर्वमिली ६५ प्रकृतिनो बंध होय अने ५८ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

३ केवलज्ञान यथाख्यात, केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—शातावेदनीय १ प्रकृ- तिनो बंध होय अने शेष ११९ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनचतुष्क ४, शातावेदनीय १, यशःकीर्ति १, ऊंचगोत्र १, अंतरायकर्म ५ एवं १७ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष १०३ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (निद्रात्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, प्रत्याख्यानीचतुष्क ४, संज्वलनचतुष्क ४, हास्यषट्क ६, पुरुषवेद १, देवायु १, ऊंचगोत्र १, अंतराय ५, देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, वैक्रियद्विक २, तैज- सशरीर १, कार्मणशरीर १, प्रथम संस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, जिननाम १, निर्माण १, उपघात १, त्रसद- शक १०, अस्थिर १, अशुभ १, अयशःकीर्ति १ एवं ६७ नो बंध होय अने शेष ५३ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

४ अविरति, कृष्णादि त्रणलेश्या एवं ४ मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनाव- रणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २६, गोत्रनी २, आयुनी ४ अने अंतरायनी ५, (आहारकशरीर अने आहारकअंगोपांग ए बे प्रकृति विना) नामकर्मनी ६५ एवं ११८ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष २ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोह- नीय २६, (नरकायु विना) आयुनी ३, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, (नरकद्विक २, विकलेंद्रियत्रिक ३ अने सूक्ष्मत्रिक ३ ए आठ विना) नामकर्मनी ५९ एवं १११ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष ९ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोह- नीय २६, (नरकायु विना) आयु ३, गोत्रनी २ अंतरायनी ५, अने (एकेंद्रिय १, स्थावर १, आतप १, नरकद्विक २, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३ ए ११ विना)

नामकर्मनी ५६ एवं १०८ नो बंध होय अने शेष १२ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २६, गोत्रनी २, देवायु १, मनुष्यायु १, अंतराय ५, तथा (नरकद्विक २, तिर्यंचद्विक २, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रियत्रिक ३, एकेंद्रियत्रिक ३ अने उद्योतनाम १ ए १४ विना) नामकर्मनी ५३ एवं १०४ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष १६ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ देवगति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २६, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, ' मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, एकेंद्रियजाति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास१, आताप १, उद्योत १, अगुरुलघु १, जिननाम १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, स्थावर १, अस्थिरषट्क ६' ए नामकर्मनो ५३ एवं १०४ प्रकृतिनो बंध होय, अने शेष १६ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

७ इंद्रिय चार, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय ए ७ मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २६, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, अने नामकर्मनो (देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, नरकद्विक २ अने जिननाम १ ए ९ विना) ५८ एवं १०९ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष ११ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

२ तेउकाय, वाउकाय ए बे मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २६, तिर्यंचायु १, नीचगोत्र १, अंतराय ५, अने नामकर्मनी (जिननाम १, देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, नरकद्विक २, मनुष्यद्विक २ ए ११ विना) ५६ एवं १०५ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष १५ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ उपशम मार्गणाएं–ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, (अनंतानुबंधिचतुष्क ४, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, मिथ्यात्वमोहनीय १ ए ७ विना) मोहनीयनी १९, ऊंचगोत्र १, अंतराय ५, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, पंचेन्द्रियजाति १, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, अयशःकीर्ति १, शरीर ५, उपांग ३ एवं ७७ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष ४३ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ मिश्र मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, (थीणद्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, 'प्रत्याख्यानीचतुष्क ४, अप्रत्याख्यानीचतुष्क ४, संज्वलनचतुष्क ४, हास्यषट्क ६ पुरुषवेद १' ए मोहनीयनी १९ ऊंचगोत्र १, अंतराय ५, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभखगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, अयशःकीर्ति १, पंचेंद्रियजाति १ ए ७४ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष ४६ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ सास्वादन मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, (नपुंसकवेद १ अने मिथ्यात्वमोहनीय १ विना) मोहनीयनी २४, देवायु १, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, गोत्र २, अंतराय ५, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, तिर्यंचद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमना संघयण ५, प्रथमना संस्थान ५, वर्णचतुष्क ४, खगतिद्विक २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६ एवं १०१ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष १९ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

१ अनाहारी मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २६, गोत्र २, अंतराय ५, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, तिर्यंचद्विक २, एकेंद्रियादिजाति ५, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगतिद्विक २, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, अगुरुलघु १, जिननाम १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०, एवं सर्व मिली ११२ प्रकृतिनो बंध होय अने शेष ८ प्रकृतिना बंधनो विच्छेद होय.

---

२१ बासठमार्गणाने विषे मूलआठकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

३६ नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, नपुंसकवेद, क्रोध, मान, माया, मतिअज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अविरति, (शुक्ललेश्याविना) लेश्या ५, अभव्य, क्षयोपशम, सास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं ३६ मार्गणाए—आयुर्बंधकाले तो आयुर्बंधसहित मूल आठकर्मनो बंधस्थानक पामे, अने आयुर्बंधकालना मध्य अने पछाडीना कालमां आयुकर्म विना ७ कर्मनो बीजो बंधस्थानक होय एवं बे बंधस्थानक जाणवा.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, मनयोग, मत्यादिज्ञान चार, चक्षुदर्शन, अच-

क्षुदर्शन, अवधिदर्शन, शुक्ललेश्या, भव्य, क्षायिक, संज्ञी, आहारी ए १८ मार्गणाए—नवमागुणठाणा पर्यंत आयुबंधकाले आठकर्मनो बंध. अने शेष काले ७ कर्मनो बंध. अने दशमे गुणठाणे मोहनीय विना ६ कर्मनो त्रीजो बंधस्थानक. अने ११–१२ मां गुणठाणे एक वेदनीय कर्मनो चोथो एवं चार बंधस्थानक जाणवा.

१ लोभ मार्गणाए–आयुबंधकाले आठकर्मनो प्रथम बंधस्थानक, शेषकाले आयु विना ७ कर्मनो नवमागुणठाणा लगण बंधस्थानक जाणवो, अने दशमांगुणठाणे आयु अने मोहनीय कर्म विना ६ कर्मनो त्रीजो बंधस्थानक होय एवं ३ बंधस्थानक जाणवा.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन मार्गणाए–एक वेदनीयकर्मनो बंध

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए—मोहनीय अने आयु विना ६ कर्मनो एकज बंधस्थान

१ उपशम मार्गणाए—आयुकर्म न बंधिजे माटे सातकर्मनो प्रथम बंधस्थानक, दशमा गुणठाणे मोहनीय विना ६ कर्मनो बीजो बंधस्थानक. अने इग्यारमां गुणठाणे एक सातावेदनीयकर्मनो बंध करे एवं ३ बंधस्थानक जाणवा.

१ मिश्र मार्गणाए—आयु विना ७ कर्मनो एकज बंधस्थानक होय.

१ अनाहारी मार्गणाए—आयु विना ७ कर्मनो प्रथम बंधस्थानक, अने तेरमां गुणठाणे एक वेदनीयकर्मनो बीजो बंधस्थानक जाणवो. तेरमां गुणठाणे केवलीसमुद्घात करे त्यारे वचली त्रण समय पर्यंत अणाहारकपणो होय. त्यां सातावेदनीयनो बंध होय एवं बे बंधस्थानक जाणवा.

---

४२ बासठमार्गणाने विषे ज्ञानावरणीयकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

ज्ञानावरणीयनी पांच उत्तर प्रकृतिनो समकाले विच्छेद होवाथी एकज बंधस्थानक होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाए—ज्ञानावरणीयनी प्रकृतिनो बंधविच्छेद थई गयो छे तेथी बंधस्थानक नथी अने शेष ५९ मार्गणाए—ज्ञानावरणीयनी पांच प्रकृतिनो एक एक बंधस्थानक होय.

---

४३ बासठमार्गणाने विषे दर्शनावरणीयकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

प्रथम दर्शनावरणीयकर्मना बंधस्थानक—

१–चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन २, अवधिदर्शन ३, केवलदर्शन ४, निद्रा ५,

निद्रानिद्रा ६, प्रचला ७, प्रचलाप्रचला ८ अने थीणद्धि ९ ए नव प्रकृतिनो प्रथम बंधस्थानक होय.

२–बीजागुणठाणे थीणद्धि १, निद्रानिद्रा २ अने प्रचलाप्रचला ३ ए त्रण निद्रानो विच्छेद थया बाद आठमां गुणठाणासुधी बीजो छ प्रकृतिनो बंधस्थानक.

३–आठमा गुणठाणाना प्रथमभागे–निद्रा तथा प्रचला ए बे निद्रानो विच्छेद थाय त्यारे दशमां गुणठाणासुधी चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३ अने केवल ४ ए चारदर्शननो त्रीजो बंधस्थानक होय.

२३ नरकगति, देवगति, तिर्यंचगति, त्रणअज्ञान, अविरति, (शुक्ल विना) लेश्या पांच, अनाहारी ए २३ मार्गणाएं–९ प्रकृतिनो अने ६ प्रकृतिनो एवं बे बंधस्थानक होय.

१९ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, क्रोधादि कषाय चार, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, शुक्ललेश्या, भव्य, संज्ञी अने आहारी एवं १९ मार्गणाएं— प्रत्येकें त्रण बंधस्थानक होय.

१३ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, अभव्य, शास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए १३ मार्गणाएं—९ प्रकृतिनो एकज बंधस्थानक होय.

९ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, अवधिदर्शन, उपशम अने क्षायक एवं ९ मार्गणाएं—६ प्रकृतिनो अने ४ प्रकृतिनो ए बे बंधस्थानक होय.

४ परिहारविशुद्धि, देशविरति, क्षयोपशम, मिश्र ए ४ मार्गणाएं—एकज ६ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात, केवलदर्शन ए ३ मार्गणाएं—बंधस्थानक नथी अर्थात् ए त्रण बंधस्थानक दशमागुणठाणा लगण लाभे. केवलद्विकमां १३ मुं अने यथाख्यातमां ११ मो गुणठाणो होय माटे ए त्रण मार्गणाएं—दर्शनावरणीयनी प्रकृतिनो बंध न होय तेथी बंधस्थानक न लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—४ प्रकृतिनो एकज बंधस्थानक होय.

---

४४ बासठमार्गणाने विषे वेदनीयकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार–

४ सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए ४ मार्गणाएं— ताबेदनीयनो बंधस्थानक होय.

५८ शेष नरकगत्यादि अट्ठावनमार्गणाएं—बे बंधस्थानक छे एटले शातावेदनीयना बंधकाले अशातानो बंध न थाय अने अशाताना बंधकाले शातानो बंध न थाय माटे बेहुनो बंध अलग अलग थाय छे तेमां पण छट्ठा प्रमत्त गुणठाणा लगण तो बे बे बंधस्थानक होय अने छट्ठे गुणठाणें—अशाताना बंधनो विच्छेद थाय त्यारे अप्रमत्तादिगुणठाणें एक शातावेदनीयनो बंध होय माटे त्यां एक एक बंधस्थानक लेवुं.

---

२५ बासठमार्गणाने विषे मोहनीयकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

मोहनीयकर्मना दश बंधस्थानक कहे छे.

१—मोहनीय कर्मनी २८ मांथी समकितमोहनीय अने मिश्रमोहनीय ए बे प्रकृतिनो बंध न होय तेथी २६ प्रकृति रही, तेमां एक समयमां त्रणवेदमांथी एकवेदनो बंध थाय पण एक साथे बंध थतुं नथी तेथी बे प्रकृति वेदनी घटाडतां २४ रही अने हास्य १, रति १ तथा शोक १ अरति १ आ बे युगलमांथी पण एकयुगलनो बंध थाय तो बीजायुगलनो बंध न होय. तेथी एक युगलकी बे प्रकृति घटाडतां मिथ्यात्वगुणठाणें २२ प्रकृतिनो प्रथम बंधस्थानक जाणवुं.

२—सास्वादन गुणठाणें मिथ्यात्वमोहनीयनो बंध न होवाथी २१ प्रकृतिनो बीजो बंधस्थानक होय.

३—त्रीजे, चोथे गुणठाणें अनंतानुबंधिचतुष्कनो बंध न थवाथी १७ प्रकृतिनो त्रीजुं बंधस्थानक होय.

४—पांचमांगुणठाणें अप्रत्याख्यानीकषायचतुष्कनो बंध न होवाथी १३ प्रकृतिनो चोथो बंधस्थानक होय.

५—प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण ए त्रण गुणठाणें प्रत्याख्यानीकषायचतुष्कनो बंध नथी तेथी ९ प्रकृतिनो पांचमो बंधस्थानक होय.

६—हास्य १, रति २, भय ३ अने जुगुप्सा ४ ए चार प्रकृति अपूर्वकरण गुणठाणानां छेल्ला भागे बंधविच्छेद थया बाद नवमां गुणठाणानां प्रथम भागे ५ प्रकृतिनो छट्ठो बंधस्थानक होय.

७—नवमा गुणठाणाना प्रथम भागे पुरुषवेदनो विच्छेद थाय. त्यारे नवमाना बीजे भागे संज्वलन-क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४ ए ४ प्रकृतिनो सातमो बंधस्थानक होय.

यथार, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोत-लेश्या, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी अने आहारी ए २९ मार्गणाए—चार बंधस्थानक होय.

४७ बासठमार्गणाने विषे नामकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

प्रथम नामकर्मनां आठ बंधस्थानक कहे छे—

१–मनुष्य अने तिर्यच गतिवाळा मिथ्यात्वी जीवने मिथ्यात्व गुणठाणे— वर्ण १, गंध २, रस ३, स्पर्श ४, तैजस ५, कार्मण ६, अगुरुलघु ७, निर्माण ८, उपघात ९, तिर्यचद्विक ११, एकेंद्रियजाति १२, औदारिकशरीर १३, हुंडकसंस्थान १४, स्थावरनाम १५, बादर अथवा सूक्ष्म १६, अपर्याप्ता १७, प्रत्येक अथवा साधारण १८, अस्थिर १९, अशुभ २०, दौर्भाग्य २१, अनादेय २२, अने अपयशःकीर्त्ति २३ ए त्रेवीश प्रकृतिनो अपर्याप्ता एकेन्द्रिय प्रायोग्य बंधस्थानक होय.

२–मिथ्यात्वीदेव, मनुष्य अने तिर्यचने त्रेवीश प्रकृतिना बंधस्थानकमां पराघात १ अने उच्छ्वास १ शामिल करवाथी तथा अपर्याप्ताना ठेकाणे पर्याप्ता गणवाथी २५ प्रकृतिनो पर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य बंधस्थानक बीजुं होय.

३–त्रण गतिना मिथ्यात्वी जीवने उपरोक्त २५ प्रकृतिना बंधस्थानकमां आतप अथवा उद्योत वधारे गणवाथी २६ प्रकृतिनो पर्याप्ताएकेंद्रिय प्रायोग्य त्रीजुं बंधस्थानक होय.

४–देवगति प्रायोग्य मिथ्यात्वी तथा सम्यक्दृष्टि मनुष्य अने तिर्यचने देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति ३, वैक्रियद्विक ५, प्रथमसंस्थान ६, पराघात ७, उच्छ्वास ८, शुभखगति ९, त्रसादिचार १३, स्थिर अथवा अस्थिर १४, शुभ अथवा अशुभ १५, यशःकीर्त्ति अथवा अपयशःकीर्त्ति १६, सौभाग्य १७, सुस्वर १८, आदेय १९, वर्णचतुष्क २३, तैजस २४, कार्मण २५, अगुरुलघु २६, निर्माण २७, अने उपघात २८ ए अठावीस प्रकृतिनो चोथो बंधस्थानक होय अहीं नरकगति प्रायोग्य अठावीश प्रकृतिनुं पण बंधस्थानक जाणवुं परंतु एटलुं विशेष छे के देवद्विकने ठेकाणे नरकद्विक, प्रथम संस्थानने ठेकाणे हुंडकसंस्थान अने परावर्त्त प्रकृति अशुभ जाणवी.

५–देवादि चार गतिवाळा जीवोने मनुष्यद्विक २, पंचेंद्रियजाति ३, औदारि-

४ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन एवं ४ मार्गणाएं–अबंधकभूमि कही माटे कोई बंधस्थानक न होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—छठ्ठो अने सातमो गुणठाणो होवाथी ९ प्रकृतिनो एक बंधस्थानक होय.

१ देशविरति मार्गणाएं–पांचमो गुणठाणो होवाथी १३ प्रकृतिनो एक बंधस्था०

५ प्रथमनी पांच लेश्या मार्गणाएं–२२।२१।१७।१३ अने ९ प्रकृतिना एवं ५ बंधस्था०

१। क्षयोपशम मार्गणाएं—चोथाथी सातमा सुधी चार गुणठाणा होवाथी १७ १३ अने ९ प्रकृतिना एवं त्रण बंधस्थानक होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—मिश्र गुणठाणुं होवाथी १७ प्रकृतिनो एक बंधस्थानक होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं–सास्वादन गुणठाणुं होवाथी २१ प्रकृतिनो एक बंध०

---

४६ बासठमार्गणाने विषे आयुकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार–

आयुकर्मना चार बंधस्थानक कहे छे–

देवायु १, मनुष्यायु २, तिर्यंचायु ३, नरकायु ४ एवं आयुनी चार प्रकृतिना चार बंधस्थानक छे, कारण एक भवमां एकज आयुनो बंध थाय माटे चार बंधस्थानक जाणवा.

९ नरकगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय एवं नव मार्गणाएं–मनुष्यायु १ अने बीजुं तिर्यंचायु २ ए बे बंधस्थानक होय.

७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, शुक्ललेश्या, क्षायिक, क्षयोपशम ए ७ मार्गणाएं—देवायु १, मनुष्यायु १ ए बे बंधस्थानक होय.

२ तेउकाय अने वाउकाय ए बे मार्गणाएं—तिर्यंचायुनो एक बंधस्थानक होय.

३ तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने सास्वादन ए त्रण मार्गणाएं—देवायु १, मनुष्यायु १ अने तिर्यंचायु १ ए त्रण बंधस्थानक होय.

५ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि अने देशविरति ए ५ मार्गणाएं–देवायुनो एक बंधस्थानक होय.

७ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन, उपशम, मिश्र अने अनाहारी एवं ७ मार्गणाएं—आयुनो बंध न होवाथी बंधस्थानक न होय.

२९ तिर्यंचगति, मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, कषा-

४९ बासठमार्गणाने विषे अंतरायकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार–

१ अंतरायकर्मनी पांच प्रकृतिनो एक बंधस्थानक जाणवुं.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाए—अंतरायनो बंध सर्वथा न होवाथी बंधस्थानक पण न होय.

५९ शेष नरकगत्यादि ५९ मार्गणाए—५ प्रकृतिनो एक एक बंधस्थानक होय.

---

५० बासठमार्गणाने विषे आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना बंधस्थानकनुं द्वार–

* आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना ओगणत्रीस बंधस्थानक कहे छे—

१–शातावेदनीय एक प्रकृतिनो प्रथम बंधस्थानक होय.

२–ज्ञानावरणीय ५, (पांच निद्राविना) दर्शनावरणीयनी ४, शातावेदनीय १, अंतरायनी ५, यशःकीर्ति १, ऊंचगोत्र १ ए १७ प्रकृतिनो बीजुं बंधस्थानक.

३–ज्ञानावरणीय ५, चक्षुरादिदर्शनावरणीय ४, शातावेदनीय १, संज्वलनलोभ १, ऊंचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ ए १७ अशेषनी अने एक यशःकीर्तिनामकर्मनी एवं १८ प्रकृतिनो त्रीजो बंधस्थानक होय.

४–ज्ञानावरणीयादि त्रीजा बंधस्थानकनी १७ प्रकृतिमां संज्वलनमाया गणवाथी अशेषनी १८ प्रकृति अने नामनी एक यशःकीर्ति एवं १९ प्रकृतिनो चोथो बंधस्थानक होय.

५–चोथा बंधस्थानकमां संज्वलनमान १ भेळवाथी अशेषनी १९ अने नामनी यशःकीर्ति १ एवं २० प्रकृतिनो पांचमो बंधस्थानक होय.

६–संज्वलनक्रोधनो बंध वधारतां छट्ठो २१ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

७–उपरोक्त एकवीस प्रकृतिमां पुरुषवेद मांहेनुं गमे ते एक वेद वधारे गणवाथी २२ प्रकृतिनो सातमो बंधस्थानक थाय.

८–ज्ञानावरणीय ५, चक्षुरादिदर्शनावरणीय ४, शातावेदनीय १, मोहनीयनी संज्वलनकषाय ४, हास्य १, रति २, भय ३, जुगुप्सा ४, वेद ५ ए

• आ द्वारना बंधस्थानकमां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, गोत्र अने अंतराय ए ७ कर्मनी प्रकृतिओने 'अशेष' पदथी संग्रहवामां आवशे माटे अशेष शब्दथी उपरोक्त सातकर्मनी प्रकृति जाणवी जोइए.

४ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन एवं ४ मार्गणाएं–अबंधकभूमि कही माटे कोई बंधस्थानक न होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाए—छट्ठो अने सातमो गुणठाणो होवाथी ९ प्रकृतिनो एक बंधस्थानक होय.

१ देशविरति मार्गणाए–पांचमो गुणठाणो होवाथी १३ प्रकृतिनो एक बंधस्था

५ प्रथमनी पांच लेश्या मार्गणाए–२२।२१।१७।१३ अने ९ प्रकृतिना एवं ५ बंधस्था

१ उपशम मार्गणाए—चोथाथी सातमा सुधी चार गुणठाणा होवाथी १७ १३ अने ९ प्रकृतिना एवं त्रण बंधस्थानक होय.

१ मिश्र मार्गणाए—मिश्र गुणठाणुं होवाथी १७ प्रकृतिनो एक बंधस्थानक होय.

१ सास्वादन मार्गणाए–सास्वादन गुणठाणुं होवाथी २१ प्रकृतिनो एक बंध

---

४६ बासठमार्गणाने विषे आयुकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार–

आयुकर्मना चार बंधस्थानक कहे छे–

देवायु १, मनुष्यायु २, तिर्यंचायु ३, नरकायु ४ एवं आयुनी चार प्रकृतिना चार बंधस्थानक छे, कारण एक भवमां एकज आयुनो बंध थाय माटे चार बंधस्थानक जाणवा.

९ नरकगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय एवं नव मार्गणाए–मनुष्यायु १ अने वली तिर्यंचायु २ ए बे बंधस्थानक होय.

७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, शुक्ललेश्या, क्षायिक, क्षयोपशम एवं ७ मार्गणाए—देवायु १, मनुष्यायु २ ए बे बंधस्थानक होय.

२ तेउकाय अने वाउकाय ए बे मार्गणाए—तिर्यंचायुनो एक बंधस्थानक होय.

३ तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने सास्वादन ए त्रण मार्गणाए—देवायु १, मनुष्यायु २ अने तिर्यंचायु ३ ए त्रण बंधस्थानक होय.

५ मनःपर्यव, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि अने देशविरति एवं ५ मार्गणाए–देवायुनुं एक बंधस्थानक होय.

७ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन, उपशम, मिश्र अने अनाहारी एवं ७ मार्गणाए—आयुनो बंध न होवाथी बंधस्थानक न होय.

१०, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, काययोग, वचनयोग, मन-

४९ बासठमार्गणाने विषे अंतरायकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार–

अंतरायकर्मनी पांच प्रकृतिनो एक बंधस्थानक जाणवुं.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं—अंतरायनो बंध सर्वथा न होवाथी बंधस्थानक पण न होय.

५९ शेष नरकगत्यादि ५९ मार्गणाएं—५ प्रकृतिनो एक एक बंधस्थानक होय.

---

५० बासठमार्गणाने विषे आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना बंधस्थानकनुं द्वार–

* आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना ओगणत्रीस बंधस्थानक कहे छे—

१–शातावेदनीय एक प्रकृतिनो प्रथम बंधस्थानक होय.

२–ज्ञानावरणीय ५, (पांच निद्राविना) दर्शनावरणीयनी ४, शातावेदनीय १, अंतरायनी ५, यशःकीर्ति १, ऊंचगोत्र १ ए १७ प्रकृतिनो बीजुं बंधस्थानक.

३–ज्ञानावरणीय ५, चक्षुरादिदर्शनावरणीय ४, शातावेदनीय १, संज्वलनलोभ १, ऊंचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ ए १७ अशेषनी अने एक यशःकीर्तिनामकर्मनी एवं १८ प्रकृतिनो त्रीजो बंधस्थानक होय.

४–ज्ञानावरणीयादि बीजा बंधस्थानकनी १७ प्रकृतिमां संज्वलनमाया गणवाथी अशेषनी १८ प्रकृति अने नामनी एक यशःकीर्ति एवं १९ प्रकृतिनो चोथो बंधस्थानक होय.

५–चोथा बंधस्थानकमां संज्वलनमान १ मेलववाथी अशेषनी १९ अने नामनी यशःकीर्ति १ एवं २० प्रकृतिनो पांचमो बंधस्थानक होय.

६–संज्वलनक्रोधनो बंध वधारतां छट्ठो २१ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

७–उपरोक्त एकवीस प्रकृतिमां त्रणवेद माहेथुं गमे ते एक वेद वधारे गणवाथी २२ प्रकृतिनो सातमो बंधस्थानक थाय.

८–ज्ञानावरणीय ५, चक्षुरादिदर्शनावरणीय ४, शातावेदनीय १, मोहनीयनी संज्वलनकषाय ४, हास्य १, रति १, भय १, दुगुंछा १, वेद १ ए

---

* आ द्वारना बंधस्थानकमां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, गोत्र अने अंतराय ए ७ कर्मनी प्रकृतिओने 'अशेष' एवो शब्द संकेतवानो आवशे माटे अशेष शब्दथी उपरोक्त सातकर्मनी प्रकृति समजवी.

योग्य २९ प्रकृतिनो एवं बे बंधस्थानक होय.

५ अविरति, कृष्णादित्रणलेश्या, अनाहारी एवं ५ मार्गणाए—देवप्रायोग्य आहारकद्विक अने जिननामसमेत ३१ प्रकृतिनो सातमो, अने आठमा गुणठाणा उपरांतना यशःकीर्त्ति १ प्रकृतिनो आठमो ए बे बंधस्थानक विना शेष २३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० ए ६ बंधस्थानक होय. अहीं देवप्रायोग्य २९ प्रकृति अने मनुष्यप्रायोग्य ३० प्रकृतिनो बंधस्थानक जिननाम समेत थाय अने तिर्यंचप्रायोग्य २९ अने ३० प्रकृतिनो बंधस्थानक जिननाम विना थाय छे एम जाणवुं.

१ तेजोलेश्या मार्गणाए—एकेंद्रियअपर्याप्त प्रायोग्य २३ प्रकृतिनो अने यशःकीर्तिनामनी एक प्रकृतिनो, नवमा दशमा गुणठाणाना ए बे बंधस्थानक विना शेष २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ ए ६ बंधस्थानक होय.

अहीं २५ अने २६ प्रकृतिना ए बे बंधस्थानक एकेंद्रियपर्याप्त प्रायोग्य लीजे केम के एकेंद्रियपर्याप्त सिवाय तेजोलेश्यामां २५ अने २६ प्रकृतिनो बंधस्थानक न होय.

२ पद्मलेश्या अने क्षयोपशम ए बे मार्गणाए—देव अने मनुष्य प्रायोग्य २८ २९ । ३० । ३१ ए चार बंधस्थानक होय.

१ मिश्र मार्गणाए—देवप्रायोग्य २८ प्रकृतिनो अने मनुष्य पर्याप्त प्रायोग्य २९ प्रकृतिनो एवं बे बंधस्थानक होय.

१ सास्वादन मार्गणाए—देवप्रायोग्य २८ प्रकृतिनो अने मनुष्य-तिर्यंचप्रायोग्य २९ । ३० प्रकृतिना एवं त्रण बंधस्थानक होय.

---

४८ बासठमार्गणाने विषे गोत्रकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

१४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, देशविरति, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, मिश्र ए १४ मार्गणाए—उंचगोत्रनी १ प्रकृतिनो एक एक बंधस्थानक होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाए—कांई प्रकृतिनो बंधस्थानक नथी.

४० गतिचार, जातिपांच, काय छ, त्रणयोग, त्रणवेद, कषायचार, त्रण अज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, लेश्या छ, भव्य, अभव्य, सास्वादन, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी ए ४० मार्गणाए—नीचगोत्र अने उंचगोत्र एवं बे बंधस्थानक होय.

---

४९ यासठमार्गणाने विषे अंतरायकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

अंतरायकर्मनी पांच प्रकृतिनो एक बंधस्थानक जाणवुं.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाए—अंतरायनो बंध सर्वथा न होवाथी बंधस्थानक पण न होय.

५९. शेष नरकगत्यादि ५९ मार्गणाए—५ प्रकृतिनो एक एक बंधस्थानक होय.

---

५० यासठमार्गणाने विषे आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना बंधस्थानकनुं द्वार—

* आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना ओगणत्रीस बंधस्थानक कहे छे—

१—सातावेदनीय एक प्रकृतिनो प्रथम बंधस्थानक होय.

२—ज्ञानावरणीय ५, (पांच निद्राविना) दर्शनावरणीयनी ४, सातावेदनीय १, अंतरायनी ५, यशःकीर्त्ति १, उंचगोत्र १ ए १७ प्रकृतिनो बीजुं बंधस्थानक.

३—ज्ञानावरणीय ५, चक्षुरादिदर्शनावरणीय ४, सातावेदनीय १, संज्वलनलोभ १, उंचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ ए १७ अहीयां अने एक यशःकीर्त्तिनामकर्मनी एवं १८ प्रकृतिनो त्रीजो बंधस्थानक होय.

४—ज्ञानावरणीयादि बीजा बंधस्थानकनी १७ प्रकृतिमां संज्वलनमाया गणवाथी अहीयां १८ प्रकृति अने नामनी एक यशःकीर्त्ति एवं १९ प्रकृतिनो चोथो बंधस्थानक होय.

५—चोथा बंधस्थानकमां संज्वलनमान १ वधवाथी अहीयां १९ अने नामनी यशःकीर्त्ति १ एवं २० प्रकृतिनो पांचमो बंधस्थानक होय.

६—संज्वलनक्रोधनो बंध वधवाथी छठ्ठो २१ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

७—उपरोक्त एकवीस प्रकृतिमां हास्यादि चारनुं अने ते एक वेद वधतां स्थानकमां २६ प्रकृतिनो सातमो बंधस्थानक थाय.

८—ज्ञानावरणीय ५, चक्षुरादिदर्शनावरणीय ४, सातावेदनीय १, मोह-नीयनी संज्वलनचतुष्क ४, हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १, वेद १ ए

* आ उत्तर बंधस्थानकमां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम अने अंतराय ए ७ कर्मनी प्रकृतिओ 'ओघ' एवं [illegible] बंधस्थानक [illegible] अने [illegible] उपरोक्त [illegible] प्रकृति [illegible].

योग्य २९ प्रकृतिनो एवं वे बंधस्थानक होय.

५ अविरति, कृष्णादित्रिणलेश्या, अनाहारी एवं ५ मार्गणाएं—देवप्रायोग्य आहारकद्विक अने जिननामसमेत ३१ प्रकृतिनो सातमां, अने आठमा गुणठाणा उपरांतना यशःकीर्ति १ प्रकृतिनो आठमो ए बे बंधस्थानक विना शेष २३।२५।२६।२८।२९।३० ए ६ बंधस्थानक होय. अहीं देवप्रायोग्य २९ प्रकृति, अने मनुष्यप्रायोग्य ३० प्रकृतिनो बंधस्थानक जिननाम समेत थाय अने तिर्यंचप्रायोग्य २९ अने ३० प्रकृतिनो बंधस्थानक जिननाम विना थाय छे एम जाणवुं.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—एकेंद्रियअपर्याप्ता प्रायोग्य २३ प्रकृतिनो अने यशःकीर्तिनामनी एक प्रकृतिनो, नवमा दशमा गुणठाणाना ए बे बंधस्थानक विना शेष २५।२६।२८।२९।३०।३१ ए ६ बंधस्थानक होय.

अहीं २५ अने २६ प्रकृतिना ए बे बंधस्थानक एकेंद्रियपर्याप्ता प्रायोग्य लीजे केम के एकेंद्रियपर्याप्ता सिवाय तेजोलेश्यामां २५ अने २६ प्रकृतिनो बंधस्थानक न होय.

२ पद्मलेश्या अने क्षयोपशम ए बे मार्गणाएं—देव अने मनुष्य प्रायोग्य २८।२९।३०।३१ ए चार बंधस्थानक होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—देवप्रायोग्य २८ प्रकृतिनो अने मनुष्य पर्याप्ता प्रायोग्य २९ प्रकृतिनो एवं बे बंधस्थानक होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—देवप्रायोग्य २८ प्रकृतिनो अने मनुष्य-तिर्यंचप्रायोग्य २९।३० प्रकृतिना एवं त्रण बंधस्थानक होय.

---

४८ बासटमार्गणाने विषे गोत्रकर्मना बंधस्थानकनुं द्वार—

१४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, देशविरति, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, मिश्र ए १४ मार्गणाएं —उंचगोत्रनी १ प्रकृतिनो एक एक बंधस्थानक होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—कोई प्रकृतिनो बंधस्थानक नथी.

४० गतिचार, जातिपांच, काय छे, त्रणयोग, त्रणवेद, कषायचार, त्रण अज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, लेश्या छे, भव्य, अभव्य, सास्वादन, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी ए ४० मार्गणाएं—नीचगोत्र अने उंचगोत्र एवं बे बंधस्थानक होय.

१५—सातमे गुणठाणें उपरोक्त ५८ प्रकृतिमां देवायु १ वधारतां अशोपसंज्ञानी २८ अने नामकर्मनी ३१ एवं ५९ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

१६—ज्ञानावरणीय ५, निद्राद्विक समेत दर्शनावरणीय ६, शाता अशातामांथी १, प्रत्याख्यानी ४, संज्वलन ४, हास्य, रति अथवा शोक, अरति ए बे युगलमांथी एक युगलनी २ प्रकृति तथा भय १ दुगंछा १ अने वेद १, ऊंचगोत्र अथवा नीचगोत्र ए बे गोत्रमांहेली १ अने अंतरायनी ५ एवं अशोपनी ३१ अने देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभविहायोगति १, अगुरुलघुचतुष्क ४, निर्माण १, त्रसदशक १०, तीर्थंकरनाम १, ए २९ नामकर्मनी एवं ६० प्रकृतिनो होय. अहीं स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्ति १ ए त्रण प्रकृति गणी परंतु कोईक एमनी प्रतिपक्षिणी अशुभ १, अस्थिर १, अयशःकीर्ति १ ए त्रण लीधेल छे.

१७—उपरोक्त ६० प्रकृतिनी साथे देवायुनी १ अशोपसंज्ञानी गणतां सत्तरमां बंधस्थानके देवायु समेत अशोपनी ३२ अने जिनयुक्त नामनी २९ एवं ६१ प्रकृति होय.

१८—सत्तरमां बंधस्थानकमां अशोपनी कहेली ३२ प्रकृतिमांथी सुरायु विनानी एकत्रीश प्रकृतियोंने साथे अप्रत्याख्यानी कषायनी ४ प्रकृति मेलवीये त्यारे अशोपनी ३५ प्रकृति (जिन विना) नामनी २८ एवं ६३ प्रकृतिनो अढारमो बंधस्थानक.

अहीं १६।१७।१८ ए त्रण बंधस्थानक थकी त्रसदशकमां कहेली स्थिर, शुभ, यशःकीर्ति ए त्रण अने स्थावरदशक मांहेली अस्थिर १, अशुभ १, अयशःकीर्ति १ ए त्रण एवं छ मांहेली गमे ते त्रणप्रकृतिनो बंध थाय छे.

१९—एक जिननाम युक्त २९ प्रकृति नामकर्मनी अने अप्रत्याख्यानी समेत ३५ प्रकृति अशोपनी एवं ६४ प्रकृतिनो ओगणीशमो बंधस्थानक होय.

२०—सुरायु समेत अशोपनी ३६ प्रकृति अने नामनी २९ प्रकृति एवं ६५ प्रकृतिनो वीशमो बंधस्थानक होय. देवतायोग्य ६५ प्रकृतिनो बंध मनुष्यने होय.

२१—अशोपनी ३६ प्रकृति उपर प्रमाणे एटलुं विशेष के देवायुनी जग्याये मनुष्यायुनो बंध लीजे अने मनुष्यद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमसंघयण १, प्रथमसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, शुभखगति १, अगुरुलघुचतुष्क ४, जिननाम १, निर्माण १, त्रसचतुष्क ४, स्थिर अथवा अस्थिर १, शुभ अथवा अशुभ १, सौभाग्यादित्रिक ३, यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति १ ए मनुष्यप्रायोग्य नामकर्मनी ३० प्रकृति. एवं ६६ प्रकृतिनो

एकवीशमो बंधस्थानक समकिती-देव अने नारकीने होय. अथवा अपर्याप्ता एकेंद्रियप्रायोग्य ६६ नो बीजी रीते–आगळगुणठाणाने विषे प्रथम मिथ्यात्व-गुणठाणाना बंधस्थानकमां कहेवाशे.

२२–मिथ्यादृष्टि–मनुष्य अने तिर्यंच गतिवालाने अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय बेमांथी १, मोहनीयनी २२, तिर्यंचायु १, नीचगोत्र १, अंतरायनी ५ एवं अशेषनी ४४. अने तिर्यंचद्विक २, एकेंद्रियजाति १, औदारिक १, तैजस १, कार्मण १, हुंडकसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, स्थावर १, सूक्ष्म अथवा बादर १, अपर्याप्त १, प्रत्येक अथवा साधारण १, अस्थिर १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १ ए नामनी २३. एवं ६७ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

२३–आयुविना अशेषनी ४३ अने बावीशमां बंधस्थानकमां कहेली २३ प्रकृतिमां पराघात अने उच्छ्वास ए बे प्रकृति भेळतां पर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य २५ थाय तेमां अपर्याप्ताने स्थानके पर्याप्ता गणवी अने स्थिर अथवा अस्थिर १, शुभ अथवा अशुभ १, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति १ ए ५ युगल मांथी गमे ते एक प्रकृति लेवी एवं ६८ प्रकृतिनुं बंधस्थानक मनुष्य, तिर्यंच अने देवना ए त्रण गतिवाला मिथ्यात्वी जीवने होय. अथवा विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय–मनुष्य तिर्यंच अपर्याप्ता प्रायोग्यनो बंधस्थानक मिथ्यात्वी–मनुष्य अने तिर्यंचगतिवालाने होय.

२४–अशेषनी ४३ प्रकृतिमां आयुनी १ प्रकृति गणिये त्यारे अशेषनी ४४ अने नामनी २५ एवं ६९ प्रकृतिनुं चोवीशमो बंधस्थानक होय.

२५–चोवीशमां बंधस्थानकमां कहेली अशेषनी ४४ प्रकृतिमां आताप अथवा उद्योत ए बेमांथी एक प्रकृति भेळवाथी नामनी २६ प्रकृतिनो बंध गणतां एकेंद्रियपर्याप्ता प्रायोग्य ७० प्रकृतिनो बंधस्थानक मिथ्यादृष्टि–मनुष्य अने तिर्यंच गतिवालाने होय.

२६–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीयनी बेमांथी १, 'कषाय १६, हास्य, रति अने शोक, अरति ए बे युगलमांथी एक युगलनी २ प्रकृति तथा त्रणवेदमांथी वेद १, भय १, दुगंछा १, मिथ्यात्वमोहनीय १' ए मोहनीयनी २२. बे गोत्रमांथी गोत्र १ अने अंतरायनी ५ एवं ४३ अशेषनी अने देवप्रायोग्य अथवा नरक प्रायोग्य देवद्विक अथवा नरकद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, तथा देवप्रायोग्यने प्रथम सं-

स्थान अथवा नरकप्रायोग्यने हुंडकसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, देवप्रायोग्य शुभ-
खगति, सौभाग्य, आदेय, सुस्वर ए चार प्रशस्त लीजे. अथवा नरक प्रायोग्य अशु-
भखगति, दौर्भाग्य अनादेय, दुस्वर ए चार अप्रशस्त लीजे. तथा अगुरुलघुचतुष्क ४,
निर्माण १, त्रसचतुष्क ४, स्थिर अथवा अस्थिर १, शुभ अथवा अशुभ १, यशः-
कीर्ति अथवा अयशःकीर्ति १ एवं सर्वमली ७१ प्रकृतिनो बंधस्थानक मिथ्यात्वी-
तिर्यंच अने मनुष्यने होय.

२७–छवीसमां बंधस्थानकमां कहेली ७१ प्रकृतिमां आयु १ वधारे गणवा-
थी ७२ प्रकृतिनुं ए सत्तावीसमो बंधस्थानक मिथ्यात्वी–तिर्यंच अने मनुष्यने होय.

२८–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय १, मोहनीयनी २२,
मनुष्यायु अथवा तिर्यंचायु १, गोत्रनी बेमांथी १, अंतरायनी ५ एवं ४४ प्र-
कृति अशेष कर्मनी अने मनुष्यपर्याप्ता अने तिर्यंचपर्याप्ता प्रायोग्य नाम कर्मनी २९
प्रकृति एवं ७३ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

२९–अशेषनी ४४ प्रकृति अने तिर्यंच प्रायोग्य नामकर्मनी २९ प्रकृतिमां एक
उद्योत वधारे गणिये त्यारे नामनी ३० एवं ७४ प्रकृतिनो ओगणत्रीशमो बंधस्था०

चौदगुणठाणे ओगणत्रीश बंधस्थानक कहे छे—

मिथ्यात्वगुणठाणे—६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए आठ बंधस्थानक
बंधाधिकारमां कह्या प्रमाणे होय अने मिथ्यात्वीने ज्ञानावरणीय ५, दर्शनाव-
रणीय ९, वेदनीयनी बे मांथी १, मोहनीयनी २२, गोत्र १, अंतरायनी ५
ए अशेषनी ४३ अने नामकर्मनी अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य २३ प्रकृति बा-
वीसमां बंधस्थानकमां कहेली एवं ६६ प्रकृतिनो प्रथम बंधस्थानक होय
एवं ९ बंधस्थानक जाणवा.

२ सास्वादनगुणठाणे–तिहां ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय १, (मि-
थ्यात्व विना) मोहनीयनी २१, गोत्रनी १, अंतरायनी ५ ए ४२ अशेषनी तथा
देवप्रायोग्य नामनी २८ प्रकृति एवं ७० नो बंधस्थानक. देवायु सहित ७१ नो
बंधस्थानक. आयुसहित अशेषनी ४३ अने मनुष्य प्रायोग्य अथवा तिर्यंच-
पंचेंद्रिय प्रायोग्य नामनी २९ प्रकृति ए ७२ प्रकृतिनुं त्रीजुं बंधस्थानक. तथा
आयु सहित ४३ प्रकृति अशेषमां तिर्यंचपंचेंद्रिय प्रायोग्यनी उद्योत सहित नाम-
नी ३० गणतां ७३ प्रकृतिनो चोथो बंधस्थानक होय. अर्थात् ७०।७१।७२।७३
ए चार बंधस्थानक जाणवा.

३ मिश्रगुणठाणे—६३ नुं बंधस्थानक ऊपर बंधस्थानकाधिकारमां कह्या प्रमाणे

હોય અને ૬૪ પ્રકૃતિનો બંધસ્થાનક તો જ્ઞાનાવરણીય ૫, દર્શનાવરણીય ૬, વેદનીય ૧, અપ્રત્યાખ્યાની ૪, પ્રત્યાખ્યાની ૪, સંજ્વલન ૪, બે યુગલમાંથી એક યુગલની ૨, ભય ૧, દુર્ગંછા ૧, પુરુષવેદ ૧ ને ૧૭ મોહનીયની, ઉચ્ચગોત્ર ૧, અંતરાયની ૫ એ ૩૫ મળીને અને મનુષ્ય પ્રાયોગ્ય નામની ૨૯ એ ૬૪ પ્રકૃતિઓનું બીજું બંધસ્થાનક હોય.

૪ અવિરતિ સમ્યક્દૃષ્ટિ ગુણઠાણે—[illegible] એ ચાર બંધસ્થાનક બંધ[illegible] પ્રકારે બતાવ્યા પ્રમાણે હોય.

૫ દેશવિરતિ ગુણઠાણે—[illegible] એ બંધસ્થાનક હોય તેમાં [illegible] એક બંધસ્થાનકના અધિકારમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવા, અને જ્ઞાનાવરણીય ૫, દર્શનાવરણીય ૬, વેદનીય ૧, પ્રત્યાખ્યાની ૪, સંજ્વલની ૪, બે યુગલમાંથી એક યુગલની ૨, ભય ૧, દુર્ગંછા ૧, પુરુષવેદ ૧ એ મોહનીયની ૧૩, ઉચ્ચગોત્ર ૧ અને અંતરાયની ૫ એ ૩૧ મળીને તથા દેવપ્રાયોગ્ય ૨૮ નામની એ [illegible] પ્રકૃતિનો બંધસ્થાનક જાણ્યું.

૬ પ્રમત્ત ગુણઠાણે—જ્ઞાનાવરણીય ૫, નિદ્રાદિક સહિત દર્શનાવરણીય ૬, વેદનીય ૧, સંજ્વલન ૪, હાસ્યાદિ બે યુગલમાંથી એક યુગલની ૨, ભય ૧, દુર્ગંછા ૧, પુરુષવેદ ૧ એ મોહનીયની ૯, તથા ઉચ્ચગોત્ર ૧, અંતરાયની ૫, એ ૨૭ મળીને અને દેવપ્રાયોગ્ય નામની ૨૮ એ [illegible] નો પ્રથમ બંધસ્થાનક, તથા જિનનામ સહિત દેવપ્રાયોગ્ય નામની ૨૯ પ્રકૃતિ અને પૂર્વોક્ત ૨૭ પ્રકૃતિ મળીને [illegible] પ્રકૃતિનો બંધસ્થાનક, તથા દેવાયુ સહિત મળીને [illegible] અને જિનનામ સહિત નામની ૨૯, એ [illegible] પ્રકૃતિનો ત્રીજો બંધસ્થાનક.

૭ અપ્રમત્ત ગુણઠાણે—ઉપર પ્રમાણે અગાઉની ૨૭ અને દેવ પ્રાયોગ્ય નામકર્મની ૨૮ પ્રકૃતિ એ [illegible] પ્રકૃતિનો પ્રથમ બંધસ્થાનક, જિનનામ સહિત દેવ પ્રાયોગ્ય નામકર્મની ૨૯, અગાઉની ૨૭ એ [illegible] પ્રકૃતિનો બીજો બંધસ્થાનક, આહારકદ્વિક સહિત દેવપ્રાયોગ્ય નામની ૩૦ પ્રકૃતિ અને અગાઉની ૨૭ પ્રકૃતિ એ [illegible] પ્રકૃતિનો ત્રીજો બંધસ્થાનક, અગાઉની ૨૭ અને દેવપ્રાયોગ્ય નામની ૨૮ [illegible] આહારકદ્વિક, જિનનામ એ [illegible] નામની ૩૧ પ્રકૃતિ એ [illegible] પ્રકૃતિનો [illegible] બંધસ્થાનક હોય, અગાઉની ૨૭ પ્રકૃતિઓ દેવાયુ સહિત [illegible] ૨૮ અને નામની ૩૧ એ [illegible] પ્રકૃતિનો પાંચમો બંધસ્થાનક હોય. [illegible] [illegible] એ પાંચ બંધસ્થાનક જાણવા.

૮ અપૂર્વકરણ ગુણઠાણે—[illegible] એ [illegible] બંધસ્થાનક [illegible]

स्थानकाधिकारमां कह्या प्रमाणे होय.

९ अनिवृत्तिबादर गुणठाणें—१८।१९।२०।२१।२२ ए पांच बंधस्थानक बंधस्थानकना अधिकारमां कह्या प्रमाणे होय.

१० सूक्ष्मसंपराय गुणठाणें—१७ प्रकृतिनो एकज बंधस्थानक होय.

११ उपशम, १२ क्षीणमोह अने १३ सयोगी ए त्रण गुणठाणें—एक साता-वेदनीयनो बंधस्थानक होय अने चौदमागुणठाणें अबंधक छे.

१ नरकगति मार्गणाएं—६४।६५।६६ प्रकृतिना त्रण बंधस्थानकनो बीजा चोथा गुणठाणें कह्या ते प्रमाणे जाणवा. अने ७१।७२।७३।७४ प्रकृतिना ए चार बंधस्थानक मिथ्यात्व अने सास्वादन गुणठाणें कह्या प्रमाणे जाणवा एवं ७ बंधस्थानक होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—५९।६०।६३।६४।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३ अने ७४ ए तेर बंधस्थानक होय. एमां ५९।६० प्रकृतिना बे बंधस्थानक पांचमा गुणठाणाना, ६३।६४ प्रकृतिना बे बंधस्थानक बीजा चोथा गुणठाणाना, ६६।६७।६८।६९ अने ७४ प्रकृतिना ५ बंधस्थानक मिथ्यात्व गुणठाणाना. अने ७०।७१।७२।७३ ए चार बंधस्थानक मिथ्यात्व तथा सास्वादन गुणठाणाना जाणवा.

११ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, भव्य, संज्ञी, आहारी ए ११ मार्गणाएं चौदगुणठाणाने विषे कह्या प्रमाणे २० बंधस्थानक होय.

१ देवगति मार्गणाएं ६४।६५।६६।६८।६९।७०।७१।७२।७३ अने ७४ एवं १० बंधस्थानक होय तेमां ६४।६५।६६ ए त्रण बंधस्थानक चोथा गुणठाणाना, ६८।६९।७० अने ७४ ए चार बंधस्थानक मिथ्यात्व गुणठाणाना, ७१।७२।७३ ए त्रण बंधस्थानक बीजागुणठाणाना जाणवा.

७ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय ए ७ मार्गणाएं—६६ । ६७ । ६८ । ६९ । ७० । ७१ । ७२ । ७३ । अने ७४ ए ९ बंधस्थानक होय. तेमां ६६ । ६७ । ६८ । ६९ । ७० । ७४ ए छ बंधस्थानक मिथ्यात्व गुणठाणाना, ७१ । ७२ । ७३ ए त्रण बंधस्थानक सास्वादन अने मिथ्यात्व गुणठाणाना जाणवा. परंतु ए ७ मार्गणामां ७१ प्रकृतिनो बंधस्थानक कह्यो बीजा गुणठाणामां मनुष्य तिर्यंच आयोग्यज समजवुं जोइये.

२ तेउकाय अने वाउकाय ए बे मार्गणाएं—मिथ्यात्व गुणठाणाना ६६।६७।६८ ६९।७०।७२।७३।७४ ए ८ बंधस्थानक होय. ए बे मार्गणामां ७१ प्रकृतिना बंधस्थानक न होय कारण के एक मिथ्यात्व गुणठाणें देवआयोग्यनी ७१ प्रकृतिनो बंध कह्यो

छे, पांच स्थावर अने त्रण विकलेंद्रिय जीव देवगतिप्रायोग्य बंधाधिकार नथी माटे ७१ प्रकृतिनो बंधस्थानक न लीधो अने शास्वादन गुणठाणें ७१ प्रकृतिनो बंधस्थानक मनुष्य तिर्यंच प्रायोग्य लीधेल छे. ऊपरनी बे मार्गणामां शास्वादन गुणठाणो नथी तेथी ७१ प्रकृतिनो बंधस्थानक न लेवुं.

३ त्रणवेद मार्गणाएं—बाकीला २२।२६।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१ ६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए २३ बंधस्थानक प्रथमनां नव गुणठाणाने विषे कह्या ते प्रमाणे होय.

१ क्रोध मार्गणाएं—२१।२२।२६।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६३।६४ ६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए २४ बंधस्थानक प्रथमना नव गुणठाणाने विषे कह्या ते प्रमाणे होय.

१ मान मार्गणाएं—संज्वलन क्रोध विना २० प्रकृतिना बंधस्थानक समेत २०।२१।२२।२६।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६३।६४।६५।६६।६७।६८ ६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए २५ बंधस्थानक होय.

१ माया मार्गणाएं—संज्वलन क्रोध अने मान विना १९।२०।२१।२२।२६।५३ ५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३ ७४ ए २६ बंधस्थानक प्रथमना नव गुणठाणाने विषे कह्या प्रमाणे होय.

१ लोभ मार्गणाएं—संज्वलन क्रोध, मान, माया ना बंध विना १८।१९।२०।२१ २२।२६।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७० ७१।७२।७३।७४ ए सत्तावीश बंधस्थानक प्रथमना नव गुणठाणामां कह्या ते प्रमाणे होय.

५ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन अने क्षायकसमकित ए पांच मार्गणाएं—१।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२६।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१ ६३।६४।६५।६६ ए २१ बंधस्थानक चोथाथी यावत् बारमा गुणठाणा सुधी होय.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—छट्ठाथी बारमा गुणठाणा सुधी होवाथी १।१७।१८ १९।२०।२१।२२।२६।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९ ए पंदर बंधस्थानक होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—शातावेदनीयनी १ प्रकृतिनो बंधस्थानक होय.

३ त्रणअज्ञान मार्गणाएं—६३।६४।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए ११ बंधस्थानक पहेला बीजा अने त्रीजा ए त्रण गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं—१८।१९।२०।२१।२२।२६ ५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९ ए १३ बंधस्थानक छट्ठाथी नवमासुधीना गुणठाणें होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—२५।२६।२७।२८।२९ ए पांच बंधस्थानक छठ्ठा अने सातमा गुणठाणें कह्या ते प्रमाणे होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–१७ प्रकृतिनो बंधस्थानक दशमागुणठाणा प्रमाणे होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—५९।६०।६१ ए त्रण बंधस्थानक पांचमा गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय.

१ अविरति मार्गणाएं—६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए बार बंधस्थानक प्रथमना चार गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय. परंतु ६६ प्रकृतिनो बंधस्थानक प्रथम अने चोथे गुणठाणें अलग अलग कहेलो छे ते प्रमाणे अहीं यथायोग्य जाणवो.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—२५।२६।२७ ५९।६०।६१।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए अढार बंधस्थानक प्रथमना छ गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय.

अहीं ५८ प्रकृतिनो बंधस्थानक सातमे आठमे गुणठाणें होय अने उपरोक्त त्रण लेश्यामां तो प्रमत्त सुधीना गुणठाणा लाभे तेथी ५८ प्रकृतिनो बंधस्थानक कह्यो नथी अने ५९ प्रकृतिनो बंधस्थानक पांचमा गुणठाणें कह्यो परंतु सातमा गुणठाणानो ५९ प्रकृतिनो बंधस्थानक न लेवुं. तथा ६६ प्रकृतिनो बंधस्थानक तो प्रथम गुणठाणें अने चोथा गुणठाणें कह्यो ते रीते जाणवुं.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—२५।२६।२७।२८।२९।६०।६१।६३।६४।६५।६६।६८ ६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए १८ बंधस्थानक प्रथमना सात गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय. परंतु ६६ अने ६७ प्रकृतिना ए बे बंधस्थानक अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य उपरोक्त मार्गणामां न होय माटे न लीजे अने उपरना अढार बंधस्थानकमां ६६ प्रकृतिनो बंधस्थानक कह्यो ते चोथा गुणठाणें रहेला देवना अने नारकीना जीवोने मनुष्य प्रायोग्य जाणवुं.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—२५।२६।२७।२८।२९।६०।६१।६३।६४।६५।६६ ए ११ बंधस्थानक त्रीजाथी सातमा सुधीना गुणठाणें कह्या ते रीते होय अने ७०।७१।७२।७३।७४ ए पांच बंधस्थानक पंचेंद्रिय मनुष्य तिर्यंच अने देव प्रायोग्यना पहेला अने बीजा गुणठाणें कह्या ते प्रमाणे होय एवं १६ बंधस्थानक जाणवा.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—११।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७ ५८।५९।६०।६१।६३।६४।६५।६६ ए २१ बंधस्थानक ते त्रीजाथी तेरमा सुधीना गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय. अने मनुष्य तिर्यंच प्रायोग्य ७०।७१।७२।७३ ए चार

बंधस्थानक पहेले अने बीजे गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय. एवं २९ बंधस्थानक जाणवा.

२ अभव्य अने मिथ्यात्व मार्गणाएं—६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए ९ बंधस्थानक मिथ्यात्व गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय.

१ उपशम मार्गणाएं—१।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२६।२३।२४।२५।२६।२७ ५८।५९।६०।६१।६३।६४।६५ ए २० बंधस्थानक चोथायी अगीयारमां सुधीना गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय.

परंतु आयु समेतनो बंधस्थानक जे होय ते बंधस्थानकनी प्रकृतिना आंकथकी ए मार्गणामां आयुनी प्रकृति अबंधक होवाथी एक एक प्रकृतिना बंधस्थानकनो आंक ओछो गणतां बाकीना बंधस्थानकना आंक तो बराबर मिले अने ६१ प्रकृतिनो आंक तो ए मार्गणामां न होवो जोइए, कारण ६१ प्रकृतिना बंधस्थानकनो आंक तो देवायु समेत गणेलो छे. पछी बहुश्रुत कहे ते सत्य छे.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—२५।२६।२७।२८।२९।६०।६१।६३।६४।६५।६६ ए ११ बंधस्थानक चोथाथी सातमा सुधीना गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय अने ५९ प्रकृतिनो बंधस्थानक बे प्रकारे कह्या ते बे प्रकारे अहीं लेवुं.

१ मिश्र मार्गणाएं–६३।६४ प्रकृतिना बे बंधस्थानक मिश्रगुणठाणा प्रमाणे होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं–सास्वादन गुणठाणें कह्या प्रमाणे ७०।७१।७२।७३ प्रकृतिना चार बंधस्थानक होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४ ए नव बंधस्थानक पहेला अने बीजा गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—१।६३।६४।६५।६६।६८।६९ ए ७ बंधस्थानक होय तेरमा गुणठाणें १ प्रकृतिनो बंधस्थानक अने ६३।६४।६५ ए त्रण बंधस्थानक चोथा गुणठाणें कह्या प्रमाणें ६६।६८।६९ प्रकृतिना त्रण बंधस्थानक पहेला गुणठाणें कह्या प्रमाणें जाणवा.

---

५१ बासठमार्गणाने विषे मूल आठकर्मना उदयनुं द्वार–

प्रथम मूल आठ कर्मना नाम–

ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयु ५, नाम ६, गोत्र ७ अने अंतराय ८ ए मूल आठकर्मना नाम जाणवा.

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाए–वेदनीय १, आयु १, नाम १, गोत्र १ ए मूळ चार कर्मनो उदय होय.

१ यथाख्यात मार्गणाए–मोहनीयकर्म विना ७ कर्मनो उदय अग्यारमें बारमें गुणठाणें होय अने तेरमें चौदमें अघाति चार कर्मनो उदय छे. शेष ५९ मार्गणाए–मूळ आठ कर्मनो उदय होय.

---

५२ बासठमार्गणाने विषे आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना उदय अने उदयविच्छेदनुं द्वार–

प्रथम आठकर्मनी उदयवति १२२ प्रकृतिना नाम–

५ ज्ञानावरणीयनी–मतिज्ञानावरणीय १, श्रुतज्ञानावरणीय २, अवधिज्ञानावरणीय ३, मनःपर्यवज्ञानावरणीय ४ अने केवलज्ञानावरणीय ५.

९ दर्शनावरणीयनी—निद्रा १, निद्रानिद्रा २, प्रचला ३, प्रचलाप्रचला ४, थीणद्धि ५, चक्षुदर्शनावरणीय ६, अचक्षुदर्शनावरणीय ७, अवधिदर्शनावरणीय ८, अने केवलदर्शनावरणीय ९.

२ वेदनीयनी–शातावेदनीय १ अने अशातावेदनीय २.

२८ मोहनीयनी–अनंतानुबंधि–क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, अप्रत्याख्यानी–क्रोध ५, मान ६, माया ७, लोभ ८, प्रत्याख्यानी–क्रोध ९, मान १०, माया ११, लोभ १२, संज्वलन–क्रोध १३, मान १४, माया १५, लोभ १६, नवनोकषाय–हास्य १७, रति १८, अरति १९, भय २०, शोक २१, दुगंछा २२, पुरुषवेद २३, स्त्रीवेद २४, नपुंसकवेद २५, समकितमोहनीय २६, मिश्रमोहनीय २७ अने मिथ्यात्वमोहनीय २८.

४ आयुकर्मनी—देवायु १, मनुष्यायु २, तिर्यंचायु ३, अने नरकायु ४,

६७ नामकर्मनी—

४ गति—देवगति १, मनुष्यगति २, तिर्यंचगति ३ अने नरकगति ४.

५ जाति—एकेंद्रियजाति १, बेइंद्रियजाति २, तेइंद्रियजाति ३, चतुरिंद्रियजाति ४ अने पंचेंद्रियजाति ५.

५ तनु—औदारिकशरीर १, वैक्रियशरीर २, आहारकशरीर ३, तैजसशरीर ४ अने कार्मणशरीर ५.

३ उपांग—औदारिकोपांग १, वैक्रियोपांग २ अने आहारिकोपांग ३.

६ संघयण—वज्रर्षभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३, अर्द्धनाराच ४, कीलिका ५ अने छेवट्ठुं ६.

६ संस्थान—समचतुरस्र १, न्यग्रोध २, सादि ३, कुब्ज ४, वामन ५ अने हुंडक ६.

४ वर्णचतुष्क—वर्ण १, गंध २, रस ३ अने स्पर्श ४.

४ आनुपूर्वी—देवानुपूर्वी १, मनुष्यानुपूर्वी २, तिर्यंचानुपूर्वी ३ अने नरकानुपूर्वी ४.

२ विहायोगति—शुभविहायोगति १ अने अशुभविहायोगति २.

८ प्रत्येकाष्टक—पराघात १, उच्छ्वास २, आताप ३, उद्योत ४, अगुरुलघु ५, निर्माण ६, तीर्थंकर (जिननाम) ७, उपघात ८.

१० त्रसदशक—त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३, प्रत्येक ४, स्थिर ५, शुभ ६, सौभाग्य ७, सुस्वर ८, आदेय ९ अने यशःकीर्ति १०.

१० स्थावरदशक—स्थावर १, सूक्ष्म २, अपर्याप्त ३, साधारण ४, अस्थिर ५, अशुभ ६, दौर्भाग्य ७, दुःस्वर ८, अनादेय ९ अने अयशःकीर्ति १०.

२ गोत्रकर्मनी—नीचगोत्र १ अने ऊंचगोत्र २.

५ अंतरायनी—दानांतराय १, लाभांतराय २, भोगांतराय ३, उपभोगांतराय ४ अने वीर्यांतराय ५.

१ नरकगति मार्गणाए—ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, (पुरुषवेद अने स्त्रीवेद विना) मोहनीयनी २६, नरकायुनी १, नरकगति अने नरकानुपूर्वी ए नरकद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, वैक्रियशरीर अने वैक्रियांगोपांग ए वैक्रियद्विक २, हुंडकसंस्थान १, अशुभवर्णचतुष्क ४, अशुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, दुःस्वर १, अस्थिर १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, अनादेय १, अयशःकीर्ति १, तैजस १, कार्मण १ ए नामनी ३२, नीचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ ए सर्व मळी ७६ प्रकृतिनो उदय छे. अने शेष ४६ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए—ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी २८, तिर्यंचायु १, तिर्यंचगति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, एकेंद्रियादिजाति ५,

औदारिकशरीर १, औदारिकांगोपांग १, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६,
वर्णचतुष्क ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, आताप १, उद्योत १, अगुरु-
लघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०' ए नामकर्मनी ५६
प्रकृति. तथा नीचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ एवं सर्व मली १०७ प्रकृति. अथवा मतां-
तरे–वैक्रियद्विकनो उदय गणतां १०९ प्रकृतिनो उदय होय, शेष १५ अथवा पक्षांतरे–
१३ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीयनी २,
मोहनीयनी २८, मनुष्यायुनी १ अने 'मनुष्यद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकादि
शरीर ५, औदारिकादिउपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, विहायो-
गति २, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १,
त्रसदशक १०, अपर्याप्त १, अस्थिर १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, दुस्वर १, अनादेय १,
अयशःकीर्त्ति १' ए नामकर्मनी ६२. तथा गोत्रनी २ अने अंतरायनी ५ एवं सर्व
मलीने १०४ प्रकृतिनो, अथवा पक्षान्तरे–उद्योतनो उदय प्रमत्त गुणठाणाएं यतिना
आश्रयी गणतां १०५ प्रकृतिनो उदय होय, अने शेष १८ अथवा उद्योत विना १७
प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ देवगति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २,
(नपुंसकवेद विना) मोहनीयनी २७, देवायु १ अने 'देवद्विक २, पंचेंद्रियजाति १,
वैक्रियद्विक २, तैजसशरीर १ कार्मणशरीर १, समचतुरस्रसंस्थान १, शुभवर्णच-
तुष्क ४, शुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उप-
घात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, अनादेय १, अयशःकी-
र्त्ति १' ए नामकर्मनी ३३ प्रकृति. ऊंचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ ए सर्व मली ८३
प्रकृतिनो उदय होय, अथवा उद्योतनो उदय गणतां ८४ प्रकृतिनो उदय पण होय;
अने शेष उद्योत समेत ३९ अथवा उद्योत विना ३८ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, (पुरुष-
वेद १, स्त्रीवेद १, समकितमोहनीय १ अने मिश्रमोहनीय १ ए चार प्रकृति विना)
मोहनीयनी २४, तिर्यंचायु १ अने तिर्यंचद्विक २, एकेंद्रियजाति १, औदारिक १,
तैजस १, कार्मण १, हुंडकसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, पराघात १, उच्छ्वास १, आ-
तप १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्ये-
क १, स्थिर १, शुभ १, यशःकीर्ति १, (दुस्वर विना) स्थावरदशकनी ९. नीच-
गोत्र १ अने अंतरायकर्मनी ५ एवं सर्व मली ८० प्रकृतिनो उदय होय. अथवा
वायुकाय एकेंद्रियने वैक्रियविकुर्वणा भणी एक वैक्रियशरीरनी प्रकृतिनो उदय गणिये

तो ८१ प्रकृतिनो उदय पण होय अने शेष वैक्रिय समेत ४२ अने वैक्रिय विना ४१ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

३ बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय ए त्रण मार्गणाए—ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी एकेंद्रियनी पेरें २६, तिर्यंचायु १, 'तिर्यंचद्विक २, बेइंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १ छेवट्ठुसंघयण १, हुंडकसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, अशुभविहायोगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, (सौभाग्य अने आदेय ए बे प्रकृति विना) त्रसदशकनी ८, अपर्याप्त १, अस्थिर १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, दुस्वर १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १' ए ३९ प्रकृति नामकर्मनी. नीचगोत्रनी १ अने अंतरायनी ५ एवं सर्वे मळी ८२ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ४० प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

अहीं तेइंद्रिय मार्गणामां—बेइंद्रिय जातिना ठेकाणे तेइंद्रियजाति अने चतुरिंद्रिय मार्गणामां—चतुरिंद्रियजाति लेवी जोइए.

१ पंचेंद्रियमार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय२८, आयुनी ४, अने 'गति ४, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकादिशरीर ५, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, (आताप विना) प्रत्येकाष्टकनी ७, त्रसदशकनी १०, अपर्याप्त १, अस्थिरषट्क ६' ए ५९ प्रकृति नामकर्मनी. तथा गोत्रनी २, अने अंतरायनी ५, एवं सर्वे मळी ११४ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ८ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ पृथ्वीकाय मार्गणाए—एकेंद्रिय मार्गणामां कहेली ८० प्रकृतिमांथी साधारण नाम विना ७९ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष ४३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ अप्काय मार्गणाए—एकेंद्रिय मार्गणामां कहेली ८० प्रकृतिमांथी आताप अने साधारण विना ७८ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष ४४ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ तेउकाय मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, (पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १, समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १ ए चार विना) मोहनीयनी २४, तिर्यंचायु १, 'तिर्यंचद्विक २, एकेंद्रियजाति १, औदारिक १, तैजस १, कार्मण १, हुंडकसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, बादर१, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १' एवं २९ प्रकृति नामकर्मनी. नीचगोत्र १ अने अंतरायकर्मनी ५ एवं सर्वे मळी ७६ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ४६ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ वायुकाय मार्गणाएं—तेउकाय मार्गणामां कहेली ७६ प्रकृतिमां एक वैक्रियशरीर वधारे गणवाथी ७७ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ४५ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ वनस्पतिकाय मार्गणाएं—एकेंद्रिय मार्गणामां कहेली ८० प्रकृतिमांथी आताप विना ७९ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ४३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ त्रसकाय मार्गणाएं—उदयनी १२२ प्रकृतिमांथी एकेंद्रियजाति १, आताप १, स्थावर १, सूक्ष्म १ अने साधारण १ ए पांच प्रकृति विना ११७ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ५ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ मनोयोग मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी २८, आयुनी ४, 'गति ४, पंचेंद्रियजाति १, शरीर ५, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, विहायोगति २, (आताप विना) प्रत्येकप्रकृति ७, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६' एवं ५४ प्रकृति तथा गोत्रनी २ अने अंतरायनी ५ एवं सर्वे मली १०९ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष १३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ वचनयोग मार्गणाएं—मनोयोग मार्गणानी १०९ प्रकृतिमां बेइंद्रियादिक त्रण जाति गणतां ११२ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष १० प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

२ काययोग अने भव्य ए बे मार्गणाएं—१२२ नो उदय, अने उदयविच्छेद नथी.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, (नरकायु विना) आयुनी ३, (स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद विना) मोहनीयनी २६, तथा-'देवगति १, मनुष्यगति १, तिर्यंचगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकादि शरीर ५, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, (नरकानुपूर्वी विना) आनुपूर्वी ३, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अपर्याप्त १, अस्थिरषट्क ६' ए नामकर्मनी ५६, गोत्रकर्मनी २ अने अंतरायनी ५ एवं सर्वे मली १०८ प्रकृतिनो उदय होय. अथवा पक्षांतरे—उद्योत विना १०७ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष १४, पक्षांतरे—१५ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—पुरुषवेद मार्गणामां कहेली १०८ प्रकृतिमांथी आहारकद्विक विना १०६ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष १६ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय. अहीं स्त्रीवेदनो उदय होवाथी पुरुषवेद अने नपुंसकवेद विना मोहनीयनी २६ प्रकृति लेवी.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—पुरुषवेद १ अने स्त्रीवेद १, देवद्विक २, जिननाम १, अने देवायु १ ए ६ विना ११६ नो उदय होय, अने शेष ६ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

४ क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शना-

वरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीयनी १६, आयुकर्मनी ४, 'गति ४, जाति ५, शरीर५, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, (जिननाम विना) प्रत्येकाष्टकनी ७, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०' ए नामनी ६६. गोत्रनी २, अंतरायनी ५ एवं सर्वे १०९ नो उदय अने शेष १३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

अहीं एटलुं समजवानुं के क्रोध मार्गणाएं—अनंतानुबंधिआदि मान १, माया २, अने लोभ ३ ए त्रण प्रकृतिनो. मान मार्गणाएं—अनंतानुबंधिआदि-क्रोध १, माया २ अने लोभ ३ ए त्रण प्रकृतिनो. माया मार्गणाएं—अनंतानुबंधिआदि-क्रोध १, मान २ अने लोभ ३ ए त्रण प्रकृतिनो. तथा लोभ मार्गणाएं-अनंतानुबंधिआदि-क्रोध १, मान २ अने माया ३ ए त्रण प्रकृतिनो उदय थतुं नथी. माटे कषाय मार्गणामां पोतपोतानी सजातिशिणी मोहनीयनी १२ अने तीर्थंकरनाम १ ए तेर प्रकृति उदयवती१२२ मांथी निकाळ्ती त्यारे कषाय मार्गणाएं-१०९ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष १३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, क्षयोपशम ए त्रण मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'प्रत्याख्यानी ४, अप्रत्याख्यानी ४, संज्वलन ४, समकितमोहनीय १, हास्यषट्क ६, अने वेद ३' एवं मोहनीयनी २२, 'देवद्विक २, मनुष्यद्विक २, तिर्यचद्विक २, नरकद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकादिशरीर ५, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६' ए नामनी ५७. आयु ४, गोत्र २, अंतराय ५ एवं सर्वे मळी १०६ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष १६ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

२ अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन मार्गणाएं—मतिज्ञान मार्गणामां कहेली १०६ प्रकृतिमांथी तिर्यचानुपूर्वी विना १०५ प्रकृतिनो उदय होय अने पन्नवणासूत्रनी वृत्तिना अनुसारे अवधिज्ञानमां तिर्यचानुपूर्वी जणाय छे तेथी १०६ प्रकृतिनो पण उदय होय अने शेष १७।१६ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ मनःपर्यवज्ञान, सामायिकचारित्र, छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं-ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'संज्वलनकषायनी ४, हास्यषट्क ६, वेद १, समकितमोहनीय १' ए मोहनीयनी १२. मनुष्यायु १, 'मनुष्यगति १ पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, दुस्वर १' ए नामनी ४४. उच्चगोत्र १,

अंतरायनी ५ एवं सर्व मळी ८१ प्रकृतिनो उदय होय. पक्षांतरे-वैक्रियद्विक अने उद्योत ए त्रण प्रकृतियुक्त करिये तो ८४ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ४१. मतांतरे ३८ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन मार्गणाए—वेदनीय २, मनुष्यायु १, 'मनुष्यगति १ पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, वज्रर्षभनाराच संघयण १, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, दुस्वर १' ए नामकर्मनी ३८. अने उच्चगोत्रनी १ एवं सर्व मळी ४२ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष ८० प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

२ मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान मार्गणाए—आहारकद्विक २, जिननाम १, समकितमोहनीय १ अने मिश्रमोहनीय १ ए पांच विना ११७नो उदय होय. पक्षांतरे-ए मार्गणामां प्रथमना त्रण गुणठाणा मानीये तो मिश्रमोहनीय विना ११८ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ५. पक्षांतरे ४ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

२ अभव्य अने मिथ्यात्व ए बे मार्गणाए—आहारकद्विक २, जिननाम १, समकितमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १ ए ५ विना ११७ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ५ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ विभंगज्ञान मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, (समकितमोहनीय विना) मोहनीयकर्मनी २७, आयुकर्मनी ४, 'गति ४, पंचेन्द्रियजाति १, (आहारक विना) शरीर ४, (आहारक विना) अंगोपांग २, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, देवानुपूर्वी १, नरकानुपूर्वी १, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १० अस्थिरषट्क ६' ए नामनी ५३. गोत्र २ अने अंतरायनी ५ एवं सर्व मळी १०७ प्रकृतिनो उदय वक्रगतिवाळाने होय. पन्नवणासूत्रना विशेषपद तथा कायस्थितिपदने अनुसारे नर अने तिर्यंचमां उपजतां ऋजुगतिवाळाने वाटे विभंगज्ञान होय तेना आश्रयी मनुष्यानुपूर्वी अने तिर्यंचानुपूर्वी आ बे प्रकृति भेळी गणीये तो १०९ प्रकृतिनो पण उदय होय. अने शेष १३ प्रकृति अने १२ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाए—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'संज्वलन ४, हास्यषट्क ६, पुरुषवेद १, नपुंसकवेद १, समकितमोहनीय १' ए मोहनीयनी १३. मनुष्यायु १, 'मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम संघयण १, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगति २, परा-

घात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, दुस्वर १' ए नामनी ३७, ऊंचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ एवं सर्वे मली ७३ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ४९ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५ (सत्यानर्द्धित्रिक विना) दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, संज्वलनलोभ १, मनुष्यायु १, 'मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमना संघयण ३, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, दुस्वर १' ए नामनी ३९, ऊंचगोत्र १ अने अंतरायनी ५ एवं सर्वे मली ६० नो उदय, अने शेष ६२ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—सूक्ष्मसंपराय मार्गणामां कहेली ६० प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष ६२ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय. परंतु एटलुं विशेष छे के संज्वलनलोभना ठेकाणे जिननाम लेवुं जोइये.

१ देशविरति मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'प्रत्याख्यानी कषायनी ४, संज्वलनकषायनी ४, हास्यषट्क ६, वेद ३, समकितमोहनीय १' ए मोहनीयनी १८. मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, 'मनुष्यगति १, तिर्यंचगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, दुस्वर १' ए नामनी ४४. गोत्रनो २, अने अंतरायनी ५ एवं सर्वे मली ८७ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ३५ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

१ अविरति मार्गणाएं—आहारकद्विक २ अने जिननाम १ ए त्रण विना ११९ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष ३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २८, आयुनी ४, गति ४, चतुरिंद्रियजाति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकादि शरीर५, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६, गोत्र २ अने अंतराय ५ एवं सर्वे मली १०९ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष १३ प्रकृतिनो उदय विच्छेद होय.

४ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, अचक्षुदर्शन ए चार मार्गणाएं—जिननाम विना १२१ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष १ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २८, (नरकायु विना) आयुनी ३, देवद्विक २, मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रियजाति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तैजसशरीर १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक१०, स्थावर १, अभिनवषट्क ६, गोत्रनी २, अंतरायनी ५ एवं सर्व मळी १११ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ११ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—तेजोलेश्या मार्गणामां कहेली १११ प्रकृतिमांथी एकेंद्रियजाति १, स्थावर १ ए बे प्रकृति विना १०९ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष १३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २८, (नरकायु विना) आयु ३, देवद्विक २, मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६, गोत्रनी २ अने अंतरायनी ५ एवं सर्व मळी ११० नो उदय अने शेष १२ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ उपशमसमकित मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४, संज्वलन ४, हास्यषट्क ६, वेद ३' ए मोहनीयनी २१, आयु ४, 'गति ४, पंचेंद्रिय १, औदारिकद्विक, २, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, देवानुपूर्वी १, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६' ए नामनी ५२. गोत्रनी २ अने अंतराय ५ एवं सर्व मळी १०० प्रकृतिनो उदय होय. पक्षांतरे–देवानुपूर्वीविना ९९ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष २२, पक्षांतरे–२३ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ क्षायक मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, (अनंतानुबंधिचतुष्क ४ अने दर्शनमोहनीयनी ३ ए सात विना) मोहनीयनी २१, आयुनी ४, 'गति ४, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकशरीर ५, उपांग ३, प्रथमसंघयण १, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, आनुपूर्वी ४, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६' ए नामनी ५३. गोत्रनी २, अंतरायनी ५ एवं सर्व मळी १०१ प्रकृतिनो उदय होय.

अने शेष २१ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'प्रत्याख्यानी ४, अप्रत्याख्यानी ४, संज्वलन ४, हास्यषट्क ६, वेद ३, मिश्रमोहनीय १' ए मोहनीयनी २२. आयुनी ४, 'गति ४, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगतिद्विक २, अगुरुलघुचतुष्क ४, उद्योत १, निर्माण १, त्रसदशक १०, अस्थिरषट्क ६' ए नामनी ५१. गोत्रनी २ अंतरायनी ५ एवं सर्व मळी १०० प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष २२ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'कषाय १६, नोकषाय ९' ए मोहनीयनी २५. आयुनी ४, 'गति ४, जाति ५, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, (नरकानुपूर्वी विना) आनुपूर्वी ३, खगतिद्विक २, अगुरुलघुचतुष्क ४, उद्योत १, निर्माण १, त्रसदशक १०, स्थावरनाम १, अस्थिरषट्क ६' ए नामनी ५९. गोत्रनी २, अंतराय ५ एवं सर्व मळी १११ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ११ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ संज्ञी मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २८, आयु ४, गति ४, पंचेंद्रियजाति १, शरीर ५, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, आनुपूर्वी ४, खगतिद्विक २, अगुरुलघुचतुष्क ४, उद्योत १, तीर्थंकर १, निर्माण १, त्रसदशक १०, अपर्याप्त[1] १, अस्थिरषट्क ६, गोत्रनी २, अंतरायनी ५ एवं सर्व ११४ अथवा केवलीनां गुणठाणां न मानवाथी बारमागुणठाणा सुधी जिननाम विना ११३ प्रकृतिनो उदय होय. अने शेष ८ अथवा ९ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'कषाय १६, हास्यषट्क ६, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्वमोहनीय १' ए मोहनीयनी २४. मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १. 'मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, जाति ५, औदारिकद्विक २, वैक्रियशरीर १, तैजस १, कार्मण १, छेवट्ठंसंघयण १, हुंडकसंस्थान १, वर्णचतुष्क ४, अशुभखगति १, अगुरुलघुचतुष्क ४, आतप १, उद्योत १, निर्माण १, स्थिर १,

१ प्रकरणरत्नाकर भाग चोथा कर्मग्रंथना पृष्ठ ५१८ मा १७ मी गाथाना अर्थमां बतावेला भेदोमां संज्ञीमार्गणामां [illegible] लख्या नथी कारण [illegible] जणावे छे अने संज्ञीमार्गणामां [illegible] उदय संभवतुं नथी.

अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, त्रसचतुष्क ४, स्थावरचतुष्क ४, दौर्भाग्यचतुष्क ४, सुस्वर १, यशःकीर्त्ति १' ए नामनी ४६, नीचगोत्र १ अने अंतराय ५ एवं ९५ प्रकृतिनो उदय सिद्धांतना मते-होय, कर्मग्रंथना मते-संघयण ६, संस्थान ६, सौभाग्य १, आदेय १, शुभखगति १ ए १३ प्रकृतिनो उदय वधारे गणतां १०७ प्रकृतिनो उदय होय, अने शेष २८ अथवा १५ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ आहारी मार्गणाएं—चार आनुपूर्वी विना ११८ प्रकृतिनो उदय होय अने शेष ४ प्रकृतिनो उदयविच्छेद होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, (पांच निद्रा विना) दर्शनावरणीय ४, वेदनीयनी २, (मिश्रमोहनीय विना) मोहनीयनी २७, आयुनी ४, 'गति ४, जाति ५, तीर्थंकर १, त्रसत्रिक ३, स्थावरत्रिक ३, सौभाग्य १ आदेय १, यशःकीर्त्ति १, दौर्भाग्य १, अनादेय १, अयशःकीर्त्ति १, आनुपूर्वी ४ अने ध्रुवोदयिनी १२' ए नामकर्मनी ३८. तथा गोत्रनी २ अने अंतरायनी ५ एवं सर्व मली ८७ प्रकृतिनो उदय होय, शेष ३५ नो उदयविच्छेद होय.

---

५२ बासठमार्गणाने विषे मूल आठकर्मना उदयस्थानकनुं द्वार—

४० नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रणवेद, चारकषाय, त्रणअज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, देशविरति, अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, अभव्य, क्षयोपशम, मिश्र, सास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी, अनाहारी एवं ४० मार्गणाएं—मूल आठकर्मनो एकज उदयस्थानक होय.

१० मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, यथाख्यात, भव्य, शुक्लेश्या, आहारी एवं दस मार्गणाएं—प्रथम दसमां गुणठाणासुधी आठकर्मनो एक उदयस्थानक. अने दसमे गुणठाणे मोहनीयनो उदय टले तेथी ११ अने १२ मां गुणठाणे मोहनीयकर्म विना सात मूलकर्मनुं बीजुं उदयस्थानक होय. तेरमा सयोगी केवली अने चौदमां अयोगीकेवली गुणठाणे—वेदनीयनाम आयु अने गोत्र एवं ४ मूलकर्मनो त्रीजो उदयस्थानक होय. एवं ८–७–४ ए त्रण उदयस्थानक जाणवा.

१० मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायक, संज्ञी एवं दस मार्गणाएं—दसमां गुणठाणा पर्यंत ८

कर्मनो एकज उदयस्थानक होय. अने अग्यारमां बारमां गुणठाणे मोहनीयकर्म विना ७ कर्मनो बीजो उदयस्थानक होय. एवं ८। ७ कर्मना बे उदयस्थानक जाणवा.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—वेदनीय, आयु, नाम, अने गोत्र एवं ४ कर्मनुं एक उदयस्थानक होय.



५४ बासठमार्गणाने विषे ज्ञानावरणीयनी ५ उत्तरप्रकृतिना उदयस्थानकनुं द्वार–

६२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—ज्ञानावरणीयकर्मनो उदय नथी अने शेष ६० मार्गणाएं—ज्ञानावरणीयनी ५ प्रकृतिनो एक उदय स्थानक होय.



५५ बासठमार्गणाने विषे दर्शनावरणीयनी प्रकृतिना उदयस्थानकनुं द्वार–

दर्शनावरणीयना त्रण उदयस्थानक–

१–प्रथमना छे गुणठाणासुधी दर्शनावरणीयनी ९ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्था०

२–सातमांथी १२ मां गुणठाणाना द्विचरमसमयना प्रथमना समयसुधी (थीणद्धित्रिक विना) छे प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक होय.

३–छट्ठागुणठाणाना अंतसमयमां उदयविच्छेद थयेल थीणद्धित्रिक अने बारमा गुणठाणाना अंतसमयना प्रथम समयमां उदय विच्छेद थयेल (निद्रा अने प्रचला एवं पांच निद्रा विना) बारमागुणठाणाना चरमसमयमां ४ प्रकृतिनो त्रीजो उदयस्थानक होय. चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन अने केवलदर्शन ए चार प्रकृतिनो उदयविच्छेद होवाथी १३। १४ मां गुणठाणे उदयस्थानक न होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन मार्गणाएं—कोई उदयस्थानक न होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—(पांच निद्रा विना) ४ प्रकृतिनो त्रीजो उदयस्था०

२५ नरकगति, देवगति, तिर्यंचगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रणअज्ञान, देशविरति, अविरति, कृष्णादि त्रणलेश्या, अभव्य, मिश्र, सास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं २५

—दर्शनावरणीयनी ५. प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक होय.

८ अवेद, कषायचार, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि. तेजो-
पद्मलेश्या, उपशम, क्षयोपशम ए १४ मार्गणाएं—क्षपकना छे गुणठाणासुधी ५.
ं प्रथम, अने उपरना गुणठाणामां ६ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक होय.

८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, प्रयोग, मत्यादिज्ञानचार, चक्षुआदि प्रण
शुक्लेश्या. भव्य, क्षायक, संज्ञी, आहारी एवं १८ मार्गणाएं—५। ६। ४ प्रकृ-
ना उदयस्थानक होय.

सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—६ प्रकृतिनो एक उदयस्थानक होय.

यथाख्यात मार्गणाएं—६ प्रकृतिनो प्रथम. अने बारमाना अंतिमसमयमां चार
ो बीजो. तेरमां अने चौदमां गुणठाणे अनुदयी होवाथी उदयस्थानक न होय.

बासठमार्गणाने विषे वेदनीयकर्मना उदयस्थानकनुं द्वार—

२ बासठमार्गणाएं—वेदनीय कर्मनी शाता अने अशाता ए बे प्रकृतिमांथी एक
कृतिनो उदय एक समयमां होय. कारण के दोनों प्रकृति परस्पर उदयविरो-
छे माटे शाताना उदय समयमां अशातानो उदय न होय. अने अशाताना
मयमां शातानो उदय न होय तेथी एक समयमां एक प्रकृतिनो एकज
थानक होय.

---

५७ बासठमार्गणाने विषे मोहनीयकर्मनी उत्तरप्रकृतिना उदयस्थानकनुं द्वार—

मोहनीयकर्मना नव उदयस्थानक कहे छे—

१—संज्वलनकषायमांथी एक लोभ प्रकृतिनो पहिलुं उदयस्थानक जाणवुं.

२—संज्वलन चारकषायनी गमे ते एकप्रकृति अने पुरुषवेद एवं बे प्रकृतिनो बीजुं उदयस्थानक जाणवुं.

३—संज्वलन चारकषायनी गमे ते १ प्रकृति, पुरुषवेद, हास्य अने रति एवं ४ प्रकृतिनो त्रीजो उदयस्थानक जाणवुं.

४—उपरोक्त ४ प्रकृति अने भय एवं ५ प्रकृतिनो चोथो उदयस्थानक जाणवुं.

५—चोथा उदयस्थानकमां कहेलो ५ प्रकृति अने जुगुप्सा एवं ६ प्रकृतिनो पांचमो उदयस्थानक जाणवुं.

६–ऊपरना उदयस्थानकनी ६ प्रकृति अने प्रत्याख्यानी चार कषायमांनी गमे ते एक प्रकृति एवं ७ प्रकृतिनो छट्ठो उदयस्थानक जाणवुं.

७–छट्ठा उदयस्थानकनो ७ प्रकृति अने अप्रत्याख्यानी ४ कषायमांनी गमे ते एक प्रकृति एवं ८ प्रकृतिनो सातमो उदयस्थानक होय.

८–ऊपरना उदयस्थानकनी ८, अने अनंतानुबंधिकषायमांनी गमे ते एक प्रकृति एवं ९ प्रकृतिनो आठमो उदयस्थानक जाणवुं.

९–आठमा उदयस्थानकनी ९ प्रकृति अने मिथ्यात्वमोहनीय एवं १० प्रकृतिनो नवमो उदयस्थानक होय.

चौदगुणठाणें मोहनीयना नव उदयस्थानक कहे छे—

१ मिथ्यात्वगुणठाणें–मिथ्यात्व १, 'हास्य, रति अथवा शोक, अरति' ए बेमांथी १ युगलनी २, त्रणवेदमांथी वेद १, अप्रत्याख्यानी चतुष्कमांथी १, प्रत्याख्यानी चतुष्कमांथी १, संज्वलनकषायमांथी १ एवं ७ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक होय. तथा एमां भय, जुगुप्सा अथवा अनंतानुबंधि कषाय चारमांथी १ एवं त्रण प्रकृतिमांथी एक एक प्रकृतिनो उदय थवाथी त्रण प्रकारे आठप्रकृतिनो उदयस्थानक थाय. तथा पूर्वोक्त ७ प्रकृतिना उदयमां भय, अने जुगुप्सा अथवा भय अने अनंतानुबंधि अथवा जुगुप्सा अने अनंतानुबंधि एवं बे प्रकृति मेलवाथी त्रण प्रकारे ९ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तथा मिथ्यात्व १, भय १, जुगुप्सा १, हास्य, रति अथवा (शोक, अरति) वेद १, तथा अनंतानुबंधिकषाय चार एवं दशप्रकृतिनो उदयस्थानक होय. ए रीते ४ उदयस्थानक मिथ्यात्वीने होय.

२ शास्वादनगुणठाणें—बे युगलमांथी युगल एकनी २, वेद १, अनंतानुबंधियादिक कषायना चारभेद ए ७ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक, भय, जुगुप्सा ए बेमांथी एक प्रकृति मेलवाथी आठ प्रकृतिनुं बीजुं उदयस्थानक होय. अथवा सातप्रकृतिमांहे भय अने जुगुप्सा ए बे प्रकृति मिलाववाथी नवप्रकृतिनुं त्रीजुं उदयस्थानक थाय.

३ मिश्रगुणठाणें—मिश्रमोहनीय १, बेयुगलमांथी एकयुगलनी बे प्रकृति, वेद १, अने (अनंतानुबंधि कषाय विना) त्रणकषायना त्रण भेद एवं ७ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक. तथा एमां भय अथवा जुगुप्सा ए बे प्रकृतिमांथी एक प्रकृति मेलवाथी आठप्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक थाय. अने सात प्रकृतिमां भय अने जुगुप्सा आ बे प्रकृति गणवाथी ९ प्रकृतिनुं त्रीजुं उदयस्थानक होय.

तेगुणठाणें—मिश्रगुणठाणें ७ प्रकृतिनो उदय कह्यो तेमां मिश्रमोहनीय
। ६ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक होय. तथा भय, जुगुप्सा अने समकि-
हनीय ए त्रणमांथी एक एक प्रकृति मेलववाथी त्रण प्रकारे ७ प्रकृतिनुं बीजुं
ास्थानक होय. तथा भय अने जुगुप्सा, अथवा भय अने सम्यक्त्वमोह-
।, अथवा जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय एवं बे बे प्रकृति भेगी राख-
ो आठ प्रकृतिनो उदयस्थानक त्रण भेदे होय. तथा भय जुगुप्सा अने
क्त्वमोहनीय एवं त्रण प्रकृति उपरोक्त छे प्रकृतिमां शामिल करवाथी ९
तिनो चोथो उदयस्थानक होय. एवी रीते ६ । ७ । ८ । ९ ए चार उद-
ानिक जाणवा.

रतिगुणठाणें—प्रत्याख्यानी १, संज्वलन १, वेद १, हास्यादियुग-
ो २ एवं ५ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक होय. तथा ए पांच प्रकृतिमां
, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रणमांथी एक एक प्रकृति भेगी
ाथी त्रण भेदे छे प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तथा उपरोक्त पांच प्रकृ-
मां भय अने जुगुप्सा अथवा भय अने सम्यक्त्वमोहनीय, अथवा जुगुप्सा
े सम्यक्त्वमोहनीय ए बे बे प्रकृतिनो उदय भेगो गणतां ७ प्रकृतिनो
यस्थानक त्रण प्रकारे थाय. तथा पांच प्रकृतिना उदय मांहे भय, जुगुप्सा
े सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण प्रकृतिनो उदय साथे गणतां आठ प्रकृतिनो
यस्थानक होय. एवी रीते ५ । ६ । ७ । ८ ए चार उदयस्थानक जाणवा.

गुणठाणें—संज्वलनचतुष्कमांथी १, त्रण वेदमांथी वेद १, हास्यादि बे
ल्मांथी एक युगल नी बे प्रकृति ए चार प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक
यिक सम्यक्त्व तथा उपशमसम्यक्त्वीने होय. तथा चार प्रकृतिमां भय.
ुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रणमांथी एक एक प्रकृति गणवाथी पांच
ृतिनो बीजो उदयस्थानक त्रण प्रकारे थाय. तथा चार प्रकृतिमां भय अने
ुप्सा अथवा भय अने सम्यक्त्वमोहनीय अथवा जुगुप्सा अने सम्यक्त्व-
हनीय ए बे बे प्रकृति मेलववाथी छे प्रकृतिनो त्रीजुं उदयस्थानक पण त्रण
ारे थाय. तथा पूर्वोक्त चार प्रकृतिमां भय, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमो-
ीय ए त्रण प्रकृति मेलवतां ए सात प्रकृतिनो चोथो उदयस्थानक थाय.
ी रीते ४।५।६।७ ए चार उदयस्थानक जाणवा.

त्तगुणठाणें—प्रमत्त गुणठाणानी परें ४।५।६।७ चार उदय स्थानक होय.
करण गुणठाणें—उपरोक्त प्रमत्त, अप्रमत्ते कह्युं ते प्रमाणे चार प्रकृतिनो

प्रथम उदयस्थानक होय. तथा चार प्रकृतिमां भय, अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक उदय क्षेपवाथी पांच प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक थाय. तथा बे प्रकृति भेगी गणवाथी छ प्रकृतिनो त्रीजो उदयस्थानक होय.

९ अनिवृत्तिबादरगुणठाणें—संज्वलनचतुष्कमांथी १ अने त्रण वेदमांथी वेद १ ए बे प्रकृतिनुं उदयस्थानक नवमा गुणठाणांना प्रथम भागे होय. तथा (वेद विना) क्रोधादि चार कषायमांथी एक एक प्रकृतिनुं उदयस्थानक अनुक्रमे नवमा गुणठाणांना पांचमा भाग सुधी होय एटले बीजे भागे क्रोधादि चारमांथी गमे ते एकनो उदय होय. तथा त्रीजे भागे मानादि त्रणमांथी गमे ते एकनो उदय होय, तथा चोथा भागे माया अने लोभ बेमांथी एकनो उदय होय. तथा पांचमा भागे एक लोभनो ज उदय होय एवी रीते २।१ ए बे उदयस्थानक होय.

१० सूक्ष्मसंपरायगुणठाणें—संज्वलन लोभनी १ प्रकृतिनुं एकज उदय स्थानक होय. तथा अग्यारमां, बारमां, तेरमां, चौदमां ए चार गुणठाणें मोहनीयकर्मनो उदय नथी माटे उदयस्थानक पण न होय.

४ नरकगति, देवगति, अविरति, अनाहारी ए चार मार्गणाएं—प्रथमनां चार गुणठाणामां कहेल ६।७।८।९।१० ए पांच उदयस्थानक होय. ते मध्ये अनाहारी मार्गणाएं-मिथ्यात्व गुणठाणें अनंतानुबंधिना उदय समेत ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानक छे, अने बाकी ३ मार्गणामां मिथ्यात्वगुणठाणें ७।८।९।१० ए चार उदयस्थानक होय, तथा एक ६ प्रकृतिनो उदयस्थानक तो चार मार्गणावाला उपशमिक अने क्षायिकसम्यक्त्विने होय अने ७।८।९. ए त्रण सम्यक्त्व मोहनीयना उदयवाला क्षयोपशमसम्यक्त्विने होय. तथा ७।८।९. ए त्रण अनंतानुबंधि समेत सास्वादने होय. तथा ७।८।९. ए त्रण उदयस्थानक मिश्रमोहनीय समेत मिश्रसम्यक्त्विने होय एवं ५ जाणवा.

८ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, असंज्ञी ए ८ मार्गणाएं प्रथमना बे गुणठाणां छे तेमां मिथ्यात्वे ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानक अनंतानुबंधि समेत होय अने सास्वादने ७।८।९. ए त्रण उदयस्थानक मिथ्यात्व मोहनीय विना छ प्रकृतिने अनंतानुबंधि युक्त ए त्रण उदयस्थानक होय.

४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, मिथ्यात्व ए चार मार्गणाएं—७।८।९।१० ए चार उदयस्थानक होय. तेमां ७ नुं उदयस्थानक तो मिथ्यात्वगुणठाणें अनंतानुबंधि विना होय अने ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानक मिथ्यात्वे अनंतानुबंधिना उदय सहेतने होय. तथा सास्वादनादिकमां ७।८।९. ए त्रण उदयस्थानक

सास्वादनगुणठाणें तो अनंतानुबंधि सहित अने मिश्रगुणठाणें अनंतानुबंधि विना अने मिथ्यात्वमोहनीय सहित होय.

३ तेउकाय, वायुकाय, अभव्य ए त्रण मार्गणाएं—अनंतानुबंधि सहित ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानक मिथ्यात्व गुणठाणें कह्या प्रमाणे होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—प्रथमना ५ गुणठाणा होवाथी ५।६।७।८।९।१० एवं ६ उदयस्थानक होय.

१६ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, चारकषाय, चक्षुदर्शन, अचक्षु-दर्शन, शुक्ललेश्या, भव्य, संज्ञी, आहारी एवं १६ मार्गणाएं—१।२।४।५।६।७।८।९।१० ए नव उदयस्थानक होय.

३ त्रणवेद मार्गणाएं—१ प्रकृतिना उदयस्थानक विना २।४।५।६।७।८।९।१० ए आठ उदयस्थानक होय, कारण के पुरुषादिवेदना उदय समयमां बीजी कषायनी प्रकृतिनो पण उदय अवश्य थाय; माटे संज्वलनकषायनी १ प्रकृति अने त्रण वेदमांथी एक वेद, एवं बे प्रकृतिनो उदयस्थानक लेवुं. अने १ प्रकृतिना उदयकाले तो पुरुषादि त्रणवेद मांहेली कोई प्रकृतिनो उदय न होय तेथी अवेदपणामां १ प्रकृतिनो उदय-स्थानक होवाथी उपरली त्रण मार्गणामां १ प्रकृतिनो उदयस्थानक गण्यो नथी.

४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं—१।२।४।५।६।७।८।९ एवं आठ उदयस्थानक होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं—१।२।४।५।६।७ एवं छ उदयस्थानक होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—४।५।६।७ एवं ४ उदयस्थानक होय, ए मार्गणा सातमा गुणठाणासुधी होय. अने १ प्रकृतिनो उदयस्थानक नवमा गुणठाणें लाभे तेथी एक अने बे प्रकृतिनो उदयस्थानक आ मार्गणामां न लेवुं जोइये.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात, केवलदर्शन एवं त्रण मार्गणाएं—मोहनीयकर्मनो उदय न होवाथी उदयस्थानक पण न होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—संज्वलनलोभनी १ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—५।६।७।८ एवं ४ उदयस्थानक होय.

५ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या ए ५ मार्ग-णाएं—४।५।६।७।८।९।१० ए ७ उदयस्थानक होय, कारण के प्रथमनी त्रणलेश्या छट्ठा गुणठाणा सुधी अने तेजो, पद्म आ बे लेश्यामां प्रथमना सात गुणठाणासुधी होय; तेथी

उपरोक्त सातज उदयस्थानक लेवा. पण १।२ प्रकृतिना बे उदयस्थानक नवमा अने दशमा गुणठाणे होवाथी न लेवा.

१ उपशम मार्गणाए—६।७।८ ए त्रण उदयस्थानक होय. अने प्रकारांतरे—१।२।४।५।६।७।८ ए सात उदयस्थानक पण जाणवा.

१ क्षायक मार्गणाए—१।२।४।५।६।७।८ ए सात उदयस्थानक होय.

३ क्षयोपशम, मिश्र, सास्वादन ए त्रण मार्गणाए—७।८।९. ए त्रण उदयस्थानक०

५८ बासठमार्गणाने विषे आयुकर्मनी प्रकृतिना— उदयस्थानकनुं द्वार—

६२ बासठ मार्गणाए—आयुकर्मनी देवायु, मनुष्यायु, तिर्यंचायु अने नरकायु ए ४ प्रकृतिमांथी पोतपोतानी योग्य एक एक प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. जेम नारक मार्गणाए—नरकायु, देव मार्गणाए—देवायु, मनुष्य मार्गणाए—मनुष्यायु अने तिर्यंच मार्गणाए—तिर्यंचायु एवी रीतेज पोत पोताने योग्य उदयस्थानक जाणवुं जोइए.

५९. बासठमार्गणाने विषे नामकर्मनी प्रकृतिना— उदयस्थानकनुं द्वार—

नामकर्मना बार उदयस्थानक कहे छे—

१—मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य १, आदेय १, अने यशकीर्ति १ एवं ८ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक जाणवुं.

२—उपरोक्त ८ प्रकृतिमां जिननाम भेगो गणवाथी ९ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक जाणवुं ए अयोगी गुणठाणाना चरमसमये वर्तता तीर्थंकर आश्रयी होय.

३—मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्ति १, अने 'तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, अगुरुलघु १, निर्माण १ ए बार प्रकृति' ध्रुवोदयिनी १२. एवं सर्व २० प्रकृतिनो त्रीजो उदयस्थानक जाणवुं. ए केवल समुद्घात करतां वचला त्रण समय पर्यंत कार्मण काययोगे वर्तता सामान्य केवलीने होय.

४—त्रीजा उदयस्थानकनी २० प्रकृतिमां जिननाम वधारे गणवाथी २१ प्रकृतिनो चोथो उदयस्थानक जाणवुं. बीजी रीते—गति १, आनुपूर्वी १, स्थावर अथवा त्रस १, जाति १, बादर अथवा सूक्ष्म १, पर्याप्ता अथवा अपर्याप्ता १, सौ-

भाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति १ ए ९ अने ध्रुवोदयिनीनी १२ एवं २१ प्रकृतिनो उदयस्थानक भवांतराले कार्मण काययोगे वर्त्ततां चारगतिना जीवों आश्रयी जाणवुं.

५–चोथा उदयस्थानकमां भवांतराले कहेली २१ प्रकृतिमांथी तिर्यंचानुपूर्वी विना २० औदारिकशरीर १, हुंडकसंस्थान १, उपघात १, प्रत्येक अथवा साधारण १ एवं २४ प्रकृतिनो पांचमो उदयस्थानक जाणवुं, ए शरीरस्थ एकेंद्रियजीवोंने होय.

६–पांचमा उदयस्थानकनी २४ प्रकृतिमां पराघात नाम वधारे गणवाथी २५ प्रकृतिनो छट्ठो उदयस्थानक शरीरपर्याप्ति वाला एकेंद्रियजीव आश्रयी जाणवुं. अथवा वैक्रियद्विक २, प्रथमसंस्थान १, उपघात १, तिर्यंचगति अथवा मनुष्यगति १, त्रसचतुष्क ४, पंचेंद्रियजाति १, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति १ अने ध्रुवोदयिनी १२ एवं २५ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं. ए वैक्रिय शरीर करतां पंचेंद्रिय, तिर्यंच अने मनुष्य आश्रयी होय. अथवा शरीरस्थ देवता नारकोने होय तिर्यंचगति, मनुष्यगतिने ठामें देवगति अने नरकगति जाणवी.

७–छट्ठा उदयस्थानकमां एकेंद्रिय आश्रयीनी कहेली २५ प्रकृतिमां उच्छ्वासनाम मिलाववाथी २६ प्रकृतिनो सातमो उदयस्थानक श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता एकेंद्रियने जाणवुं. अथवा चोथा उदयस्थानकमां भवांतरालनी कहेली २१ प्रकृतिमांथी एक आनुपूर्वी विना २०, औदारिकद्विक २, संघयणषट्कमांथी संघयण १, संस्थानषट्कमांथी संस्थान १, उपघात १ अने प्रत्येक १ एवं २६ प्रकृतिनो सातमो उदयस्थानक जाणवुं, ए विकलेंद्रिय अने तिर्यंच पंचेंद्रिय अथवा मनुष्यने शरीरस्थ थया पछी होय.

८–उच्छ्वासनाम सहित एकेंद्रियनी २६ प्रकृतिना उदयस्थानकमां आताप अथवा उद्योत नाम मेलो गणतां २७ प्रकृतिनो आठमो उदयस्थानक जाणवुं, ए एकेंद्रियजातिमां होय. अथवा देवता, नारकी अथवा वैक्रियतिर्यंच अने मनुष्यने छट्ठा उदयस्थानकमां बीजीरीते कहेली २५ प्रकृतिमां पराघात १ अने शुभविहायोगति १ ग्रहिन करवाथी २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक वैक्रिय शरीर पर्याप्ति पूरी थया पछी होय. अथवा चोथा उदयस्थानकमां जिननाम सहित कहेली २१ प्रकृतिमां औदारिकद्विक २, संस्थानषट्कमांथी संस्थान १, प्रथमसंघयण १, उपघात १ अने प्रत्येक १ ए छ प्रकृति मेली करवाथी २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं ए केवली समुद्घात

करतां बीजा, छट्ठा अने सातमा, समयमुद्घाती औदारिक मिश्रकाययोगे वर्त्ततां जीवोने होय. अने बीजाओने जिननाम विना २६ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

९–सातमा उदयस्थानकमां पण विकलेंद्रिय, सामान्य तिर्यंच अने मनुष्यनी कहेली २६ प्रकृतिमां पराघात अने शुभविहायोगति, अशुभविहायोगति ए बेमांथी एक प्रकृति भेळवाथी २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं, ए विकलेंद्रिय शरीरस्थे उत्पन्न थया पछी शरीरपर्याप्तिये पर्याप्ता थयेला जीवोने होय. तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्यने तो खगतिद्विक मांथी गमे ते एक प्रकृति होय अने विकलेंद्रियमां अशुभविहायोगतिज होय. अथवा आठमा स्थानकमां बीजी रीते कहेली २७ प्रकृतिमां उच्छ्वासनाम वधारतां २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं, ए श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिये पर्याप्ता अने वैक्रियशरीर पर्याप्तिये पर्याप्ता थयेला देवता, नारको, तिर्यंच अने मनुष्यने होय.

१०–नवमा उदयस्थानकमां कहेली २८ प्रकृतिमां उच्छ्वासनाम वधारतां २९ प्रकृतिनो दशमो उदयस्थानक जाणवुं. ए श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिये पर्याप्ता थया पछी विकलेंद्रियने अने सहजतिर्यंच मनुष्यने होय. अथवा उच्छ्वासनो अनुदय होवाथी उपरोक्त २८ प्रकृतिमां उद्योतनाम मेळववाथी २९ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं ए पंचेंद्रियतिर्यंच अने विकलेंद्रियने होय. अथवा नवमां स्थानकमां कहेली २८ प्रकृतिमां सुस्वर अथवा दुस्वर मेळवतां २९ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं, ए भाषापर्याप्तिये पर्याप्ता–देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यंचवैक्रियीने होय. अथवा स्वरनो अनुदय मानवाथी उद्योत सहित २९ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं, ए श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिये पर्याप्ता देवता, वैक्रिय–तिर्यंच अने मनुष्यने होय.

११–दशमा उदयस्थानकमां उच्छ्वास सहित २९ प्रकृतिमां स्वरनो उदय गणतां ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक अग्यारमो जाणवुं. ए विकलेंद्रिय सहजपंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यने होय. अथवा मनुष्य विना विकलेंद्रिय अने तिर्यंचपंचेंद्रिय आश्रित स्वरनो अनुदय मानतां उद्योत सहित ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं. अथवा आठमा स्थानकमां बीजी रीते कहेली जिननाम विना २६ प्रकृतिमां पराघात १, उच्छ्वास १, खगति १, स्वर १ एम चार प्रकृति भेळी गणतां ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं, ए औदारिककाययोगे वर्त्ततां सामान्य केवलीने होय. अथवा दशमा स्थानकमां कहेली २९ प्रकृतिमां उद्योतनाम गणतां ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक देवता, वैक्रिय–तिर्यंच, अने आहारक शरीरी साधुने अथवा वैक्रियीने होय.

१२–अग्यारमा उदयस्थानकमां बीजी रीते कहेली ३० प्रकृतिमां जिननाम

भेगो गणतां ३१ प्रकृतिनो चारमो उदयस्थानक जाणवुं.

अहीं एटलुं समजवानुं के तीर्थंकरमहाराज औदारिककाय रुंधतां वचनयोगनो पण रोध करे त्यारे स्वर विना ३० प्रकृतिनो अने उच्छ्वासनो रुंध न करे त्यारे २९ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तथा सामान्य केवली स्वरने रुंधे त्यारे २९ प्रकृतिनो अने उच्छ्वासने रुंधे त्यारे २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय अथवा संपूर्णपर्याप्तियें पर्याप्ता मनुज तिर्यंचपंचेंद्रिय अने विकलेंद्रियने उद्योत समेत ३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

चौदगुणठाणें नामकर्मना चार उदयस्थानक कहे छे–

१ मिथ्यात्वगुणठाणें—गति १, जाति १, स्थावर अथवा त्रस १ बादर अथवा सूक्ष्म १, पर्याप्ता अथवा अपर्याप्ता १, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति १, आनुपूर्वी १ अने ध्रुवोदयिनी १२ एवं २१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

एकवीश प्रकृतिमां औदारिकशरीर १, हुंडकसंस्थान १, उपघात १, प्रत्येक अथवा साधारण १ ए ४ प्रकृति वधारे गणतां अने तिर्यंचानुपूर्वी काढतां २४ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक होय. चोवीश प्रकृतिमां पराघात वधारतां २५ प्रकृतिनो उदयस्थानक एकेंद्रियमां होय. अथवा देवता, नारकी, वैक्रिय-तिर्यंच अने वैक्रिय-मनुष्यने विषे वैक्रियद्विक २, समचतुरस्रसंस्थान १, उपघात १, गति १, त्रसचतुष्क ४, पंचेंद्रियजाति १, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति १ अने ध्रुवोदयिनी १२ एवं २५ प्रकृतिनो बीजा प्रकारे उदयस्थानक होय.

एकेंद्रियने विषे–पचीश प्रकृतिना उदयस्थानकमां उच्छ्वास वधारतां २६ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. अथवा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता विकलेंद्रिय, तिर्यंचपंचेन्द्रिय, अने मनुष्यने विषे निजभवे उपजतां समयमां आनुपूर्वी सहित २१ प्रकृतिमांथी आनुपूर्वी काढतां वीश प्रकृतिमां औदारिकद्विक २, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, प्रत्येक १ ए छ प्रकृति वधारतां २६ प्रकृतिनो उदयस्थानक बीजा प्रकारे होय. एकेंद्रियमां उच्छ्वास सहित २६ प्रकृतिमां आताप अथवा उद्योत मिलाववाथी २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. देवता, नारकी, वैक्रिय-तिर्यंच अने मनुष्यने विषे–पचीश प्रकृतिना उदयस्थानकमां पराघात १, अने शुभविहायोगति १ आ बे भेगी गणवाथी २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं. शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता सामान्यतिर्यंच, मनुष्य अने मनविकलेंद्रियने विषे–छवीश प्रकृतिना उदयमां पराघात अने शुभखगति अथवा

अशुभखगति आ बे प्रकृति भेगी गणवाथी २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तथा देवता, नारकी, वैक्रियतिर्यंच अने वैक्रियमनुष्यने विषे तो सत्तावीस प्रकृतिना उदयस्थानकमां उच्छ्वास वधारवाथी २८ प्रकृतिनो अथवा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता-देवता अने तिर्यंचने २७ प्रकृतिना उदयस्थानकमां उद्योत नाम वधारवाथी २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता-विकलेंद्रिय सामान्यतिर्यंच अने मनुष्यने अठावीश प्रकृतिना उदयमां उच्छ्वासनाम भेगो गणवाथी २९ प्रकृतिनो. अथवा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता विकलेंद्रिय, सामान्य तिर्यंचने उच्छ्वासनो अनुदय मानवाथी उद्योत सहित २९ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता-विकलेंद्रिय, सामान्यतिर्यंच अने मनुष्यने-२९ प्रकृतिना उदयमां स्वरनो उदय समेत ३० प्रकृतिनो अथवा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता-विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय तिर्यंचने स्वरना अनुदये उद्योत सहित ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, मनुष्यने ए गुणठाणे उद्योतनो उदय सर्वथा न होय. भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता-देवता, वैक्रिय-तिर्यंचने स्वरना उदय समेत २९ प्रकृतिना उदयमां उद्योतनाम सहित ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. संपूर्ण पर्याप्तियें पर्याप्ता-विकलेंद्रिय अने सामान्य तिर्यंचने ३० प्रकृतिना उदयमां उद्योतनाम सहित ३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. एवी रीते २१।२४ २५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ ए नव उदयस्थानक जाणवा.

२ सास्वादनगुणठाणे—२१।२४।२५।२६।२९।३०। ३१ ए ७ उदयस्थानक जाणवा. तेमां २१ प्रकृतिनो नारकी विना त्रण गतिवाळा जीवोने, २४ प्रकृतिनो बादरपर्याप्ता अने प्रत्येकएकेंद्रियने मिथ्यात्वगुणठाणे कह्या प्रमाणे होय. अने २५ प्रकृतिनो देवतामां उत्पन्न थयेलाने होय, तथा कोईकने पण न होय. २६ प्रकृतिनो विकलेंद्रिय, सामान्यतिर्यंच अने मनुष्य अपर्याप्तावस्थाने होय. २९ प्रकृतिनो प्रथम प्राप्तसम्यक्त्वथी पडतां देवता अने नारकीने पर्याप्तावस्थायें होय उपशम सम्यक्त्वथी पडतां तथा उत्तरवैक्रिय शरीरे वर्त्ततां-पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यने सर्वपर्याप्तिपूरी कर्या पछी ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. ३१ प्रकृतिनो प्रथम सम्यक्त्व वमतां पंचेंद्रियतिर्यंच पर्याप्ताने होय.

३ मिश्रगुणठाणे—२९।३०।३१ एवं त्रण उदयस्थानक जाणवा. तेमां पूर्णपर्याप्तिवाळा देवता अने नारकीने २९ प्रकृतिनो, पर्याप्ति बांध्या पछी पंचें-

द्रियतिर्यंच अने मनुष्यने ३० प्रकृतिनो, अथवा उच्छ्वासनाम सहित भाषा-पर्याप्ति बांध्या पछी स्वरनाम सहित उद्योतना उदयें पंचेंद्रियतिर्यंचने ३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

४ अविरतिसम्यग्दृष्टिगुणठाणें—२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ एवं ८ उदयस्थानक जाणवा. तेमां क्षायक सम्यक्त्वी-देवता, नारकी, पंचेन्द्रियतिर्यंच अने मनुष्यपर्याप्ताने विषे २१ प्रकृतिनो, तथा देवता, नारकी, वैक्रियतिर्यंच अने वैक्रियमनुष्यने विषे २५ अने २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, अहीं नारकी क्षायिकसम्यक्त्वी तथा वेदकसम्यक्त्वी अने देवता त्रिविधसम्यक्त्वीने होय. पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यने विषे २६ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिक तथा वेदकसम्यग्दृष्टिने होय. उपशमसमकिति तिर्यंच-मनुष्यमां न उपजे तेमां पण वेदकसम्यग्दृष्टिने मोहनीयनी २२ प्रकृतिनी सत्तावालो होय. तथा नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवताने २८ अने २९ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. नारकी विना चगति वाला जीवोंने ३० प्रकृतिनो उदय होय, तेमां देवताने उद्योत समेत अने पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यने उद्योत विना ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं. तथा तिर्यंचने उद्योत सहित ३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

५ देशविरतिगुणठाणें—२५।२७।२८।२९।३०।३१ एवं छे उदयस्थानक जाणवा. तेमां वैक्रियतिर्यंच मनुष्यने प्रथमना ४ उदयस्थानक, तथा सामान्यतिर्यंच अने मनुष्यने ३० प्रकृतिनो अने सामान्यतिर्यंचने ३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. अहीं दौर्भाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्ति ए त्रणनो उदय गुणप्रत्यय थकी न होय पण शुभज लेवा.

६ प्रमत्तगुणठाणें—२५।२७।२८।२९।३० एवं ५ उदयस्थानक जाणवा. तेमां आहारक अने वैक्रियशरीर करनार साधुने प्रथमना चार उदयस्थानक, अने सामान्यमनुष्यने ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, अथवा आहारक वैक्रिय करनार साधुने उद्योत समेत ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

७ अप्रमत्तगुणठाणें—२९।३० ए बे उदयस्थानक जाणवा. तेमां आहारक अने वैक्रिय करनार साधुने उद्योत विना २९ प्रकृतिनो, अने सामान्यमनुष्यने उद्योत विना तथा आहारक अने वैक्रियशरीरी साधुने उद्योत समेत ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

८ अपूर्वकरण, ९ अनिवृत्तिबादर, १० सूक्ष्मसंपराय, ११ उपशांत, १२ क्षीण-

मोह ए पांच गुणठाणें—मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, प्रथमसंघयण १, संस्थान १, खगति १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, त्रसचतुष्क ४, सौभाग्य १, स्वर १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १ अने ध्रुवोदयिनी १२ एवं ३० प्रकृतिनो एकज उदयस्थानक होय.

१३ सयोगीगुणठाणें—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एवं ८ उदयस्थानक जाणवा. मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १ अने ध्रुवोदयिनी १२ एवं २० प्रकृतिनो, अने जिननाम समेत २१ प्रकृतिनो ए बे उदयस्थानक केवलसमुद्घात करतां त्रीजी चोथी अने पांचमी वखती त्रण समय पर्यंत अनाहारकपणें कार्मणकाययोगे वर्त्तनां जीवोने होय. वीश प्रकृतिनां उदयस्थानकमां औदारिकद्विक २, संस्थानषट्कमांथी संस्थान १, प्रथमसंघयण १, उपघात १ प्रत्येक १ ए छे प्रकृति भेगी गणवाथी २६ प्रकृतिनो उदयस्थानक सामान्यकेवलीने अने जिननाम समेत २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक तीर्थंकर-भगवानने होय. सामान्यकेवलीमां कहेली २६ प्रकृतिमां पराघात १, उच्छ्वास १, शुभखगति अथवा अशुभविहायोगति १, सुस्वर अथवा दुस्वर १ ए चार प्रकृति शामिल करवाथी ३० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय अने जिनराजने जिननाम समेत ३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

अहीं एटलुं समजवानुं के योग रुंधे ते समयमां सामान्यकेवलीने स्वरना उदय विना २९, अने उच्छ्वासना उदय विना २८, तीर्थंकरमहाराजने जिनयुक्त स्वर विना ३०, अने उच्छ्वास विना २९ प्रकृतिनो उदयस्थानक लेवुं.

१४ अयोगीगुणठाणें—मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १ ए ८ नो उदयस्थानक सामान्यकेवलीने अने जिननाम सहित ९ प्रकृतिनो उदयस्थानक तीर्थंकरमहाराजने होय.



उदयस्थानकना नंबर	उदयस्थानक—	१ घातीना [illegible]	२ एकेंद्रिय	३ त्रण विकलेंद्रिय	४ सामान्यतिर्यंच	५ सामान्यमनुष्य	६ वैक्रियतिर्यंच	७ वैक्रियमनुष्य— वैक्रियसाधु	८ आहारकमनुष्य साधु	९ देवता	१० नारकी	११ समुद्घात केवली	१२ समुद्घात तीर्थंकर	१३ काययोगी केवली	१४ काययोगी तीर्थंकर	१५ स्वररोधे केवली	१६ स्वररोधे तीर्थंकर	१७ उच्छ्वासरोधे केवली	१८ उच्छ्वासरोधे तीर्थंकर	१९ अयोगी अंतिमकेवली	२० अयोगी अंतिमतीर्थंकर	कुलअधिकारी—
१	८ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
२	जिननाम सहित ९ प्रकृतिनो उदयस्था०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
३	सामान्य केवलीने २० प्रकृतिनो उदय०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
४	२१ प्रकृतिनो उदयस्थानक	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	८
५	२४ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
६	२५ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	१	०	०	०	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	६
७	२६ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५
८	२७ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	१	०	०	०	१	१	१	१	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	७
९	२८ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	९
१०	२९ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	१	०	०	१	०	०	१०
११	३० प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	०	१	१	१	१	वैक्रिय साधु१	१	१	०	०	०	१	०	०	१	०	०	०	०	९
१२	३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक	०	०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	३
	कुल उदयस्थानक—	१	५	६	६	५	५	५	५	६	५	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	६१

१ नरकगति मार्गणाएं—२१। २५। २७। २८। २९ एवं ५ उदयस्थानक होय.

१८ तिर्यंचगति, नपुंसकवेद, कषायचार, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान[१], अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, अचक्षुदर्शन, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं १८ मार्गणाएं—२१। २४। २५। २६। २७। २८। २९ ३१। ३१ ए नव उदयस्थानक होय.

४ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, क्षायक एवं ४ मार्गणाएं—२०। २१। २५ २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ८। ९ एवं ११ उदयस्थानक होय.

१ देवगति मार्गणाएं—२१।२५।२७।२८।२९।३० एवं ६ उदयस्थानक होय.

४ एकेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय ए चार मार्गणाएं—२१। २४ २५। २६। २७ एवं ५ उदयस्थानक होय.

२ तेउकाय, वायुकाय ए बे मार्गणाएं—२१। २४। २५।२६ एवं ४ उदयस्थानक.

३ मनोयोग, वचनयोग, देशविरति ए त्रण मार्गणाएं—२५। २७। २८। २९ ३०। ३१ एवं छे उदयस्थानक होय.

१ काययोग मार्गणाएं—२०। २१। २४। २५। २६। २७। २८। २९ ३०। ३१ एवं १० उदयस्थानक होय, कारण ए तेरमागुणठाणा लगणना सर्वे जीव आवी गया अने चौदमेगुणठाणें चरम समयें वर्त्ततां जीवने ८। ९ ए बे उदयस्थानक होय; ते अहीं न लीधा.

९ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, पद्मलेश्या, क्षयोपशम, संज्ञी ए नव मार्गणाएं—२१। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१ ए आठ उदयस्थानक होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय एवं ३ मार्गणाएं—छट्ठा प्रमत्त-गुणठाणाथी यावत् नवमा तथा बारमा सुधीनां गुणठाणामां कहेला २५। २७। २८ २९। ३० एवं पांच उदयस्थानक होय.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यात एवं ३ मार्गणाएं—तेरमां अने चौदमां गुणठाणानां २०। २१। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१।८।९ एवं दश उदयस्था०

---

१ विभंगज्ञान मार्गणामां २४ प्रकृतिनो उदयस्थानक होवो न जोइए कारण के एकेन्द्रियादिजाति ४, स्थावरचतुष्क ४ अने आताप १ ए नव प्रकृतिनो उदय आ मार्गणाएं न होय परंतु 'कर्मप्रकृत्यात्मकविवरणयंत्र'मां २४ प्रकृतिनो उदयस्थानक लीधेल छे ते बहुश्रुतगम्य जाणवुं.

रेहारविशुद्धि मार्गणाएं—छट्ठा अने सातमा गुणठाणें कहेलो ३० प्रकृतिनो पस्थानक होय.

क्ष्मसंपराय मार्गणाएं—दशमा गुणठाणें कहेलो ३० प्रकृतिनो १ उदयस्था०

कलेंद्रिय मार्गणाएं—मिथ्यात्व अने शास्वादन गुणठाणें कहेला २१ । २९ । ३० । ३१ एवं छे उदयस्थानक होय.

क्लेश्या मार्गणाएं—प्रथमना तेर गुणठाणें कहेला उदयस्थानक मांहेला २० । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एवं ९ उदयस्थानक होय.

क्षुदर्शन मार्गणाएं—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एवं स्थानक अथवा पक्षांतरे—२६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एवं छे उद- पण होय, ऊपरना आठ उदयस्थानक तो चारगतिना भवांतराले अथवा व, नारकी, वैक्रियतिर्यंच अने मनुष्य अथवा सहजमनुष्य चतुरिंद्रिय अने र्यंच आदिमां प्रथमना बार गुणठाणा सुधीना होय अने पक्षांतरे–छे उदय- रीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने विषे कहेला प्रथमना १२ गुणठाणा प्रमाणे होय, ना पक्षना ६ उदयस्थानक मले छे.

उपशम मार्गणाएं—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एवं ७ उदय- होय तेमां २१ । २५ । २७ । २८ ए चार उदयस्थानक तो देवगतिमां उप- होय. अने २९ प्रकृतिनो देवना अने नारकीमां उपशमसमकितवालाने । ३१ ए बे उदयस्थानकमां मनुष्यने एकज ३० प्रकृतिनो अने तिर्यंचने १ ए बे होय. तेमां तिर्यंचने चोथा पांचमा गुणठाणें अने मनुष्यने चोथाथी । सुधीना गुणठाणें कम्मा प्रमाणे होय.

भव्य मार्गणाएं—२० । २१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ९ एवं १२ उदयस्थानक होय.

मिश्र मार्गणाएं—पर्याप्त अवस्थायें कहेला २९ । ३० । ३१ एवं त्रण उदय- होय. चारगतिना जीवों मांहे २९ प्रकृतिनो अने देवमां २९ । ३० ए बे, केपतिर्यंच अने मनुष्यने ३० । ३१ ए बे उदयस्थानक जाणवा.

सास्वादन मार्गणाएं—बीजा सास्वादनगुणठाणें कहेला २१ । २४ । २५ २९ । ३० । ३१ एवं ७ उदयस्थानक होय.

आहारी मार्गणाएं—२४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एवं दयस्थानक होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—२० । २१ । ८ । ९ एवं ४ उदयस्थानक होय. तेमां ८ । ९ ए बे उदयस्थानक चौदमा गुणठाणाना चरमसमये अनाहारीपणे होय अने २० । २१ ए बे उदयस्थानक १३ मां सयोगीकेवलीगुणठाणे केवलसमुद्घात करतां तीजी चोथी अने पांचमी ए वचली त्रण समयलगण कार्मणकाययोगे वर्त्ततां जीवोंने अनाहारी पणो होय ते वेलायें जिननाम विना २० प्रकृतिनो, अने जिननाम समेत २१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. अथवा परभवे जातां भवांतराले पण कार्मणकाययोगे अनाहारी पणो होय ते समयमां पण २१ प्रकृतिनो उदयस्थानक जाणवुं.

---

६० वासठमार्गणाने विषे गोत्रकर्मनी प्रकृतिना उदयस्थानकनुं द्वार–

६२ वासठ मार्गणाएं–गोत्रकर्मनी ऊंचगोत्र अने नीचगोत्र आ बे प्रकृतिमांथी पोत पोताने योग्य एक एक प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

---

६१ वासठमार्गणाने विषे अंतरायकर्मनी प्रकृतिना- उदयस्थानकनुं द्वार–

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–अंतरायकर्मनो उदय नथी तेथी उदयस्थानक न होय. शेष ६० मार्गणाएं–अंतरायकर्मनी पांच प्रकृतिनो एक एक उदयस्थानक होय.

---

६२ वासठमार्गणाने विषे आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना– उदयस्थानकनुं द्वार–

आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना २६ उदयस्थानक कहे छे–

१–मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १, वेदनीय १, मनुष्यायु १, ऊंचगोत्र १ एवं ११ प्रकृतिनो उदयस्थानक अयोगीगुणठाणे वर्त्ततां सामान्यकेवलीने होय.

२–उपरोक्त ११ प्रकृतिमां जिननाम वधारे गणतां १२ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक चौदमागुणठाणे होय.

३–मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १, ध्रुवोदयिनी १२, शातावेदनीय १, मनुष्यायु १, ऊंचगोत्र १,

३ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक सामान्यकेवलीने केवलसमुद्घात करतां । पण समयत्रण अनाहारीपणे कार्मणकाययोगे वर्त्ततां जाणवो.

–ऊपरोक्त २१ प्रकृतिमां जिननाम मेलवाथी २४ प्रकृतिनो चोथो उदय-क तेरमागुणठाणे जाणवो.

–औदारिकद्विक २, संस्थान १, प्रथमसंघयण १, प्रत्येक नाम १, उपघात १ प्रकृति ऊपरनी २३ प्रकृतिमां भेगी गणतां २९ प्रकृतिनो पांचमो स्थानक समुद्घातना बीजे, छट्ठे, सातमे ए त्रण समये औदारिकमिश्र-वर्त्ततां जीवोने जाणवो.

–पांचमा उदयस्थानकनी २९ प्रकृतिमां जिननाम भेगो गणवाथी ३० प्रकृ-छट्ठो उदयस्थानक जाणवो.

–पराघात १, उच्छ्वास १, शुभविहायोगति अथवा अशुभविहायोगति १, १ अथवा दुस्वर १ ए चार प्रकृति पांचमां स्थानकनी २९ प्रकृतिमां भेगी थी ३३ प्रकृतिनो सातमो उदयस्थानक होय.

–सातमा स्थानकनी ३३ प्रकृतिमां जिननाम मिलाववाथी ३४ प्रकृतिनो ो उदयस्थानक जाणवो, तीर्थंकरने खगतिद्विकमांथी शुभविहायोगति, र, प्रथमसंस्थान अने प्रथमसंघयण लेवुं जोइए अर्थात् सामान्यकेवली तीर्थंकरमां एटलुं विशेषपणो जाणवुं.

.–सामान्यकेवलीने वचनयोग रुंध्यां पछी स्वर विना ३२ नो उदयस्था०

१०–सामान्यकेवली स्वासोच्छ्वासने रुंधे तेथी नवमां स्थानकमां कहेली ३२ तमांथी उच्छ्वासने बाद करतां ३१ प्रकृतिनो दशमो उदयस्थानक जाणवुं.

११–ज्ञानावरणीय ५, (निद्रा विना) दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५, ाख्यानी १, प्रत्याख्यानी १ अने संज्वलनकषायनी १, वेदमांथीवेद १, १, रति अथवा शोक, अरति आ बे युगलमांथी एक युगलनी २ ए प्रकृतिनी घातिनी संज्ञा जाणवी. वेदनीय १, आयु १, गोत्र १, गति १, पूर्वी १, पंचेंद्रिय १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय वा अनादेय १, यशःकीर्त्ति अथवा अपयशःकीर्त्ति १ अने ध्रुवोदयिनी १२ २४ प्रकृति अघातिनी जाणवी एवं घातिनी २० अने अघातिनी २४ प्रकृ-मली ४४ प्रकृतिनो अग्यारमो उदयस्थानक परभवे जातां भवांतराले क्षायिक-कितो चारोगतिना जीवोने जाणवो. उपशमसमकितो जीवने उपशांत-गुणठाणे कदापि मरण थाय तो देवगतिमां उपजे तेथी देवगतिमां जातां

भवांतराले उपशमसमकितीने पण ४४ प्रकृतिनो अग्यारमो उदयस्थानक जाणवुं.

१२-अग्यारमां उदयस्थानकमां कहेली भवांतरालनी ४४ प्रकृतिमां भयमोहनीय वधारे गणतां ४५ प्रकृतिनो बारमो उदयस्थानक क्षायिकसमकिती अने उपशमसमकितीने विषे होय.

बीजी रीते-तेज भवांतरालनी ४४ प्रकृतिमां जुगुप्सामोहनीय मेलवाथी ४५ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

त्रीजी रीते-पूर्वोक्त ४४ प्रकृति साथे सम्यक्त्वमोहनीय जोड़तां ४५ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमसम्यक्त्वीने होय.

चोथी रीते-पूर्वोक्त ४४ प्रकृति साथे अनंतानुबंधिनी एक प्रकृति भेगी गणतां ४५ प्रकृतिनो उदयस्थानक ,शास्वादनसम्यक्त्वीने नरकगति विना भवांतराले त्रणगतिने विषे होय.

१३-बारमा उदयस्थानकमां प्रथम कहेली ४५ प्रकृतिमां जुगुप्सामोहनीयनो उदय वधारे गणतां ४६ प्रकृतिनो तेरमो उदयस्थानक क्षायिकसमकितीने होय.

बीजी रीते-उपरोक्त सम्यक्त्वमोहनीय समेत ४५ प्रकृतिनी साथे भय अथवा जुगुप्सामोहनीय ए बे प्रकृतिमांनी एक वधारे गणतां ४६ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमसम्यक्त्वीने होय.

त्रीजी रीते-अनंतानुबंधि समेतनी ४५ प्रकृतिमां भय अथवा जुगुप्सा ए बे मांनी एक मिलावतां ४६ प्रकृतिनो उदयस्थानक शास्वादनीने होय.

चोथी रीते-उपरोक्त ४४ प्रकृतिमां मिथ्यात्वमोहनीय १ अने अनंतानुबंधि १ ए बे शामिल करतां ४६ प्रकृतिनो उदयस्थानक मिथ्यात्वीजीवने भवांतराले होय.

१४-उपरोक्त ४४ प्रकृतिमां सम्यक्त्वमोहनीय १, भय १, जुगुप्सा १ ए त्रण वधारे गणतां ४७ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमसम्यक्त्वीने होय.

बीजी रीते-तेरमा उदयस्थानकमां अनंतानुबंधि समेत ४६ प्रकृतिनो उदय कह्यो तेमां भय अथवा जुगुप्सा गणी हती अने अहीं भय अने जुगुप्सा ए बेनो साथे उदय गणतां ४७ प्रकृतिनो उदयस्थानक शास्वादनसम्यक्त्वीने होय.

त्रीजी रीते-उपरोक्त मिथ्यात्वमोहनीय अने अनंतानुबंधि समेत ४६ प्रकृतिना उदय मध्ये भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एकनो उदय मेलवाथी ४७ प्रकृतिनो उदयस्थानक मिथ्यात्वीजीवोने होय.

१५-ज्ञानावरणीय ५, (निद्रा विना) दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५,

अनंतानुबंधिआदि ४, हास्य, रति अथवा शोक, अरति ए बे युगलमांथी एक युगलनी २, भय १, जुगुप्सा १, वेद १, मिथ्यात्वमोहनीय १ ए २४ घातीनी, अने वेदनीयनी १, आयुनी १, गोत्र १, गति १, जाति १, वर्णचतुष्क ४, आनुपूर्वी १, अगुरुलघु १, निर्माण १, त्रसत्रिक ३, स्थिर १, शुभ १, अस्थिर १, अशुभ १, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय ए बेमांथी १, यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति १, तैजस १, कार्मण १ ए अघातिनी २४ एवं सर्व मली ४८ प्रकृतिनो उदयस्थानक मिथ्यात्वीजीवोने होय.

बीजी रीते–उपरोक्त भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४३ प्रकृतिमां वैक्रियद्विक २, प्रत्येकनाम १, उपघात १, संस्थान १ ए पांच प्रकृति भेगी गणतां ४८ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिक अथवा उपशम सम्यक्त्वी शरीरस्थ देवताने होय.

१६–ऊपरनी ४८ प्रकृतिमां भय, जुगुप्सा ए बेमांथी १ प्रकृति मिलावतां ४९ प्रकृतिनो उदयस्थानक देवता अने नारकी शरीरस्थ क्षायिकसम्यक्त्वीने होय.

बीजी रीते–भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४३ प्रकृतिमां सम्यक्त्वमोहनीयनी १, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १ ए छे प्रकृति मेलवतां ४९ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमसम्यक्त्वी-देव अने नारकीने होय.

त्रीजी रीते–भवांतरालनी आनुपूर्वीविना ४३ प्रकृतिमां औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १ ए ६ मिलावतां ४९ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिकसम्यक्त्वी–तिर्यंच अने मनुष्यने विषे होय.

१७—उपरोक्त ४८ प्रकृतिमां भय १, जुगुप्सा १ ए बे मेलवतां ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिकसम्यक्त्वी-देवता अने नारकी शरीरस्थने होय.

बीजी रीते–उपरोक्तनी ४९ प्रकृतिमां भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी १ मेलवतां ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमिक–देवता अने नारकी शरीरस्थने होय.

त्रीजी रीते–सम्यक्त्व मोहनीय १, औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १ ए ७ प्रकृति पूर्वोक्त भवांतरालेनी आनुपूर्वीविना ४३ प्रकृतिमां भेगी गणतां ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमिकसमकिती–मनुष्य अने तिर्यंच शरीरस्थने होय.

चोथी रीते–सोलमा उदयस्थानकमां त्रीजी रीते कहेली ४९ प्रकृतिमां भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक मेलवतां ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिकसमकिती–मनुष्य अने तिर्यंच शरीरस्थने होय.

पांचमी रीते-भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४३ प्रकृतिमां वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, विहायोगति १ ए ७ मेलतां ५० नो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिक-देव अने नारकीने विषे होय.

छट्ठी रीते-भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४५ प्रकृतिमां वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १ ए ५ प्रकृति मेगी गणतां ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक मिथ्यात्वी-देवता अने नारकीपणें उपजे ते वखते होय.

१८-सत्तरमां उदयस्थानकमां त्रीजीरीते कहेल ५० प्रकृतिमां भय अने जुगुप्सा ए बे मेली गणतां ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमिक-देवता अने नारकीने होय.

बीजी रीते-सत्तरमां स्थानकमां त्रीजी रीते कहेल ५० प्रकृतिमां भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक मेगी गणतां ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशम-सम्यक्त्वी-मनुष्य अने तिर्यंचमां उपजे तिवारे होय.

त्रीजी रीते-सत्तरमां उदयस्थानकमां चोथी रीते भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक प्रकृति समेत ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक कह्यो अने अहीं भय अने जुगुप्सा ए बे मेली गणीयें तिवारे ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिकसम्यक्त्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

चोथी रीते-भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४३ प्रकृतिमां औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, विहायोगति १ ए आठ प्रकृति मेगी गणतां ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायकसम्यक्त्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

पांचमी रीते-सत्तरमां उदयस्थानकमां पांचमी रीते कहेली ५० प्रकृतिमां भय अथवा जुगुप्सा १ वधारतां ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिकसम्यक्त्वी-देवता अने नारकी शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने होय.

छट्ठी रीते-भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४४ प्रकृतिमां वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १ ए ७ भेलतां ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमिक-देवता अने नारकीने होय.

सातमी रीते-मिथ्यात्वी-मनुष्य अने तिर्यंच शरीरस्थने मिथ्यात्वमोहनीय अने अनंतानुबंधिना उदये भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४५ प्रकृतिमां औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १ ए छ प्रकृति मेगी गणतां ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

आठमी रीते-सत्तरमा उदयस्थानकमां छट्ठी रीते कहेली ५० प्रकृतिमां भय

अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक मेळवतां ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक मिथ्यात्वी-देवता अने नारकीने होय.

१९—मत्तरमां उदयस्थानकमां बीजी रीते कहेली ५० प्रकृतिमां भय अने जुगुप्सा ए बे प्रकृति भेगी गणतां ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशम सम्यक्त्वी-मनुष्य अने तिर्यंचशरीरस्थने होय.

बीजी रीते—अढारमां उदयस्थानकमां चोथी रीते कहेली ५१ प्रकृतिमां भय अने जुगुप्सा ए बेमांथी एक अधिक गणतां ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीर-पर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिकसम्यक्त्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

त्रीजी रीते—सत्तरमां उदयस्थानकमां पांचमी रीते कहेली ५० प्रकृतिमां भय अने जुगुप्सा ए बे वधारतां ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिकसम्यक्त्वी-देवता अने नारकीने होय.

चोथी रीते—अढारमां उदयस्थानकमां छठ्ठी रीते कहेली ५१ प्रकृतिमां भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक प्रकृति सहित ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीर-पर्याप्तियें पर्याप्ता-क्षयोपशमिक-देवता अने नारकीने होय.

पांचमी रीते—भवांतरालेनी आनुपूर्वी विना ४३ प्रकृति अने सम्यक्त्वमो-हनीय १, औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १ ए ९ प्रकृति भेगी गणतां ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता-क्षयोपशमसम्यक्त्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

छठ्ठी रीते—अढारमां उदयस्थानकमां आठमी रीते कहेली ५१ प्रकृतिमां भय अने जुगुप्सा ए बेनो उदय एक साथे गणतां ५३ प्रकृतिनो उदयस्थानक मि-थ्यात्वी-देवता अने नारकीने होय.

सातमी रीते—अढारमां उदयस्थानकमां सातमी रीते कहेली ५१ प्रकृतिमां भय अने जुगुप्सा ए बेमांनी एक मेळवतां ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक मिथ्यात्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

आठमी रीते—सत्तरमां उदयस्थानकमां छठ्ठी रीते कहेली ५० प्रकृतिमां परा-घात १ अने खगति १ ए बे प्रकृति मेळवतां ५२ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीर-पर्याप्तियें पर्याप्ता-मिथ्यात्वी-देवता अने नारकीने होय.

२०—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीयनी ४, अप्रत्याख्यानी १, प्रत्या-ख्यानी १, संज्वलन १, पुरुषादिवेद १, हास्य, रति अथवा शोक, अरति ए

बे युगलमांथी एकयुगलनी २ अने अंतरायनी ५ एवं घातिनी २७ प्रकृति, तथा देवद्विक अथवा नरकद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, वर्णचतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, त्रसत्रिक ३, थिर १, अथिर १, शुभ १, अशुभ १, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति १, वेदनीयनो १, आयुनो १ अने गोत्रनो १ एवं २४ प्रकृति अघातिनी ए भवांतरालनी ४४ प्रकृति कही तेमांथी भवने विषे ऊपजे त्यारे आनुपूर्वीनो उदय न होय. तेथी आनुपूर्वी विना ४३ प्रकृतिमां वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १ अने संस्थान १ ए ५ प्रकृतिने मेळतां ४८ प्रकृति थई तेमां शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने-पराघात १ अने विहायोगति १ ए बे मेळतां ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तथा भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ ए त्रण मेळतां ५३ नो उदयस्थानक क्षायिकसम्यक्त्वी-देवता अने नारकीने होय.

बीजी रीते—उपरोक्त ५३ प्रकृतिमां एक निद्रानो उदय न गणिये तेवारे ५२. रही तेमां सम्यक्त्वमोहनीयनो उदय मेळतां ५३ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमसम्यक्त्वीने होय.

त्रीजी रीते—एक निद्रानो उदय काढी अने संघयण एकनो उदय मेळिये तेवारे ए पण ५३ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिक-मनुष्य अथवा तिर्यंचने होय.

चोथी रीते—समकितमोहनीय समेत अने आनुपूर्वी विना भवांतरालनी ४४ प्रकृति तथा औदारिकद्विक २, प्रत्येक १ उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, विहायोगति १ अने भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी १, एवं ५३ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता-क्षयोपशमसम्यक्त्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

पांचमी रीते—भवांतरालनी ऊपर कहेली ४४ प्रकृतिमां अनंतानुबंधि अने मिथ्यात्वमोहनीय ए बे युक्त करतां ४६ प्रकृतिनो उदय होय. तेमांथी आनुपूर्वीनी प्रकृति घटाडीने वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय अने जुगुप्सामांनी १ ए ८ वधारतां ५३ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता-मिथ्यात्वी-देव अने नारकीने होय.

छट्ठी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४५ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १ एवं ५३ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता मिथ्यात्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

२१—बीजप्रमाउदयस्थानकमां प्रथम रीते ५३ प्रकृति कही तेमां उच्छ्वासनो उदय मेलतां ५४ प्रकृतिनो उदयस्थानक स्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिकसम्यक्त्वी–देव अने नारकीने होय.

बीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४३ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ एवं ५४ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता-क्षायिकसम्यक्त्वी–मनुष्य अथवा तिर्यंचने होय.

त्रीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विनानी ४४, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ एवं ५४ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमसम्यक्त्वी–देवता अने नारकीने होय.

चोथी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विनानी ४४, औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १ अने जुगुप्सा १ एवं ५४ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमसम्यक्त्वी–मनुष्य अथवा तिर्यंचने होय.

पांचमी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना अने मिथ्यात्वमोहनीय १, अनंतानुबंधि १ ए बे उदय समेत ४५, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १ एवं ५४ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता मिथ्यादृष्टि–देवता अने नारकीने होय.

छट्ठी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विनानी ४०, औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय अथवा जुगुप्सामांनी १ एवं ५४ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता मिथ्यात्वी–मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

२२—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४३, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, उच्छ्वास १, स्वर १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ एवं ५५ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिकसम्यक्त्वी–देवता अने नारकीने होय.

बीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४३, औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १,

निद्रा १, उच्छ्वास १ एवं ५५ प्रकृतिनो उदयस्थानक स्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिकसम्यक्त्वी–मनुष्य अथवा तिर्यचने होय.

त्रीजी रीते—ऊपर स्वरना उदय समेत प्रथम भेद कह्यो, स्वरना अनुदये अने उद्योतना उदयें पण ५५ प्रकृतिनो उदयस्थानक स्वासोछ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ता–क्षायिक सम्यक्त्वी–देवताने होय.

चोथी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४४ अने वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १ एवं ५५ प्रकृतिनो उदयस्थानक स्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमसम्यक्त्वी–देवता अने नारकीने होय.

पांचमी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४४ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ एवं ५५ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमिक–मनुष्य अथवा तिर्यचने होय.

छठ्ठी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४५, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ एवं ५५ नो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता मिथ्यात्वी–देवता अने नारकीने होय.

सातमी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४५ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १ एवं ५५ नो उदयस्थानक मिथ्यात्वी–मनुष्य अने तिर्यचने होय.

२३–प्रथम बावीशमा उदयस्थानकमां—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४३, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, दुर्गंछा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, सुस्वर १, उद्योत १ एवं ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिकसम्यक्त्वी–देवताने होय.

बीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४३ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, स्वर १ एवं ५६ नो उदयस्थानक स्वासोच्छ्वास, अने भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिकसम्यक्त्वी–मनुष्य अने तिर्यचने होय.

त्रीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४४ अने वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, स्वर १ एवं ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें

पर्याप्ता क्षयोपशमिक–देवता अने नारकीने होय.

चोथी रीते—स्वरना अनुदयें उद्योतना उदय भळेथी पण ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमिक–देवताने होय.

पांचमी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४४ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १ एवं ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमसम्यक्त्वी–मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

छट्ठी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४५ अने वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १ एवं ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक श्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ता मिथ्यात्वी–देवता अने नारकीने होय.

सातमी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४५ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ एवं ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता मिथ्यात्वी–मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

२४–प्रथम बारमा उदयस्थानकमां बीजी रीते कहेली भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४४ अने वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, शुभविहायोगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, सुस्वर १, उद्योत १ एवं ५७ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता क्षयोपशमसम्यक्त्वी–देवताने होय.

बीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४४ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, स्वर १ एवं ५७ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता–क्षयोपशमसम्यक्त्वी–मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

त्रीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४५ अने वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, स्वर १ एवं ५७ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता मिथ्यात्वी देवता अने नारकीने होय.

चोथी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४५ अने वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, पराघात १, शुभखगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १,

उच्छ्वास १, उद्योत १ एवं २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति पर्याप्ता मिथ्यात्वी-देवताने होय.

पांचमी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४२ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १ एवं २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिये पर्याप्ता मिथ्यात्वी-मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

२५-प्रथम रीते तेरमां उदयस्थानकमां चोथी रीते कहेली भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४०, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, समचतुरस्रसंस्थान १, पराघात १, शुभखगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, सुस्वर १, उद्योत १ एवं २८ नो उदयस्थानक भाषापर्याप्तिये पर्याप्ता मिथ्यात्वी-देवताने होय.

बीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४१ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १, स्वर १, उद्योत १ एवं २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तिये पर्याप्ता क्षयोपशमसम्यक्त्वी-तिर्यंचने होय.

त्रीजी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४० प्रकृति अने औदारिकद्विक २, प्रत्येकनाम १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १ स्वर १ एवं २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक भाषापर्याप्तिये पर्याप्ता मिथ्यात्वी-मनुष्य अथवा तिर्यंचने होय.

चोथी रीते—भवांतरालनी आनुपूर्वी विना ४२ अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १, पराघात १, खगति १, भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १, उच्छ्वास १ अने उद्योत १ एवं २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिये पर्याप्ता मिथ्यादृष्टि-तिर्यंचने होय.

२६-ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीयनी ९, अनंतानुबंधियादि कषाय ४, वेद १, हास्य, रति अथवा शोक, अरति ए बे युगलमांथी एक युगलनी २, भय १, जुगुप्सा १, मिथ्यात्वमोहनीय १, अंतरायनी ५ एवं २९ घातीनी अने वेदनीयनी १, आयुनी १, गोत्रनी १, गति १, जाति १, शरीर १, उपांग १, तैजस १, कार्मण १, संघयण १, संस्थान १, वर्णचतुष्क ४, खगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, त्रसत्रिक ३, प्रत्येक १, उपघात १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, सुस्वर अथवा दुस्वर १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्ति अथवा

अपयशःकीर्त्ति १, उद्योत १ ए १४ प्रकृतिनी एवं ५९ प्रकृतिनो छव्वीसनो उदयस्थानक मिथ्यादृष्टि-तिर्यंच पंचेंद्रिय अने विकलेंद्रियने होय.

अहीं एटलुं समजवानुं के पंचेंद्रियजीवोंने विषे ४५।४६।४७।४८।४९।५० ५१।५२।५३।५४।५५ एवं अग्यार उदयस्थानक जाणवा. भवांतरालनी आनुपूर्वीना उदय सहित ४६।४७।४८ ए त्रण मिथ्यात्वमोहनीय अने अनंतानुबंधिना उदय सहित ४६ नो, तेमां भय अथवा जुगुप्सा ए बे प्रकृतिमांथी एक भेलवतां ४७ प्रकृतिनो, तथा भय अने जुगुप्सा ए बे एक साथे गणतां ४८ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तथा एमांथी आनुपूर्वी काढी अने औदारिकशरीर १, प्रत्येक अथवा साधारण बे मांथी १, उपघात १ अने हुंडकसंस्थान १ ए चार प्रकृति एक एक उदयमां भेलवी त्यारे ४९।५०।५१ ए त्रण उदयस्थानक होय, तथा एहीज त्रण उदयस्थानकमां पराघातनी एक एक प्रकृति भेलवतां ५० ५१।५२ ए त्रण उदयस्थानक शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने होय. तेमां श्वासोच्छ्वास पर्याप्ता थयां पछी उच्छ्वासना उदयनी एक एक प्रकृति पूर्वोक्त त्रणे उदयस्थानकमां वधारतां ५१।५२।५३ ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा आताप अथवा उद्योत ए बेमांथी एकनो उदय भेलतां ५२।५३।५४ ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा शरीरपर्याप्ता थयां पछी एक एक निद्राना उदयनी प्रकृति क्षेपवाथी ५३।५४।५५ ए त्रण उदयस्थानक होय. अने एकेंद्रियने अपर्याप्ता अवस्था सुधी सास्वादनी कोई जीव होय तो तेने मिथ्यात्वमोहनीयनो उदय न गणिये तो ४५ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय.

पण विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रियतिर्यंचने विषे कहेला मिथ्यात्वपणाना अथवा सास्वादनपणाना १५ उदयस्थानक जाणवा, तथा वैक्रियतिर्यंचने विषे देवता अने नारकीना भवांतराले कह्या ते विना ४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७ ५८ ए अग्यार उदयस्थानक, तथा मनुष्यने विषे अट्ठावनमां उदयस्थानक विना ४८ थी ५७ पर्यंत दश उदयस्थानक जाणवा.

२६ उदयस्थानकना अधिकारी कहे छे—

१ अयोगी सामान्यकेवली, २ अयोगी तीर्थंकर, ३ समुद्घातिकेवली, ४ समुद्घातकार्मणयोगी तीर्थंकर, ५ मिश्रयोगीकेवली, ६ मिश्रयोगी तीर्थंकर, ७ उच्छ्वास रुंधि केवली, ८ उच्छ्वासरुंधि तीर्थंकर, ९ स्वररुंधि केवली, १० स्वररुंधि तीर्थंकर, ११ सयोगी केवली, १२ सयोगीतीर्थंकर, १३ एकेंद्रिय. १४ विकलेंद्रिय, १५ तिर्यंचपंचेंद्रिय, १६ मनुष्यपंचेंद्रिय, १७ देवता, १८ नारकी, १९ वैक्रियति-

यंच, २० वैक्रियमनुष्य, २१ आहारकवैक्रियसाधु ए एकवीस अधिकारी जाणवा.

अधिकारीआश्रयी चौद गुणठाणें उदयस्थानक कहे छे–

१ मिथ्यात्वगुणठाणें—एकेंद्रिय १, विकलेंद्रिय २, तिर्यंचपंचेंद्रिय ३, मनुष्यपंचेंद्रिय ४, देवता ५, नारकी ६, वैक्रियमनुष्य ७, वैक्रियतिर्यंच ८ ए आठ अधिकारी छे तेमां एकेंद्रियने विषे–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अनंतानुबंधियादि कषाय ४, वेद १, हास्य, रति अथवा शोक, अरति ए बे युगलमांथी एक युगलनी २ मिथ्यात्वमोहनीय १, अंतरायनी ५ ए घातिकर्मनी २२, अने वेदनीयनी १, आयुनी १, गोत्रनी १, गति १, एकेंद्रिय जाति १, तैजस १, कार्मण १, वर्णादि ४, आनुपूर्वी १, अगुरुलघु १, निर्माण १, स्थावर १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, बादर अथवा सूक्ष्म १, पर्याप्ता अथवा अपर्याप्ता १, दौर्भाग्य १, अनादेय १, यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्त्ति १ ए अघातिकर्मनी २४ एवं ४६ नो प्रथम, ए ४६ प्रकृतिमां भय अथवा जुगुप्सामांथी एक मेलतां ४७ नो बीजो, तथा भय अने जुगुप्सा ए बे प्रकृतिनो उदय एक साथे वधारतां ४८ प्रकृतिनो त्रीजो, एवं त्रण उदयस्थानक भवने आंतरे कार्मणयोगे होय.

शरीरस्थने औदारिकमिश्रयोगे—शरीर १, प्रत्येक अथवा साधारण १, उपघात १, हुंडकसंस्थान १ ए चार प्रकृति ऊपरना त्रण स्थानकमां क्षेपतां तथा आनुपूर्वीनो उदय न होवाथी ते घटाडतां ४९ । ५० । ५१ ए त्रण उदयस्थानक शरीरस्थे उपज्याने औदारिकमिश्रकाययोगे ए त्रण उदयस्थानक जाणवा. पराघात वधारतां ५० । ५१ । ५२ ए त्रण उदयस्थानक होय. एमां वली स्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूरी थयां पछी उच्छ्वासनो उदय मेलिये तेवारे ५१ । ५२ । ५३ ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा पूर्णपर्याप्तिने आताप अथवा उद्योत ए बेमांथी १ मेलतां ५२ । ५३ । ५४ । ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा निद्राने गणतां ५५ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. एवी रीते ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ ए दश उदयस्थानक जाणवा. विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रियतिर्यंचने विषे पण भवांतरालनी कार्मणकाययोगे ४६ । ४७ । ४८ ए त्रण उदयस्थानक एकेंद्रियनी परें समजवा परंतु जाति बेइंद्रियादिक लेवी अने सौभाग्यादि बेमांथी एक एक प्रकृति अने स्थावरसूक्ष्मने ठेकाणे त्रस बादर लेवी. तथा औदारिकमिश्रयोगे–औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १,

संस्थान १ ए छे सेपिए अने तिर्यंचानुपूर्वी निकालिये तेवारे ५१ । ५२ । ५१ ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा वली शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने परायात १, खगति १ ए वे वधारतां ५३ । ५४ । ५५ ए त्रण उदयस्थानक होय अने स्वासोच्छ्वासपर्याप्तिने उच्छ्वास मेगो गणतां ५४ । ५५ । ५६ ए त्रण उदयस्थानक होय तेमां वली निद्रानी एक प्रकृतिनो उदय मेलवतां ५५ । ५६ । ५७ ए त्रण उदयस्थानक होय तथा भाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने स्वर समेत ५६ ५७ । ५८ ए त्रण उदयस्थानक होय तथा उद्योतना उदय समेत ५७ । ५८ ५९ ए त्रण उदयस्थानक होय. एवी रीते ४६ । ४७ । ४८ । ५१ । ५२ ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ ए बार उदयस्थानक जाणवा.

मनुष्यने विषे–छेयालीश प्रकृतिना उदयस्थानकथी यावत् अट्ठावन प्रकृतिना उदयस्थानक सुधी विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रियतिर्यंचमां कह्या प्रमाणे ४६ । ४७ । ४८ । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ ए अग्यार उदयस्थानक होय. एटलुं विशेष के तिर्यंचगतिने ठामें मनुष्यगति अने पंचेंद्रियजाति समजवी ए गुणठाणें मनुष्यने उद्योतनो उदय न होवाथी ५९ प्रकृतिनो उदयस्थानक नथी.

देवता अने नारकीने विषे पण भवांतराले कार्मणकाययोगे ४६ प्रकृतिनो, भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी १ गणतां ४७ प्रकृतिनो, अने भय १, जुगुप्सा १ ए बे गणतां ४८ प्रकृतिनो एवं त्रण उदयस्थानक होय. तथा ए त्रणें उदयस्थानकमां आनुपूर्वी विना ४५ प्रकृतिमां वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १ ए पांच प्रकृति मेगी गणतां ५० । ५१ । ५२ ए त्रण उदयस्थानक वैक्रियमिश्रयोगी शरीरस्थने होय. तथा परायात, खगति ए बे प्रकृति वधारतां शरीरपर्याप्तियें पर्याप्तामां ५२ । ५३ । ५४ । ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा उच्छ्वासने मेगो गणतां ५३ । ५४ । ५५ । ए त्रण उदयस्थानक स्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ताने होय. तथा निद्रानो उदय लेवतां ५४ । ५५ । ५६ ए त्रण उदयस्थानक होय. अने स्वरनो उदय गणतां ५५ । ५६ । ५७ ए त्रण उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने होय. एवी रीते ४६ । ४७ । ४८ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ ५७ ए अग्यार उदयस्थानक देवता अने नारकीने जाणवा अने उद्योतना उदय समेत ५८ प्रकृतिनो उदयस्थानक देवगतिमां समजवुं नारकीने उद्योतनो उदय न होवाथी अट्ठावन प्रकृतिनो उदयस्थानक नथी.

वैक्रियतिर्यंच अने वैक्रियमनुष्यने विषे पण देव अने नारकीमां कह्या प्रमाणे ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ ए आठ उदयस्थानक होय. तथा वैक्रियतिर्यंचने उद्योतना उदय समेत ५८ प्रकृतिनो पण उदयस्थानक होय. एटलुं विशेष के देवगति अने नरकगतिने ठेकाणें मनुष्यगति अथवा तिर्यंचगति लेवी. एवं मिथ्यात्वगुणठाणें ४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२ ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ ए चौद उदयस्थानक जाणवा.

२ शास्वादनगुणठाणें—एकेंद्रिय १, विकलेंद्रिय २, तिर्यंचपंचेंद्रिय ३, मनुष्य-पंचेंद्रिय ४, देवता ५, नारकी ६, वैक्रियतिर्यंच ७ अने वैक्रियमनुष्य ८ ए आठ अधिकारी छे. एकेंद्रिय ने मिथ्यात्वगुणठाणें घातिकर्मनी २२ प्रकृति कही तेमांथी मिथ्यात्वमोहनीय विना घातिनी २१ अने अघातिनी २४ एवं ४५ प्रकृतिनो, भय गणतां ४६ नो, भय अने जुगुप्सा ए बे गणतां ४७ नो ए त्रण उदयस्थानक होय. आनुपूर्वी विना ४४ प्रकृतिमां औदारिकमिश्रे भवस्थने औदारिकशरीर १, प्रत्येक १, उपघात १, हुंडकसंस्थान १ ए चार प्रकृति वधारतां ४८ । ४९ । ५० ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा शरीरपर्याप्तिने पराघात मेलतां ४९।५०।५१ ए त्रण उदयस्थानक होय. तथा निद्रानो उदय गणतां ५० । ५१ । ५२ ए त्रण उदयस्थानक होय. एवं ४५।४६।४७।४८ ४९ ।५०। ५१ । ५२ ए आठ उदयस्थानक करणअपर्याप्तपणामां होय. अने एकेंद्रियने पर्याप्तापणें शास्वादन नथी माटे बीजा उदयस्थानक न होय.

विकलेंद्रियने पण शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता लगण मिथ्यात्वगुणठाणें ४६ ४७ । ४८ । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ ए नव उदयस्थानक निद्राना उदय समेत कह्या छे तेमांथी मिथ्यात्वमोहनीयनो उदय न होवाथी मिथ्यात्वमोहनीय विना ४५ । ४६ । ४७ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ ५५ ए नव उदयस्थानक जाणवा. विकलेंद्रियने पण विकलेंद्रियनी परें अपर्याप्तालगें शास्वादनपणुं होय तेथी नव उदयस्थानक समजवा. पक्षांतरे—औदारिकमिश्रयोग लगें शास्वादनपणुं मानवाथी ४५ । ४६ । ४७ । ५० । ५१ ५२ ए छे उदयस्थानक होय.

पंचेंद्रियतिर्यंचने मिथ्यात्व मोहनीय विना प्रवांवरालनी ४५ प्रकृतिनो, भय अथवा जुगुप्सामांना १ प्रकृतिनो उदय मेलवतां ४६ प्रकृतिनो, भय अने जुगुप्सा ए बे समेत ४७ प्रकृतिनो, एवं त्रण उदयस्थानक कार्मणकाययोगे अनाहारीपणामां होय. औदारिक मिश्रयोगे—औदारिकद्विक २, प्रत्येक १,

उपघात १, संघयण १, संस्थान १ ए छे प्रकृति मेळतां अने आनुपूर्वी निका-
ळतां ५० । ५१ । ५२ ए त्रणमां पराघात अने खगति ए बे वधारतां शरीर
पर्याप्तियें पर्याप्ताने ५२ । ५३ । ५४ ए त्रण, तथा निद्रानो उदय मेळतां ५३
५४ । ५५ ए त्रण, तथा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वास समेत
५४ । ५५ । ५६ ए त्रण, भाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने तथा स्वरना उदय समेत
५५ । ५६ । ५७ ए त्रण, अने उद्योतना उदय समेत ५६ । ५७ । ५८ ए
त्रण उदयस्थानक होय. एवी रीते ४५ । ४६ । ४७ । ५० । ५१ । ५२ । ५३
५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ ए बार उदयस्थानक जाणवा.

मनुष्यपंचेंद्रियने—तिर्यंचमां कहेला बार उदयस्थानकमांथी ५८ प्रकृतिना
उदयस्थानक विना ४५।४६।४७।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७ ए अ-
ग्यार उदयस्थानक जाणवा कारण के ए गुणठाणे मनुष्यने उद्योतनो उदय
नथी तेथी ५८ प्रकृतिनो उदयस्थानक पण न होय.

देवताने विषे पण मिथ्यात्वगुणठाणे कहेला बार उदयस्थानकमांथी प्रत्येक
उदयस्थानकें मिथ्यात्वमोहनीय विना ४५ । ४६ । ४७ । ४९ । ५० । ५१
५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ ए बार उदयस्थानक जाणवा.

नारकीने विषे—संपूर्णपर्याप्तियें पर्याप्ताने सास्वादनपणो होय. माटे भवां-
तरालना अथवा अधूरी पर्याप्तापणानां उदयस्थानक न होय. तेथी निद्रास-
मेत घातिनी २४ अने अघातिनी ३२ एवं ५६ प्रकृतिनो एकज उदयस्था०

वैक्रियतिर्यंचने पण मिथ्यात्वगुणठाणे कहेला प्रत्येक उदयस्थानकमांथी
मिथ्यात्वमोहनीयनो उदय घटाडतां तिर्यंचने विषे उद्योतना उदय समेत
४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ ए नव उदयस्थानक अने
मनुष्यने विषे—४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ ए ८ उदयस्था०

३ मिश्रगुणठाणे—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५, अप्रत्याख्या-
नी १, प्रत्याख्यानी १, संज्वलन १, वेद १, मिश्रमोहनीयनी १, हास्य, रति अ-
थवा शोक, अरति ए घातिकर्मनी २१. अने वेदनीयनी १, आयुनी १, गोत्रनी १,
गति १, जाति १, वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १, त्रस-
त्रिक ३, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, स्वर १, आदेय अथवा अनादेय १,
यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति १, पराघात १, खगति १, उच्छ्वास १,
ध्रुवोदयिनी १२ ए अघातिनी ३२ एवं ५३ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक
देवता अने नारकी अथवा वैक्रियतिर्यंच अने मनुष्यने होय, परंतु विशेष के गति

पोत पोतानी कहेवी तथा नारकीने नरकगति अने स्वरादिक अप्रशस्त कहेवा.

भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक क्षेपतां ५४ प्रकृतिनो, तथा भय अने जुगुप्सा ए बे मेळवतां ५५ प्रकृतिनो, तथा ऊपरनी घातिनी २१ प्रकृतिमां भय १, जुगुप्सा १, निद्रा १ ए त्रण मेळवतां २४ प्रकृतिघातिनी अने अघातिनी ३२ एवं ५६ प्रकृतिनो, तथा उद्योतनो उदय वधारतां ५७ प्रकृतिनो, एवीरीते ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ ए पांच उदयस्थानक देवता अने वैक्रिय-तिर्यंचने विषे होय. नारकी अने वैक्रियमनुष्यने उद्योतनो उदय न होवाथी ५७ प्रकृतिनो उदयस्थानक न होय.

सामान्यमनुष्यने पण ऊपर कहेला प्रत्येक उदयस्थानकमां एक संघयणनो उदय वधारे गणतां ५४ । ५५ । ५६ । ५७ ए चार उदयस्थानक होय अने संघयण १, उद्योत १ आ बे प्रकृति समेत ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ ए पांच उदयस्थानक सामान्यतिर्यंचने होय. तथा विकलेंद्रिय अने एकेंद्रियमां मिश्रगुणठाणो न होवाथी उदयस्थानक पण न होय.

४ अविरतिसम्यक्त्वगुणठाणें—देवता, नारकी, वैक्रियतिर्यंच अने मनुष्यने विषे ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५, अप्रत्याख्यानी १, प्रत्याख्यानी १, संज्वलन १, वेद १, हास्य, रति. शोक, अरति ए बे युगलमांथी एकयुगलनी २ ए घातिकर्मनी २०. अने वेदनीय १, आयुनी १, गोत्रनी १ गति १, जाति १, आनुपूर्वी १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य अथवा दौर्भाग्य १, आदेय अथवा अनादेय १, यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति १, ध्रुवोदयिनी १२ ए अघातिनी २४ एवं ४४ नो उदयस्थानक अपांतराले कार्मणकाय योगे वर्ततां चारगतिना क्षायकसम्यक्त्वीने अथवा देवगतिमां उपशमसम्यक्त्वीने होय.

ऊपरना उदयस्थानकमां सम्यक्त्व मोहनीय वधारेगणतां ४५ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशमसम्यक्त्वी चार गतिवाळा जीवोने होय तथा भय मोहनीय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी १ वधारतां ४६ प्रकृतिनो उदयस्थानक पूर्वोक्तने होय. तथा ४४ । ४५ प्रकृतिना उदयस्थानकमां भय अने जुगुप्सा ए बे प्रकृति वधारतां ४६ । ४७ प्रकृतिना बे उदयस्थानक क्षायिक अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी जीवोने होय एवी रीते ४४ । ४५ । ४६ । ४७ ए चार उदयस्था-

देव अने नरकगतिना जीवोने भवने विषे उपजता पछी वैक्रियमिश्रयोगी वैक्रियतिर्यंच अने मनुष्यने आनुपूर्वीना उदयविना वैक्रियद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संस्थान १ ए पांच प्रकृति मेळवतां ४८ । ४९ । ५० । ५१ ए चा-

उदयस्थानक होय तथा एहिज चार उदयस्थानकमां पराघात १, खगति १ ए बे प्रकृति वधारतां ५०।५१।५२। ५३ ए चार उदयस्थानक शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिक अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी जीवोंने होय. अने निद्रा भेगी गणतां ५१।५२।५३।५४ ए चार उदयस्थानक होय. उच्छ्वासनो उदय भेलतां ५२।५३।५४।५५ ए चार उदयस्थानक स्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिक अने क्षयोपशम सम्यक्त्वी–देवता, नारकी, वैक्रियतिर्यंच अने वैक्रियमनुष्यने होय तथा ऊपरना प्रत्येक उदयस्थानकमां स्वरनो उदय भेलतां ५३।५४।५५।५६ ए चार उदयस्थानक पण भाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने होय. तथा ऊपरना प्रत्येक उदयस्थानकमां उद्योतनो उदय गणतां ५४।५५।५६।५७ ए चार उदयस्थानक क्षायिक अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी पर्याप्ता देवता अने वैक्रियतिर्यंचने होय.

सामान्यतिर्यंच अने मनुष्यने पण भवांतरालेना क्षायिक अने क्षयोपशम सम्यक्त्वीने ४४ प्रकृतिनो अने सम्यक्त्वमोहनीय समेत ४५ प्रकृतिनो तथा एहिज बे उदयस्थानकमां भय अथवा जुगुप्सा भेगी गणवाथी ४५। ४६ प्रकृतिना अथवा भयमोहनीय १ अने जुगुप्सामोहनीय १ शामिल करवाथी ४६। ४७ प्रकृतिना बे उदयस्थानक होय अने ४४। ४५। ४६। ४७ आ चार उदयस्थानकें प्रत्येकमां आनुपूर्वीनो उदय निकालतां अने औदारिकद्विक २, प्रत्येक १, उपघात १, संघयण १, संस्थान १ ए छे प्रकृतिनो उदय वधारतां ४९।५०।५१।५२ ए चार उदयस्थानक भवने विषे उपजेला औदारिकमिश्रयोगी क्षायिक अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी–मनुष्य अने तिर्यंचने होय.

ऊपरला चार उदयस्थानकमां पराघात १ अने विहायोगति १ भेगी गणतां ५१। ५२। ५३। ५४ ए चार उदयस्थानक शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिक अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी–मनुष्य अने तिर्यंचने होय तथा ए चार उदयस्थानकमां पण एक निद्रानो उदय गणतां ५२। ५३। ५४। ५५ ए चार उदयस्थानक तिर्यंच अने मनुष्यने होय. तथा उच्छ्वासनो उदय गणतां ५३। ५४। ५५। ५६ ए चार उदयस्थानक स्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिक अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी–तिर्यंच अने मनुष्यने होय. तथा स्वरना उदय समेत ५४। ५५। ५६। ५७ ए चार उदयस्थानक भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता क्षायिक अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी–तिर्यंच अने मनुष्यने होय. तथा उद्योतना उदय समेत ५५। ५६। ५७। ५८ ए चार उदयस्थानक क्षयोपश-

मिश्र-तिर्यंचने होय. एवी रीते आ गुणठाणे ४४।४५।४६।४७।४८।४९। ५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८ ए पंदर उदयस्था०

५ देशविरतिगुणठाणे—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५, प्रत्याख्यानी १, संज्वलन १, वेद १, बेयुगलमांथी एक युगलनी २ ए घातिनी १९. अने वेदनीय १, आयुनी १, गोत्रनी १, गति १, पंचेंद्रियजाति १, वैक्रियद्विक २, संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्ति १, ध्रुवोदयिनी १२ ए अघातिनी २८ एवं ४७ प्रकृतिनो क्षायिकसम्यक्त्वी वैक्रियमनुष्यने, अने सम्यक्त्वमोहनीय सहित ४८ प्रकृतिनो क्षयोपशमिक वैक्रियमनुष्य अने तिर्यंचने होय. आगळ बे बे स्थानक आवशे तेमां प्रथम उदयस्थानक क्षायिकसम्यक्त्वी वैक्रिय मनुष्य अने बीजो क्षयोपशमसम्यक्त्वी—वैक्रियतिर्यंच अने मनुष्यने विषे समजवुं.

आगळना ४७।४८ उदयस्थानकमां भय अथवा जुगुप्सा ए बेमांथी एक एक वधारतां ४८।४९ प्रकृतिना बे उदयस्थानक, तथा भय अने जुगुप्सा ए बे प्रकृतिनो उदय एक साथे गणतां ४९।५० प्रकृतिना बे उदयस्थानक, तथा पराघात १, खगति १ ए बे वधारतां ५१।५२ प्रकृतिना बे उदयस्थानक, तथा एक निद्रा वधारे गणतां ५२।५३ प्रकृतिना ए बे उदयस्थानक शरीरपर्याप्ता—क्षायिक अने क्षयोपशम सम्यक्त्वीने होय.

आगळना उदयस्थानकमां उच्छ्वासनो उदय वधारतां श्वासोच्छ्वासपर्याप्ताने ५३।५४ प्रकृतिना बे उदयस्थानक, तथा भाषापर्याप्ताने स्वरनो उदय गणतां ५४।५५ प्रकृतिना बे उदयस्थानक अने उद्योतनो उदय भेळो गणतां क्षयोपशमसम्यक्त्वी पर्याप्ता वैक्रियतिर्यंचने ५६ नुं उदयस्थानक होय. अर्थात् क्षायिकसम्यक्त्वी—वैक्रियमनुष्यने ४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४ ए आठ उदयस्थानक, तथा क्षयोपशमसम्यक्त्वी—वैक्रिय तिर्यंचने ४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६ ए नव उदयस्थानक, अने क्षयोपशमवैक्रियमनुष्यने ४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५ ए आठ उदयस्थानक जाणवा.

स्वभावस्थ मनुष्य क्षायिकसम्यक्त्वीने ज्ञानावरणीय ५, निद्रा सहित दर्शनावरणीय ५, अंतरायनी ५, प्रत्याख्यानी १, संज्वलन १, वेद १, बेयुगलमांथी एक युगलनी २, भय १, जुगुप्सा १ ए घातिकर्मनी २२, अने वेदनीयनी १,

* [illegible]

आयुनी १, गोत्रनी १, गति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण १, संस्थान १, वर्णादि ४, खगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, (स्वर विना) त्रसदशकनी ९, अस्थिर १, अशुभ १, सुस्वर अथवा दुस्वर १ ए घातिकर्मनी ३१ एवं ५५ प्रकृतिनो एक उदयस्थानक होय. सम्यक्त्वमोहनीय समेत ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशममनुष्यने होय. तथा सामान्यतिर्यंचने पण उद्योत विना ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. एटलुं विशेष के मनुष्यगतिने ठिकाणे तिर्यंचगति लेवी. तथा उद्योतनो उदय भेगो गणवाथी ५७ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. एवी रीते ए गुणठाणें चार अधिकारीनां मली ४७।४८ ४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६। ५७ ए अग्यार उदयस्थानक जाणवा.

६ प्रमत्तगुणठाणें—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, संज्वलन १, वेद १, बे युगलमांथी एक युगलनी २ ए घातिनी १८. अने देशविरतिगुणठाणें क्षायिकसम्यक्त्वी वैक्रियमनुष्यने कहेली अघातिनी २८ एवं ४६ प्रकृतिनो अथवा क्षयोपशमसम्यक्त्वीने सम्यक्त्वमोहनीय समेत घातिकर्मनी १९ अने अघातिनी २८ एवं ४७ प्रकृतिनो ए बे उदयस्थानक वैक्रियसाधु अने आहारकसाधुने प्रथम आरंभ काले होय अथवा भय अने जुगुप्सा ए बेमांथी १ वधारतां ४७।४८ प्रकृतिना ए बे उदयस्थानक, तथा भय अने जुगुप्सानो एक साथे उदय मेलतां ४८।४९ प्रकृतिना ए बे उदयस्थानक, तथा पराघात १, खगति १ ए बे वधारतां ५०।५१ ए बे उदयस्थानक वैक्रिय अने आहारकशरीर पर्याप्ताने होय. तथा निद्रासमेत ५१।५२ ए बे उदयस्थानक होय. तथा उच्छ्वास समेत ५२।५३ ए बे उदय स्थानक श्वासोच्छ्वासपर्याप्ताने होय. तथा स्वर समेत ५३।५४ प्रकृतिना बे उदयस्थानक भाषापर्याप्ताने होय. तथा उद्योतना उदय समेत ५४।५५ प्रकृतिना बे उदयस्थानक होय. एवं ४६।४७ ४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४ ए नव उदयस्थानक क्षायिक सम्यक्त्वी वैक्रिय अने आहारकसाधुने, अने सम्यक्त्वमोहनीय समेत ४७।४८।४९।५०।५१ ५२।५३।५४।५५ ए नव उदयस्थानक क्षयोपशमसम्यक्त्वीने होय.

सामान्य मनुष्यमां देशविरतिगुणठाणें क्षायिकसम्यक्त्वीने ५५ प्रकृतिनो, अने क्षयोपशमने सम्यक्त्वमोहनीय समेत ५६ प्रकृतिनो उदयस्थानक कह्यो. तेमांथी ए गुणठाणें प्रत्याख्यानी कषायनो उदय नथी माटे एक प्रकृति टालतां ५४ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षायिकसम्यक्त्वीने, अने सम्यक्त्वमोहनीय

समेत ५९ प्रकृतिनो उदयस्थानक क्षयोपशम सम्यक्त्वीने होय. एवी रीते ६ गुणठाणें—ते अधिकारीना मली ४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५ ए दश उदयस्थानक जाणवा.

७ अप्रमत्तगुणठाणें—ऊपर छट्ठागुणठाणें कहेली घातिकर्मनी १८ अने वेदनीयनी १, आयुनी १, ऊंचगोत्र १, मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संघयण १, संस्थान १, वर्णचतुष्क ४, खगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, त्रसादि ७, सुस्वर अथवा दुस्वर १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १, अस्थिर १, अशुभ १ ए घातिनी ३३ एवं ५१ प्रकृतिनो उदयस्थानक सामान्यमनुष्य क्षायिकसम्यक्त्वीने होय. अथवा एक संघयण विना ५० प्रकृतिनो उदयस्थानक छट्ठे गुणठाणें आरंभी अंतमां सातमे गुणठाणें आवे एवा आहारकलब्धिना उदयवालाने होय. तथा क्षयोपशमने सम्यक्त्वमोहनीय समेत ५२।५२ प्रकृतिना बे उदयस्थानक होय.

पूर्वोक्त घातिनी १८ प्रकृतिमां भयमोहनीय समेत १९, संघयण अने उद्योत विना अघातिनी ३२, तथा उद्योत समेत ३३, अथवा संघयण समेत अने उद्योत विना पण ३३ प्रकृति एवं ५१।५२ प्रकृतिना बे उदयस्थानक क्षायक सम्यक्त्वी—आहारक मनुष्य अने सामान्यमनुष्यने होय. तथा क्षयोपशम आहारक मनुष्य अने सामान्य मनुष्यने ५२।५३, तथा भय अने जुगुप्सा ए बे वधारतां प्रथमना ५२।५३ अने पछीना ५३।५४, तथा निद्रा समेत बे अधिकारीना क्षायिके ५३।५४, अने क्षयोपशमसम्यक्त्वीने ५४।५५, तथा एकज आहारकमानु क्षायिक सम्यक्त्वीने उद्योत समेत ५४, अने क्षयोपशमसम्यक्त्वी आहारकमानुने उद्योत समेत ५५ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. एवी रीते ५०।५१।५२।५३।५४।५५ ए छ उदयस्थानक जाणवा.

८ अपूर्वकरणगुणठाणें—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५, मोहनीय संज्वलनकषाय १, वेद १, हास्यादियुगलनी २ ए घातिनी १८. वेदनीय १, आयुनी १, ऊंचगोत्र १, मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, संघयण १, संस्थान १, खगति १, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरु १, त्रसादि ४, सौभाग्य १, सुस्वर अथवा दुस्वर १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १, अने ध्रुवोदयिनी १२ ए घातिनी ३३. एवं ५१ प्रकृतिनो, भय अथवा

दुर्गंछा सहित ५२ प्रकृतिनो, भय अने जुगुप्सा ए बे वधारतां ५१ प्रकृतिनो, निद्रा सहित ५४ नो, ए चार उदयस्थानक सामान्यमनुष्य क्षायिक अने उपशमसम्यक्त्वीने होय एवी रीते ५१। ५२। ५३। ५४ ए चार उदयस्था०

९ अनिवृत्तिबादर गुणठाणे–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५, संज्वलनलोभनी १ ए घातिकर्मनी १५, तथा आठमा गुणठाणे कहेली अघातिकर्मनी ३३ एवं ४८ प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक होय. तथा ए अ-वेदोदयमां एक वेद भेळवतां ४९ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक होय. तथा आमां एक निद्रा भेगी गणतां त्रीजुं ५० प्रकृतिनुं उदयस्थानक सामान्य मनु-ष्यने होय एवी रीते ४८। ४९। ५० ए त्रण उदयस्थानक जाणवा.

१० सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे–उपर प्रमाणे घातिनी १५ अने अघातिनी ३३ एवं ४८ प्रकृतिनो प्रथम. अने निद्रा सहित ४९ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक सामान्यमनुष्यने होय.

११ उपशांतमोह अने १२ क्षीणमोहगुणठाणे–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५ ए घातिनी १४. अघातिनी ३३ एवं ४७ प्रकृतिनो प्रथम अने निद्रा सहित ४८ प्रकृतिनो बीजो उदयस्थानक सामान्यमनुष्यने होय.

१३ सयोगी अने १४ अयोगी गुणठाणे–अयोगीकेवली १, तीर्थंकर २, समुद्-घातिकार्मण काययोगीकेवली ३, तीर्थंकर ४, औदारिकमिश्रयोगी समुद्-घातिकेवली ५, तीर्थंकर ६, काययोगीकेवली ७, तीर्थंकर ८, स्वररोधि केवली ९, तीर्थंकर १०, उच्छ्वासरोधि केवली ११ अने तीर्थंकर १२ ए बार अधिकारीवाळाने उदयस्थानकाधिकारीमां कह्या प्रमाणे ११। १२। २३ २४। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४ ए दश उदयस्थानक जाणवा.



गुणठाणा आश्रयी आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना उदयस्थानकनो यंत्र–

गुणस्थानक क्रमांक	गुणठाणानां नाम	घातिना उदयस्थानक		अघातिना उदयस्थानक		आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिना उदयस्थानकना आंक	
		उदयस्थानक	संख्या	उदयस्थानक	संख्या	उदयस्थानक	संख्या
१	मिथ्यात्व	२२।२३।२४।२५	४	२४।२७।२८।२९।३०।३१।३२।३३।३४	९	४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९	१४
२	सास्वादन	२१।२२।२३।२४	४	२४।२७।२८।२९।३२।३३।३४	७	४५।४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८	१४
३	मिश्र	२१।२२।२३।२४	४	३२।३३।३४	३	५३।५४।५५।५६।५७।५८	६
४	अविरति	२०।२१।२२।२३।२४	५	२४।२८।२९।३०।३१।३२।३३।३४	८	४४।४५।४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८	१५
५	देशविरति	१९।२०।२१।२२।२३	५	२८।३०।३१।३२।३३।३४	६	४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७	११
६	प्रमत्त	१८।१९।२०।२१।२२	५	२८।३०।३१।३२।३३	५	४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५	१०
७	अप्रमत्त	१८।१९।२०।२१।२२	५	३२।३३	२	५०।५१।५२।५३।५४।५५	६
८	अपूर्वकरण	१८।१९।२०।२१	४	३३	१	५१।५२।५३।५४	४
९	अनिवृत्तिबादर	१५।१६।१७	३	३३	१	४८।४९।५०	३
१०	सूक्ष्मसंपराय	१५।१६	२	३३	१	४८।४९	२
११	उपशांत मोह	१४।१५	२	३३	१	४७।४८	२
१२	क्षीणमोह	१४।१५	२	३३	१	४७।४८	२
१३	सयोगीकेवली	०	०	२३।२४।२९।३०।३१।३२।३३।३४	८	२३।२४।२९।३०।३१।३२।३३।३४	८
१४	अयोगीकेवली	०	०	११।१२	२	११।१२	२

१ नरकगति मार्गणाएं-प्रथमना चार गुणठाणें कह्या ४४। ४५। ४६। ४७ ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७ ए १४ उदयस्थानक होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं-प्रथमना पांच गुणठाणें कह्या ४४। ४५। ४६। ४७ ४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९ ए १६ उदयस्थानक होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं-तेरमा अने चौदमां गुणठाणें कह्या ११। १२। २३ २४।२९।३०।३१।३२।३३। ३४ अने छद्मस्थपणामां प्रथमना चार गुणठाणें कह्या ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६ ५७। ५८ एवं २५ उदयस्थानक होय.

१ देवगति मार्गणाएं-प्रथमना चार गुणठाणें कह्या ४४। ४५। ४६। ४७। ४८ ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८ ए १५ उदयस्थानक होय.

४ एकेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय एवं ४ मार्गणाएं-प्रथमना बे गुणठाणें कह्या ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५ ए अग्यार उदयस्थानक होय.

३ विकलेंद्रिय मार्गणाएं-प्रथमना बे गुणठाणें कह्या ४५। ४६। ४७। ४८। ५० ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९ ए १४ उदयस्थानक होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं-४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१ ५२। ५३। ५४ ए नव उदयस्थानक होय.

४ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, भव्य, संज्ञी ए ४ मार्गणाएं-उदयस्थानकाधिकारें कह्या प्रमाणे सर्वे उदयस्थानक होय.

२ मनोयोग अने वचनयोग ए बे मार्गणाएं-सयोगी गुणठाणें कह्या ३३। ३४ ए बे अने ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७ ए बार उदयस्थानक वैक्रियमनुष्यने होय. ए बार मध्ये ४६ प्रकृतिना उदयस्थानक विना अने ५८ प्रकृतिना उदयस्थानक सहित बार उदयस्थानक वैक्रियतिर्यंचने होय तथा ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७ ए दश उदयस्थानक नारकीमां होय. तथा सामान्यतिर्यंचमां ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९ ए आठ अने सामान्यमनुष्यमां ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८ ए आठ उदयस्थानक होय एवं सर्वे मळी ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४ ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ३३। ३४ ए सोळ उदयस्थानक जाणवा.

२ काययोग अने शुक्लेश्या मार्गणाएं-प्रथमना तेर गुणठाणें कह्या २३। २४ २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२

५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९ ए २४ उदयस्थानक होय.

१४ त्रणवेद, चारकषाय, अविरति, अचक्षुदर्शन, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या एवं १४ मार्गणाएं-प्रथमना बार गुणठाणें कहेला ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७ ५८। ५९ ए सोल उदयस्थानक होय.

४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं—अविरति सम्यक्दृष्टि गुणठाणाथी लई क्षीणमोह गुणठाणा पर्यंत कहेला ४४। ४५। ४६। ४७ ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८ ए पंदर उदयस्थानक होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं-चे चारित्रमां छठ्ठागुणठाणाथी नवमांगुणठाणा पर्यंत कहेला अने मनःपर्यवज्ञानमां छठ्ठाथी बारमां गुणठाणा पर्यंत कहेला ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५ ए दश उदयस्थानक होय,

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं-सयोगी अने अयोगी गुणठाणें कहेला ११। १२। २३। २४। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४ ए दश उदयस्थानक होय.

३ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान ए त्रण मार्गणाएं-प्रथमना त्रण गुणठाणें कहेला ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६ ५७। ५८। ५९ ए पंदर उदयस्थानक होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं-छठ्ठे अने सातमें गुणठाणें वैक्रिय तथा आहारकशरीर विना कहेला ५१। ५२। ५३। ५४। ५५ ए पांच उदयस्थानक होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं-दशमां गुणठाणें कहेला ४८। ४९ ए बे उदयस्थानक होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं-तेरमां अने चौदमां गुणठाणें कहेला ११। १२। २३ २४। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४ ए दश उदयस्थानक तथा अग्यारमां अने बारमां गुणठाणें कहेला ४७। ४८ एवं सर्वे बार उदयस्थानक होय.

१ देशविरति मार्गणाएं-पांचमां गुणठाणें कहेला ४७। ४८। ४९। ५०। ५१ ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७ ए अग्यार उदयस्थानक होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं-प्रथमना बार गुणठाणें कहेला ४६। ४७। ४८। ४९ ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९ ए चौद पक्षांतरे-मतांतराछनी ४४ अने ४५ प्रकृतिना बे उदयस्थानक भेगा गणतां सोल उदयस्थानक जाणवा.

२ अभव्य अने मिथ्यात्व मार्गणाएं—प्रथम गुणठाणें कहेला ४६। ४७। ४८ ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९ ए १४ उदयस्थानक होय.

१ उपशम मार्गणाएं—चोथाथी अग्यारमां गुणठाणां कहेला ४४ । ४५ ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ ए तेर उदयस्थानक होय.*

१ क्षायकमार्गणाएं—चोथाथी चौदमां सुधी ११ गुणठाणे कहेला ११ । १२ । २३ २४ । २९ । ३० । ३१ । ३२ । ३३ । ३४ । ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ ए २४ उदयस्थानक होय.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—चोथाथी सातमां गुणठाणासुधी कहेला ४५ । ४६ । ४७ । ४८ ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ ए चौद उदयस्थानक.

१ मिश्र मार्गणाएं—मिश्रगुणठाणे कहेला ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ ए छे उदयस्थानक होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—सास्वादनगुणठाणे कहेला ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ ए १४ उदयस्थानक होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—प्रथमना बे गुणठाणे कहेला ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ ए पंदर उदयस्थानक होय.

१ आहारी मार्गणाएं—तेरमां गुणठाणे कहेला २९ । ३० । ३१ । ३२ । ३३ । ३४ अने बार गुणठाणे कहेला ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ एवं सर्व वीश उदयस्थानक होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—चौदमां गुणठाणे कहेला ११ । १२, तेरमां गुणठाणे कहेला २३ । २४, परभवे गमन करतां चार गतिना जीवोने कार्मण काययोगे वर्त्ततां अनाहारीपणामां पहेला, बीजा अने चोथा गुणठाणे कहेला ४४ । ४५ । ४६ । ४७ ४८, एवं ११।१२।२३।२४।४४।४५।४६।४७।४८ ए नव उदयस्थानक होय.



६२ बासठमार्गणाने विषे मूल आठकर्मनी उदीरणास्थानकनुं द्वार—

२७ नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, वि-

* आ मार्गणामां उद्योत १, संघयण १ ए बे समेत मघातिकर्मनी ३४ तथा अनंतानुबंधि १ अने दर्शन मोहनीयमांथी १ ए बे उदय उपशम मार्गणाएं-सर्वथा न होवाथी ए विना अघातिकर्मनी २३ एवं ५७ प्रकृतिनो पण उदयस्थानक होवुं जोइये. पछी बहुश्रुत कहे ते खरं.

भंगज्ञान, देशविरति, अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या,[1] पद्मलेश्या[2], अभव्य, मिश्र, शास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए २७ मार्गणाएं–मूल आठकर्मनी उदीरणा होय. अने आयु पूर्णकरीने मरण करे ते वखते मरणआवलीनी वच्चमां आयुकर्म विना ७ कर्मनी उदीरणा होय. आयुकर्म तो अंत्यावलिकायें उदयावलीपणे भोगवीने क्षय करे अने उदीरणा आयु रहुं होय त्यारे थाय अहीं आयुनी अंत्यावलीमां आयु रहुं नथी तेथी आयुकर्म विना ७ कर्मनी उदीरणा थाय छे.

१८ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, शुक्लेश्या, भव्य, क्षायक, संज्ञी, आहारी ए १८ मार्गणाएं–मूल आठकर्मनी उदीरणानो प्रथम, अने आयुकर्मने सत्ताव्युं होय पण चरिमावलिकायें तेने उदयपणें भोगवती वखते आयुकर्मनी उदीरणा न होय माटे आयु विना ७ कर्मनी उदीरणानो बीजो, ए बे स्थानक प्रथमना छ गुणठाणा पर्यंत होय. अने सातमांथी दशमां गुणठाणानी अंतिमावलिकानी प्रथम आवलिका सुधी वेदनीयकर्मनी अने आयुकर्मनी उदीरणा नथी करी तेथी ए बे विना छ कर्मनी उदीरणानो त्रीजो, दशमांगुणठाणानी अंतिमनी दो आवलिकाएं मोहनीयकर्मनी उदीरणानो पण अंत थाय. दशमां गुणठाणानी चरिमआवलिकाथी बारमा गुणठाणानी अंतिमावलिका बाकी रहे त्यां सुधी वेदनीय १, आयु १, अने मोहनीय १ ए त्रण कर्मनी उदीरणा विना ५ कर्मनी उदीरणानो चोथो, बारमां गुणठाणानी चरिमावलिकाथी तेरमां गुणठाणानी अंतिमावलिका सुधी नामकर्मनी अने गोत्रकर्मनी उदीरणानो पांचमो स्थानक होय.

कारण बारमां गुणठाणाने अंते ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय १, अने अंतराय १ ए त्रण कर्मनो क्षय होवाथी तेनी उदीरणा न होय अने चौदमां गुणठाणें सर्वथायोग रहित होवाथी अनुदीरकपणो होय. उदीरणा करण विशेष तेथी करणवीर्यना अभावें न होय, यद्यपि अयोगी भगवंत अनंतबली छे तो पण कोई कर्म उदीरी शके नहीं, तेमज बंधन १, संक्रमण २, उद्वर्तना ३, अपवर्तना ४, उपशमना ५, निधत्त ६, निकाचनादिकरण ७ पण अयोगी गुणठाणे नथी. उदयवति चार प्रकृतिमां अनुदयवति शिशेष प्रकृतिस्थिबुकसंक्रमे संक्रमावति करेली छे पण संक्रमण करण न होय एवं ८ । ७ । ६ । ५ । २ ए पांच उदीरणाना स्थानक जाणवा.

२० पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, क्रोध, मान, माया, सामायिक, छेदोपस्था-

---

१ तेजोलेश्याने सातमांगुणठाणे वेदनीय१, आयु १ ए बे विना ६ नी पण होय.
२ पद्मलेश्याने पण वेदनीय विना ६ नी उदीरणा सातमे गुणठाणे होय.

नीय, परिहारविशुद्धि, क्षयोपशम एवं १० मार्गणाएं-प्रथमना छट्ठा गुणठाण
आयुकर्मनो अंत आवेल न होय. त्यां सुधी मूल आठकर्मनी उदीरणा अने आयु
अंतिमावलिकानी वरते आयुकर्म विना सात कर्मनी उदीरणा अने छट्ठागुणठाण
रांत सातमां आठमां नवमां अने दशमां गुणठाणाना अंतिमनी बे आवलिका पर्यंत वे
य अने आयुविना छ कर्मनी उदीरणा जाणवी एवं ८।७।६ एत्रण उदीरणा स्थानक

२ लोभ अने उपशम मार्गणाएं-प्रथमना छ गुणठाणा पर्यंत आठ कर्मनी उदी
आयुकर्म विना सात कर्मनी उदीरणा, छट्ठा गुणठाणा उपरांत सातमांथी दशमां
ठाणानी अंतिमावलीथी प्रथमनी आवलिका पर्यंत वेदनीय अने आयु विना छ
उदीरणा, अने दशमां गुणठाणानी अंतिमावलिकाएं मोहनीय कर्मनो विच्छेद
.ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय १, नाम १, गोत्र १ अने अंतराय १ ए पांच
उदीरणा होय. एवं लोभ मार्गणाएं प्रथमना दश तथा उपशम मार्गणाएं प्रथमन
ग्यार गुणठाणा होवाथी ८।७।६।५ ए चार उदीरणा स्थानक जाणवा.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं-दशमां गुणठाणानी प्रथम आवलिकाथी छेल्ली आ
कानी प्रथम आवलिका पर्यंत वेदनीय अने आयु विना छ कर्मनी उदीरणा अने दश
अंतिमावलिकाएं मोहनीय कर्म विना ५ कर्मनी उदीरणा होय एवं ६।५ ए बे
रणा स्थानक जाणवा.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—नामकर्म अने गोत्रकर्म
कर्मनी उदीरणानो एक एक उदयस्थानक होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—अग्यारमां गुणठाणाथी बारमां गुणठाणानी अं
एक आवलिका शेष रहे त्यां सुधी ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय १, ना
गोत्र १ अने अंतराय १ ए पांच कर्मनी उदीरणानो प्रथम, अने बारमां गुण
नी अंतिमावलिकाथी तेरमां गुणठाणासुधी नामकर्म अने गोत्रकर्मनी उदीर
बीजो एवं ५।२ ए बे स्थानक जाणवा.

१ अनाहारी मार्गणाएं-मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरतिसम्यग्दृष्टि ए
दरम्यानें परभवगमनें वर्त्ततां अनाहारीपणें चार गतिना जीवोने आठ कर्मनी उ
णानो प्रथम, अने तेरमां गुणठाणें केवल समुद्घात करतां वखते त्रण समय
नामकर्म अने गोत्रकर्मनी उदीरणानो बीजो एवं ८।२ ए बे स्थानक जाणवा पं
योगादिकना अभावे उदीरणा स्थानक नथी॰

॰ पंचसंग्रहादिकविवरणग्रंथमां आ मार्गणाएं आठकर्मनी उदीरणानो प्रश्न
कर अपेक्ष छे परन्तु ते ठीक जणातुं नथी पछी बहुश्रुत कहे ते खरुं.

६२ बासठमार्गणाने विषे आठकर्मनी उत्तरप्रकृतिनी उदीरणा- अने उदीरणाविच्छेदनुं द्वार-

उदीरणानी प्रकृतिना नाम-

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीय २८, आयुकर्मनी ४, नामकर्मनी ६७, गोत्रकर्मनी २ अने अंतरायकर्मनी ५ एवं १२२ प्रकृति उदीरणावनी जाणवुं.

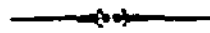
२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम संघयण १, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगतिद्विक २, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अस्थिर १, अशुभ १, दुस्वर १ अने ऊंचगोत्र १ एवं ३९ प्रकृतिनी उदीरणा होय. केवलयुगलमां उदयवति ४२ प्रकृति कही छे अने उदीरणा ३९ प्रकृतिनी थाय छे तेनो कारण ए छे के छट्ठा गुणठाणें वेदनीयकर्मनी २ अने मनुष्यायु १ एवं त्रण प्रकृतिनी उदीरणा टले तेथी सातमांथी सयोगीकेवली पर्यंतना गुणठाणाओमां उदयवति प्रकृतिमांथी वेदनीय २ अने मनुष्यायु १ ए त्रण प्रकृति कमी करवी.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, संज्वलन लोभ १, मनुष्यगति १, तैजस १, कार्मण १, औदारिकद्विक २, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, निर्माण १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, पंचेंद्रियजाति १, प्रथमना संघयण ३, संस्थान ६, खगतिद्विक २, पराघात १, उच्छ्वास १, उपघात १, त्रसचतुष्क ४, सौभाग्य १, सुस्वर १, आदेय १, यशःकीर्ति १, दुस्वर १, ऊंचगोत्र १, अंतरायनी ५ एवं ५७ प्रकृतिनी उदीरणा अंतनी एक आवलिका शेष रहे त्यां सुधी, अंत्यावलिकाएं संज्वलन लोभनो उदय तो होय पण उदीरणा टले त्यारे ५६ प्रकृतिनी उदीरणा होय. अने शेष प्रकृतिनी उदीरणानो विच्छेद जाणवुं.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीय ६, ऊंचगोत्र १, अने अंतरायनी ५, मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथमना संघयण ३, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, खगतिद्विक २, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रस १, बादर १, पर्याप्ता १, प्रत्येक १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सौभाग्य १, सुस्वर १, दुस्वर १, आदेय १, यशःकीर्ति १ एवं ५७ प्रकृतिनी उदीरणा होय, अने शेष ६५ प्रकृतिनी उदीरणानो विच्छेद होय. आ मार्गणाएं पण उदयवति ६०

प्रकृतिमांथी वेदनीय २ अने मनुष्यायु १ ए त्रणनी उदीरणा प्रथमथी टलेली छे तेथी ५७ प्रकृतिनी उदीरणा समजवी.

५८ गतिचार, इंद्रियपांच, कायछे, योगत्रण, वेदत्रण, कषायचार, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अज्ञानत्रण, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, लेश्याछे, भव्य, अभव्य, सम्यक्त्वछे, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी ए ५८ मार्गणाएं-बावनमां द्वारमां जेटली उदयवति प्रकृतियों कहेली छे तेटली प्रकृतियोंनी उदीरणा पण छट्ठा गुणठाणा सुधी जाणवी. अने सातमांथी उपरांतना गुणठाणाओंमां वेदनीयनी २, तथा मनुष्यायु १ ए त्रण विना शेष रहेली उदयवति प्रकृतियोंनी उदीरणा जाणवी.



६५ बासठमार्गणाने विषे मूल आठकर्मनी सत्तानुं द्वार-

२ केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं-वेदनीयकर्म १, आयुकर्म १, नामकर्म १, गोत्रकर्म १ एवं ४ कर्मनी सत्ता होय. अने शेष ६० मार्गणाएं-८ कर्मनी सत्ता होय.



६६ बासटमार्गणाने विषे १४८ प्रकृतिनी सत्ता अने सत्ताना अभावनुं द्वार-

सत्तागत १४८ प्रकृतिना नाम-

ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी २८, आयुकर्म ४, गोत्रकर्मनी २, अंतरायकर्मनी ५, अने 'गति ४, जाति ५, शरीर ५, उपांग ३, औदारिकादिबंधन ५, औदारिकादिसंघातन ५, संघयण ६, संस्थान ६, वर्ण ५, रस ५, गंध २, स्पर्श ८, खगतिद्विक २, आनुपूर्वी ४, प्रत्येकाष्टक ८, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०' ए नामकर्मनी ९३ एवं १४८ प्रकृति सत्तागत जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाएं-देवायु विना १४७ प्रकृतिनी सत्ता होय, शेष १ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव जाणवुं.

४ तिर्यंचगति, मिश्र, सास्वादन, असंज्ञी ए ४ मार्गणाएं-जिननाम विना १४७ प्रकृतिनी सत्ता होय, शेष १ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव होय.

१ देवगति मार्गणाएं-नरकायु विना १४७ प्रकृतिनी सत्ता होय, शेष १ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव जाणवुं.

७ एकेंद्रियादि जातिचार, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय ए ७ मार्गणाएं-देवायु १, नरकायु १, जिननाम १ ए तीन प्रकृति विना १४५ प्रकृतिनी सत्ता होय, शेष ३ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव जाणवुं.

४३ मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, चारकषाय, पुरुषवेद, (केवलज्ञान विना) ज्ञान चार, त्रण अज्ञान, संयमसात, (केवलदर्शन विना) दर्शन त्रण, लेश्याछ, भव्य, उपशम, क्षयोपशम, मिथ्यात्व, संज्ञी, आहारी अने अनाहारी ए ४३ मार्गणाएं-१४८ प्रकृतिनी सत्ता होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं-देवायु १, मनुष्यायु १, नरकायु १, जिननाम १ ए चार प्रकृति विना १४४ प्रकृतिनी सत्ता होय, शेष ४ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव जाणवुं.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं-वेदनीयकर्मनी २, मनुष्यायु १, देवद्विक २, मनुष्यद्विक २, पंचेंद्रियजाति १, शरीर ५, उपांग ३, बंधण ५, संघातन ५, संघयण ६, संस्थान ६, वर्ण ५, रस ५, गंध २, स्पर्श ८, खगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, त्रसदशक १०, अपर्याप्त १, अस्थिर १, अशुभ १, दौर्भाग्य १, दुस्वर १, अनादेय १, अयशःकीर्ति १, गोत्रकर्मनी २ एवं ८५ प्रकृतिनी सत्ता होय शेष ६३ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव जाणवुं.

१ अभव्य मार्गणाएं-ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, (समकितमोहनीय अने मिश्रमोहनीय ए बे विना) मोहनीयनी २६, आयुनी ४, (आहारकचतुष्क ४, अने जिननाम १ विना) नामकर्मनी ८८, गोत्रनी २, अंतरायनी ५ एवं १४१ प्रकृतिनी सत्ता होय शेष ७ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव जाणवुं.

१ क्षायिक मार्गणाएं-ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'अप्रत्याख्यानी चतुष्क ४, प्रत्याख्यानी चतुष्क ४, संज्वलनचतुष्क ४, नव नोकषाय' ए मोहनीयनी २१, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, आयुनी ४, नामकर्मनी ९३ ए १४१ प्रकृतिनी सत्ता होय, शेष ७ प्रकृतिनी सत्तानो अभाव जाणवुं.

---

६७ बासठमार्गणाने विषे मूल आठकर्मनी सत्ताना स्थानकनुं द्वार-

४० नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेंद्रियादिजातिचार, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, स्त्रीवेद, चारकषाय, अज्ञान त्रण, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, देशविरति, अविरति, कृष्णलेश्या, नील-

लेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, अभव्य, उपशम, क्षयोपशम, मिश्र, सा-स्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए ४० मार्गणाएं–८ कर्मनो एकज सत्तास्थानक होय.

१२ मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, यथाख्यात, शुक्लेश्या, भव्य, क्षायिक, संज्ञी, आहारी ए १२ मार्गणाएं–आठकर्मनी सत्तानो प्रथम, मोहनीय विना ७ कर्मनी सत्तानो बीजो, वेदनीय १, आयु १, गोत्र १, नाम १ ए ४ कर्मनी सत्तानो त्रीजो एवं ८।७।४ ए त्रण सत्तास्थानक जाणवा.

७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन ए ७ मार्गणाएं–आठ कर्मनी सत्तानो प्रथम, अने मोहनीय विना ७ कर्मनी सत्तानो बीजो एवं ८।७ ए बे सत्तास्थानक होय.

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–वेदनीय १, आयु १, नाम१ , गोत्र १ ए ४ कर्मनी सत्तानो एकज सत्तास्थानक होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं–चारगतिना जीवोंने परभवे जातां आठकर्मनी सत्तानो प्रथम, अने केवलीने केवलसमुद्घात करतां कार्मणकाययोगे अनाहारीपणे वेदनीय १, आयु १, नाम १, गोत्र १ ए चार कर्मनो सत्तानो बीजो एवं ८।४ ए बे सत्तास्थानक होय.

६८बासठमार्गणानेविषे ज्ञानावरणीयनी ५ प्रकृतिनी सत्तास्थानकनुं द्वार-

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–ज्ञानावरणीयकर्मना अभावे सत्तास्थानक नथी. शेष साठ मार्गणाएं–ज्ञानावरणीयनी ५ प्रकृतिनो एकज सत्तास्थानक होय.

६९बासठमार्गणाने विषे दर्शनावरणीयनी ९प्रकृतिनी सत्तास्थानकनुंद्वार-

३४ नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, वेद त्रण, त्रण अज्ञान, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अविरति, (शुक्लेश्या विना) लेश्यापांच, अभव्य, उपशम, क्षयोपशम, मिश्र, सास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी, अनाहारी ए ३४ मार्गणाएं–नव प्रकृतिनो एक एक सत्तास्थानक होय.

१९ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, (केवल विना) ज्ञान चार, यथाख्यात, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, शुक्लेश्या, भव्य, क्षायक, संज्ञी, आहारी ए १९ मार्गणाएं–९ प्रकृतिनो प्रथम, दर्शन ४, निद्रा १, प्रचला १ ए ६ प्रकृ-

विनो बीजो. तथा चार गुणठाणानी छेल्ली वेमयय थाकते निद्रानी २ प्रकृतिनी सत्ता टले तेथी दर्शनावरणीयनी ४ नो त्रीजो. एवं ९।६।४ ए त्रण सत्तास्थानक जाणवा.

७ क्रोध, मान, माया, लोभ, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, सूक्ष्मसंपराय ए सात मार्गणाएं–९।६ प्रकृतिना बे अने सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–एकज ६ नी सत्तास्थानके होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–दर्शनावरणीयनो सर्वथा क्षय होवाथी सत्तास्थानक न होय.

---

७० बासठमार्गणाने विषे वेदनीयनी २ प्रकृतिनी सत्तास्थानकनुं द्वार–

११ मनुष्यगति, देवगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यात, शुक्लेश्या, भव्य, संज्ञी, क्षायक ए ११ मार्गणाएं–शाता अने अशाता ए बे प्रकृतिनो प्रथम, अने शाता प्रकृतिनो बीजो सत्तास्थानक पण कोईक जीवाश्रित होय.

५१ नरकगति, तिर्यंचगति, एकेंद्रियादिजातिचार, पृथ्वीयादिकाय पांच, योग त्रण, वेद त्रण, कषाय चार, मत्यादिज्ञान चार, अज्ञान त्रण, सामायिकादिसंयमछे, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, (शुक्ल विना) लेश्यापांच, अभव्य, (क्षायिक विना) सम्यक्त्वपांच, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी एवं ५१ मार्गणाएं—शाता अने अशाता ए बे प्रकृतिनो एक एक सत्तास्थानक होय.

---

७१ बासठमार्गणाने विषे मोहनीयनी २८ प्रकृतिनी— सत्तास्थानकनुं द्वार–

मोहनीयना पंदर सत्तास्थानक कहे छे—

१–सर्वमोहनीय प्रकृतिनी सत्ताएं अट्ठावीसनुं सत्तास्थानक, ते सम्यक्त्वपामीने पड्या होय तेने होय.

२–तेमांथी सम्यक्त्वमोहनीय उवेल्यां पछी सत्तावीशनुं सत्तास्थानक होय.

३–तेमांथी मिश्रमोहनीय उवेले छव्वीशनुं सत्तास्थानक होय, तथा अनादिमिथ्यात्वी अने अभव्यने पण एज सत्तास्थानक होय.

४–पूर्वोक्त २८ नी सत्तावाळो ज्यारे ४ अनंतानुबंधि खपावे त्यारे तेने २४ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय.

५–तेमांथी मिथ्यात्व खपावे त्यारे त्रेवीशनुं सत्तास्थानक होय.

६–ऊपरोना २३ मांथी मिश्रमोहनीय खपे २२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

७–ते बावीसमांथी सम्यक्त्वमोहनीय खपावे त्यारे २१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक क्षायिकसम्यग्दृष्टिने होय.

८–ते २१ मांथी अनन्त्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४ एवं ८ कषायनो क्षय अनिवृत्तिकरण गुणठाणाने बीजे भागे १३ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय.

९–ते १३ मांथी नपुंसकवेद खपे त्रीजे भागे १२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

१०–ते १२ मांथी स्त्रीवेदने खपे पांचमे भागे ११ नो सत्तास्थानक होय.

११–ते ११ मांथी हास्यादिक ६ प्रकृतिने खपे छट्ठे भागे ५ नो सत्तास्थानक होय.

१२–ते ५ मांथी पुरुषवेदने खपे सातमे भागे ४ नो सत्तास्थानक होय.

१३–ते ४ मांथी संज्वलन क्रोधने खपे आठमे भागे ३ नो सत्तास्थानक होय.

१४–ते ३ मांथी संज्वलनना मानने खपे नवमे भागे २ नो सत्तास्थानक.

१५–ते २ मांथी संज्वलनमायाने खपे सूक्ष्मसंपराये एक संज्वलनलोभनो सत्तास्थानक जाणवुं.

चौदगुणठाणे मोहनीयकर्मना सत्तास्थानक कहे छे–

१ मिथ्यात्वगुणठाणे—त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां जे त्रणपुंज करी मिथ्यात्वे जाय तेने २८ नी सत्ता, तेमांथी सम्यक्त्वपुंज उवेल्या पछी २७ नी सत्ता, मिश्रपुंज उवेल्या पछी अथवा अनादिमिथ्यात्वीने २६ नी सत्ता जाणवी. एनी भावना सर्व पूर्वे मोहनीयनां सत्तास्थानक सामान्ये विचारवाना अवसरे विस्तारे भावी छे ते माटे अहियां नथी भावना.

२ सास्वादनगुणठाणे—एकज २८ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय जे भणी ए गुणठाणुं त्रण पुंज छतां सम्यक्त्व वमतांज होय.

३ मिश्रगुणठाणे—त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां त्रिपुंजीने अट्ठावीसनुं, सम्यक्त्व उवेले सत्तावीसनुं, तथा अनंतानुबंधि विसंयोज्या पछी जे पडतो मिश्रे आवे तेने २४ नुं सत्तास्थानक जाणवुं.

४ अविरति सम्यक्दृष्टि, ५ देशविरति, ६ प्रमत्त अने ७ अप्रमत्त ए चार गुणठाणे—प्रत्येके पांच पांच सत्तास्थानक होय. तिहां त्रणपुंज छतां २८ नुं, अनंतानुबंधि विसंयोज्ये २४ नुं, तेमांथी मिथ्यात्व खपे २३ नुं, तेमांथी मिश्र खपे २२ नुं, तेमांथी सम्यक्त्व खपे २१ नुं ए सत्तास्थानक क्षायिकसम्यग्दृष्टिने होय.

८ अपूर्वकरणगुणठाणें—त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां क्षायिकसम्यक्दृष्टिने क्षपकश्रेणियें अथवा उपशमश्रेणियें २१ नुं सत्तास्थानक, तथा उपशमिकसम्यक्त्वें उपशमश्रेणियें २८ अने २४ नुं सत्तास्थानक होय.

९ बादरसंपरायगुणठाणें—अग्यार सत्तानां स्थानक होय. तिहां २८ अने २४ उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें अने २१ नी सत्ता उपशमश्रेणियें क्षायिकसम्यक्दृष्टिने होय. अथवा क्षपक श्रेणियें पण ज्यां सुधी आठकषायनो क्षय नथी करयो तिहां सुधी २१ नी सत्ता होय. तेवार पछी आठ कषायना क्षयें १३ नी सत्ता, तेमांथी नपुंसकवेद क्षयें १२ नी सत्ता, स्त्रीवेद क्षयें अग्यारनी सत्ता, हास्यषट्कने क्षयें ५ नी सत्ता, पुरुषवेद क्षयें ४ नी सत्ता, संज्वलनक्रोध क्षयें ३ नी सत्ता, संज्वलनमान क्षयें २ नी सत्ता, संज्वलनमाया क्षयें एकनी सत्ता होय. एवं २८ । २४ । २१ । १३ । १२ । ११ । ५ । ४ । ३ । २ । १ ए अग्यार सत्तास्थानक होय.

१० सूक्ष्मसंपरायगुणठाणें—चार सत्ता स्थानक होय. २८ । २४ उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें, तथा २१ नुं क्षायिकसम्यक्दृष्टिने उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें, अने एक संज्वलनलोभ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक क्षपकश्रेणीनी अपेक्षायें जाणवुं.

११ उपशांतमोहगुणठाणें—२८ । २४ अने २१ ए त्रण सत्तास्थानक होय.

१२ क्षीणमोह, १३ सयोगी अने १४ अयोगी ए त्रण गुणठाणें—मोहनीयकर्मनो सर्वथा क्षय होवाथी सत्तास्थानक न होय.

१ नरकगति मार्गणायें—२८ । २७ । २६ । २४ । २२ । २१ एवं छे सत्तास्थानक होय, तेमां मनुष्यने विषे अनंतानुबंधिनी ४ प्रकृतिनी सत्ता क्षय थया पछी २४, मिथ्यात्वमोहनीय विना २३, मिश्रमोहनीय विना २२, समकितमोहनीय क्षय करतां छेल्ला ग्रासे आयुपूर्ण करी चारे गतिमां अवतरे तिहां २२ प्रकृतिनी सत्ता होय. अने समकितमोहनीय क्षय थया बाद २१ प्रकृतिनी सत्तानो स्थानक क्षायिकसम्यग्दृष्टिना चारगतिने होय. पण बीजाने न होय. तेमज २८ । २७ । २६ ए त्रण सत्ता पूर्वोक्तरीतें सत्तास्थानक समजवुं.

२ तिर्यंचगति, देवगति ए बे मार्गणायें—२८ । २७ । २६ । २४ । २२ । २१ ए छे सत्तास्थानक होय.

१२ मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, शुक्ललेश्या, भव्य, संज्ञी, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, आहारी ए १२ मार्गणायें—२८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ । ११ । ५ । ४ । ३ । २ । १ ए पंदर सत्तास्थानक होय.

११ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए ११ मार्गणाएं २८।२७।२६ ए ३ सत्तास्था०

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—२८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ । ११ ए दश सत्तास्थानक होय. कारण पुरुष वेदोदय छतां क्षपकश्रेणियें नपुंसकवेद अने स्त्रीवेद ए बे प्रकृति खपावे तेथी ऊपरना १० सत्तास्थानकमांथी २८ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक प्रथम सम्यक्त्व पामीने फरी मिथ्यात्वे आवे तेने समकितमोहनीय अने मिश्रमोहनीय सहित २८ प्रकृतिनो, अने समकितमोहनीय विना २७ प्रकृतिनो इत्यादि पूर्वोक्त रीते ११ प्रकृति लगण जाणवा. (१)

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—२८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ ए नव सत्तास्थानक जाणवा. स्त्रीवेदनो उदय छतां स्त्रीवेदनी सत्ता क्षय थई नथी माटे ११ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक न होय (१)

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—नपुंसकवेदनो उदय होवाथी त्रणवेदनी सत्ता होय. नपुंसकवेदनी सत्तानो क्षय थवाथी १२ प्रकृतिनो, तथा नपुंसकवेद अने स्त्रीवेदनी सत्तानो क्षय होवाथी ११ प्रकृतिनी सत्तानुं स्थानक थाय छे, अहीं वेदनी सत्तानो क्षय नथी तेथी ११ । १२ प्रकृतिनी सत्ता विना पुरुषवेद मार्गणानी परें २८ । २७ २६ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ ए आठ सत्तास्थानक होय १

१ क्रोध मार्गणाएं—२८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ । ११ ५ । ४ ए बार सत्तास्थानक होय.

१ मान मार्गणाएं—२८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ । ११ ५ । ४ । ३ ए तेर सत्तास्थानक होय.

१ माया मार्गणाएं—संज्वलनमान विना २८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ २१ । १३ । १२ । ११ । ५ । ४ । ३ । २ ए १४ सत्तास्थानक होय.

१ लोभ मार्गणाएं—संज्वलनमाया विना २८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ २१ । १३ । १२ । ११ । ५ । ४ । ३ । २ । १ ए पंदर सत्तास्थानक होय.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय ए ६ मार्गणाएं—२८ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ । ११ । ५ । ४ । ३ । २ १ ए तेर सत्तास्थानक होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—मोहनीयकर्मनी सर्व प्रकृतिनो क्षय थवाथी सत्तास्थानक न होय.

३ त्रणअज्ञान मार्गणाएं—अनादिमिथ्यात्वी जीवने समकिनमोहनीय अने मिश्रमोहनीय ए बे प्रकृतिने खपावी फरी मिथ्यात्वे आवेला जीवोने २६ प्रकृतिनी सत्तास्थानक, समकितमोहनीय खपाव्याथी २७ प्रकृतिनी सत्तास्थानक, समकेतपामी कर्मवशें फरी त्रणपुंज करी मिथ्यात्वे आवे तेना आश्रयी २८ प्रकृतिनी, उपशमसमकितनो धणी अनंतानुबंधिनी चार प्रकृति विसंयोजना करी उपशमश्रेणीने स्वीकारी कर्मवशें पड़तां थकां पाछो मिथ्यात्वे आवे तेने वचमां अनंतानुबंधिनी ४ प्रकृतिनो बंध शुरु थयेल नथी तेने २४ प्रकृतिनी सत्तास्थानक एवी रीते २८।२७।२६।२४ ए चार सत्तास्था०

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—उपशमसमकितीने २८ । २४, क्षयोपशम समकितीने २४। २३। २२, अने क्षायिकसमकितीने २१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. एवी रीते २८। २४। २३। २२। २१ ए पांच सत्तास्थानक होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—उपशमश्रेणियें उपशमसमकितीने २८ । २४, उपशमश्रेणियें क्षायिकसमकितीने २१, क्षपकश्रेणी वालाने एक प्रकृतिनी सत्तास्थानक होय. एवी रीते २८। २४। २१। १ ए चार सत्तास्थानक जाणवा.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—उपशमश्रेणीना धणीने अग्यारमां गुणठाणें अने उपशमसम्यक्त्वी उपशमश्रेणी करनारने २८। २४ ए बे सत्तास्थानक होय, तथा क्षायिक समकितवालो उपशमश्रेणियें होय तेने २१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. तथा बारमां तेरमां चौदमां गुणठाणें पण यथाख्यात चारित्र तो होय परंतु मोहनीयकर्म सर्वथा क्षय थवाथी मोहनीयनी सत्ता नथी.

१. देशविरति मार्गणाएं—उपशमसम्यक्त्वी अथवा उपशमश्रेणियें अनंतानुबंधियानी विसंयोजना करीने पाछा परिणामवशें देशविरतियें आवेला जीवोंने २८। २४ ए बे सत्तास्थानक होय. तथा क्षयोपशमसमकितीने २८। २४। २३। २२ ए चार सत्तास्थानक होय अने २१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक क्षायिकसम्यक्त्वीने होय एवी रीते २८। २४। २३। २२। २१ ए पांच सत्तास्थानक जाणवा.

१ अविरती मार्गणाएं—शास्वादनें २८ प्रकृतिनी सत्तानो, अने मिथ्यात्वगुणठाणें २८ । २७। २६ ए त्रण, चोथे गुणठाणें २८ । २४। २३। २२। २१ ए पांच सत्तास्थानक होय एवी रीते २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१ ए सात सत्तास्थानक जाणवा.

१ अवधिदर्शन मार्गणाएं–२८ । २४ । २३। २२। २१। १३। १२। ११। ५ ४। ३। २। १ ए तेर सत्तास्थानक होय.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए ३ मार्गणाएं–प्रथमना चार गुणठाणां अथवा देशविरति अने सर्वविरति पाम्या पछी पण त्रण लेश्या होवाथी २८। २७

२६। २५। २१ ए पांच सत्तास्थानक होय. तथा क्षायिकसमकित पण ए त्रण ले-श्याना उदेकतां न पामे जोइए कारण क्षायिकसमकित पामतां वखते २३। २२ ए बे सत्तास्थानक पण होवा जोइए पण अहीं ए बे सत्तास्थानक नथी माटे जणाय छे के क्षायिकसमकित पाम्या पछी त्रण लेश्या आवती हशे तेथी २१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

२ तेजोलेश्या, अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाए-प्रथमना सातगुणठाणे कहेला २८। २७। २६। २५। २३। २२। २१ ए सात सत्तास्थानक होय.

१ अभव्य मार्गणाए-अनादिमिथ्यात्व भणी २६ प्रकृतिनुं एक सत्तास्थानक होय.

१ उपशम मार्गणाए-२८ प्रकृतिनो, अने अनंतानुबंधिनी विसंयोजना कियेला-ने २४ प्रकृतिनो ए बे सत्तास्थानक होय.

१ क्षायिक मार्गणाए—२१। १३। १२। ११। ५। ४। ३। २। १ ए ९ सत्तास्था०

१ क्षयोपशम मार्गणाए-२८। २४। २३। २२ ए चार सत्तास्थानक होय,

१ मिश्र मार्गणाए-प्रथमपुंज करी मिथ्यात्वे आवीने फरी मिश्रे आवे तेने अथवा समकितगुणठाणा थकी मिश्रे आवेलाने २८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय तथा जेणे मिथ्यात्वी थकां सम्यक्त्वपुंज उवेल्युं अने मिश्रपणुं हजी क्षय कर्युं नथी ते सम्यक्त्व उवेलीने मिथ्यात्वथी निवृत्ति करी परिणामवशे मिश्रे आवे तेने २७ प्रकृतिनो सत्ता-स्थानक होय. तथा जे सम्यक्त्वदृष्टि छतां अनंतानुबंधि विसंयोजी तथा विध परिणा-मना वशे मिश्रे आवे तेने २४ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

ए चोवीशनी सत्ता चारगतिने विषे पामिये छे माटे चारेगतिना सम्यक्दृष्टि जीव अनंतानुबंधिआनी विसंयोजना करे 'कम्मपयडी'मां पण कह्युं छे के—

" चउगइआ पज्जत्ता, तिन्नि विसंजोयणा विसंयोजंति।

करणेहिं तिहिं सहिआ, णंतर करणं उवसमो वहति ॥१॥"

एक सम्यक्दृष्टि, बीजो देशविरति, त्रीजो सर्वविरति ए त्रण अनंतानुबंधिआनी विसंयोजना करे ते कर्मवशे करी मिश्रे आवे.

१ सास्वादन मार्गणाए—२८ प्रकृतिनो एक सत्तास्थानक होय. कारण के स-म्यक्त्वथी पडतां ए गुणठाणो होय छे.

१ अनाहारी मार्गणाए—मिथ्यात्व, सास्वादन, अने सम्यक्दृष्टि ए त्रणगुण-ठाणे कहेला २८। २७। २६। २५। २२। २१ ए छे सत्तास्थानक होय.

७२ बासठमार्गणाने विषे आयुकर्मनी प्रकृतिना सत्तास्थानकनुं द्वार—

आयुकर्मनी सत्तानी त्रण अवस्था कहे छे—

१ परभवायुनो बंध ज्यां सुधी न थयो होय त्यां सुधी प्रथमावस्था,

२ ते समयमां परभवायुनो बंध थतो होय ते बीजी बंधावस्था.

३ आगला भवनो आयु बांध्या पछीना समयमां त्रीजी शेषावस्था. ए त्रण अवस्थायें करी आयुकर्मना सत्ताना स्थानक जाणवा.

५९ गतिचार, इंद्रियपांच, कायछे, त्रण योग, त्रण वेद, कषायचार, मत्यादि ज्ञानचार, त्रण अज्ञान, संयमसात, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, लेश्या छे, भव्य, अभव्य, सम्यक्त्व छे, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी ए ५९ मार्गणाएं—प्रथमावस्थाने विषे निज निज भोगवतां भवना एकज आयुनी सत्तानो स्थानक, तथा बंधावस्था अने शेषावस्था ए बे अवस्थाने विषे भोगवतां भवायु अने परभवायु ए बे आयुनी सत्ता होय.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने अनाहारी ए त्रण मार्गणाएं—एक प्रथमावस्थाज होय छे माटे भोगवतां भवनी एकज आयुनी सत्ता होय. अहीं केवलद्विक मार्गणावालाने मोक्षेज जवानुं छे तेथी परभवायुनी सत्ता न होय. अने अनाहारी मार्गणाएं—भवांतरगतिनी होवाथी भवने विषे उपजतां पहेलां परभवायुनो बंध न थाय माटे एकज आयुनी सत्ता जाणवी.



७३ बासठ मार्गणाने विषे नामकर्मनी प्रकृतिना सत्तास्थानकनुं द्वार—

नामकर्मनी प्रकृतिना सत्तास्थानक कहे छे—

१—नामकर्मनी सर्वप्रकृतिना समुदायनी सत्ता होय तेवारे ९३ नी सत्तास्थानक जाणवुं.

२—उपरोक्त ९३ मांथी जिननामनी सत्ता ज्यारे न होय तेवारे ९२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

३—उपरोक्त ९३ प्रकृतिमांथी आहारकशरीर १, आहारकांगोपांग १, आहारकबंधन १, आहारकसंघातन १ ए चार प्रकृति वर्जीए तेवारे ८९ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

४—उपरोक्त ८९ प्रकृतिमांथी जिननाम विना ८८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

५—पूर्वोक्त ८८ प्रकृतिमांथी देवद्विक अथवा नरकद्विक उवेलतां ८६ प्र-

तिनुं सत्तास्थानक होय, तथा ८८ प्रकृतिमांथी तेउ अनें वाउकाय मांहे वैक्रियाष्टक उवेल्यो पछीथी सत्तावंत थको पंचेंद्रियपणुं पामीने देवगतियोग्य बांधे तो देवद्विक अने वैक्रियचतुष्कने बांधे तो ८६ प्रकृतिनो सत्तास्थानक, तथा ते पंचेंद्रिय मांहे नरकगति प्रायोग्य बांधतो नरकद्विक अने वैक्रियचतुष्कने बांधे पण ८६ नो सत्तास्थानक होय.

६–ते ८६ मांथी नरकद्विक अने वैक्रियचतुष्क उवेल्ये थके ८० नो सत्तास्थानक, अथवा देवद्विक अने वैक्रियचतुष्क उवेल्ये पण ८० प्रकृतिनो सत्तास्था०

७–ते ८० प्रकृतिमांथी मनुष्यद्विक विना ७८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. ए सात सत्ता स्थानक क्षपक टालीने अनेरा जीवने होय तेमां अभव्यने तथा पूर्वे अप्राप्तसम्यक्त्वने ७८। ८०। ८६। ८८ ए चारज सत्तास्थानक होय.

८–तेराणु प्रकृतिमांथी नरकद्विक, तिर्यंचद्विक, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म अने साधारण ए १३ विना ८० नो सत्ता, तथा ९२ प्रकृतिमांथी ए १३ क्षये ७९ नो सत्तास्थानक होय.

९–तथा ८९ प्रकृतिमांथी १३ ना क्षये ७६ प्रकृतिनो सत्ता होय.

१०–तथा ८८ मांथी १३ ना क्षये ७५ प्रकृतिनो सत्ता होय.

११–मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १, जिननाम १ ए ९ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

१२–ते ९ प्रकृतिमांथी जिननाम विना ८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक ए बे सत्ता स्थानक अयोगीकेवलीने छेहले समये होय.

चौदगुणठाणें नामकर्मना सत्तास्थानक कहे छे–

१ मिथ्यात्वगुणठाणें—९२ नी सत्ता चारगतिना मिथ्यात्वी जीवने होय तथा केवारे कोइएक वेदकसम्यक्दृष्टि जीवें पूर्वे नरकायु बांध्यु छे तेमाटे ते अंतसमय सम्यक्त्व वमीने नरकें जाय तेने अंतर्मुहूर्तपर्यंत ८९नी सत्ता होय. तथा अंतर्मुहूर्त पछी ते वली सम्यक्त्व पामे. अहीं आहारकचतुष्क, तथा जिननाम ए बेनो समकालें नरकमांहे सत्ता न होय. ते भणी ९३नो सत्तास्थानक नरक मांहे न होय तथा ८८नो सत्ता पण चारगतिना मिथ्यात्वी जीवने होय, तथा ८६ नो सत्तास्थानक एकेंद्रियने विषे देवगतिप्रायोग्य अथवा नरकगतिप्रायोग्य उवेल्ये थके पामिये तथा ८० नो सत्तास्थानक ते तेराणु मध्येथी तीर्थंकरनाम, आहारकचतुष्क, वैक्रियषट्क, नरकद्विक ए तेर प्रकृति

खपावतां एकेंद्रिय मध्ये पामिये. तेवार पछी ते एकेंद्रिय मध्येथी निकलीने विकलेंद्रिय तथा पंचेंद्रियतिर्यंच मनुष्य मांहे अवतरी पर्याप्तो थया पछी पण अंतर्मुहूर्त लगे ते मांहे ८० नो सत्तास्थानक पामिए, अने ते अंतर्मुहूर्त वीत्या पछी अवश्य वैक्रियादिनो बंध होय ते माटे तथा ते ८० मांहेथी वली मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वी उवेले थके तेउकाय, वायुकाय मध्ये ७८ नी सत्ता होय. अथवा तेउकाय, वायुकाय मध्येथी आवेला विकलेंद्रिय तथा तिर्यंच-पंचेंद्रिय ते मध्ये पण ७८ नो सत्तास्थानक अंतर्मुहूर्त लगे पामिये अने पर्याप्ता थया पछी अवश्य मनुष्यद्विक बांधे माटे तिहां ७८नो सत्ता न होय एवी रीते छे सत्तास्थानक जाणवा.

२ सास्वादन गुणठाणें—९२ । ८८ ए बे सत्तास्थानक होय. तिहां आहारक-चतुष्क बांधी उपशमश्रेणीथी पडतां सास्वादन गुणठाणुं पामे तेने ९२ नो सत्तास्थानक होय. अने ८८ नी सत्तानो चारगतिना सास्वादनीने होय.

३ मिश्रगुणठाणें—९२ अने ८८ प्रकृतिना बे सत्तास्थानक होय.

४ अविरतिसम्यक्गुणठाणें—जे अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणठाणें आहारक-द्विक अने जिननाम सहित ३१ प्रकृति देवयोग्य बांधीने वलतो मरण पामी देव थाय तेनी अपेक्षायें ९३ नी सत्ता जाणवी. तथा आहारकचतुष्क बांधी वली परिणाम परावर्तिये मिथ्यात्व पामी चारगतिमांथी गमे ते गतिमां उपजीने वली तिहां सम्यक्त्व पामे तेने ९२ नी सत्ता जाणवी, ए सत्ता देवमनुष्यमां मिथ्यात्वें गया विना पण होय माटे मांहीं लिधी. तथा ८९नी सत्ता तो देव मनुष्य अने नारकी अविरतिसम्यक्दृष्टिने जिननामनो बंध छे ते माटे होय तथा ८८ नी सत्ता चारगतिना सम्यग्दृष्टिने होय. एवी रीतें चार सत्तास्थानक जाणवा.

५ देशविरतिगुणठाणें—९३ । ९२ । ८९ । ८८ ए चार सत्तास्थानक होय. तिहां जे अप्रमत्त अपूर्वकरणवालो तीर्थंकर तथा आहारक बांधीने पडे ते परिणामे देशविरति थाय तेने ९३ नी सत्ता होय. शेषनी भावना चोथा गुणठाणानी परें जाणवी.

६ प्रमत्त अने ७ अप्रमत्तगुणठाणें—९३।९२।८९। ८८ ए चार सत्तास्थानक.

८ अपूर्वकरणगुणठाणें—२८ ने बंधे ८८नुं, २९ ने बंधे ८९नुं, ३० ने बंधे ९२ नुं, ३१ ने बंधे ९३ ए ४ सत्तास्थानक. तथा यशःकीर्तिनो बंधस्थानक मानवा माटे देवगतिप्रायोग्य बंधना विच्छेदे पण ऊपरना चार सत्तास्थानक जाणवा.

९ अनिवृत्तिबादरगुणठाणें—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ ए आठ सत्तास्थानक जाणवां. तिहां क्षपकने तो ८० । ७९ । ७६ । ७५ ए चार सत्तास्थानक होय अने ९३ । ९२ । ८९ । ८८ ए चार क्षपकने नथी.

१० सूक्ष्मसंपरायगुणठाणें—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ ए आठ सत्तास्थानक होय तिहां पहेला चार सत्तास्थानक तो उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें होय तथा क्षपकश्रेणियें पण ज्यां सुधी नामकर्मनी १३ प्रकृति क्षय न थाय त्यां लगे जाणवां. अने १३ प्रकृतिना क्षय थया पछी ८० । ७९ । ७६ ७५ ए चार सत्तास्थानक होय.

११ उपशांतमोहगुणठाणें—९३ । ९२ । ८९ । ८८ ए चार सत्तास्थानक होय.

१२ क्षीणमोह अने १३ सयोगीगुणठाणें—तीर्थंकरने ८० । ७६, तथा अतीर्थंकरने ७९ । ७५ ए चार सत्तास्थानक होय.

१४ अयोगीगुणठाणें—तीर्थंकरने नवना उदयें ८० । ७६ । ९ ए त्रण सत्तास्थानक होय. तथा सामान्यकेवलीने आठना उदयें ७९।७५।८ ए त्रण सत्तास्था०

१ नरकगति मार्गणाएं—९२ । ८९ । ८८ ए त्रण सत्तास्थानक होय. आहारक चतुष्क अने जिननाम ए बेनी सत्ता नारकीमां साथें न होय माटे ९३नी सत्ता न कही.

११ तिर्यंचगति, एकेन्द्रियादि जाति ४, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, असंज्ञी ए ११ मार्गणाएं—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ ए पांच सत्तास्थानक होय. तेमां तेउकाय, वायुकाय विना ९ मार्गणामां ९२ । ८८ । ८६ । ८० ए चार सत्तास्थानक होय. अने कोईक जीव तेउकाय वायुकायमांथी मनुष्यद्विकने खपावी चवीने ए अग्यार मार्गणामां आव्या तेने हजु पर्याप्ति पूर्ण करी नथी तिहां सुधी ७८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं तिहां ७८ प्रकृति समेतना ५ स्थानक होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ७९ । ८० । ७६ । ७५ ९ । ८ ए ११ सत्तास्थानक होय.

१ भव्य मार्गणाएं—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७९ । ७८ । ७६ । ७५ ९ । ८ ए १२ सत्तास्थानक होय.

५ देवगति, परिहारविशुद्धि, देशविरति, उपशम, क्षयोपशम ए ५ मार्गणाएं—जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत देवप्रायोग्य २९ ना बंधे अथवा सातमां अने आठमां गुणठाणें देवप्रायोग्य जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत ३१ नो बंध करीने पाछा पडी पांचमां गुणठाणें आवे त्यां पण जिननामनी अने आहारकचतुष्कनी सत्ता समेत ९३

प्रकृतिनी सत्ता होय. तथा जिननाम समेत देवप्रायोग्य २९ ना बंधे तथा मनुष्यप्रायोग्य देवता अने नारकीने जिननाम समेत ३० प्रकृतिना बंधकने पण ८९ प्रकृतिनी सत्ता होय, तथा आहारकचतुष्क समेत ९२ प्रकृतिनी. तथा जिननाम अने आहारकचतुष्क विना ८८ प्रकृतिनी ए बे सत्ता चारे गतिमां होय. एवी रीते ९३।९२।८९।८८ ए चार सत्तास्थानक जाणवा.

३ पंचेंद्रिय, त्रसकाय अने भव्य ए त्रण मार्गणाएं—९३।९२।८९।८८।८६।८० ७९।७८।७६।७५।९।८ ए बार सत्तास्थानक होय.

२ मनोयोग[1] अने संज्ञी ए बे मार्गणाएं—९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७६।७५ ए नव सत्तास्थानक होय अथवा ७८ नों स्थानक भेगो गणतां १० स्थानक पण कह्यंछे.

११ वचनयोग[2], काययोग, त्रणवेद, चार कषाय, अचक्षुदर्शन, आहारी ए ११ मार्गणाएं—९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५ एदश सत्तास्थानक होय.

९ मत्यादिज्ञानचार, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, सूक्ष्मसंपराय, अवधिदर्शन, शुक्लेश्या ए नव मार्गणाएं—अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणठाणे आहारकद्विक अने जिननाम समेत देवप्रायोग्य ३१ प्रकृतिना बंधकने ९३ प्रकृतिनो. जिननाम विना अने आहारकद्विक समेत देवप्रायोग्य ३० प्रकृतिना बंधकने ९२ प्रकृतिनो. क्षयोपशमसम्यक्त्वना हेतुथी देवप्रायोग्य २९ प्रकृतिना बंधकने अथवा मनुष्यप्रायोग्य ३० प्रकृतिना बंधक देवता अने नारकी आदिने जिननाम समेत ८९ प्रकृतिनो. चारगतिना सम्यक्त्वी जीवोने ८८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. तथा ८० प्रकृतिनो सत्तास्थानक तो ऊपरोक्त ९३ प्रकृतिनी सत्तामांथी नरकद्विक, तिर्यंचद्विक, एकेंद्रियादि जातिचतुष्क, स्थावरनाम, आताप, उद्योत, सूक्ष्म अने साधारण ए १३ प्रकृतिना क्षये ८० नी सत्ता होय. तथा ९२ नी सत्तामांथी ए १३ नां क्षये ७९ नी सत्ता होय. तथा ८९ प्रकृतिमांथी ए १३ ना क्षयें ७६ नी सत्ता होय. तथा ८८ मांथी १३ ना क्षयें ७५ नी सत्ता होय. एवी रीते प्रत्येक मार्गणामां ९३।९२।८९।८८।८०।७९।७६।७५ ए ८ सत्तास्था०

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—मत्यादिज्ञानमां कहेला ८० ७९।७६।७५ ए चार सत्तास्थानक चौदमांगुणठाणाना छेहली समयमां तीर्थंकरनाम समेत ९ प्रकृतिनो, अने जिननाम विना ८ प्रकृतिनो ए बे सत्तास्थानक होय. एवी रीते ८०।७९।७६।७५।९।८ ए छे सत्तास्थानक जाणवा.

१-२ मनोयोग अने वचनयोगमार्गणामां—७८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक न होवो जोइये कारण के ७८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक तेउकाय अने वायुकाय अथवा तेउ वायु मांथी आवेल विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रियतिर्यंचनां अपर्याप्तावस्था सुधी होय अने मन, वचनयोग तो पर्याप्तिना बंधे थाय छे तेथी ७८ नो सत्तास्थानक संभवतुं नथी.

३ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने मिथ्यात्व ए त्रण मार्गणाएं—९२।८९।८८।८६।८०।७८ ए छे सत्तास्थानक होय. तेमां वैक्रियाष्टकना क्षय करनारने ८० प्रकृतिनी, तथा वैक्रियाष्टक अने मनुष्यद्विक ए १० प्रकृतिने क्षयकर्यां पछी तेउकाय अने वायुकायने विषे ७८ प्रकृतिनी सत्ता जाणवी.

१ विभंगज्ञान मार्गणाएं—मिथ्यात्व अने सास्वादन गुणठाणे अथवा मतांतरे-मिश्र समेत ३ गुणठाणा पण होवाथी ९२।८९।८८ ए त्रण सत्तास्थानक जाणवुं.

२ यथाख्यात अने क्षायक ए बे मार्गणाएं—क्षायिकसम्यक्त्वमां चोथाथी चौदमां गुणठाणा सुधी अने यथाख्यातमां अग्यारमांथी चौदमां गुणठाणा सुधी कहेला ९३।९२।८९।८८।८०।७९।७६।७५।९।८ ए दश सत्तास्थानक होय.

४ अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए चार मार्गणाएं—९३।९२।८९।८८।८६।८०।७८ ए सात सत्तास्थानक होय. तेमां देवद्विक, नरकद्विक, वैक्रियचतुष्क, आहारकचतुष्क, जिननाम ए १३ प्रकृति ९३ प्रकृतिमांथी घटाडतां ८० प्रकृतिनो. तेमांथी मनुष्यद्विकने खपावतां तेउकाय अने वायुकायमां ७८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं. अथवा बंध पूर्वक कर्मादिविचारनामक ग्रन्थना पृष्ठ २२२ना यंत्रमां कृष्णादि ३ लेश्याना कोठामां ९३ नी सत्ता विनाछे सत्ता लखेली छे ते बहुश्रुतगम्य जाणवी.

१ चक्षुदर्शन मार्गणा ए—प्रथमना बार गुणठाणे कहेला ९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७६।७५ ए ९ सत्तास्थानक होय.

१ तेजोलेश्या[1] मार्गणाएं—९३।९२।८९।८८।८६।८० ए छ सत्तास्थानक होय. तेमां पृथ्वीकाय, अप्काय, अने वनस्पतिकाय ए त्रण मिथ्यात्वी करण अपर्याप्तावस्थायें वैक्रियाष्टकना क्षय करनारने ८० नो अने देवद्विकना क्षयकरनारने ८६ नो सत्तास्था०

१ पद्मलेश्या[2] मार्गणाएं—९३।९२।८९।८८।८६ ए पांच सत्तास्थानक होय. तेमां कोईएक सर्व पर्याप्तिये पर्याप्तो थयो पंचेंद्रियतिर्यंच अथवा मनुष्य तीर्थंकरनाम, आहारकचतुष्क, वैक्रियचतुष्क, देवद्विक, नरकद्विक ए १३ प्रकृति विना ८० प्रकृतिनी सत्तायें वर्ततो जीव विशुद्धपरिणामें देवगतिप्रायोग्य २८ बांधतो वैक्रियचतुष्क अने देवद्विकनो अवश्य बंध करे तिवारें ८६ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

१ अभव्य मार्गणाएं—अनादिमिथ्यात्वी होवाथी ८८।८६।८०।७८ ए ४ सत्तास्था०

१-२ 'बंधपूर्वक कर्मादिविचार' नामक किताबना पृष्ठ २२२ मां नामकर्मना सत्तास्थानकना कोठामां तेजस अने पद्म ए बे मार्गणामां ९३।९२।८९।८८ ए चार सत्तास्थानक लखेल छे परन्तु ८६ प्रकृतिनो सत्तास्थानक पण अवश्य होवुं जोइये, पछी बहुश्रुत कहे ते खरुं.

२ मिश्र अने शास्वादन मार्गणाएं—९२ अने ८८ प्रकृतिना बे सत्तास्थानक होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—९३ । ९२ । ८९ ।८८। ८६ । ८० । ७९ ।७८।७६ ७५ । ९ । ८ ए बार सत्तास्थानक होय तिहां ९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ अने ८० । ७८ ए सात सत्तास्थानक भवांतराले २१ ना उदयें अनाहारीपणें होय. तथा बीजी प्रकारे आहारकचतुष्क अने तीर्थंकरनाम समेन १३ मां गुणठाणें केवलसमुद्घात करे तेवारे वचले त्रीजा चोथा अने पांचमां समय पर्यंत कार्मणयोगे वर्त्तनां अनाहारीपणें २१ प्रकृतिनां उदयें तीर्थंकरनाम समेन ८० प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. अने अतीर्थंकरने जिननाम विनो ७९ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय. तथा तीर्थंकरने आहारकचतुष्क विना ७६ प्रकृतिनी सत्ता होय. अने अतीर्थंकरने आहारकचतुष्क विना ७५ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय. तथा चौदमां गुणठाणानी छेली समयें पण अनाहारीपणें तीर्थंकरने जिननाम समेन नव प्रकृतिनो अने अतीर्थंकरने जिननाम विना ८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

सप्ततिका नामा छट्ठा कर्मग्रन्थनी ३४ मी गाथाना बालबोधमां केवलीसमुद्घात करे तिवारे त्रीजे, चोथे, पांचमे समये कार्मणयोगे वर्त्ततांने ७५ । ७६ । ७९ । ८० ए चार स्थानक कह्या छे अने ए समुद्घाते ३ समयलगण अनाहारीज होय. माटे ए चार सत्ता पण अवश्य होय.



७४ बासठमार्गणाने विषे गोत्रकर्मनी प्रकृतिना सत्तास्थानकनुं द्वार-

२३ नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, मत्यादिज्ञान चार, विभंगज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, देशविरति, चक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, मिश्र, शास्वादन, ए २३ मार्गणाएं—बे बे प्रकृतिनो एक एक सत्तास्थानक होय.

३१ तिर्यंचगति, एकेन्द्रियादिजातिपांच, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, काययोग, त्रणवेद, चारकषाय, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अविरति, अचक्षुदर्शन, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी ए ३१ मार्गणाएं—नीचगोत्र अने ऊंचगोत्र ए बे प्रकृतिनो प्रथम सत्तास्थानक, तथा तेउकाय अने वाउकायना भव मांहे ऊंचगोत्रनो क्षय करयो छे अने पछी ऊपरोक्त ३१ मार्गणा मांहेनी गमे ते मार्गणामां तेउकाय वायुकायना भव थकी मरण करीने उपजतो थको नीचगोत्रनी १ प्रकृतिनो बीजो ए बे सत्तास्थानक होय.

२ तेउकाय अने वाउकाय ए बे मार्गणाएं—ऊंचगोत्रनी सत्ता नथी उवेली त्यां लगण नीचगोत्र अने ऊंचगोत्र ए बे प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. तथा ऊंचगोत्र क्षय कर्यां पछी नीचगोत्रनो एकज सत्ता, ए बे सत्तास्थानक होय.

३ मनोयोग, वचनयोग अने संज्ञी ए त्रण मार्गणाएं—तेउकाय अने वायुकायना भवमां ऊंचगोत्रने खपावीने विकलेंद्रिय अथवा पंचेंद्रियतिर्यंचना भवे उपज्या पछे नामकर्मनी २६ प्रकृतिना उदय लगण एक नीचगोत्रनी सत्ता होय. अने पछी २८ ना उदयस्थानक थकी ऊंचगोत्रनो अवश्य बंध करे अने भाषापर्याप्ति तथा मनःपर्याप्ति नो नामकर्मनी २८ प्रकृतिना उदयस्थानक पछी बंधीने माटे ऊंचगोत्र अने नीचगोत्र ए बे प्रकृतिनो एकज सत्तास्थानक होय*

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—तेरमां गुणठाणे अंतिम एक समय थाकतां सुधी ऊंचगोत्र अने नीचगोत्र ए बे नो प्रथम, अने चौदमां गुणठाणाना छेल्ली समयमां ऊंचगोत्रनी एक प्रकृतिनो बीजो ए बे सत्तास्थानक होय.

---

७५ बासठमार्गणाने विषे अंतरायकर्मनी प्रकृतिना सत्तास्थानकनुं द्वार–

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—अंतरायकर्मनो सर्वथा क्षय होवाथी सत्तास्थानक न होय. अने शेष ६० मार्गणाएं—अंतरायकर्मनी ५ प्रकृतिनो एक एक सत्तास्थानक होय.

---

७६ बासठमार्गणाने विषे आठकर्मनी १४८ उत्तरप्रकृतिना सत्तास्थानकनुं द्वार–

एकसो अडतालीश उत्तरप्रकृतिना ४८ सत्तास्थानक कहे छे.

१–मनुष्यगति १, मनुष्यायु १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त १, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्ति १, वेदनीय १, ऊंचगोत्र १, ए ११ प्रकृतिनो प्रथम सत्तास्थानक होय.

---

* 'कर्मप्रकृत्यात्मकविवरणयंत्र'मां उपरोक्त त्रण मार्गणाना कोठामां गोत्रकर्मनी २ प्रकृतिनो अने एकप्रकृतिनो ए बे सत्तास्थानकना आंक मांडेला छे ते ठीक जणातां नथी, पछी बहुश्रुत कहे ते खरुं.

२–प्रथम सत्तास्थानकमां कहेली ११ प्रकृति अने तीर्थंकरनाम १ ए १२ प्रकृतिनो बीजो सत्तास्थानक जाणवुं.

३–देवद्विक २, वैक्रियचतुष्क ४, औदारिकचतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, तैजसबंधन १, कार्मणबंधन १, तैजससंघातन १, कार्मणसंघातन १, संस्थान६, संघयण ६, वर्णादिविंशति २०, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, खगतिद्विक २, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, दुस्वर १, दौर्भाग्य १, अयशःकीर्ति १, अनादेय १, निर्माण १, प्रत्येक १, अपर्याप्त १, मनुष्यानुपूर्वी १, नीचगोत्र १, वेदनीय १ ए ६९ अने प्रथम सत्तास्थानकमां कहेली ११ ए ८० प्रकृतिनो त्रीजो सत्तास्थानक जाणवुं.

४–उपरोक्त ८० अने जिननाम १ ए ८१ प्रकृतिनो चोथो सत्तास्थानक.

५–त्रीजा स्थानकमां कहेली ८० अने आहारकशरीर १, आहारकांगोपांग १, आहारकबंधन १, आहारकसंघातन १ ए चारजोड़तां ८४ प्रकृतिनो पांचमो सत्तास्थानक जाणवुं.

६–पांचमां स्थानकमां कहेली ८४ प्रकृति अने तीर्थंकरनाम समेत ८५ प्रकृतिनो छठो सत्तास्थानक जाणवुं.

७–त्रीजा स्थानकमां कहेली ८० अने ज्ञानावरणीय ५, (पांचनिद्रा विना) दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५ ए १४ जोड़तां ९४ प्रकृतिनो सत्तास्थानक.

८–सातमां स्थानकमां कहेली ९४ अने तीर्थंकरनाम समेत ९५ प्रकृतिनो आठमो सत्तास्थानक होय.

९–सातमां स्थानकमां कहेली ९४ अने आहारकचतुष्क ४ एवं ९८ प्रकृतिनो नवमो सत्तास्थानक जाणवुं.

१०–नवमां स्थानकमां कहेली ९८ अने तीर्थंकरनाम एवं ९९ प्रकृतिनो दशमो सत्तास्थानक होय.

११–सातमां स्थानकमां कहेली ९४ अने निद्रा १ प्रचला १ एवं ९६ प्रकृतिनो ११ मो सत्तास्थानक जाणवुं.

१२–अग्यारमां स्थानकमां कहेली ९६ प्रकृति अने तीर्थंकरनाम शामिल करवाथी ९७ प्रकृतिनो बारमो सत्तास्थानक जाणवुं.

१३–अग्यारमां स्थानकमां कहेली ९६ प्रकृतिमां आहारकचतुष्क वधारे गणतां १०० प्रकृतिनो तेरमो सत्तास्थानक जाणवुं.

१४–तेरमां स्थानकमां कहेली १०० प्रकृतिमां जिननाम शामिल गणवा-
थी १०१ प्रकृतिनो चौदमो सत्तास्थानक जाणवुं.

१५–त्रीजा स्थानकमां कहेली ८० प्रकृतिमां ज्ञानावरणीय ५, निद्राद्विक
समेत दर्शनावरणीय ६, अंतरायनी ५, संज्वलनलोभ १, आहारकचतुष्क ४
जिननाम १ ए २२ मेळवतां १०२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

१६–त्रीजा स्थानकमां कहेली ८० प्रकृतिमां ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावर-
णीय ६, अंतरायनी ५, संज्वलनलोभ १, माया १, आहारकचतुष्क ४,
जिननाम १ ए २१ वधारतां १०३ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

१७–सोलमां स्थानकमां कहेलो १०३ प्रकृतिमां संज्वलनमान अधिक गण-
वाथी १०४ प्रकृतिनो सत्तरमो सत्तास्थानक जाणवुं.

१८–सत्तरमां स्थानकमां कहेलो १०४ प्रकृतिमां संज्वलनक्रोध वधारे
गणतां १०५ प्रकृतिनो अढारमो सत्तास्थानक जाणवुं.

१९–अढारमां स्थानकमां कहेलो १०५ प्रकृतिमां पुरुषवेद शामिल कर-
तां १०६ प्रकृतिनो ओगणीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२०–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, वेदनीयनो २, संज्वलनकषायनी
चोकडी ४, पुरुषवेद १, अने हास्यषट्क ६, मनुष्यायु १, नामनी ७५, गो-
त्रनो २, अंतरायनी ५ ए १०७ प्रकृतिनो वीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२१–वीशमां स्थानकमां कहेली १०७ प्रकृतिमां स्त्रीवेद वधारतां १०८ प्रकृ-
तिनो एकवीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२२–एकवीशमां स्थानकमां कहेलो १०८ प्रकृतिमां नपुंसकवेद वधारतां १०९
प्रकृतिनो बावीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२३–बावीशमां स्थानकमां कहेलो १०९ प्रकृतिमां तीर्थंकरनाम वधारे गणिये
तेवारे ११० प्रकृतिनो तेवीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२४–वीशमां स्थानकमां कहेलो १०७ प्रकृतिमां आहारकचतुष्क अधिक
जोडतां १११ प्रकृतिनो चोवीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२५–चोवीशमां स्थानकमां कहेली १११ प्रकृतिमां जिननाम अधिक गणिये
तेवारे ११२ प्रकृतिनो पचीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२६–पचीशमां स्थानकमां कहेली ११२ प्रकृतिमां स्त्रीवेद वधारे गणतां ११३
प्रकृतिनो छवीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२७–छवीशमां स्थानकमां कहेली ११३ प्रकृतिमां नपुंसकवेद वधारतां ११४ प्रकृतिनुं सत्तावीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

२८–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, 'संज्वलन ४, वेद १, हास्यादि ६' ए मोहनीयनी १३, आयुनी १, 'गति ४, जाति ५, शरीर ४, उपांग २, बंधन ४, (आहारक विना) संघातन ४, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णादि २०, आनुपूर्वी ४, खगति २, (जिन विना) प्रत्येकनी ७, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०' ए नामकर्मनी ८८, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, एवं १२५ प्रकृतिनो अठ्ठावीशमो सत्तास्थानक होय.

२९–अठ्ठावीशमां स्थानकमां कहेली १२५ प्रकृतिमां तीर्थंकरनामनी १ प्रकृति भेळतां १२६ प्रकृतिनो ओगणत्रीशमो सत्तास्थानक होय.

३०–'ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीयनी २, तिर्यंचायु १, नीचगोत्र १, अंतरायनी ५' ए अशेषकर्मनी २३. 'कषाय १६, नोकषाय ९, मिथ्यात्वमोहनीय १' ए मोहनीयनी २६. अने 'तिर्यंचगति १, जाति ५, औदारिकद्विक २, तैजसशरीर १, कार्मणशरीर १, बंधन ३, (वैक्रिय अने आहारक विना) संघातन ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णादि २०, तिर्यंचानुपूर्वी १, खगति २, पराघात १, आताप १, उद्योत १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, स्थावरदशक १०, त्रसदशक १०' ए नामकर्मनी ७८ एवं सर्व मळी १२७ प्रकृतिनो त्रीशमो सत्तास्थानक तेउकाय अने वायुकायने विषे जाणवुं.

३१–त्रीशमां स्थानकमां कहेली १२७ अने परभवनो आयु बांध्या पछी आयुकर्मनी प्रकृति बे गणे तेथी अशेषनी २४, मोहनीयनी २६ अने नामनी ७८, एवं १२८ प्रकृतिनो एकत्रीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

३२–अठ्ठावीशमां स्थानकमां कहेली १२५ अने आहारकचतुष्क ४ एवं १२९ प्रकृतिनो बत्रीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

३३–अठ्ठावीशमां स्थानकमां कहेली १२५ प्रकृतिमां आहारकचतुष्क ४, अने जिननाम १ ए पांच प्रकृति भेळी गणतां १३० प्रकृतिनो तेत्रीशमो सत्तास्थानक नवमां गुणठाणाना प्रथम भागे जाणवुं. तथा चोत्रीशमो–'ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, तिर्यंचायु १, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, ए अशेषकर्मनी २४ अने वीशमां स्थानकमां कहेली मोहनीयनी २६, 'मनुष्यद्विक २, तिर्यंचद्विक २, जाति ५, औदारिकद्विक २, तैजसशरीर १,

कार्मणशरीर १, प्रथमना बंधन ३, प्रथमना संघातन ३, संघयण ६, संस्थान ६, वर्णादि २०, खगति २, (तीर्थंकर विना) प्रत्येकनी ७, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०' ए नामकर्मनी ८० एवं १३० प्रकृतिनो सत्ता स्थानक वनस्पति जीवोमां जाणवुं.

३४–त्रेत्रीशमां स्थानकमां बीजी रीते कहेलो १३० प्रकृति साथे परभवनो आयु बांध्या पछी ते प्रकृति आयुकर्मनी गणतां १३१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक.

३५–अठावीशमां स्थानकमां कहेली १२९ प्रकृतिमां अप्रत्याख्यानी कषायनी ४, तथा प्रत्याख्यानी ४ ए आठ प्रकृति भेगी गणतां १३३ प्रकृतिनो पांत्रीशमो सत्तास्थानक होय.

३६–पांत्रीशमां स्थानकमां कहेलो १३३ प्रकृतिमां जिननाम जोडतां १३४ प्रकृतिनो छत्रीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

३७–छत्रीशमां स्थानकमां कहेली १३४ प्रकृतिमां सम्यक्त्वमोहनीय भेगी गणतां १३५ प्रकृतिनो सैत्रीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

३८–सैत्रीशमां स्थानकमां कहेलो १३५ प्रकृतिमां मिश्रमोहनीय भेगी गणतां १३६ प्रकृतिनो अट्ठत्रीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

३९–पांत्रीशमां स्थानकमां कहेल मोहनीयनी २१, अघोयनी २४ अने नामनी ८८ एवं १३३ मां आहारकचतुष्कनी ४ प्रकृति समेत नामकर्मनी ९२ गणतां १३७ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

४०–ओगणचाळीशमां स्थानकमां कहेलो १३७ प्रकृतिमां जिननाम अधिक गणवाथी १३८ प्रकृतिनो चाळीशमो सत्तास्थानक होय.

४१–ओगणचाळीशमां तथा चाळीशमां स्थानकमां मोहनीयकर्मनी एकवीश प्रकृति हती अने अहीं सम्यक्त्वमोहनीय भेळी गणिये तेवारे मोहनीयकर्मनी २२ प्रकृति तथा अघोयनी तेहोज २४ प्रकृति अने नामनी जिनयुक्त ९३ प्रकृति सर्व मळी १३९ प्रकृतिनो एकताळीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

४२–एकताळीशमां स्थानकमां मोहनीयनी २२ प्रकृति समेत १३९ प्रकृतिनो स्थानक कह्यो तेमां मिश्रमोहनीय भेळतां १४० प्रकृतिनो सत्तास्थानक.

४३–बेताळीशमां स्थानकमां कहेलो १४० प्रकृतिमां मिथ्यात्वमोहनीय वधारतां १४१ प्रकृतिनो तेताळीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

४४–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीयनी २८,

परभवायु समेत आयुकर्मनी २ तथा 'गति ४, जाति ५, (आहारक विना) शरीर ४, अने उपांग २, (आहारक विना) बंधन ४ अने संघातन ४ संघयण ६, संस्थान ६, वर्णादि २०, आनुपूर्वी ४, खगति २, प्रत्येकनी ८, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०' एवं नामकर्मनी ८९ प्रकृति. तथा गोत्रनी २ अने अंतरायनी ५ ए सर्व मली १४२ प्रकृतिनो चुमालीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

बीजी रीते-मिथ्यात्वीजीव कोईक सम्यक्त्व पामी त्रण पुंज करी देव प्रायोग्य जिननाम अथवा आहारकद्विकना बंध समेत २९। ३० प्रकृतिना बंधकने सातमे आठमे गुणठाणे बंध करीने कर्मवशे परिणामविशेषे पाछा पडे तेवारे सम्यक्मोहनीय अने मिश्रमोहनीय ए बे उवेलीने फरी मिथ्यात्वे आवे तेवारे मोहनीय कर्मनी सत्ता २६ प्रकृतिनी, तथा अशेषनी २५, तथा आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक पण होय.

४५-चुम्मालीशमां स्थानकें बीजी रीते मोहनीयकर्मनी २६ प्रकृति गणतां १४२ नी प्रकृतिमां परभवायु लेवतां १४३ प्रकृतिनो सत्तास्थानक.

४६-चुम्मालीशमां स्थानकें बीजी रीते कहेल सत्तास्थानकमां सम्यक्त्वादिकथी पडतां मिथ्यात्वीजीव मोहनीयकर्मनी २८ प्रकृतिनी सत्तामांथी सम्यक्त्वमोहनीय उवेली सत्तावी मिश्रमोहनीय समेत मोहनीयकर्मनी २७ प्रकृति अने परभवायु समेत अशेषनी २५, आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ प्रकृति एवं १४४ प्रकृतिनो छेपालिशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

४७-अहीं पण सम्यक्त्व थकी पडेल्याने मिथ्यात्वगुणठाणें मोहनीय कर्मनी २८ नी सत्ता वाल्याने मोहनीयकर्मनी २८ प्रकृति, अशेषनी २५, अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४५ प्रकृतिनो सुडतालीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

४८-सुडतालीशमां स्थानकमां १४५ प्रकृति कही ते मध्ये परभवायु समेत अशेषनी २६ प्रकृति, मोहनीयनी २८ अने नामनी ९३ एवं सर्व मली १४६ प्रकृतिनो अडतालीशमो सत्तास्थानक जाणवुं.

चौदगुणठाणें सत्तास्थानक कहे छे—

१ मिथ्यात्वगुणठाणें—१२७।१२८।१२९।१३०।१३१।१३६।१३७।१३८।१३९। १४०।१४१।१४२।१४३।१४४।१४५ ए पंदर सत्तास्थानक होय. तिहां प्रथम १२७ अने १२८ प्रकृतिना सत्तास्थानक सत्तास्थानकाधिकारें तेउकाय अने वाउकायमां कह्या प्रमाणे जाणवुं. तथा १२९ प्रकृतिनो स्थानक

तेउकाय वायुकायने विषे ऊंचगोत्रने खपाव्यो छे जेने अने मनुष्यद्विकने हजु सुधी नथी खपाव्यां तेमने नामकर्मनी ८० प्रकृतिनो सत्तावाळाने मोहनीयनी २६, अशेषनी २३ अने नामनी ८० एवं १२९ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय. तथा १३० अने १३१ प्रकृतिनो ए बे सत्तास्थानक वनस्पतिकायमां कह्या प्रमाणे होय. तथा मोहनीयकर्मनी २६, अशेषकर्मनी २४, अने नामकर्मनी ८६ एवं १३६ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. तथा ए १३६ नी सत्ताने साथे परभवायुनी प्रकृति समेत अशेषकर्मनी २५, मोहनीयनी २६ अने नामनी ८६ एवं १३७ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. मोहनीयनी २६ अशेषकर्मनी २४ अने नामकर्मनी ८८ एवं १३८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

मोहनीयकर्मनी २७, अशेषनी २४, नामनी ८८ एवं १३९ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. अथवा मोहनीयनी २६, अशेषनी २४, अने जिननाम समेत नामनी ८९ एवं १३९ प्रकृतिनो बीजी प्रकारे सत्तास्थानक जाणवुं.

मोहनीयनी २८, अशेषकर्मनी २४ अने नामनी ८८ एवं १४० प्रकृतिनो प्रथम सत्तास्थानक. अथवा बीजी रीते-मोहनीयनी २७, अशेषनी २४ अने जिननाम समेत नामनी ८९ एवं १४० प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय.

मोहनीयनी २८, अशेषकर्मनी २४ अने जिनयुक्त नामनी ८९ एवं १४१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. अने मोहनीयनी २६, अशेषकर्मनी २४ अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

मोहनीयनी २६ अने परभवना आयु समेत अशेषकर्मनी २५ अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४३ प्रकृतिनो प्रथम सत्तास्थानक. अथवा बीजी रीते-मोहनीयनी २७, अशेषकर्मनी २४, अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४३ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं. मोहनीयकर्मनी २७ अने परभवायु समेत अशेषकर्मनी २५ अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४४ प्रकृतिनो प्रथम सत्तास्थानक. अथवा बीजी रीते-मोहनीयकर्मनी २८, अशेषकर्मनी २४, अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४४ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीयनी २, अने परभवायु समेत आयुकर्मनी २, गोत्रकर्मनी २ अने अंतरायनी ५ ए अशेषकर्मनी २५,

मोहनीयकर्मनी २८, अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४९ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

२ शास्वादनगुणठाणें—१४० । १४१ । १४४ । १४९ ए चार सत्तास्थानक होय. मोहनीयनी २८, अशेषनी २४ अने नामनी ८८ एवं १४० प्रकृतिनो सत्तास्थानक. तथा परभवायु समेत अशेषनी २५, मोहनीयनी २८, अने नामकर्मनी ८८ एवं १४१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. तथा मोहनीयनी २८, अशेषनी २४ अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ प्रकृति एवं १४४ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. परभवायु समेत अशेषकर्मनी २५, मोहनीयनी २८, अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४९ प्रकृतिनो सत्तास्था०

३ मिश्रगुणठाणें—१३६ । १३७ । १३९ । १४० । १४१ । १४३ । १४४ । १४९ ए आठ सत्तास्थानक होय. मोहनीयकर्मनी २४, अशेषनी २४, नामकर्मनी ८८ एवं १३६ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. तथा कोईक जीव परभवायुनो बंध करीने पछी मिश्रगुणठाणें आवेलो होय तेना आश्रयी आयुकर्मनी बे प्रकृति गणतां अशेषकर्मनी २५, मोहनीयनी २४, नामनी ८८ एवं १३७ प्रकृतिनो सत्तास्था०

मोहनीयनी २७, अशेषनी २४, नामकर्मनी ८८ एवं १३९ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. मोहनीयनी २४, अशेषनी २४ अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १४० प्रकृतिनो सत्तास्थानक. बीजी रीते—मोहनीयनी २७, अशेषनी २५, नामकर्मनी ८८ एवं १४० प्रकृतिनुं सत्तास्थानक तथा त्रीजी रीते—मोहनीयनी २८, अशेषनी २४ अने नामकर्मनी ८८ एवं १४० प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

बे आयु समेत अशेषनी २५, मोहनीयनी २४ अने नामकर्मनी ९२ एवं १४१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. अथवा बीजी रीते—बे आयु समेत अशेषनी २५, मोहनीयनी २८ अने नामकर्मनी ८८ एवं १४१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय

मोहनीयकर्मनी २७, अशेषकर्मनी २४, नामकर्मनी ९२ एवं १४३ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

मोहनीयकर्मनी २७, अशेषनी २५, अने नामकर्मनी ९२ एवं १४४ प्रकृतिनो प्रथम. अथवा बीजी रीते—मोहनीयनी २८, अशेषकर्मनी २४ अने नामकर्मनी ९२ एवं १४४ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवो.

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहनीयनी २८, परभवायु

समेत आयुनी २, नामनी ९२, गोत्रनी २ अने अंतरायनी ५ एवं १४५ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

४ अविरतिसम्यग्दृष्टि, ५ देशविरति, ६ प्रमत्त, अने ७ अप्रमत्त ए ४ गुणठाणें–१३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ १४२ । १४४ । १४५ । १४६ ए तेर सत्तास्थानक जाणवा. ते मोहनीयनी २१, अशेषनी २४, नामनी ८८ एवं १३३ प्रकृतिनो सत्तास्थानक.

मोहनीयनी २१, अशेषनी २४ अने जिननाम समेत नामनी ८९ एवं १३४ प्रकृतिनो प्रथम. अथवा बीजी रीते–सम्यक्त्वमोहनीय समेत मोहनीयकर्मनी २२, अशेषकर्मनी २४, नामकर्मनी ८८ एवं १३४ प्रकृतिनो सत्तास्थानक.

मिश्रमोहनीय समेत मोहनीयकर्मनी २३, अशेषकर्मनी २४, नामकर्मनी ८८, एवं १३५ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. मोहनीयनी २२, अशेषकर्मनी २४, जिननाम समेत नामकर्मनी ८९ एवं १३५ प्रकृतिनो सत्तास्थानक बीजी रीते जाणवुं.

(अनंतानुबंधि चार विना) मोहनीयकर्मनी २४, अशेषकर्मनी २४, नामकर्मनी ८८ एवं १३६ प्रकृतिनो प्रथम. अथवा बीजी रीते–मोहनीयनी २३ अशेषनी २४, जिनयुक्त नामकर्मनी ८९ एवं १३६ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

मोहनीयनी २४, अशेषनी २४, जिनयुक्त नामकर्मनी ८९ एवं १३७ प्रकृतिनो प्रथम. अथवा बीजी रीते–मोहनीयकर्मनी २१ अशेषकर्मनी २४ अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९२ एवं १३७ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

मोहनीयकर्मनी २२, अशेषनी २४, आहारकचतुष्क समेत नामनी ९२ एवं १३८ प्रकृतिनो प्रथम. बीजी रीते–मोहनीयकर्मनी २१, अशेषनी २४ अने जिननाम तथा आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९३ एवं १३८ प्रकृतिनो.

मोहनीयकर्मनी २१, अशेषनी २५, नामनी ९३ एवं १३९ प्रकृतिनो प्रथम. बीजी रीते–मोहनीयकर्मनी २२, अशेषकर्मनी २४, नामकर्मनी ९३, एवं १३९ प्रकृतिनो सत्तास्थानक. त्रीजी रीते–मोहनीयनी २३, अशेषनी २४ अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ९२ एवं १३९ प्रकृतिनो सत्तास्थानक.

मोहनीयनी २२, परभवायुसमेत अशेषनी २५, नामनी ९३ एवं १४० नो प्रथम. अथवा बीजी रीते–मोहनीयकर्मनी २३, अशेषनी २४, नामकर्मनी ९३ एवं १४० नो. त्रीजी रीते–मोहनीयनी २४ अशेषनी २४, नामनी ९२ एवं १४० प्रकृतिनो सत्तास्थानक. चोथी रीते–मोहनीयनी २८, अशेषकर्मनी २४, नामनी ८८ एवं १४० नो सत्तास्थानक जाणवो.

मोहनीयनी २३, अशेषनी २५, नामनी ९३ एवं १४१ नो प्रथम. अथवा बीजी रीते–मोहनीयनी २४, अशेषनी २४, नामनी ९३ एवं १४१ नो बीजो. त्रीजो रीते–मोहनीयनी २८, अशेषनी २४, जिननामयुक्त नामनी ८९ एवं १४१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

मोहनीयकर्मनी २४, परभवायुसमेत अशेषनी २५, नामनी ९३ एवं १४२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

मोहनीयनी २८, अशेषनी २४, नामनी ९२ एवं १४४नो सत्तास्थानक.

मोहनीयनी २८, अशेषनी २४, नामनी ९३ एवं १४५ नो सत्तास्था०

मोहनीयनी २८, परभवायु समेत अशेषनी २५, नामनी ९३ एवं १४६नो.

८ अपूर्वकरणगुणठाणें—मोहनीयनी २१, अशेषनी २४, नामनी ८८ एवं १३३ प्रकृतिनो प्रथम सत्तास्थानक. मोहनीयनी २१, अशेषनी २४, जिननामयुक्त नामनी ८९ एवं १३४ प्रकृतिनो बीजो सत्तास्थानक होय.

तथा १३५ प्रकृतिनो सत्तास्थानक तो मोहनीयकर्मनी २२ तथा २३ प्रकृतिनी सत्तावाळाने होय अने अपूर्वकरणगुणठाणें ए सत्ता न होय माटे १३५ प्रकृतिनी सत्ता न होय.

मोहनीयकर्मनी २४, अशेषनी २४, नामनी ८८ एवं १३६ नो सत्तास्था०

मोहनीयनी २१, अशेषनी २४, आहारकचतुष्क समेत नामनी ९२ एवं १३७ प्रकृतिनो. अथवा बीजी रीते–मोहनीयनी २४, अशेषनी २४, जिननाम समेत नामनी ८९ एवं १३७ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

मोहनीयकर्मनी २१, अशेषकर्मनी २४, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ९३ एवं १३८ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं. अने कर्मग्रन्थात्मक बामदृत्या यंत्रमां–मोहनीयनी २१ परभवायु समेत अशेषनी २५ अने नामनी ९३ एवं १३९ नो स्थानक कह्यो तिहां न संभवे कारणके क्षायिकी मोहनीयनी २१ नी सत्तावंतने आ गुणठाणें परभवायुनी सत्ता केम होय? पछी बहुश्रुत कहे ते खरुं.

मोहनीयकर्मनी २४, अशेषनी २४, आहारकचतुष्क समेत नामनी ९२ एवं १४० प्रकृतिनो प्रथम. अथवा बीजी रीते–मोहनीयकर्मनी २८, अशेषकर्मनी २४, नामकर्मनी ८८ एवं १४० प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

मोहनीयनी २४, अशेषनी २४, नामनी ९३ एवं १४१ प्रकृतिनो. अथवा

बीजी रीते–मोहनीयकर्मनी २८, अशेषनी २४, जिननामयुक्त नामकर्मनी ८९ एवं १४१ प्रकृतिनो सत्तास्थानक जाणवुं.

मोहनीयनी २४, परभवायु समेत अशेषनी २५, नामनी ९३ एवं १४२ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय.

मोहनीयनी २८, अशेषनी २४, नामनी ९२ एवं १४४ प्रकृतिनो सत्तास्था०
मोहनीयनी २८, अशेषनी २४, नामनी ९३ एवं १४५ प्रकृतिनो सत्तास्था०

मोहनीयनी २८, परभवायु समेत अशेषनी २५ अने नामनी ९३ एवं १४६ प्रकृतिनो सत्तास्थानक होय. एवी रीते १३३। १३४। १३६। १३७। १३८ १४०। १४१। १४२। १४४। १४५। १४६ ए अग्यार सत्तास्थानक जाणवा.

९. अनिवृत्तिबादर गुणठाणें—नव भाग थाय छे तेमां—

१ प्रथमभागे—मोहनीयनी २१, अशेषनी २४, (आहारकचतुष्क अने जिननाम विना) नामकर्मनी ८८ एवं १३३ नो प्रथम. मोहनीयनी २१, अशेषनी २४, (आहारकचतुष्क विना) अने जिननामयुक्त नामनी ८९ एवं १३४ नो बीजो. मोहनीयनी २१, अशेषनी २४, आहारकचतुष्क समेत नामनी ९२ एवं १३७ प्रकृतिनो त्रीजो. अने मोहनीयनी २१, अशेषकर्मनी २४, आहारकचतुष्क तथा जिननामयुक्त नामनी ९३ एवं १३८ प्रकृतिनो चोथो. एवी रीते १३३ १३४। १३७। १३८ ए चार सत्तास्थानक क्षायिकसम्यक्त्वीने जाणवा.

२ बीजाभागे—प्रथम भागने अंते अप्रत्याख्यानि ४, प्रत्याख्यानि ४ ए ८ प्रकृतिनो क्षय थयो तेथी मोहनीयनी १३, अशेषकर्मनी २४, (आहारकचतुष्क अने जिननाम विना) नामकर्मनी ८८ एवं १२५ प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयनी १३, अशेषनी २४, जिननाम समेत नामकर्मनी ८९ एवं १२६ प्रकृतिनो बीजो. मोहनीयनी १३, अशेषनी २४, आहारकचतुष्क समेत नामनी ९२ एवं १२९ प्रकृतिनो त्रीजो. मोहनीयनी १३, अशेषनी २४, आहारकचतुष्क अने जिननाम समेत नामकर्मनी ९३ एवं १३० प्रकृतिनो चोथो. एवी रीते १२५।१२६।१२९। १३० ए चार सत्तास्थानक क्षायिकने जाणवा.

३ त्रीजाभागे–थीणर्द्धित्रिक ३, नरकद्विक २, तिर्यंचद्विक २, एकेंद्रियादिजाति चतुष्क ४, स्थावर १, आताप १, उद्योत १, सूक्ष्म १, साधारण १ ए १६ प्रकृतिनो बीजा भागना अंते क्षय थयो तेथी मोहनीयनी १३, अशेषनी २१, नामनी ७५ एवं १०९ प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयनी १३, अशेषनी २१,

जिननामयुक्त नामनी ७६ एवं ११० प्रकृतिनो बीजो. मोहनीय १३, अशेपनी २१, आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं ११३ प्रकृतिनो त्रीजो. अने मोहनीयनी १३ अशेपनी २१, तीर्थंकरनाम अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ८० एवं ११४ प्रकृतिनो चोथो. एवी रीते १०९। ११०। ११३। ११४ ए चार सत्तास्थानक क्षायिकने जाणवा.

४ चोथा भागे—त्रीजा भागना अंते नपुंसकवेदनो क्षय यवाथी नपुंसकवेद विना मोहनीयनी १२, अशेपनी २१, नामनी ७५ एवं १०८ प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयनी १२, अशेपकर्मनी २१, अने जिननाम समेत नामकर्मनी ७६ एवं १०९ प्रकृतिनो बीजो. मोहनीयनी १२, अशेपकर्मनी २१, अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनो ७९ एवं ११२ प्रकृतिनो त्रीजो. अने मोहनीयनी १२, अशेपकर्मनी २१, जिननाम तथा आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ८० एवं ११३ प्रकृतिनो चोथो एवी रीते १०८। १०९। ११२। ११३ ए चार सत्तास्थानक क्षायिकने जाणवा.

५ पांचमां भागे–चोथा भागना अंते स्त्रीवेदनो क्षय यवाथी स्त्रीवेद विना मोहनीयकर्मनी ११, अशेपनी २१ अने नामकर्मनी ७५ एवं १०७ प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयकर्मनी ११, अशेपकर्मनी २१, जिननामयुक्त नामकर्मनी ७६ एवं १०८ प्रकृतिनो बीजो. मोहनीयनी ११, अशेपकर्मनी २१, आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ७९ एवं १११ प्रकृतिनो त्रीजो. अने मोहनीयनी ११, अशेपकर्मनी २१, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामकर्मनी ८० एवं ११२ प्रकृतिनो चोथो एवी रीते १०७। १०८। १११ ११२ ए चार सत्तास्थानक क्षायिकने जाणवा.

६ छट्ठाभागे–पांचमां भागना अंते हास्यमोहनीय १, रतिमोहनीय १, अरति १, भय १, शोक १ अने दुगंछामोहनीय १ ए छे प्रकृतिनो क्षय यवाथी हास्यपट्क विना मोहनीयनी ५, अशेपनी २१, अने नामकर्मनी ७५ एवं १०१ प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयनी ५, अशेपनी २१, अने जिननामयुक्त नामनी ७६ एवं १०२ प्रकृतिनो बीजो. मोहनीयनी ५, अशेपनी २१, आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं १०५ नो त्रीजो. अने मोहनीयनी ५, अशेपनी २१, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ८० एवं १०६ नो चोथो. एवी रीते १०१। १०२। १०५। १०६ ए चार सत्तास्थानक क्षपकने होय.

७ सातमां भागे–छट्ठा भागना अंते पुरुषवेदनो क्षय थवाथी पुरुषवेद विना मोहनीयनी ४, अशेषनी २१, नामकर्मनी ७५ एवं १०० प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयनी ४, अशेषनी २१, जिननाम समेत नामनी ७६ एवं १०१ प्रकृतिनो बीजो. मोहनीयनी ४, अशेषनी २१, आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं १०४ नो त्रीजो. अने मोहनीयनी ४, अशेषनी २१, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ८० एवं १०५ नो चोथो. एवी रीते १००।१०१।१०४।१०५ ए चार सत्तास्थानक होय.

८ आठमां भागे—सातमां भागना अंते संज्वलन क्रोधनो क्षय थवाथी संज्वलनक्रोध विना मोहनीयनी ३, अशेषनी २१, नामनी ७५ एवं ९९ प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयनी ३, अशेषनी २१, जिननामयुक्त नामनी ७६ एवं १०० प्रकृतिनो बीजो. मोहनीयनी ३, अशेषनी २१, आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं १०३ प्रकृतिनो त्रीजो. अने मोहनीयनी ३ अशेषनी २१ जिननाम तथा आहारकचतुष्क समेत नामनी ८० एवं १०४ प्रकृतिनो चोथो. एवी रीते ९९।१००।१०३।१०४ ए चार सत्तास्थानक क्षपकने जाणवा.

९ नवमां भागे–आठमां भागना अंते संज्वलनमाननो क्षय थवाथी संज्वलनमाया अने लोभ ए मोहनीयकर्मनी २, अशेषनी २१, नामनी ७५ एवं ९८ प्रकृतिनो प्रथम. मोहनीयनी २, अशेषनी २१, जिननामयुक्त नामनी ७६ एवं ९९ प्रकृतिनो बीजो. मोहनीयनी २, अशेषनी २१, आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं १०२ नो त्रीजो. अने मोहनीयनी २, अशेषनी २१, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ८० एवं १०३ प्रकृतिनो चोथो. एवी रीते ९८।९९।१०२।१०३ ए चार सत्तास्थानक क्षपकने जाणवा.

ऊपर नवभागना कहेला सत्तास्थानक क्षपकश्रेणी आश्रयी जाणवा. अने उपशमश्रेणी आश्रयी तो १३६।१३९।१४०।१४१।१४२।१४४ १४५।१४६ ए आठ सत्तास्थानक अपूर्वकरण गुणठाणे कह्या प्रमाणे उपशमसम्यक्त्विने अने क्षायिकीने १३३।१३४।१३७।१३८ एवं १२ जाणवा.

१० सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे–नवमां गुणठाणाना नवमां भागमां मोहनीयकर्मनी २ प्रकृति कही तेमांथी संज्वलनमायानो नवमां भागना अंते क्षय करवाथी दशमां गुणठाणे संज्वलन लोभनी सत्ता होय माटे मोहनीयकर्मनी १, अशेषनी २१, नामनी ७५ एवं ९७ प्रकृतिनो प्रथम. तथा संज्वलनलोभ १, अशेषनी २१, जिननामयुक्त नामनी ७६ एवं ९८ प्रकृतिनो बीजो. तथा सं-

ज्वलनलोभ १, अशेषनी २१, आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं १०१ प्रकृतिनो त्रीजो. अने संज्वलनलोभ १, अशेषनी २१, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ८०, एवं १०२ प्रकृतिनो चोथो. एवी रीते ९७।९८।१०१।१०२ ए चार सत्तास्थानक जाणवा.

दशमां गुणठाणें कहेला चार सत्तास्थानक क्षपकश्रेणी आश्रयी जाणवा अने उपशमश्रेणी आश्रयी अपूर्वकरण गुणठाणें कह्या प्रमाणे जाणवा.

११ उपशांतमोहगुणठाणें—आठमां अपूर्वकरण गुणठाणें कह्या प्रमाणें १३३।१३४ १३६।१३७।१३८। १३९। १४०। १४१।१४२।१४४।१४५।१४६ ए बार सत्तास्थानक जाणवा.

१२ क्षीणमोहगुणठाणें—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, आयु १, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, अने नामकर्मनी ७५ एवं ९६ प्रकृतिनो प्रथम. अशेषकर्मनी २१, जिननाम समेत नामकर्मनी ७६ एवं ९७ प्रकृतिनो बीजो. अशेषनी २१, अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं १०० प्रकृतिनो त्रीजो. अशेषनी २१, जिननाम तथा आहारकचतुष्क समेत नामनो ८० एवं १०१ प्रकृतिनो चोथो. ए गुणठाणाना चरिम एक समय थांकतां निद्रा अने प्रचला ए बे प्रकृतिनो क्षय थाय तेथी चरिमसमयमां ज्ञानावरणीय ५, (पांच निद्रा विना) दर्शनावरणीयनी ४, वेदनीय २, आयु १, गोत्र २ अने अंतरायनी ५ ए अशेषनी १९ अने नामनी ७५ एवं ९४ प्रकृतिनो पांचमो. अशेषनी १९ अने जिनयुक्त नामनी ७६ एवं ९५ प्रकृतिनो छठ्ठो. अशेषनी १९ अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९ एवं ९८ प्रकृतिनो सातमो. अने अशेषनी १९, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ८० एवं ९९ प्रकृतिनो आठमो. एवी रीते ९६।९७।१००।१०१ ९४।९५।९८।९९ ए आठ सत्तास्थानक जाणवा.

१३ सयोगीकेवलीगुणठाणें—बारमां गुणठाणांना चरिमसमयमां ज्ञानावरणीयनो ५, दर्शनावरणीयनो ४ अने अंतरायनो ५ एवं १४ प्रकृतिनो सर्वथा क्षय थयो तेथी ए १४ प्रकृति विना वेदनीय कर्मनी २, आयु १, गोत्र २ ए अशेषकर्मनी ५ अने नामकर्मनी ७५ एवं ८० प्रकृतिनो प्रथम. अशेषनी ५ अने जिननाम सहित नामकर्मनी ७६ एवं ८१ प्रकृतिनो बीजो. अशेषनी ५ अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ७९. एवं ८४ प्रकृतिनो त्रीजो. अशेषनी ५, जिननाम अने आहारकचतुष्क समेत नामनी ८० एवं ८५ प्रकृतिनो चोथो. एवी रीते ८०।८१।८४।८५ ए चार सत्तास्थानक जाणवा.

४ अयोगीगुणठाणें—छेला बे समय थाकतां तेरमां गुणठाणें कया प्रमाणें चार सत्तास्थानक जाणवा. अने अंतिमनी एक समय थाकती होय तेवारे तेमना अंतमें देवद्विक २, वैक्रियचतुष्क ४, औदारिकचतुष्क ४, तैजसशरीर १, कार्मणशरीर १, तैजसबंधन १, कार्मणबंधन १, तैजससंघातन १, कार्मणसंघातन १, संस्थान ६, संघयण ६, वर्णादि २०, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, खगतिद्विक २, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, दुस्वर १, दौर्भाग्य १, अयशःकीर्त्ति १, अनादेय १, निर्माण १, प्रत्येक १, अपर्याप्त १, मनुष्यानुपूर्वी १, नीचगोत्र १, वेदनीय १, अने आहारकचतुष्क ४ एवं ७३ प्रकृतिनो क्षय होवाथी अंतिम समयमां मनुष्यगति १, मनुष्यायु १, पंचेंद्रियजाति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सौभाग्य १, आदेय १, यशःकीर्त्ति १, वेदनीयकर्म १, ऊंचगोत्र १ एवं ११ नो सामान्यकेवलो आश्रयी प्रथम अने जिननाम समेत १२ प्रकृतिनो तीर्थंकर भगवान आश्रयी बीजो एवी रीते ११। १२ ए बे सत्तास्थानक जाणवा.



गुणठाणा आश्रयी अशेप (छकर्म) मोहनीय अने नामकर्म–

नंबर	गुणठाणाना नाम		अशेपकर्मना सत्तास्थानक		मोहनीयकर्मना सत्तास्थानक		नामकर्मना सत्तास्थानक	
			सत्तास्था०	संख्या	सत्तास्था०	संख्या	सत्तास्था०	संख्या
१	मिथ्यात्व		२३।२४ २५	३	२६।२७ २८	३	७८।८० ८६।८८ ८९।९२	६
२	सास्वादन		२४।२५	२	२८	१	८८।९२	२
३	मिश्र		२४।२५	२	२४।२७ २८	३	८८।९२	२
४	अविरतिसम्यक्दृष्टि		२४।२५	२	२१।२२ २३।२४ २८	५	८८।८९ ९२।९३	४
५	देशविरति		२४।२५	२	२१।२२।२३ २४।२८	५	८८।८९ ९२।९३	४
६	प्रमत्त		२४।२५	२	२१।२२।२३ २४।२८	५	८८।८९ ९२।९३	४
७	अप्रमत्त		२४।२५	२	२१।२२।२३ २४।२८	५	८८।८९ ९२।९३	४
८	अपूर्वकरण	उपशमिक	२४।२५	२	२१।२४ २८	३	८८।८९ ९२।९३	४
		क्षपक	२४	१	२१	१	८८।८९ ९२।९३	४
९	अनिवृत्तिबादर	उपशमिक	२४।२५	२	२१।२४ २८	३	८८।८९ ९२।९३	४
		क्षपक	२१।२४	२	२।३।४।५ ११।१२ १३।२१	८	७५।७६ ७९।८०	४
१०	सूक्ष्मसंपराय	उपशमिक	२४।२५	२	२१।२४ २८	३	८८।८९ ९२।९३	४
		क्षपक	२१	१	१	१	७५।७६ ७९।८०	४
११	उपशांत मोह		२४।२५	२	२१।२४ २८	३	८८।८९ ९२।९३	४
१२	क्षीणमोह		१९।२१	२	०	०	७५।७६ ७९।८०	४
१३	सयोगीकेवली		५	१	०	०	७५।७६ ७९।८०	४
१४	अयोगीकेवली		३।५	२	०	०	७५।७६ ७९।८० ८।९	६

આઠકર્મની ઉત્તરપ્રકૃતિના સત્તાસ્થાનક

સત્તાસ્થાનકના અંક	ભાંગા
૧૨૭।૧૨૮।૧૨૯।૧૩૦।૧૩૧।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૩।૧૪૪।૧૪૮	૧૫
૧૪૦।૧૪૧।૧૪૪।૧૪૮	૪
૧૩૬।૧૩૭।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૩।૧૪૪।૧૪૮	૮
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૫।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૩
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૫।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૩
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૫।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૩
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૫।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૩
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૨
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૭।૧૩૮	૪
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૨
૯૮।૯૯।૧૦૦।૧૦૧।૧૦૨।૧૦૩।૧૦૪।૧૦૫।૧૦૬।૧૦૭।૧૦૮।૧૦૯।૧૧૦।૧૧૧।૧૧૨ ૧૨૩।૧૨૪।૧૨૫।૧૨૬।૧૨૯।૧૩૦।૧૩૩।૧૩૪।૧૩૭।૧૩૮	૨૫
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૨
૯૭।૯૮।૧૦૧।૧૦૨	૪
૧૩૩।૧૩૪।૧૩૬।૧૩૭।૧૩૮।૧૩૯।૧૪૦।૧૪૧।૧૪૨।૧૪૪।૧૪૫।૧૪૬	૧૨
૯૪।૯૫।૯૬।૯૭।૯૮।૯૯।૧૦૦।૧૦૧	૮
૮૦।૮૧।૮૪।૮૫	૪
૮૦।૮૧।૮૪।૮૫।૧૧।૧૨	૬

१ नरकगति मार्गणाए—१३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ १४० । १४१ । १४२ । १४३ । १४४ । १४५ ए तेर सत्तास्थानक होय तेमां १३३ १३४ । १३७ । १३८ ए चार सत्तास्थानक क्षायिकसम्यक्त्वीने, १३५ नो वेदकने, १३६ नो वेदकने, १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ ए छ मिथ्यादृष्टि उपशमिक अने क्षयोपशमिकने, तथा १४३ प्रकृतिनो सत्तास्थानक मिथ्यात्व अने मिश्रने होय एवी रीते तेर सत्तास्थानक प्रथमना चार गुणठाणे कह्या प्रमाणे जाणवा. ए तेर सत्तास्थानक नामकर्मनी ९२ । ८९ । ८८ प्रकृतिनी सत्ता गणवाथी थाय छे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए—१३३ । १३४ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० १४१ । १४२ । १४३ । १४४ । १४५ । १२७ । १२८ । १२९ । १३० । १३१ ए १७ सत्तास्थानक होय तेमां १३३ । १३४ ए बे सत्तास्थानक सम्यक्दृष्टिने मोहनीयकर्मनी २१ । २२ प्रकृतिनी सत्तावालाने. १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ १४४ । १४५ ए आठ सत्तास्थानक मिथ्यादृष्टिने मोहनीयकर्मनी २६ । २७ । २८ प्रकृतिनी सत्तावालाने. १४० । १४१ । १४४ । १४५ ए चार सत्तास्थानक सास्वादन गुणठाणे मोहनीयनी २८ प्रकृतिनी सत्तावालाने. अने मिश्रगुणठाणे मोहनीयकर्मनी २४ । २७ । २८ प्रकृतिनी सत्तावाला मिश्रदृष्टिने. अविरतिसम्यक्दृष्टि तथा देशविरतिने मोहनीयकर्मनी २१ । २४ । २८ ए प्रकृतिनी सत्तावालाए—१२७ । १२८ । १२९ । १३० । १३१ । १४२ । १४३ ए सात सत्तास्थानक केवलमिथ्यादृष्टिने होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाए—११ । १२ । ८० । ८१ । ८४ । ८५ । ९४ । ९५ । ९६ ९७ । ९८ । ९९ । १०० । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ १०८ । १०९ । ११० । १११ । ११२ । ११३ । ११४ । ११५ । ११६ । ११९ १३० । १३१ । १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ १४२ । १४३ । १४४ । १४५ । १४६ एवं ४६ सत्तास्थानक चौदगुणठाणे कह्या प्रमाणे जाणवा. तेमां १३० । १३१ ए बे एकेन्द्रियथी आवेल मिथ्यात्वीने वैक्रियाष्टक विना नामकर्मनी ८० प्रकृतिनी सत्तावाला पूर्णपर्याप्ति थया पछी अंतर्मुहूर्त सुधी होय.

१ देवगति मार्गणाए १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ १४० । १४१ । १४२ । १४३ । १४४ । १४५ । १४६ ए चौद सत्तास्थानक प्रथमना चार गुणठाणे कह्या प्रमाणे जाणवा ए १४ सत्तास्थानक नामकर्मनी ९३ । ९२ ८९ । ८८ प्रकृतिनी सत्ता गणवाथी थाय छे.

१३ एकेन्द्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं १३ मार्गणाए—

१२७। १२८। १२९। १३०। १३१। १३६। १३७। १३८। १३९। १४०। १४१ १४२। १४३। १४४। १४५ ए पंदर सत्तास्थानक मोहनीयकर्मनी २८। २७। २६ प्रकृतिनी सत्तावाला मिथ्यादृष्टिने अने कोईक सास्वादनी जीवने जाणवा. तथा मति-अज्ञान अने श्रुतअज्ञानमां प्रथमना त्रणगुणठाणें मोहनीयकर्मनी २४ प्रकृतिनी सत्ता-वालाने पण जाणवा.

३ पंचेंद्रिय, त्रसकाय अने भव्य ए त्रण मार्गणाएं—चौदगुणठाणें कहेला ४८ सत्तास्थानक होय. तेमां पंचेंद्रिय अने त्रसकायमां तेउकाय अने वायुकायना भवथी मरीने विकलेंद्रिय अने तिर्यंच पंचेंद्रिय पणामां उत्पन्न थाय त्यां सुधी नामकर्मनी २६ प्रकृतिना उदय पर्यंत अपर्याप्तावस्थायें १२७। १२८ ए बे सत्तास्थानक जाणवा.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—१०७। १०८। १०९। ११०। १११। ११२। ११३ ११४। १२५। १२६। १२९। १३०। १३१। १३३। १३४। १३५ १३६। १३७ १३८। १३९। १४०। १४१। १४२। १४३। १४४। १४५। १४६ ए २७ सत्ता-स्थानक मिथ्यात्व गुणठाणाथी यावत् अनिवृत्तिबादर गुणठाणानां पांचमां भाग सुधी कह्या प्रमाणे जाणवा.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—प्रथम गुणठाणाथी लई नवमां गुणठाणाना चोथाभाग सुधी १०८। १०९। ११०। १११। ११२। ११३। ११४। १२५। १२६। १२९। १३० १३१। १३३। १३४। १३५। १३६। १३७। १३८। १३९। १४०। १४१। १४२ १४३। १४४। १४५। १४६ ए २६ सत्ता होय एटलुं विशेष के पुरुषवेदमां १०७ प्रकृतिना स्थानक सहित २७ होय अने स्त्रीवेदमां १०७ विना २६ स्थानक होय. कारण पुरुषवेदनो उदय नवमां गुणठाणाना पांचमां भाग सुधी होवाथी १०७ प्रकृ-तिनी सत्ता थाय छे अने स्त्रीवेदनो उदय नवमां गुणठाणाना चोथा भाग सुधी थाय तेथी १०७ प्रकृतिनो सत्तास्थानक न होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—प्रथम गुणठाणाथी लई नवमां गुणठाणाना बीजा भाग सुधी कहेला १०९। ११०। १११। ११२। ११३। ११४। १२५। १२६। १२७। १२८ १२९। १३०। १३१। १३३। १३४। १३५। १३६। १३७। १३८। १३९। १४० १४१। १४२। १४३। १४४। १४५। १४६। ए २७ सत्तास्थानक जाणवा.

२ मनोयोग अने वचनयोग ए बे मार्गणाएं—प्रथमना तेरगुणठाणें कहेला ८० ८१। ८४। ८५। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००। १०१। १०२। १०३ १०४। १०५। १०६। १०७। १०८। १०९। ११०। १११। ११२। ११३। ११४ १२५। १२६। १२९।१३०।१३१। १३३। १३४। १३५।१३६। १३७। १३८। १३९ १४०। १४१। १४२। १४३। १४४। १४५। १४६ ए ४४ सत्तास्थानक जाणवा.

१ क्रोध मार्गणाएं—प्रथम गुणठाणाथी लई नवमां गुणठाणाना सातमां भाग सुधी कहेला १०० । १०१ । १०२ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ । १०८ । १०९ ११० । १११ । ११२ । ११३ । ११४ । १२५ । १२६ । १२७ । १२८ । १२९ । १३० १३१ । १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ १४३ । १४४ । १४५ । १४६ ए ३५ सत्तास्थानक जाणवा.

१ मान मार्गणाएं—प्रथम गुणठाणाथी लई नवमां गुणठाणाना आठमां भागसुधी कहेला ९९ । १०० । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ । १०८ १०९ । ११० । १११ । ११२ । ११३ । ११४ । १२५ । १२६ । १२७ । १२८ । १२९ १३० । १३१ । १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ १४२ । १४३ । १४४ । १४५ । १४६ ए ३७ सत्तास्थानक जाणवा.

१ माया मार्गणाएं—प्रथम गुणठाणाथी लई नवमांगुणठाणाना नवमां भाग सुधी कहेला ९८ । ९९ । १०० । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ १०८ । १०९ । ११० । १११ । ११२ । ११३ । ११४ । १२५ । १२६ । १२७ १२८ । १२९ । १३० । १३१ । १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ १४० । १४१ । १४२ । १४३ । १४४ । १४५ । १४६ ए ३८ सत्तास्थानक जाणवा.

१ लोभ मार्गणाएं—प्रथमना दशगुणठाणे कहेला ९७ । ९८ । ९९ । १०० । १०१ १०२ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ । १०८ । १०९ । ११० । १११ ११२ । ११३ । ११४ । १२५ । १२६ । १२७ । १२८ । १२९ । १३० । १३१ । १३३ १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४३ । १४४ १४५ । १४६ ए ३९ सत्तास्थानक जाणवा.

५ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अवधिदर्शन ए ५ मार्गणाएं—चोथा गुणठाणाथी बारमां गुणठाणा सुधी कहेला ९४ । ९५ । ९६ । ९७ ९८ । ९९ । १०० । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ । १०८ १०९ । ११० । १११ । ११२ । ११३ । ११४ । १२५ । १२६ । १२९ । १३० १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ १४४ । १४५ । १४६ ए ३८ सत्तास्थानक जाणवा.*

---

* अवधिदर्शनमां कोईक आचार्यना मतथी मिश्र गुणठाणाथी लई बारमां गुणठाणा सुधीना दश गुणठाणा पण होय छे तेमज 'प्रकरणरत्नाकर'ना पृष्ठ ८६५ मां छठ्ठा कर्मग्रन्थनी ५६ मी गाथाना अर्थमां कह्युं छे के मिश्र, अविरति अने देशविरति ए त्रण गुणठाणे अज्ञान अने अवदर्शन एवं छे उपयोग होय. तेथी मोहनीयनी २३ प्रकृतिनी सत्तावाळाने १४३ नो सत्तास्थानक पण होवुं जोइये. पछी बहुश्रुत कहे ते खरं.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाए—तेरमा अने चौदमा गुणठाणे कहेला ११ । १२ । ८० । ८१ । ८४ । ८५ ए छ सत्तास्थानक जाणवा.

१ विभंगज्ञान मार्गणाए—प्रथमना त्रण गुणठाणे कहेला १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४३ । १४४ । १४५ ए दश सत्तास्थानक मोहनीयकर्मनी २८ । २७ । २६ । २४ तथा गोत्रकर्मनी २ । १ अने नामकर्मनी ९३ । ८९ । ८८ प्रकृतिनी सत्तास्थाने होय.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाए—छट्ठा गुणठाणाथी मांडी नवमागुणठाणा सुधीना कहेला ९८ । ९९ । १०० । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ १०५ । १०६ । १०७ । १०८ । १०९ । ११० । १११ । ११२ । ११३ । ११४ १२५ । १२६ । १२७ । १३० । १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ । १४६ एवं ३४ सत्तास्थानक जाणवा.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाए—प्रमत्त अने अप्रमत्त गुणठाणे कहेला १३३ । १३४ १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ १४६ ए तेर सत्तास्थानक जाणवा.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए—क्षपकश्रेणीवालाने ९७ । ९८ । १०१ । १०२ ए चार सत्तास्थानक, उपशमश्रेणीवालाने १३३ । १३४ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ । १४६ ए बार एवं १६ सत्तास्थानक जाणवा.

१ यथाख्यात मार्गणाए—क्षपकश्रेणीवालाने बारमा, तेरमा, अने चौदमा गुणठाणे कहेला ११ । १२ । ८० । ८१ । ८४ । ८५ । ९४ । ९५ । ९६ । ९७ । ९८ ९९ । १०० । १०१ ए चौद उपशमश्रेणीवालाने अग्यारमा गुणठाणे कहेला १३३ १३४ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ १४६ ए बार एवं छव्वीश सत्तास्थानक जाणवा.

१ देशविरति मार्गणाए—पांचमा गुणठाणे कहेला १३३ । १३४ । १३५ । १३६ १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ । १४६ ए तेर सत्तास्थानक.

१ अविरति मार्गणाए—मिथ्यात्वगुणठाणे—१२७ । १२८ । १२९ । १३० । १३१ ए पांच. चोथे गुणठाणे—मोहनीयनी २१ । २२ । २८ प्रकृतिनी सत्तावालाने १३३ १३४ । १३५ । १४६ ए चार. मिथ्यात्व अने अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणठाणे—१३८ १४२ ए बे. पहेला, बीजा अने चोथा गुणठाणे—१३६ । १३७ । १३९ ए त्रण. प्रथमना चार गुणठाणे—१४० । १४१ । १४४ । १४५ ए चार. अने मिथ्यात्व तथा मिश्रगुणठाणे—१४३. एवं १९ सत्तास्थानक जाणवा.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—प्रथमना बार गुणठाणें कहेला ९४। ९५। ९६। ९७ ९८।९९।१००।१०१।१०२।१०३।१०४।१०५।१०६। १०७। १०८ १०९।११०।१११।११२।११३।११४। १२५। १२६। १२९। १३०। १३१ १३३। १३४। १३५। १३६। १३७। १३८। १३९। १४०। १४१। १४२। १४३ १४४। १४५। १४६ एवं चालीश सत्तास्थानक होय.

२ अचक्षुदर्शन अने संज्ञी ए बे मार्गणाएं—प्रथमना बार गुणठाणें कहेला. ९४।९५।९६।९७।९८।९९।१००।१०१।१०२। १०३।१०४। १०५। १०६ १०७।१०८।१०९।११०। १११। ११२। ११३। ११४। १२५। १२६। १२७ १२८। १२९। १३०। १३१। १३३। १३४। १३५। १३६। १३७। १३८। १३९ १४०। १४१। १४२। १४३। १४४। १४५। १४६ एवं ४२ सत्तास्थानक जाणवा. तेउकाय अने वाउकायना भवने विषे मनुष्यद्विक अने ऊंचगोत्र ए त्रण प्रकृतिने ख-पावीने संज्ञीपंचेंद्रिय तिर्यंचपणामां उपज्या पण हजु पर्याप्ति पूर्ण करी नथी त्यां सुधी कोईक जीव आश्रयी १२७। १२८ ए बे सत्तास्थानक होय.

२ काययोग अने आहारी मार्गणाएं—प्रथमना तेर गुणठाणें कहेलां ८०। ८१ ८४। ८५। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००। १०१। १०२। १०३। १०४ १०५। १०६। १०७। १०८। १०९। ११०। १११। ११२। ११३। ११४। १२५। १२६। १२७। १२८। १२९। १३०। १३१। १३३। १३४। १३५। १३६। १३७ १३८। १३९।१४०।१४१।१४२। १४३।। १४४। १४५। १४६ ए ४६ सत्तास्थानक.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—अविरति मार्गणामां कह्या प्रमाणें १९ सत्तास्थानक जाणवा.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—भुवनपति १०, परमाधामी १५, तिर्यग्जृंभक १०, व्यं-तर ८, वाणव्यंतर ८, ज्योतिषी १०, सौधर्म १, ईशान १, अने सौधर्मादिनो एक किल्विषी एवं ६४ प्रकारना देवतामांथी तेजोलेश्यावंत देव चवीने पृथ्वी, अप्, अने वनस्पतिमां उत्पन्न थाय त्यारे अपर्याप्तावस्थाएं तेजोलेश्या होय. अने पर्याप्ता थया पछी तेजोलेश्या न होय. तेथी पृथ्वीयादिक आश्रयी १३०।१३१[१] ए बे सत्तास्थानक होय. १३३।१३४।१३५। १३६। १३७। १३८। १३९। १४० १४१। १४२। १४३ १४४। १४५। १४६ ए १४ सत्तास्थानक पंचेंद्रियतिर्यंच, मनुष्य अने देवता ए त्रण गतिना तेजोलेश्यावंत जीवोमां होय. एवं १६ सत्तास्थानक जाणवा.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—प्रथमना सात गुणठाणें कहेला १३३। १३४। १३५

---

१ देव थकी एकेन्द्रियमां उपजे तेथी १३०,१३१ ए बे सत्तानो संभव थयो.

१३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४३ । १४४ । १४५ । १४६ ए १४ सत्तास्थानक पंचेंद्रिय-तिर्यंच, मनुष्य, त्रीजा, चोथा अने पांचमां देवलोकना नवलोकांतिक अने बे किल्बिषीमां जाणवा.

१ शुक्लेश्या मार्गणाएं—८०।८१ । ८४ । ८५ ।९४।९५ ।९६। ९७ । ९८ ।९९ १०० । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ । १०८ । १०९ । ११० १११ । ११२ । ११३ । ११४ । १२५ । १२६ । १२९ । १३० । १३३ । १३४ । १३५ १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४३ । १४४ । १४५ १४६ ए ४३ सत्तास्थानक होय. तेमां १२९ । १३० प्रकृतिना बे सत्तास्थानक एकेन्द्रियमायोग्य समजवा नहीं परंतु क्षपकश्रेणीवाला मनुष्य पंचेंद्रियने नवमां गुणठाणाना बीजा भागे मोहनीयनी १३, अशेपनी २४, अने नामकर्मनी ९२ । ९३ प्रकृतिनी सत्तायें गणतां १२९ । १३० ए बे सत्तास्थानक जाणवा.

१ अभव्य मार्गणाएं—मोहनीयनी २६ प्रकृतिनी सत्तावाला अनादिमिथ्यात्वी जीवोने १२७। १२८। १२९ । १३०। १३१ । १३६ । १३७। १३८ । १३९ ए नव सत्ता०

१ उपशम मार्गणाएं—मोहनीय कर्मनी २४ । २८ प्रकृतिनी सत्तावाला उपशमसम्यक्त्वी जीवने १३६ । १३७ । १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ । १४६ ए आठ सत्तास्थानक जाणवा.

१ क्षायिक मार्गणाएं—चोथागुणठाणाथी लई चौदमांगुणठाणाना चरिमसमय सुधीना कहेला ११ । १२ । ८० । ८१ । ८४ । ८५ । ९४ । ९५ । ९६ । ९७ । ९८ । ९९ १०० । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ । १०५ । १०६ । १०७ । १०८ । १०९ । ११० १११ । ११२ । ११३ । ११४ । १२५ । १२६ । १२९ । १३० । १३३ । १३४ । १३७ १३८।१३९ ए ३६ सत्तास्थानक जाणवा.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—चोथागुणठाणाथी लई सातमां गुणठाणा सुधीना कहेला १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ । १४२ । १४४ । १४५ १४६ ए १२ सत्तास्थानक जाणवा.

१ मिश्र मार्गणाएं—मिश्रगुणठाणें कहेला १३६ । १३७ । १३९ । १४० । १४१ १४३ । १४४ । १४५ ए आठ सत्तास्थानक जाणवा.

१ सास्वादन मार्गणाएं—सास्वादनगुणठाणें कहेला १४० । १४१ । १४४ । १४५ ए चार सत्तास्थानक जाणवा.

१ अनाहारी मार्गणाएं—मिथ्यात्वगुणठाणांना १२७ । १२९ । १३० । १४०।१४१

ए ५. पहेला बीजा अने चोथा गुणठाणाना १४०।१४४ ए बे. मिथ्यात्व अने अविरति-सम्यग्दृष्टि गुणठाणाना १३६।१३७।१३८।१३९।१४१ ए पांच. चोथा गुणठाणाना १३३।१३४।१३५।१४५ ए चार. तेरमा अने चौदमा गुणठाणाना ८०।८१।८४ ८५ ए चार. अने चौदमागुणठाणाना ११।१२ ए बे. एवं २२ सत्ता० जाणवा.

---

७७ बासटमार्गणाने विषे मूल आठकर्मना संवेधभांगानुं द्वार–

मूल आठकर्मना सात संवेधभांगा कहे छे–

१—आयुर्बंधकाले आठ कर्मनो बंध, आठ कर्मनो उदय अने आठ कर्मनी सत्ता ए प्रथम भांगो मिश्र विना आठमा गुणठाणा सुधी होय.

२—सात कर्मनो बंध, आठ कर्मनो उदय अने आठ कर्मनी सत्ता ए बीजो भांगो प्रथमना नवगुणठाणा सुधी होय.

३—छ कर्मनो बंध, आठ कर्मनो उदय अने आठ कर्मनी सत्ता ए त्रीजो भांगो दशमागुणठाणे होय.

४—एक कर्मनो बंध, सात कर्मनो उदय अने आठकर्मनी सत्ता ए चोथो भांगो अग्यारमा गुणठाणे होय.

५—एक कर्मनो बंध, सात कर्मनो उदय अने सात कर्मनी सत्ता ए पांचमो भांगो बारमा गुणठाणे होय.

६—एक कर्मनो बंध, चार कर्मनो उदय अने चार कर्मनी सत्ता ए छट्ठो भांगो तेरमा गुणठाणे होय.

७—चार कर्मनो उदय अने चार कर्मनी सत्ता ए सातमो भांगो चौदमा गुणठाणे होय. अहीं बंधनो अभाव होवाथी एने बंधशून्य जाणवो.

५ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, भव्य, शायक ए पांच मार्गणाए—७ भांगा.

३२ नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, नपुंसक, क्रोध, मान, माया, लोभ, मत्यज्ञान, श्रुतअज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, अभव्य, सास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं ३२ मार्गणाए—आठनो बंध, आठनो उदय, आठनी सत्ता ए प्रथम भांगो. ७ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता ए बीजो भांगो.

एवं बे भांगा होय. परन्तु विशेषे लोभ मार्गणामां ६ नो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता सहित ३ भांगा लेवा.

५ मनयोग, शुक्ललेश्या, आहारी ए पांच मार्गणाए—प्रथमना छ भांगा होय.

८ मत्यादिज्ञानचार, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, संज्ञी ए आठ मार्गणाए—८ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता ए प्रथम भांगो, आयु विना ७ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता ए बीजो भांगो. ६ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता ए त्रीजो भांगो. १ नो बंध, ७ नो उदय अने ८ नी सत्ता ए चोथो भांगो. अने १ नो बंध, ७ नो उदय अने ७ नी सत्ता ए पांचमो भांगो एवं ५ भांगा होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाए—अंतिमना बे भांगा होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए—आयु अने मोहनीय विना छनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता ए एक भांगो होय.

१ यथाख्यात मार्गणाए—अंतिमना चार भांगा होय.

१ उपशम मार्गणाए—आयु विना ७ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता ए प्रथम. मोहनीय विना ६ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता ए बीजो. १ नो बंध, ७ नो उदय अने ८ नी सत्ता ए त्रीजो एवं त्रण भांगा होय.

२ मिश्र अने अनाहारी[1] मार्गणाए—आयुकर्म विना ७ नो बंध, ८ नो उदय अने ८ नी सत्ता ए एक भांगो होय.

---

७८ बासठमार्गणाने विषे ज्ञानावरणीय अने अंतरायकर्मनी प्रकृतिना संवेधभांगानुं द्वार—

ज्ञानावरणीय अने अंतरायकर्मनी प्रकृतिना संवेधभांगा कहे छे—

१—पांच प्रकृतिनो बंध, पांच प्रकृतिनो उदय अने पांच प्रकृतिनी सत्ता ए प्रथम भांगो प्रथमना दशगुणठाणा पर्यंत होय.

२—अग्यारमां अने बारमां गुणठाणे बंध न होवाथी बंधशून्य, पांचप्रकृतिनो उदय अने पांचप्रकृतिनी सत्ता ए बीजो भांगो होय.

४० नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेन्द्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रि

---

१ अनाहारीमां बीजो, तथा तेरमां गुणठाणे कहेलो छठ्ठो, अने चौदमां गुणठाणे कहेलो सातमो एवं ३ भांगा होय.

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रणवेद, कषायचार, त्रण अज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, देशविरति, अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, अभव्य, क्षयोपशम, मिश्र, शास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी, अनाहारी एवं ४० मार्गणाएं—पांचनो बंध, पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता ए प्रथम भांगो लाभे.

१९ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, प्रथमना चार ज्ञान, त्रणदर्शन, शुक्लेश्या, भव्य, उपशम, क्षायिक, संज्ञी, आहारी एवं १९ मार्गणाएं—बे भांगा लाभे.

२ केवलज्ञान, केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—घातिकर्मना क्षय होवाथी भांगा न लाभे.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता ए बीजो भांगो लाभे.



७९ बासठमार्गणाने विषे दर्शनावरणीयनी प्रकृतिना संवेधभांगानुं द्वार—

दर्शनावरणीयनी प्रकृतिना संवेधभांगा कहे छे—

१—नव प्रकृतिनो बंध, चार प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए प्रथम भांगो जाणवुं.

२—नव प्रकृतिनो बंध, निद्रा समेत पांच प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए बीजो भांगो जाणवुं.

३—छे प्रकृतिनो बंध, चार प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए त्रीजो भांगो जाणवुं.

४—छे प्रकृतिनो बंध, पांच प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए चोथो भांगो जाणवुं.

५—चार प्रकृतिनो बंध, चार प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए पांचमो भांगो जाणवुं.

६—चार प्रकृतिनो बंध, निद्रा समेत पांच प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए छट्ठो भांगो जाणवुं.

७—चार प्रकृतिनो बंध, चार प्रकृतिनो उदय अने छे प्रकृतिनी सत्ता ए सातमो भांगो जाणवुं.

८—चार प्रकृतिनो उदय, नव प्रकृतिनी सत्ता ए आठमो भांगो होय.

९-पांच प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए नवमो भांगो जाणवुं.
१०-चार प्रकृतिनो उदय अने छ प्रकृतिनी सत्ता ए दशमो भांगो जाणवुं.
११-चार प्रकृतिनो उदय अने चार प्रकृतिनी सत्ता ए अग्यारमो भांगो.
१२-क्षपकसाधुने क्षीणमोहने विषे निद्रानो उदयमाने तेना मते-चार प्रकृतिनो बंध, पांच प्रकृतिनो उदय अने छ प्रकृतिनी सत्ता ए बारमो भांगो.
१३-बंधना अभावे पांच प्रकृतिनो उदय अने छ प्रकृतिनी सत्ता ए तेरमो.

ए तेर भांगाओमां प्रथमना बे भांगा पहेला अने बीजा गुणठाणे, त्रीजो अने चोथो भांगो मिश्रगुणठाणाथी लई अपूर्वकरणगुणठाणाना प्रथम भाग सुधी होय, पांचमो अने छठो भांगो आठमां गुणठाणाना बीजा भागथी लई अग्यारमां गुणठाणा सुधी उपशम श्रेणीवाळाने होय. सातमो भांगो नवमां गुणठाणाना बीजा भागथी लई दशमां गुणठाणा सुधी क्षपकश्रेणी वाळाने होय, आठमो अने नवमो भांगो अग्यारमां गुणठाणे होय. दशमो भांगो क्षीणमोहना द्विचरिम समयना प्रथमसमयमां होय. अग्यारमो भांगो क्षीणमोहना अंतिम समयमां होय. मतांतरे-बारमो भांगो नवमां गुणठाणाथी लई दशमां गुणठाणाना अंत सुधी होय. अने तेरमो भांगो बारमां गुणठाणाना द्विचरिम समय सुधी होय.

१० नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, अनाहारी[1] ए दश मार्गणाए-पहेला अने बीजा गुणठाणे ९ नो बंध, ४ नो उदय अने ९ नी सत्ता ए प्रथम भांगो. तथा निद्रानो उदय गणिये तेवारे नवनो बंध, एक निद्रा सहित पांचनो उदय, अने नवनी सत्ता ए बीजो भांगो. तथा त्रीजे गुणठाणे थीणद्धित्रिकनो बंध टळे तेवारे उपरना गुणठाणे छ प्रकृतिनो बंध, चार प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता ए त्रीजो भांगो. तथा छनो बंध, निद्रा सहित पांचनो उदय अने नवनी सत्ता ए चोथो भांगो एवं ४ भांगा जाणवा.

१२ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, मनयोग, चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन, शुक्लले-

---

१ 'कर्मप्रकृत्यादिविचारपत्रक' अने 'बंधस्वामित्वआदिविचार'मां अनाहारी मार्गणाए चार भांगाना आंक मांडेला छे ते बरोबर नथी कारण के भवांतरालमां अनाहारीपणुं होय छे. त्यां तो निद्रानो उदय बिलकुल नथी माटे नव प्रकृतिनो बंध, चार प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता. तथा छ प्रकृतिनो बंध, चार प्रकृतिनो उदय अने नव प्रकृतिनी सत्ता. ए बे भांगाज संभवे, पण बहुश्रुत कहे ते खरूं.

श्या, भव्य, संज्ञी, आहारी एवं १२ मार्गणाएं-अग्यार अथवा मतांतरे-तेर भांगा लाभे.

१६ एकेंद्रियादिजाति चार, पृथ्वीयादिकाय पांच, त्रणअज्ञान, अभव्य, शास्वादन, मिथ्यात्व, असंज्ञी एवं १६ मार्गणाएं-प्रथमना बे भांगा लाभे.

७ त्रणवेद अने चारकषाय एवं ७ मार्गणाएं-नवना बंधना बे भांगा. तथा छेना बंधना बे भांगा, तथा चारना बंधना उपशमश्रेणीना बे भांगा अने क्षपकने नवमां गुणठाणाना बीजाभागथी दशमां गुणठाणाना अंत सुधीनो कहेलो एक भांगो. एवं सात भांगा. अथवा मतांतरे-क्षपकने पण निद्रानो उदय गणे तेवारे चारनो बंध. निद्रा अथवा प्रचलानो उदय लेतां पांच प्रकृतिनो उदय अने नवमां गुणठाणाना प्रथम भागे क्षपकवालाने थीणद्धित्रिकनी सत्ता टले माटे नवमांना बीजा भागथी लई दशमांना अंत सुधी ४ नो बंध, ५ नो उदय, अने ६नी सत्ता भेगी गणतां आठ भांगा लाभे.

५ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अवधिदर्शन एवं ५ मार्गणाएं-कम्मपयडीना मते-११ भांगा. अथवा अन्य आचार्यना मते-१३ भांगा पहेला अने बीजागुणठाणे नव प्रकृतिना बंधना कह्या तिहां बे भांगा वर्जीने बाकीना कम्मपयडीना मते-नव भांगा. अथवा अन्य आचार्यना मते-अग्यार भांगा लाभे.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं-दर्शनावरणीयनो सर्वथा क्षय थयो छे माटे कोई भांगो न लाभे.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं-छेनो बंध, चारनो उदय अने ९ नी सत्ता ए प्रथम. तथा छेनो बंध, पांचनो उदय अने ९ नी सत्ता ए बीजो. तथा ४ नो बंध, ४ नो उदय अने नवनी सत्ता ए त्रीजो. तथा ४ नो बंध, ५ नो उदय अने ९ नी सत्ता ए चोथो. क्षपकश्रेणिये-४ नो बंध, ४ नो उदय अने छेनी सत्ता ए पांचमो. अथवा मतांतरे-४ नो बंध, पांचनो उदय अने छेनी सत्ता ए छट्ठो एवं छ भांगा लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—उपशमश्रेणीना चारना बंधना बे भांगा अने एक भांगो क्षपकनो एवं ३ भांगा कम्मपयडीनामते लाभे. अथवा मतांतरे-एक भांगो भेलो गणिये तो ४ भांगा पण लाभे.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—४ नो उदय, नवनो सत्ता ए एक भांगो. तथा पांचनो उदय अने ९ नी सत्ता ए बीजो भांगो. तथा क्षीणमोहगुणठाणे ४ नो उदय, छेनी सत्ता. द्विचरिमसमयपर्यंत ए एक भांगो तथा द्विचरिमसमये निद्रानो क्षय थयाथी अंतिम समये ४ नो उदय, अने ४ नी सत्ता ए बीजो भांगो एवं ४ भांगा लाभे अथवा

बारमो गुणठाणें द्विचरिमसमय लगण पर्यंत निद्रानो उदय गणतांथी ५ नो उदय अने ६ नी सत्तानो एक भांगो मेळो गणतां ७ भांगा पण लाभे.*

४ परिहारविशुद्धि, देशविरति, क्षयोपशम, मिश्र ए चार मार्गणाए-६ नो बंध, ४ नो उदय अने ९ नी सत्ता ए प्रथम. तथा छनो बंध, ५ नो उदय, ९ नी सत्ता ए बीजो. एवं बे भांगा लाभे.

१ उपशम मार्गणाए—छना बंधना २ भांगा. तथा चारना बंधना उपशमश्रेणी आश्रयी कहेला बे. तथा अग्यारमां गुणठाणें कहेला बंधशून्यना बे. एवं छ भांगा लाभे.

१ क्षायिक मार्गणाए—४ ना उदयनो एक. अने ५ ना उदयनो एक. एवं बे भांगा टाळीने बाकी ९।११ भांगा लाभे.

---

८० बासठमार्गणाने विषे वेदनीयनी प्रकृतिना संवेधभांगानुं द्वार—

वेदनीयनी प्रकृतिना संवेधभांगा कहे छे—

१—अशातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशातानी सत्ता.

२—अशातानो बंध, शातानो उदय. अने शाता, अशातानी सत्ता. ए बे भांगा प्रथमना छगुणठाणा सुधी होय.

३—शातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता.

४—शातानो बंध, शातानो उदय. अने शाता, अशातानी सत्ता. ए बे भांगा अयोगी विना तेर गुणठाणा सुधी होय.

५—शातानो उदय अने शाता, अशातानी सत्ता ए पांचमो भांगो.

६—अशातानो उदय अने शाता, अशातानी सत्ता ए बे भांगा अयोगी गुणठाणाना द्विचरिमसमय सुधी होय.

७—बहोंतेर प्रकृतिनो क्षय करती वखते शातानो क्षय कर्यो होय तेने अशातानो उदय अने अशातानी सत्ता ए सातमो भांगो जाणवुं.

८—बहोंतेर प्रकृतिनो क्षय करती वखते अशातानो क्षय करेल होय तेने शातानो उदय अने शातानी सत्ता ए आठमो भांगो अयोगी गुणठाणाना चरिमसमयमां होय.

---

* आ मार्गणाए 'कर्मप्रकृत्यात्मकविवरणयंत्र'मां त्रण अथवा चार भांगाना आंक मांडेला छे. ते ठीक नथी. त्यां पण चार अथवा पांच भांगाना आंक होवा जोइये. पछी बहुश्रुत कहे ते खरं.

५२ नरकगति, तिर्यंचगति, देवगति, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, चारकषाय, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, त्रणअज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, लेश्या छे, अभव्य, उपशम, क्षयोपशम, मिश्र, सास्वादन, मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी एवं ५२ मार्गणाएं-बंध समेतना चार चार भांगा होय.

६ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, भव्य, क्षायिक, अनाहारी एवं ६ मार्गणाएं-आठ भांगा लाभे.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यात एवं ३ मार्गणाएं-प्रथमना बे भांगा विना छ भांगा लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं-आठाना पंचवाळो त्रीजो अने चोथो ए बे भांगा लाभे.



८१ बासठमार्गणाने विषे मोहनीयकर्मना संवेधभांगानुं द्वार-

मोहनीयकर्मना संवेधभांगा कहे छे—

१-मिथ्यात्व १, सोळकषाय १६, त्रणवेदमांथी पुरुषवेद १, हास्य, रति ए युगलनी २, भय १, जुगुप्सा १ ए २२ प्रकृतिना बंधनो प्रथम भांगो जाणवो.

२-मिथ्यात्व १, सोळकषाय १६, स्त्रीवेद १, हास्य, रति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, जुगुप्सामोहनीय १ ए २२ ना बंधनो बीजो भांगो.

३-मिथ्यात्व १, कषाय १६, नपुंसकवेद १, हास्य, रति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, अने जुगुप्सामोहनीय १ ए २२ प्रकृतिना बंधनो त्रीजो.

४-मिथ्यात्व १, सोळकषाय १६, पुरुषवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भय १, जुगुप्सा १ ए २२ प्रकृतिना बंधनो चोथो भांगो जाणवो.

५-मिथ्यात्व १, सोळकषाय १६, स्त्रीवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, जुगुप्सामोहनीय १ ए २२ प्रकृतिनो पांचमो.

६-मिथ्यात्व १, सोळकषाय १६, नपुंसकवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भय १, अने जुगुप्सा १ ए २२ प्रकृतिनो छठ्ठो भांगो जाणवो ए छ भांगा प्रथम गुणठाणे होय.

७-सोळकषाय १६, पुरुषवेद १, हास्य, रति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, जुगुप्सामोहनीय १ ए एकवीश प्रकृतिना बंधनो सातमो भांगो.

८-सोळकषाय १६, पुरुषवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भय १, जुगुप्सा १ ए २१ प्रकृतिना बंधनो आठमो भांगो जाणवुं

९-सोळकषाय १६, स्त्रीवेद १, हास्य, रति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, जुगुप्सामोहनीय १ ए २१ प्रकृतिना बंधनो नवमो भांगो जाणवुं.

१०-सोळकषाय १६, स्त्रीवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, जुगुप्सामोहनीय १ ए २१ प्रकृतिना बंधनो दसमो भांगो जाणवुं. एवं ७।८।९।१० ए चार भांगा सास्वादन गुणठाणें होय.

११-अप्रत्याख्यानादि त्रण कषाय १२, पुरुषवेद १, हास्य, रति ए एक युगलनो २, भयमोहनीय १, जुगुप्सामोहनीय १ एवं १७ प्रकृतिना बंधनो अग्यारमो भांगो जाणवुं.

१२-अप्रत्याख्यानादि त्रण कषायनी १२, पुरुषवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, अने जुगुप्सामोहनीय १ ए १७ प्रकृतिना बंधनो बारमो भांगो जाणवुं. एवं ११।१२ ए बे भांगा मिश्र अने अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणठाणें होय.

१३-प्रत्याख्यानि क्रोधादि ४, संज्वलनना क्रोधादि ४, पुरुषवेद १ हास्य, रति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १ अने जुगुप्सामोहनीय १ ए १३ प्रकृतिना बंधनो तेरमो भांगो जाणवुं.

१४-प्रत्याख्यानि क्रोधादि ४ अने संज्वलनक्रोधादि ४, पुरुषवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १, जुगुप्सामोहनीय १ ए १३ प्रकृतिनो चौदमो भांगो जाणवुं ए १३।१४ बे भांगा पांचमा गुणठाणें होय

१५-'संज्वलनक्रोध, मान, माया, लोभ' ए ४, पुरुषवेद १, हास्य, रति ए एक युगलनी २, भय १, जुगुप्सा १ ए नव प्रकृतिना बंधनो पंदरमो भांगो जाणवुं.

१६-संज्वलनक्रोधादि ४, पुरुषवेद १, शोक, अरति ए एक युगलनी २, भयमोहनीय १ अने जुगुप्सामोहनीय १ ए ९ प्रकृतिना बंधनो सोलमो भांगो जाणवुं. एवं १५।१६ ए बे भांगा प्रमत्तगुणठाणें होय. एथी आगल शोक, अरति ए युगलनो बंध नथी परंतु हास्य अने रतिनो बंध छे माटे अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण ए बे गुणठाणें नव प्रकृतिना बंधनो एकज भांगो होय परंतु बीजो भांगो न होय.

१७-संज्वलनक्रोधादि ४ अने पुरुषवेद १ ए ५ प्रकृतिना बंधनो

सत्तरमो भांगो जाणवो. ए नवमां गुणठाणाना प्रथम भागे होय.

१८–संज्वलनक्रोधादि ४ प्रकृतिना बंधनो अढारमो भांगो नवमां गुणठाणाना बीजे भागे होय.

१९–संज्वलनमान, माया अने लोभ ए त्रण प्रकृतिना बंधनो ओगणीशमो भांगो नवमां गुणठाणाना त्रीजे भागे होय.

२०–संज्वलनमाया अने लोभ ए बे प्रकृतिना बंधनो वीशमो भांगो नवमां गुणठाणाना चोथा भागे होय.

२१–संज्वलनलोभनी प्रकृतिना बंधनो एकवीशमो भांगो नवमां गुणठाणाना पांचमां भागे होय.

एवी रीते–बावीशना बंधे ६, एकवीशना बंधे ४, सत्तरेना बंधे २, तेरना बंधे २, नवना बंधे २, पांचना बंधे १, चारना बंधे १, त्रणना बंधे १, बेना बंधे १ अने एकना बंधे १, एवं दश बंधस्थानकना एकवीश भांगा होय.

७ नरकगति, देवगति, त्रणअज्ञान, अविरति, अनाहारी ए सात मार्गणाएं—बावीशना बंधे छे, एकवीशना बंधे ४ अने सत्तरेना बंधे २ एवं १२ भांगा लाभे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—बावीशना बंधे छे, एकवीशना बंधे चार, सत्तरेना बंधे बे, तेरना बंधे बे एवं १४ भांगा लाभे.

१३ मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, लोभ, शुक्लेश्या, भव्य, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, संज्ञी, आहारी ए १३ मार्गणाएं—२१ भांगा लाभे.

८ एकेंद्रियादिजाति चार, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, असंज्ञी ए आठ मार्गणाएं—बावीशना बंधे ६, एकवीशना बंधे ४ एवं १० भांगा लाभे.

४ तेउकाय, वायुकाय, अभव्य, मिथ्यात्व ए चार मार्गणाएं—बावीशना बंधे कहेला छे भांगा लाभे.

३ त्रणवेद मार्गणाएं—बावीशना बंधे ६, एकवीशना बंधे ४, सत्तरेना बंधे २, तेरना बंधे २, नवना बंधे २, अने पांचना बंधे १ एवं सत्तरे भांगा लाभे.

१ क्रोध मार्गणाएं—२२ । २१ । १७ । १३ । ९ । ५ । ४ ए चारना बंधसुधी सात बंधस्थानकना उपरोक्त रीतना १८ भांगा लाभे.

१ मान मार्गणाएं—बावीसना बंधे ६, एकवीशना बंधे ४, सत्तरेना बंधे २, तेरना बंधे २, नवना बंधे २, पांचना बंधे १, चारना बंधे १, तथा त्रणना बंधे १ एवं १९ भांगा.

१ माया मार्गणाएं—मान मार्गणामां कहेला भांगामां बे प्रकृतिना बंधनो एक भांगो वधारतां वीश भांगा लाभे.

६ मत्यादि त्रणज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम, क्षायिक ए ६ मार्गणाएं—सत्तरेना बंधे बे भांगा, तेरना बंधे बे भांगा, नवना बंधे बे भांगा, पांचना बंधे एक भांगो, चारना बंधे १, त्रणना बंधे १, बेना बंधे १, एकना बंधनो १ एवं ११ भांगा लाभे.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं—नवप्रकृतिना बंधे बे भांगा, पांचना बंधे १, चारना बंधे १, त्रणना बंधे १, बेना बंधे १ अने एकना बंधे १ एवं ६ बंधस्थानकना सात भांगा लाभे.

४ केवलज्ञान, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए ४ मार्गणाएं-बंधनो अभाव होवाथी कोई भांगो न लाभे.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—नवना बंधस्थानकना बे भांगा लाभे.

१ देशविरति मार्गणाएं—तेरप्रकृतिना बंधस्थानकना बे भांगा लाभे.

५ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या ए पांच मार्गणाएं—२२ । २१ । १७ । १३ अने ९ सुधीना पांच बंधस्थानकना १६ भांगा लाभे.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—सत्तरेना बंधे बे भांगा, तेरना बंधे बे भांगा, नवना बंधे बे भांगा एवं ६ भांगा लाभे.

१ मिश्र मार्गणाएं—सत्तरेना बंधे बे भांगा लाभे.

१ सास्वादन मार्गणाएं—एकवीशना बंधे चार भांगा लाभे.

८२ बासठमार्गणाने विषे मोहनीयकर्मना उदयना भांगानी चोवीशीनुं द्वार–

मोहनीयकर्मना उदयनी चोवीशी कहे छे—

१–प्रथम सात प्रकृतिना उदयनी एक चोवीशी भांगानी बतावे छे–

मिथ्यात्व १, हास्य २, रति ३, पुरुषवेद ४, अप्रत्याख्यानिक्रोध ५, प्रत्याख्यानिक्रोध ६, संज्वलनक्रोध ७ ए सात प्रकृतिनो प्रथम भांगो. तथा हास्य रति ए बेनी जग्याएं शोक अने अरति मेलतां सात प्रकृतिनो बीजो भांगो थाय. ए बे भांगा एक पुरुषवेदे थया तेमज स्त्रीवेद साथे अने नपुंसकवेद साथे पण

बे भांगा थाय, एम त्रण वेदना बे बे भांगा गणतां छ भांगा थया. हवे ए छ भांगा एक क्रोधना साथेना होय तेमज क्रोधनी जग्याये मान गणतां पण छ भांगा उपजे, तथा मायाना साथे गणतां छ भांगा थाय अने लोभना पण छ भांगा उपजे एवी रीते भांगानी एक चोवीशी सातना उदयनी थई.

२–पूर्वोक्त ७ प्रकृति साथे अनंतानुबंधिनो उदय गणतां आठप्रकृतिना उदयनी बीजी चोवीशी थई.

३–पूर्वोक्त सातप्रकृति साथे एक भयमोहनीयनो उदय गणतां आठप्रकृतिना उदयें त्रीजी चोवीशी थई.

४–पूर्वोक्त सात प्रकृति साथे एक जुगुप्सानो उदय गणतां एक चोवीशी थाय, एवं चार चोवीशी थई. तथा मिथ्यात्वें अनंतानुबंधियानो उदय अवश्य होय. ते पछी सातनो उदय. तथा भय, जुगुप्सा अने अनंतानुबंधिया समेत आठनो उदय शा कारणें कह्यो ? तेनो उत्तर–ए के कोईक जीव सम्यक्दृष्टि छतां अनंतानुबंधिया क्रोधादि चारने विसंयोज्या (खपाव्यां) छतां पण कालांतरे कोईक बीजभूत मिथ्यात्वीनी सत्ताएं करी वली पण बंधाय तेने विसंयोज्या कहिये अने जे खपाव्या कह्या होय ते तो फरी बंधायज नहीं ए विसंयोज्या अने खपाव्यानुं विशेष जाणवुं. हवे तेवी सामग्रीना अभावें कोईएक जीवें मिथ्यात्वादिकने खपाव्यानो उद्यम नथी कर्यो ते जीव कालांतरे मिथ्यात्वें गयो. तिहां मिथ्यात्व प्रत्ययीआ भणी मिथ्यात्वें करी वली अनंतानुबंधिया चार कषाय बांधे, तेवारे बंधावलिका लगे ते अनंतानुबंधिआनो उदय न होय. अहीं कोईक कहेशे के बंधकालनी आवलिका पछीज ते प्रकृतिनो उदय होय. ते केम घटे ? जे भणी ए अनंतानुबंधिआनो अबाधाकाल जघन्यनो अंतर्मुहूर्त्तनो अने उत्कृष्टो तो चार हजार वर्षनो कह्यो छे, तो अबाधाकाल भोगव्या विना बंधावलिका पछी एनो उदय केम होय ? तेनो उत्तर कहे छे-जे बंध समयथी पण अनंतानुबंधिआनी सत्ता लेखवाय. बंधसत्ता जेवारे होय तेवारे अनंतानुबंधिआ पतद्ग्रह थाय, पतद्ग्रह एटले ते बंधानी प्रकृति मध्ये बीजी सजातिय प्रकृतिना दल तथा रसनो संक्रम तेनुं ठाम जाणवुं. एटले जे प्रकृति बंधन परिणामें परिणम्यो जीव ते प्रकृति मध्यें बीजी सजातिय प्रकृतिनां दलियां खेचीने बांधी प्रकृति रूप पणें तेने परिणमाववुं तेने संक्रम कहिये, तेनुं स्थानक तेने पतद्ग्रह कहिये ते माटे बंधाता अनंतानुबंधिया मध्ये पण अणबंधाता एवा जे अप्रत्याख्यानावरणादिक बीजा कषाय तेना दलिया संक्रमे.

ते अनंतानुबंधिमा पणें परिणमें एटले जे मांहे संक्रमे तेमां परिणमें तेनो उदय संक्रमावलिका यया पछी उदयावलिकायें आवे ते माटे अनंतानुबंधिनो बंधावलिका पछी उदय कहिये. अहीं कशुं विरुद्ध नथी ते माटे मिथ्यात्व गुणठाणें पण बंधसंक्रमावलिका गये थे अप्रत्याख्यानादिक त्रण कपायनोज उदय होय, केमके एक वेदानां जेटलानो जे गुणठाणें उदय होय तेटला सर्व समानजातिय होवाथी तिहां वेदनांज कहिये जे माटे क्रोधादिक चार परस्परे विरुद्ध छे तेथी ते मांहेलो एकनोज समकाले उदय होय. परंतु तिहां एक अनंतानुबंधि क्रोध वेदमां सजातिय अप्रत्याख्यानादिक बीजा त्रण क्रोध समकाले साथेज वेदाय. परंतु तेनी साथे ते समय बीजा मानादिक न वेदाय ते माटे पूर्वोक्त प्रकारे मिथ्यात्वें पण बंधसंक्रमावलिका पछी अनंतानुबंधिमानो उदय होय. एनी विशेष हकीकत 'कम्मपयडी'ग्रन्थथी जाणवी.

५—पूर्वोक्त सात प्रकृति मध्ये भय अने जुगुप्सा ए बेनो उदय गणतां ९ प्रकृतिना उदयनी पांचमी चोवीशी थाय.

६—पूर्वोक्त सात प्रकृति मध्ये भय अने अनंतानुबंधि ए बेनो उदय लेतां ९ प्रकृतिना उदयनी छट्ठी चोवीशी थाय.

७—पूर्वोक्त सात प्रकृति मध्ये जुगुप्सा अने अनंतानुबंधि ए बेनो उदय गणतां ९ प्रकृतिना उदयनी सातमी चोवीशी थाय.

८—पूर्वोक्त सात मध्ये भय तथा जुगुप्सा अने अनंतानुबंधि ए त्रणने मेलतां दशना उदयनी आठमी चोवीशी प्रथम गुणठाणें होय.

९—अनंतानुबंधि कपाय ४, हास्यादि बेयुगलमांथी एक युगलनी २ प्रकृति अने त्रण वेदमांथी वेद १ ए ७ प्रकृतिना उदयनी नवमी चोवीशी थाय.

१०—सातमां भय मेलतां आठना उदयनी दशमी चोवीशी थाय.

११—पूर्वोक्त ७ मां भयने ठेकाणें जुगुप्सामोहनीयनी एक प्रकृति गणियें तेवारे पण आठना उदयनी अग्यारमी चोवीशी थाय.

१२—पूर्वोक्त अनंतानुबंधिआदि सात प्रकृति मध्ये भय अने जुगुप्सामोहनीय ए बे प्रकृति भेली गणतां नवना उदयनो बारमी चोवीशी थाय एवं चार चोवीशी बीजा गुणठाणें होय.

१३—मिश्रमोहनीयनी १, हास्यादि बे युगलमांथी एक युगलनी २, पुरुषादि त्रणवेदमांथी वेद १, 'अप्रत्याख्यानि, प्रत्याख्यानि अने संज्वलन' ए कपायनो ३ एवं सात प्रकृतिना उदयनी तेरमी चोवीशी थाय.

१४—मिश्रादि सात मध्ये पूर्वोक्त रीते भय गणतां आठ प्रकृतिना उदयनी चौदमी चोवीशी थाय.

१५—मिश्रादि सात प्रकृतिना उदय मध्ये एक जुगुप्सानो उदय गणतां पण आठना उदयनी पंदरमी चोवीशी थाय.

१६—सातमां भय अने जुगुप्सा ए बे गणतां ९ प्रकृतिना उदयनी शोलमी चोवीशी एवं १३। १४। १५। १६ ए चार चोवीशी त्रीजे गुणठाणे होय.

१७—हास्य, रति अथवा शोक, अरति ए वारमांनी २, पुरुषादि त्रणवेदमांथी वेद १, अप्रत्याख्यानि क्रोध १, प्रत्याख्यानि क्रोध १, अने संज्वलननो १ ए ६ प्रकृतिना उदयनी सत्तरमी चोवीशी थाय.

१८—छे मध्ये सम्यक्त्वमोहनीयनी एक प्रकृतिनो उदय मेलतां सातना उदयनी अढारमी चोवीशी थाय.

१९—पूर्वोक्त ६ मध्ये भयमोहनीयनी एक प्रकृति गणतां सात प्रकृतिना उदयनी ओगणीशमी चोवीशी थाय.

२०—पूर्वोक्त छे प्रकृति मध्ये एक जुगुप्सामोहनीयने गणतां पण सात प्रकृतिना उदयनी वीशमी चोवीशी थाय.

२१—पूर्वोक्त छे मध्ये भय अने सम्यक्त्वमोहनीय ए बे प्रकृति क्षेपतां आठ प्रकृतिना उदयनी एकवीशमी चोवीशी थाय.

२२—पूर्वोक्त छे मध्ये जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए बे प्रकृति गणतां आठना उदयनी बावीशमी चोवीशी थाय.

२३—पूर्वोक्त छे प्रकृति मध्ये भयमोहनीय अने जुगुप्सामोहनीय ए बे प्रकृति मेलतां आठ प्रकृतिना उदयनी तेवीशमी चोवीशी थाय.

२४—पूर्वोक्त छे प्रकृतिना उदयमां भय, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण गणतां नव प्रकृतिना उदयनी चोवीशमी चोवीशी थाय. एवं १७।१८ १९।२०।२१।२२।२३।२४ ए आठ चोवीशी चोथा गुणठाणे होय.

२५—हास्य, रति तथा शोक, अरति ए बे युगलनी चार प्रकृतिमांथी एक युगलनी २, त्रणवेदमांथी वेद १, प्रत्याख्यानिक्रोधादिमांथी १, अने संज्वलनक्रोधादिमांथी १ ए पांच प्रकृतिना उदयनी पचीशमी चोवीशी थाय.

२६—पांच मध्ये भय क्षेपतां छे प्रकृतिना उदयनी छव्वीशमी चोवीशी थाय.

२७—पूर्वोक्त पांचमां जुगुप्सा समेतनी छे प्रकृतिना उदयनी सत्तावीशमी.

२८–पूर्वोक्त पांच प्रकृतिना उदय मांहे सम्यक्त्वमोहनीयनी एक वधारे गणतां छ प्रकृतिना उदयनी अट्ठावीशमी चोवीशी थाय.

२९–पूर्वोक्त पांच प्रकृति मध्ये भय अने सम्यक्त्वमोहनीय ए बे प्रकृति क्षेपतां सातप्रकृतिना उदयनी ओगणत्रीशमी चोवीशी थाय.

३०–पूर्वोक्त पांच मध्ये जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए बे प्रकृति क्षेपतां सातप्रकृतिना उदयनी त्रीशमी चोवीशी थाय.

३१–पूर्वोक्त पांच प्रकृति मध्ये भय अने जुगुप्सा ए बे गणतां पण सात-प्रकृतिना उदयनी एकत्रीशमी चोवीशी थाय.

३२–पूर्वोक्त पांच प्रकृतिमां भय, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण मेळतां आठ प्रकृतिना उदयनी बत्रीशमी चोवीशी एवं २५ । २६ । २७ २८ । २९ । ३० । ३१ । ३२ ए आठ चोवीशी देशविरति गुणठाणें होय.

३३–हास्यादि बे युगल्मांथी एकयुगल्नी बे प्रकृति, त्रण वेदमांथी वेद १, अने संज्वलननो कषाय १ ए चार प्रकृतिना उदयनी ३३ मी चोवीशी थाय.

३४–उपरोक्त चारमां भय मेळतां पांच प्रकृतिना उदयनी चोवीशी थाय.

३५–पूर्वोक्त चारमां जुगुप्सा गणतां पांचना उदयनी पांत्रीशमी चोवीशी.

३६–पूर्वोक्त चारमां सम्यक्त्वमोहनीय गणतां पांचना उदयनी छत्रीशमी.

३७–पूर्वोक्त चारमध्ये भय अने सम्यक्त्वमोहनीय ए बे गणतां छना उदयनी सेत्रीशमी चोवीशी थाय.

३८–पूर्वोक्त चार मध्ये जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय समेत छ प्रकृतिना उदयनो अड्त्रीशमी चोवीशी थाय.

३९–पूर्वोक्त चारमध्ये भय अने जुगुप्सा ए बे मेळतां छ प्रकृतिना उदयनी ओगणचालिशमी चोवीशी थाय.

४०–पूर्वोक्तनी चारप्रकृति मध्ये भय, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण प्रकृतिनो उदय गणतां सातप्रकृतिना उदयनी चालिशमी चोवीश थाय. एवं आठ चोवीशी छट्ठा गुणठाणें होय.

४१, ४८–उपरोक्त ३३ । ३४ । ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० ए आठ चोवीशी तेज प्रमाणे ४१ थी लई अड्तालिशमी सुधीनी आठ चा-वीशी जाणवी ए आठ चोवीशी अप्रमत्तगुणठाणें होय.

४९–हास्यादि बे युगलमांनी एक युगलनी २, त्रण वेदमांथी वेद १ अने संज्वलनकषाय १ ए चार प्रकृतिना उदयनी ओगणपचाशमी चोवीशी थाय.

५०–ऊपरोक्त चार प्रकृतिमां भय समेत पांचप्रकृतिना उदयनी पचाशमी.

५१–पूर्वोक्त चार मध्ये जुगुप्सानो उदय गणतां ए पांच प्रकृतिना उदयनी एकावनमी चोवीशी थाय.

५२–पूर्वोक्त चारना उदय मध्ये भय अने जुगुप्सा ए बे मोहनीयनो उदय गणतां छ प्रकृतिना उदयनी बावनमी चोवीशी थाय. एवं ४९।५०।५१।५२ ए चार चोवीशी अपूर्वकरणगुणठाणें होय.

अनिवृत्तिबादर गुणठाणाना १६ भांगा अने दशमां सूक्ष्मसंपराय गुणठाणानो एक भांगो एवं १७ भांगा अने ५२ चोवीशी थाय छे.

हवे सत्तरे भांगा कहे छे—

पुरुषवेद अने संज्वलनक्रोध ए बेना उदयनो १, तथा पुरुषवेद अने संज्वलनमानना उदयनो १, तथा पुरुषवेद अने संज्वलननी मायाना उदयनो १, तथा पुरुषवेद अने संज्वलनलोभ ए बेना उदयनो १ एवं ४ भांगा पुरुषवेद साथे कह्या. तथा चार भांगा स्त्रीवेद साथे होय. तथा चार भांगा नपुंसकवेद साथे होय. ए बार भांगा बेना उदयना होय. तथा चारना बंधे एक कषायना उदयनो १, तथा त्रणना बंधे एक कषायना उदयनो १, तथा बेना बंधे एक कषायना उदयनो १ अने एकना बंधे एक कषायना उदयनो १, तथा बंध शून्य दशमां गुणठाणें सूक्ष्मलोभना उदयनो १ एवं बेना उदयना बार, अने एकना उदयना पांच गणतां १७ भांगा थाय.

त्रण वेदमांथी एक वेदनो उदय जे मार्गणामां होय ते मार्गणाएं भांगानी चोवीशीनी संख्याने ठेकाणें भांगाना अष्टकनी संख्या जाणवी. तथा जे मार्गणामां बे वेदनो उदय होय त्यां भांगानी चोवीशीनी संख्याने स्थानकें भांगाना षोडशकनी संख्या समजवी. अने चारकषाय मांथी एक कषायनो उदय जे मार्गणामां होय ते मार्गणाएं भांगानी चोवीशीनी संख्याने ठेकाणें भांगाना षट्कनी संख्या लेवी जोइए.

१ नरकगति मार्गणाएं—२२ । २१ । १७ ए त्रण बंधस्थानकना मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्र अने अविरति ए चार गुणठाणाना भांगाओना चोवीश अष्टक आवे अहीं नपुंसकवेदनोज उदय होय माटे चोवीशीने ठेकाणें अष्टक कहेवुं एटले बावीशना

बंधना आठ अष्टक, एकवीशना बंधना भांगाना चार अष्टक अने सत्तरना बंधस्थानके बे गुणठाणाना भांगाना चार अष्टक एवं २४ अष्टक जाणवा.

१ तिर्यचगति मार्गणाऐ—मिथ्यात्वगुणठाणे–सातना उदयनी एक, आठना उदयनी त्रण, नवना उदयनी त्रण, अने दशना उदयनी एक. शास्वादनगुणठाणे–सातना उदयनी एक, आठना उदयनी बे, नवना उदयनी एक. मिश्रगुणठाणे–सातना उदयनी एक, आठना उदयनी बे, नवना उदयनी एक. अविरति गुणठाणे–छना उदयनी १, सातना उदयनी ३, आठना उदयनी ३, अने नवना उदयनी १. देशविरति गुणठाणे–पांचना उदयनी १, छना उदयनी ३, सातना उदयनी ३, अने आठना उदयनी १. एवी रीते प्रथमना पांच गुणठाणानी मली बत्रीश चोवीशी लाभे.

१२ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, शुक्ललेश्या, भव्य, संज्ञी, आहारी ए बार मार्गणाऐ–प्रत्येके ५२ चोवीशी अने १७ भांगा.

१ देवगति मार्गणाऐ—पुरुषवेद, स्त्रीवेद ए बे वेदनो उदय होवाथी प्रथमना चार गुणठाणे करेला दशना उदयनो १, नवना उदयना ६, आठना उदयना १०, सातना उदयना ६, अने छना उदयनो १ एवं ५ उदयस्थानकना मली भांगाना चोवीश षोडशक लाभे.

८ एकेंद्रियादिजाति चार, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, असंज्ञी ए आठ मार्गणाऐ–नपुंसकवेदनोज उदय होवाथी प्रथमना बे गुणठाणे करेला सातना उदयनी १, अनंतानुबंधि समेत आठना उदयनी १, नवना उदयनी १ अने दशना उदयनी १ एवं आठ अष्टक भांगाना लाभे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाऐ—मिथ्यात्वगुणठाणुं होय. माटे मिथ्यात्वे अनंतानुबंधिना उदय विनानी ७ प्रकृतिनो उदयस्थानक न होय कारण अनंतानुबंधि विसंयोजीने फरी मिथ्यात्वे आवे तेने अनंतानुबंधि विना सातनो उदय होय अने आ मार्गणामां अनंतानुबंधिआनो उदय अवश्य होय तेथी अनंतानुबंधि समेत आठप्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक होय. तेमां भांगानो एक अष्टक थाय वळी ए आठना उदयमां भय अथवा जुगुप्सा ए बे मांनी एक एक प्रकृतिने भेळवाथी बे प्रकारे नवनो उदयस्थानक होय. भांगाना बे बे अष्टक थाय. वळी आठ मध्ये भय अने जुगुप्सा ए बे प्रकृतियों एक साथे मेळवाथी दशनुं उदयस्थानक होय. तेमां दशना उदयनो एक अष्टक होय. एवं आठना उदयनो १, नवना २, अने दशनो १ एवं चार ४ अष्टक लाभे. कारण के नपुंसकवेदनो उदय होवाथी चोवीशीने ठामे भांगाओना चार चार अष्टक होय.

३ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येकें पुरुषवेदमां स्त्रीवेद अने नपुंसकवेदनो उदय न होय. तथा स्त्रीवेदमां पुरुषवेद अने नपुंसकवेदनो उदय न होय. तथा नपुंसकवेदमां पुरुषवेद अने स्त्रीवेदनो उदय न होय. माटे बावन अष्टक अने संज्वलनक्रोधादिक चार कषाय एक एक वेदना उदय प्रकृति साथे लेतां चार चार द्विकसंयोगी भांगा लाभे.

१ क्रोध मार्गणाएं–मानादिक बीजा त्रण कषायना उदय नथी. तेनी ५२ पट्क अने द्विकसंयोगीक त्रण भांगा अने एक संयोगी एक भांगो एवं ४ भांगा लाभे.

१ मान मार्गणाएं—क्रोधनीपरें ५२ पट्क अने द्विकसंयोगी ३ भांगा, तथा एक संयोगीक एक भांगो एवं चार भांगा लाभे.

१ माया मार्गणाएं—क्रोधनी परें बावनपट्क अने संज्वलननीमाया, पुरुषवेद साथेनो एक भांगो, संज्वलननी माया स्त्रीवेद साथेनो बीजो भांगो २, संज्वलननी मायानो नपुंसकवेद साथेनो त्रीजो भांगो ३, संज्वलननी मायानो एक संयोगीक एक भांगो एवं चार भांगा लाभे.

१ लोभ मार्गणाएं—क्रोधनीपरें बावनपट्क अने द्विकसंयोगीक त्रण भांगा. एक संज्वलनलोभना उदयनो एक भांगो, अने दशमां गुणठाणानां वेदशून्यनो सूक्ष्मलोभना उदयनो एक भांगो एवं पांच भांगा लाभे.

४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं–अविरति गुणठाणाथी लई बारमां सुधीना नव गुणठाणें होय. तेथी नवना उदयनो एक चोवीशी, आठना उदयनी चार चोवीशी, सातना उदयनी आठचोवीशी, छेना उदयनी अग्यार चोवीशी, पांचना उदयनी नव चोवीशी, चारना उदयनी त्रण चोवीशी, ए ३६ चोवीशी अने द्विकसंयोगी १२ भांगा, एकना उदयना ५ भांगा एवं १७ भांगा.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—प्रमत्तगुणठाणाथी लई क्षीणमोहलगे सात गुणठाणें सातना उदयनी बे चोवीशी, छेना उदयनी सात चोवीशी, पांचना उदयनी आठ चोवीशी, चारना उदयनी त्रण चोवीशी एवं वीश चोवीशी अने बेना उदयना बार भांगा तथा एकना उदयना पांच भांगा एवं १७ भांगा लाभे.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात, केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येकें मोहनीयना सर्वथा क्षय थयेलो छे माटे कांई चोवीशी अने भांगा न लाभे.

३ त्रणअज्ञान मार्गणाएं—प्रत्येकें प्रथमना त्रण गुणठाणा होय. तेथी दशना उदयनी एक चोवीशी, नवना उदयनी पांच चोवीशी, आठना उदयनी सात चोवीशी अने सातना उदयनी ३ चोवीशी एवं सोळ चोवीशी लाभे.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं—प्रमत्तथी नवमां अ[...]
बादरगुणठाणा सुधी त्रण होय. तेथी सातना उदयनी बे, छना उदयनी ७, [...]
उदयनी आठ, अने चारना उदयनी त्रण ए २० चोवीशी अने द्विकोदयन[...]
भांगा. तथा नवमां गुणठाणे कहेला एकोदयना चार भांगा एवं सोल भांगा ल[...]

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं–प्रमत्त अने अप्रमत्त ए बे गुणठाणा होय. तेथी [...]
वेदनो उदय न होवाथी सातना उदयना बे षोडश, छना उदयना छ षोडश, पां[...]
उदयना छ षोडश, तथा चारना उदयना बे षोडश ए भांगाओना सोल षोडशक ला[...]

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–वेदशून्य सूक्ष्मलोभना उदयनो एकज भांगो लावे.

१ देशविरति मार्गणाएं—पांचमो गुणठाणो होय तेथी आठना उदयनी एक चो[...]
वीशी, सातना उदयनी ३ चोवीशी, छना उदयनी त्रण चोवीशी अने पांचना उद[...]
यनी एक चोवीशी एवं भांगानी आठ चोवीशी लावे.

१ अविरति मार्गणाएं—प्रथमना चार गुणठाणा होय. तेथी दशना उदयनी एक चोवीशी, नवना उदयनी छ चोवीशी, आठना उदयनी दश चोवीशी, सातना उदयनी छ चोवीशी, अने छना उदयनी एक चोवीशी एवं २४ चोवीशी लावे.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येके प्रथमना छ गुणठाणे कहेला दश प्रकृतिना उदयनी एक चोवीशी, नवना उदयनी छ चोवीशी, आठना उदयनी अग्यार चोवीशी, सातना उदयनी दश चोवीशी, छना उदयनी सात चोवीशी, पांचना उदयनी चार चोवीशी अने चारना उदयनी एक चोवीशी एवं भांगानी ४० चोवीशी लावे.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाएं–प्रथमना सात गुणठाणे–कहेली दशना उदयनी १, नवना उदयनी ६, आठना उदयनी ११, सातना उदयनी ११, छना उदयनी १०, पांचना उदयनी ७ अने चारना उदयनी २ एवं ४८ चोवीशी लावे.

१ अभव्य मार्गणाएं–अनादि मिथ्यात्वपणाने लीधे आठना उदयनी एक चोवीशी नवना उदयनी बे चोवीशी, अने दशना उदयनी एक चोवीशी, एवं ४ चोवीशी लावे.

२ उपशम अने क्षायिक मार्गणाएं—चोथा पांचमां छट्ठा सातमां आठमां ए पांच गुणठाणे कहेली आठना उदयनी एक चोवीशी, सातना उदयनी त्रण चोवीशी, छना उदयनी छ चोवीशी, पांचना उदयनी सात चोवीशी तथा चारना उदयनी त्रण चोवीशी ए वीश चोवीशी. अने नवमां गुणठाणाना १६ भांगा अने दशमांनो एक भांगो एवं १७ भांगा लावे.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं–चोथा गुणठाणे हास्यादिमांथी एक युगलनी २, एकवेद, तथा अमत्याख्यानिआदि त्रण कषाय अने समकितमोहनीय एक ए सात प्रकृतिनो प्रथम उदयस्थानक होय, तेमां भांगानी चोवीशी १ थाय. तथा सात प्रकृति साथे भय अथवा जुगुप्सानी एक एक प्रकृति क्षेपतां बे भेदें आठनुं उदयस्थानक होय, तेमां भांगानी बे चोवीशी थाय. तथा ते सात प्रकृति माहें भय अने जुगुप्सा ए बे प्रकृति मेलतां ९ प्रकृतिनुं एक उदयस्थानक होय, तेमां भांगानी चोवीशी १. एवं चोथे गुणठाणे सर्व मली चार चोवीशी होय. तथा पांचमां देशविरति गुणठाणें उदयस्थानकने ६ । ७ ८ ए त्रण होय तेवारे ऊपरोक्त रीते छेना उदयनी एक, सातना उदयनी बे, अने आठनी एक एवं चार चोवीशी होय. छट्ठा अने सातमां गुणठाणें ५ । ६ । ७ ए त्रण उदयस्थानक होय. तेमां पांचना उदयस्थानकें एक एक चोवीशी होय. अने छेना उदयस्थानकें बे बे चोवीशी, तथा सातना उदयनी एक एक चोवीशी एवं ८ चोवीशी होय. एवी रीते नवना उदयनी १, आठना उदयनी ३, सातना उदयनी ५, छेना उदयनी ५, तथा ५ना उदयनी २, ए पांच उदयस्थानकनी मलीने शोल लाभे,

१ मिश्र मार्गणाएं–७ । ८ । ९ ए त्रण उदयस्थानक होय. माटे सातना उदयनी १, आठना उदयनी २ अने नवना उदयनी १ एवं चार चोवीशी लाभे.

१ शास्वादन मार्गणाएं–अनंतानुबंधि समेत ७ । ८ । ९ ए त्रण स्थानक होय. माटे सातना उदयनी १, आठना उदयनी २, अने नवना उदयनी १ एवं चार चोवीशी भांगानी लाभे.

१ मिथ्यात्व मार्गणाएं—२२ प्रकृतिना बंधस्थानक विषे सात प्रकृतिना उदयस्थानकथी दशमां सुधीना ४ उदयस्थानक कह्या ते रीतें अहीं चार उदयस्थानकनी मली आठ चोवीशी भांगानी लाभे.

१ अनाहारी मार्गणाएं—मिथ्यात्व, शास्वादन, अविरति सम्यक्दृष्टि गुणठाणें दशना उदयनी १, नवना उदयनी ४, आठना उदयनी छे, सातना उदयनी चार, अने छेना उदयनी १ एवं भांगानी शोल चोवीशी लाभे. सयोगी अयोगी ए बे गुणठाणा पण होय ए मध्ये मोहनीयनो उदय नथी माटे विवक्षा नथी करता.

---

८३ बासठमार्गणाने विषे मोहनीयकर्मनी चोवीशीना उपजतां भांगानुं द्वार–

उदयवंति बावन चोवीशीना आंकने २४ गुणा करवाथी १२४८ थाय तेमां द्विकसंयोगी १२ अने एकसंयोगी ५ एवं १७ भांगा शामिल गणता

थी १२६५ भांगा थाय छे ते कया गुणठाणें केटला भांगा लाभे ते कहे छे.

प्रथमगुणठाणें–आठ चोवीशीना १९२, बीजागुणठाणें चार चोवीशीना ९६, त्रीजा गुणठाणें चार चोवीशीना ९६, चोथा गुणठाणें–आठ चोवीशीना १९२, पांचमां गुणठाणें–आठ चोवीशीना १९२, छट्ठा गुणठाणें–आठ चोवीशीना १९२, सातमां गुणठाणें–आठ चोवीशीना १९२, आठमां गुणठाणें–चार चोवीशीना ९६, नवमां गुणठाणें–द्विकोदयना १२, अने एकोदयना ४, तथा दशमांगुणठाणें–सूक्ष्मलोभनो १ एवं उपरोक्त दशगुणठाणाना मली १२६५ भांगा जाणवा.

१ नरकगति मार्गणाएं—चोवीश अष्टकना १९२ भांगा लाभे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—बत्रीश चोवीशीना ७६८ भांगा लाभे.

१२ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, शुक्ललेश्या, भव्य, संज्ञी अने आहारी ए १२ मार्गणाएं—प्रत्येकें बावन चोवीशी अने सत्तरे भांगाना १२६५ भांगा लाभे.

१ देवगति मार्गणाएं—चोवीश षोडशकना ३८४ भांगा लाभे.

८ एकेंद्रिय, त्रणविकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय अने असंज्ञी ए आठ मार्गणाएं—प्रत्येकें आठ आठ अष्टकना ६४ भांगा लाभे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें चार चार अष्टकना ३२ भांगा.

३ त्रणवेद मार्गणाएं—बावन अष्टक अने चार भांगाना मली ४२० भांगा लाभे.

३ क्रोध, मान अने माया ए त्रण मार्गणाएं—बावन षट्क अने चार भांगा-ना ३१६ भांगा होय.

१ लोभ मार्गणाएं—बावन षट्क अने पांच भांगाना ३१७ भांगा होय.

४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं—छत्रीश चोवीशी अने सत्तरे भांगाना ८८१ भांगा लाभे.

१ मनःपर्यवज्ञानमार्गणाएं—वीश चोवीशी अने सत्तरे भांगाना ४९७ भांगा लाभे.

केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—कोई चोवीशी पी भांगा पण न लाभे.

त्रणअज्ञान मार्गणाएं—प्रत्येकें सोल चोवीशीना ३८४ भांगा लाभे.

सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें वीश चोवीशी अने ...गाना ४९६ भांगा लाभे.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—शोल षोडशकना २५६ भांगा लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—सूक्ष्मलोभनो दशमां गुणठाणानो एकज भांगो लाभे.

१ देशविरति मार्गणाएं-आठ चोवीशीना १९२ भांगा लाभे.

१ अविरति मार्गणाएं—चोवीश चोवीशीना ५७६ भांगा लाभे.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—चालिश चोवीशीना ९६० भांगा लाभे.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या ए वे मार्गणाएं—अडतालिश चोवीशीना ११५२.

१ अभव्य मार्गणाएं—चार चोवीशीना ९६ भांगा लाभे.

२ उपशम अने क्षायिक ए वे मार्गणाएं—वीस चोवीशी अने सत्तरे भांगाना ४९७.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—शोल चोवीशीना ३८४ भांगा लाभे.

१ मिश्र मार्गणाएं—चार चोवीशीना ९६ भांगा लाभे.

१ शास्वादन मार्गणाएं—चार चोवीशीना ९६ भांगा लाभे.

१ मिथ्यात्व मार्गणाएं—आठ चोवीशीना १९२ भांगा लाभे.

१ अनाहारी मार्गणाएं—शोल चोवीशीना ३८४ भांगा लाभे.



८४ वासठमार्गणाने विषे पदसंख्यानुं द्वार—

जे भांगामां मोहनीयकर्मनी जेटली २ प्रकृतियों कहेवाय तेटला २ पद थाय छे. जेम दशना उदयनी एक चोवीशीने दशगुणी करतां चोवीशीपद १०, नवना उदयनी छे चोवीशीने नवगुणी करतां चोवीशी पद ५४, आठना उदयनी अग्यार चोवीशीने आठगुणी करतां चोवीशीपद ८८, सातना उदयनी अग्यार चोवीशीने सातगुणी करतां ७७ पद, छेना उदयनी अग्यार चोवीशीने छेगुणी करतां चोवीशी पद ६६, पांचना उदयनी नव चोवीशीने पांच गुणी करतां चोवीशीपद ४५, अने चारना उदयनी त्रण चोवीशीने चार गुणी करतां चोवीशीपद १२ थाय. एवी रीते ३५२ त्रणसें बावन चोवीशीपद जाणवा.

१ नरकगति मार्गणाएं—मिथ्यात्वगुणठाणें सातना उदयना एक अष्टकना ७, आठना उदयना त्रण अष्टकना २४, नवना उदयना त्रण अष्टकना २७, अने दशना उदयना एक अष्टकना १० ए चार उदयस्थानकना मली ६८ पद थाय. तथा शास्वादन गुणठाणें सातना उदयना ७, आठना उदयना वे अष्टकना १६, अने नवना उदयना एक अष्टकना ९ ए ३२ पद. मिश्र गुणठाणें सातना उदयना एक अष्टकना ७,

आठना उदयना बे अष्टकना १६, नवना उदयना एक अष्टकना ९ एवं ३२ पद. विरति गुणठाणें छेना उदयना एक अष्टकना ६, सातना उदयना त्रण अष्टकना २१, आठना उदयना त्रण अष्टकनां २४ अने नवना उदयना एक अष्टकना ९ ए ६० पद. चार गुणठाणाना मली १९२ अष्टक पद लाभे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—पांचगुणठाणानी मलीने ३२ भांगानी चोवीशी होय. तिहां दशमकृतिना उदयनी एक चोवीशीना १०, नवना उदयनी छे चोवीशीना ५४, आठना उदयनी अग्यार चोवीशीना ८८, सातना उदयनी नव चोवीशीना ६३, छेना उदयनी चार चोवीशीना २४, अने पांचना उदयनी एक चोवीशीना ५ एवं छे उदयस्थानकें मली बत्रीश चोवीशीना २४४ पद लाभे.

१२ मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, शुक्ललेश्या, भव्य, संज्ञी, अने आहारी ए बार मार्गणाएं–प्रत्येकें प्रथमना आठ गुणठाणें दशना उदयनी एक चोवीशीना १०, नवना उदयनी छे चोवीशीना ५४, आठना उदयनी अग्यार चोवीशीना ८८, सातना उदयनी अग्यार चोवीशीना ७७, छेना उदयनी अग्यार चोवीशीना ६६, पांचना उदयनी नव चोवीशीना ४५ अने चारना उदयनी त्रण चोवीशीना १२ एवं ५२ चोवीशीना ३५२ चोवीशीपद लाभे.

१ देवगति मार्गणाएं—चार गुणठाणें बे वेदना उदय भणी चोवीश पोडशकना ऊपर नरक मार्गणामां कह्या तिकेज शोल उदयस्थानकना मली १०२ पोडशक पद लाभे.

८ एकेंद्रिय, त्रणविकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय अने असंज्ञी ए आठमार्गणाएं–प्रत्येकें नपुंसकवेदनो उदय होवाथी भांगानी चोवीशीने ठेकाणें भांगाना अष्टक कहेवा. प्रथम गुणठाणे अनंतानुबंधिआना उदय समेतना ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानकें आठना उदयना एक अष्टकना ८, नवना उदयना बे अष्टकना १८, दशना उदयना एक अष्टकना १०, सास्वादनगुणठाणें अनंतानुबंधि समेतना ७।८।९ ए त्रण उदयस्थानकें सातना उदयना एक अष्टकना ७, आठना उदयना बे अष्टकना १६, नवना उदयना एक अष्टकना ९ एवं प्रथमना बे गुणठाणाना मली आठ अष्टकना अडसठ अष्टक पद लाभे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें नपुंसकवेदनो उदय होवाथी मिथ्यात्व गुणठाणें अनंतानुबंधिना उदय समेत ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानकना चार चार अष्टकना मली ३६ अष्टकपद लाभे.

१ मनोवेद मार्गणाएं—आस आपना वेदनांज उदय होवाथी भांगानी चोवीशीने ठेकाणें भांगाना अष्टक लेवा मनुष्यगति आदि बार मार्गणामां कह्या प्रमाणें १९२ पद

लाभे. एटलुं विशेषके मनुष्यगत्यादिमां त्रणवेदना उदय भणी चोवीशी कही अने अहीं एक वेदनो उदय होवाथी भांगानी तथा पदनी चोवीशीने ठामे अष्टक लेवा.

४ क्रोध, मान, माया, लोभ ए चार मार्गणाएं-मनुष्यगत्यादिक बार मार्गणानी परें ३५२ पदृकपद लाभे. चार चार कषायना उदयने लीधे भांगानी बावन चोवीशी कही अने अहीं तो क्रोध मार्गणामां चार जातना क्रोधनो हीज उदय होय पण बीजा मानादिकनो उदय न थाय एमज मानादिक त्रण मार्गणामां पण जाणवुं माटे चोवीशीना ठेकाणें त्रणसो बावन पदृक भांगा कहेवा.

४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं-प्रत्येकें चोथाथी आठमां सुधीना पांच गुणठाणें भांगानी ३६ चोवीशी कही तिहां नवना उदयनी एक चोवीशीना पद ९, आठना उदयनी चार चोवीशीना पद ३२, सातना उदयनी आठ चोवीशीना पद ५६, छेना उदयनी अग्यार चोवीशीना पद ६६, पांचना उदयनी नव चोवीशीना पद ४५ अने चारना उदयनी त्रण चोवीशीना पद १२ एवं ६ उदयस्थानकनी छत्रीश चोवीशीना २२० चोवीशी पद लाभे.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—प्रमत्त अप्रमत्त अने अपूर्वकरण ए त्रण गुणठाणें सातना उदयनी बे चोवीशीना पद १४, छेना उदयनी सात चोवीशीना पद ४२, पांचना उदयनी आठ चोवीशीना पद ४०, चारना उदयनी त्रण चोवीशीना पद १२ एवं चार उदयस्थानकनी वीश चोवीशीना १०८ पद लाभे

२ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं-मोहनीयकर्मनो उदय न होवाथी कोई चोवीशी अने तेना पद न लाभे.

३ त्रणअज्ञान मार्गणाएं—प्रथमना त्रण गुणठाणें कह्या तिहां १०।९।८।७ ए चार उदयना स्थानक होय ते मध्ये दशना उदयनी एक चोवीशीना १०, नवना उदयनी पांच चोवीशीना ४५, आठना उदयनी सात चोवीशीना ५६ अने सातना उदयनी त्रण चोवीशीना २१ एवं चार उदयस्थानकनी शोल चोवीशीना मली १३२ चोवीशी पद लाभे.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं—मनःपर्यवज्ञानमां कह्या चार उदयस्थानकें वीश चोवीशीना मली १०८ चोवीशीपद लाभे.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—प्रमत्त अने अप्रमत्त ए बे गुणठाणाने विषे एक स्त्रीवेदना उदय विना बे वेदना उदय भणी शोल चोवीशीने ठामें शोल षोडशक कहेवा. सातना उदयना बे षोडशकना १४, छेना उदयना छे षोडशकना ३६, पांचना उद-

यना छे षोड़शकना १०, चारना उदयना बे षोड़शकना ८ एवं चार उदयस्थानके थोने षोड़शकना ८८ षोड़शकपद लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—सूक्ष्मलोभनो उदय होवाथी भांगानी १ चोवीशी लाभे.

१ देशविरति मार्गणाएं—आठना उदयनी एक चोवीशीना ८, सातना उदयनी त्रणचोवीशीना २१, छेना उदयनी त्रण चोवीशीना १८, अने पांचना उदयनी एक चोवीशीना ५. एवं आठ चोवीशीना मली ५२ चोवीशीपद लाभे.

१ अविरति मार्गणाएं—प्रथमना चार गुणठाणां मांहे ९।८।७।६ ए चार उदयस्थानकें नवना उदयनी छे चोवीशीना ५४, आठना उदयनी दश चोवीशीना ८०, सातना उदयनी छे चोवीशीना ४२, छेना उदयनी एक चोवीशीना ६ अने दशना उदयनी एक चोवीशीना १० एवं चोवीश चोवीशीना मली १९२ चोवीशीपद लाभे.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येकें प्रथमना छे गुणठाणाना १०।९।८।७।६।५।४ ए सात उदयस्थानकें दशना उदयनी एक चोवीशीना १०, नवना उदयनी छे चोवीशीना ५४, आठना उदयनी अग्यार चोवीशीना ८८, सातना उदयनी दश चोवीशीना ७०, छेना उदयनी सात चोवीशीना ४२, पांचना उदयनी चार चोवीशी २० अने चारना उदयनी एक चोवीशीना ४ एवं २८८.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें आठमां गुणठाणें कहेला ६।५।४ ए त्रण उदयस्थानकनी चार चोवीशीना वीश चोवीशी पद विना ४८ चोवीशीना ३३२ चोवीशीपद लाभे.

१ अभव्य मार्गणाएं—अनादिमिथ्यात्वना लीधे अनंतानुबंधि समेतना ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानकें आठना उदयनी एक चोवीशीना ८, नवना उदयनी बे चोवीशीना १८, अने दशना उदयनी एक चोवीशीना १० एवं चार चोवीशीना मली ३६ चोवीशी पद लाभे.

२ उपशम अने क्षायक ए बे मार्गणाएं—चोथा अविरतिसम्यग्दृष्टिथी अपूर्वलगे पांच गुणठाणाना ८।७।६।५।४ ए पांच उदयस्थानकें आठना उदयनी एक चोवीशीना ८, सातना उदयनी त्रण चोवीशीना २१, छेना उदयनी छे चोवीशीना ३६, पांचना उदयनी सात चोवीशीना ३५ अने चारना उदयनी त्रण चोवीशीना १२ एवं वीश चोवीशीना मली ११२ चोवीशीपद लाभे.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—चोथाथी अप्रमत्तसुधी चार गुणठाणाना ५।६।७।८।९ ए पांच उदयस्थानकें पांचना उदयनी बे चोवीशीना १०, छेना उदयनी पांच

चोवीशीना ३०, सातना उदयनी पांच चोवीशीना ३५, आठना उदयनी त्रण चोवीशीना २४, नवना उदयनी एक चोवीशीना ९. एवं सोल चोवीशीना मळी १०८ चोवीशीपद लाभे.

१ मिश्र मार्गणाए—७।८।९ ए त्रण उदयस्थानकें सातना उदयनी एक चोवीशीना ७, आठना उदयनी बे चोवीशीना १६, अने नवना उदयनी एक चोवीशीना ९. एवं बत्रीस चोवीशीपद लाभे

१ सास्वादन मार्गणाए—७।८।९ ए त्रण उदयस्थानकें चार चोवीशीना ३२ चोवीशीपद लाभे. एटलुं विशेष छे के मिश्रें मिश्रमोहनीयनी प्रकृति समेतना त्रण उदयस्थानक होय. अने सास्वादनें मिश्रमोहनीयनी प्रकृतिना उदयने ठामें अनंतानुबंधिनी प्रकृतिनो उदय समेत त्रण उदयस्थानक होय.

१ मिथ्यात्व मार्गणाए—७।८।९।१० ए चार उदयस्थानकें सातना उदयनी एक चोवीशीना ७, आठना उदयनी त्रण चोवीशीना २४, नवना उदयनी त्रण चोवीशीना पद २७ अने १० ना उदयनी एक चोवीशीना १० एवं ६८ चोवीशीपद लाभे.

१ अनाहारी मार्गणाए—मिथ्यात्व गुणठाणें अनंतानुबंधि समेतना ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानकें चार चोवीशी तथा सास्वादन गुणठाणें ७।८।९ ए त्रण उदयस्थानकनी चार चोवीशी तथा अविरतियें ६।७।८।९ ए चार उदयस्थानकनी आठ चोवीशी एवं सोल चोवीशी थाय छे तेमां दशना उदयनी एक चोवीशीना १०, नवना उदयनी चार चोवीशीना पद ३६, आठना उदयनी छ चोवीशीना ४८, सातना उदयनी चार चोवीशीना २८ अने छना उदयनी एक चोवीशीना ६ एवं त्रण गुणठाणांना पांच उदयस्थानकनी सोल चोवीशीना मळी १२८ चोवीशीपद लाभे.

---

८५ बासठमार्गणाने विषे पदवृन्द संख्यानुं द्वार–

पदसंख्या द्वारमां कहेला चोवीशीपदना १०७ ना भांगाने चोवीशगुणा करवा, द्विकसंयोगी बार भांगाने बमणा करवा अने एकसंयोगीना ५ भांगाने भेळा करवा. त्यारे मोहनीयकर्मना भांगवार सामटी सिन्योत्तर ८४७७ पदवृंदनी संख्या थाय छे ते गुणठाणा माश्रयी जाणवी.

१ नरकगति मार्गणाए–१०७ उदयपदना भांगाने आठे गुणतां १२१६ पदवृंद.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए—उदयपदनी चोवीशीना २४४ पदना भांगाने चोवीशे गुणतां ५८०६ पदवृंद होय.

१२ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, शुक्ललेश्या
भव्य, संज्ञी, आहारी एवं बार मार्गणाएं—प्रत्येकें ८४७७ पदवृंद होय.

१ देवगति मार्गणाएं—१९२ उदयपदना पोड़चकना आंकने चोकगुणा कर-
तां १०७२ पदवृंद होय.

८ एकेंद्रियादिजाति चार, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय अने असंज्ञी ए
आठ मार्गणाएं—प्रत्येकें अड़सठपदोंना अष्टकने आठ गुणा करतां ५४४ पदवृंद होय.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें ३६ अष्टकना पदोंना आंकने
आठ गुणा करतां २८८ पदवृंद होय.

३ त्रणवेद मार्गणाएं—३५२ उदयपदना अष्टकना आंकने आठ गुणा करतां २८१६
अने द्विकसंयोगीना ४ भांगाने दुगुणा करतां ८ एवं २८२४ पदवृंद होय.

३ क्रोध, मान, माया ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येकें उदयपदना षट्क ३५२ ने छे
गुणा करतां २११२ थाय, द्विकसंयोगी भांगा त्रणने बमणां करतां ६ भांगा, एकसं-
योगीनो १ भांगो एवं सर्व मली २११९ पदवृंद होय.

१ लोभ मार्गणाएं—क्रोधादिमां कहेला २११९ अने सूक्ष्मलोभनो एक भांगो
एवं २१२० पदवृंद होय.

४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं—प्रत्येकें
अविरतिथी अपूर्वकरण गुणठाणा सुधी कहेला २२० चोवीशीपदने २४ गुणा
करतां ५२८०, द्विकसंयोगी बारभांगाने दुगुणा करतां २४ अने एकसंयोगीना ५
एवं ५३०९ पदवृंद होय.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—१०८ चोवीशपदने चोवीश गुणाकरतां २५९२ थाय
तेमां पूर्वोक्त रीते २९ भांगा क्षेपिये त्यारे २६२१ पदवृंद होय.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं—मोहनीयकर्मनो
सर्वथा क्षय थयेलो छे तेथी पदवृंद न होय.

३ त्रणअज्ञान मार्गणाएं—१३२ उदयपदनी चोवीशीने चोवीशगुणा क-
रतां ३१६८ पदवृंद होय.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं—१०८ पदना आंकने चोवीशे
गुणतां २५९२ थाय तेमां द्विकसंयोगीना बमणां करतां २४ अने एकोदयना अनि-
वृत्तिगुणठाणानां ४ क्षेपवाथी २६२० पदवृंद होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—८८ षोड़शकने १६ गुणतां १४०८ पदवृंद.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं--संज्वलनलोभनो एकज प्रकृतिनो उदय छे माटे पदवृंद पण एकज होय.

१ देशविरति मार्गणाएं-५२ पदोंना आंकने चोवीशे गुणिये तेवारे १२४८ पदवृंद होय.

१ अविरति मार्गणाएं—१९२ पदने २४ गुणा करतां ४६०८ पदवृंद होय.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—२८८ पदने २४ गुणतां ६९१२ पदवृंद होय.

२ तेजोलेश्या, अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाएं—३३२ पदोंने २४ गुणतां ७९६८.

१ अभव्य मार्गणाएं—३६ पदने चोवीशे गुणतां ८६४ पदवृंद होय.

२ उपशम अने क्षायिक ए बे मार्गणाएं--प्रत्येकें ११२ चोवीशीपदना आंकने २४ गुणतां २६८८ थाय तेमां द्विकसंयोगी अने एकसंयोगी २९ भांगाने मेळिये तेवारे २७१७ पदवृंद होय.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—१०८ चोवीशीपदने चोवीशे गुणतां २५९२ पदवृंद होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—३२ चोवीशीपदने चोवीशे गुणतां ७६८ पदवृंद होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—३२ चोवीशीपदने चोवीशे गुणतां ७६८ पदवृंद होय.

१ मिथ्यात्व मार्गणाएं—६८ चोवीशीपदने चोवीशे गुणतां १६३२ पदवृंद होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—१२८ चोवीशीपदने चोवीशे गुणतां ३०७२ पदवृंद होय.

---

८६ बासठमार्गणाने विषे मोहनीयकर्मना सत्ता बंध उदयना भांगानुं द्वार–

गुणठाणा आश्रयी सत्ताबंध उदयना भांगा कहे छे—

१ मिथ्यात्वगुणठाणें—बावीसना बंधे ७।८।९।१० ए चार उदयस्थानकें सातना उदयें अट्ठावीश प्रकृतिनो १, आठ नव अने दशना उदयें २८।२७।२६ ए त्रण त्रण भांगा गणतां ९. एवं चार उदयस्थानकना मळी दश भांगा थाय.

२ सास्वादनगुणठाणें—एकवीसना बंधे ७।८।९ ए त्रण उदयस्थानकें अठावीश प्रकृतिनो एक एक भांगो लेतां त्रण भांगा आवे.

३ मिश्रगुणठाणें—सत्तरना बंधे ७।८।९ ए त्रण उदयस्थानकें २८।२७।२४ ए त्रण त्रण भांगा लेतां ९ भांगा आवे.

४ अविरतिसम्यक्दृष्टि गुणठाणे—सत्तरेना बंधे ६।७।८।९ ए चार उदय-
स्थानके छेना उदयें २८।२४।२१ ए त्रण भांगा, सातना उदयें २८।२४
२३।२२।२१ ए पांच भांगा, आठना उदयें २८।२४।२३।२२।२१ ए
पांच भांगा अने नवना उदयें २८।२४।२३।२२ ए चार भांगा. एवं चार
उदयस्थानकना मली १७ भांगा लाभे.

५ देशविरतिगुणठाणे—तेरना बंधे ५।६।७।८ ए चार उदयस्थानके पांचना
उदयें २८।२४।२१ ए त्रण भांगा, छेना उदयें २८।२४।२३।२२।२१
ए पांच भांगा, सातना उदयें २८।२४।२३।२२।२१ ए पांच भांगा अने
आठना उदयें २८।२४।२३।२२ ए चार भांगा एवं चार उदयस्थानकना
मली १७ भांगा होय.

६ प्रमत्त अने ७ अप्रमत्तगुणठाणे—प्रत्येके नवना बंधे ४।५।६।७ ए चार उदय-
स्थानके चारना उदयें २८।२४।२१ ए त्रण भांगा, पांचना उदयें २८।२४
२३।२२।२१ ए पांच भांगा, छेना उदयें २८।२४।२३।२२।२१ ए पांच
भांगा अने सातना उदयें २८।२४।२३।२२ ए चार भांगा. ए चार उद-
यस्थानकना मली १७ भांगा होय.

८ अपूर्वकरण गुणठाणे—नवना बंधे ४।५।६ ए त्रण उदयस्थानकना २८।
२४।२१ एं त्रण त्रण भांगा गणतां नव भांगा होय.

९ अनिवृत्तिबादरगुणठाणे—प्रथम भागे-पांचना बंधे अने बेना उदयें २८।२४।
२१।१३।१२।११ ए छ भांगा होय.

बीजा भागे-चारना बंधे अने एकना उदयें २८।२४।२१।११।५।४
ए छे भांगा होय.

त्रीजाभागे-त्रणना बंधे अने एकना उदयें २८।२४।२१।४।३ ए पांच.

चोथा भागे-बेना बंधे अने एकना उदयें २८।२४।२१।३।२ ए पांच.

पांचमां भागे-एकना बंधे अने एकना उदयें २८।२४।२१।२।१ एं
पांच भांगा होय एवं नवमां गुणठाणाना पांचों भागना मली २७ भांगा जाणवा.

१० सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे—बंध शून्य, एकना उदयें २८।२४।२१।१ ए चार.

११ उपशांतमोहगुणठाणे—बंध अने उदयशून्य २८।२४।२१ ए त्रण भांगा
होय. एवी रीते उपरोक्त अग्यार गुणठाणाना मली १३१ भांगा जाणवा.

१२ क्षीणमोह, १३ सयोगीकेवली अने १४ अयोगीकेवली ए त्रण
गुणठाणे-मोहनीयकर्मनो सर्वथा क्षय थयेलो छे तेथी कोई भांगो न लाभे.

गुणठाणा आश्रयी मोहनीयकर्मनी प्रकृतिना

नंबरनुमार	गुणठाणाना नाम	बंधस्थानक	दशनो उदयस्था०	नवनो उदयस्था०	आठनो उदयस्था०	सातनो उदयस्था०	छेनो उदयस्था०	पांच… उदय…
१	मिथ्यात्व	२२	२८।२७ २६	२८।२७ २६	२८।२७ २६	२८	०	०
२	सास्वादन	२१	०	२८	२८	२८	०	०
३	मिश्रदृष्टि	१७	०	२८।२७ २६	२८।२७ २६	२८।२७ २६	०	०
४	अविरतिसम्यक्दृष्टि	१७	०	२८।२४ २३।२२	२८।२४ २३।२२ २१	२८।२४ २३।२२ २१	२८।२४ २१	०
५	देशविरति	१३	०	०	२८।२४ २३।२२	२८।२४ २३।२२ २१	२८।२४ २३।२२ २१	२८। २…
६	प्रमत्त	९	०	०	०	२८।२४ २३।२२	२८।२४ २३।२२ २१	२८। २३। २…
७	अप्रमत्त	९	०	०	०	२८।२४ २३।२२	२८।२४ २३।२२ २१	२८। २३। २…
८	अपूर्वकरण	९	०	०	०	०	२८।२४ २१	२८। २…
९	अनिवृत्ति बादर	[illegible]	०	०	०	०	०	…
१०	सूक्ष्मसंपराय	०	०	०	०	०	०	…
११	उपशांतमोह	०	०	०	०	०	०	…
सर्वभांगानी संख्या			३	११	१६	२३	२१	१६…

सत्ताबंध उदयस्थानकनो यंत्र,

बारनो उदयस्था०	बेनो उदयस्था०	एक प्रकृतिनो उदयस्थानक				मनुष्य भने एकेलो उदय०	केवल भने उदय-भूषण	उदयस्थानकोमां
		त्रीजाभांगे बारमोभंग	बीजाभांगे दशमोभंग	चोथाभांगे नवमोभंग	पहेलाभांगे एकादशभंग			
०	०	०	०	०	०	०	०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	३
०	०	०	०	०	०	०	०	९
०	०	०	०	०	०	०	०	१७
०	०	०	०	०	०	०	०	१७
२८।२४ २१	०	०	०	०	०	०	०	१७
२८।२४ २१	०	०	०	०	०	०	०	१७
२८।२४ २१	०	०	०	०	०	०	०	९
०	२८।२४ २१।११ १२।११	२८।२४ २१।११ ६।४	२८।२४ २१।४।१	२८।२४ २१।१।२	२८।२४ २१।२।१	०	०	२७
०	०	०	०	०	०	२८।२४ २१।१	०	४
	०	०	०	०	०	०	२८।२४ २१	१
	६	६	८	८	८	४	३	१११

३ नरकगति, देवगति, अविरति ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येकें प्रथमना चार गुणठाणें कहेला ६।७।८।९।१० ए पांच उदय स्थानक कह्या. माटे छना उदयना १ भांगा, सातना उदयना १० भांगा, आठना उदयना १२ भांगा, नवना उदयना ११ भांगा, अने दशना उदयना ३ भांगा, एवं ५ उदयस्थानकना मली ३९ भांगा होय. एटलुं विशेष छे के देवगति अने नरकगति मार्गणामां २३ प्रकृतिनो सत्तास्थानक न होवाथी सात आठ अने नवना उदयें २३ प्रकृतिना सत्तास्थानकना त्रण भांगा विना बाकी ३६ सत्ताना भांगा होय.

१२ मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, त्रणयोग, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, शुक्लेश्या, भव्य, संज्ञी अने आहारी एवं बार मार्गणाएं—प्रत्येकें प्रथमना अग्यार गुणठाणें कहेला १।२।४।५।६।७।८।९।१०।० एवं दश उदयस्थानकना १३३ भांगा होय.

८ एकेंद्रियादिजाति चार, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय अने असंज्ञी ए आठ मार्गणाएं—प्रत्येकें मिथ्यात्व गुणठाणें—अनंतानुबंधिना उदयनी नियमा छे माटे अनंतानुबंधि समेत ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानकना २८।२७।२६ ए त्रण त्रण भांगा गणतां नव भांगा होय. अने सास्वादनगुणठाणें ७।८।९ ए त्रण उदयस्थानकें अट्ठावीशनी सत्तानो एक एक भांगो गणतां ३ भांगा होय एवं बार भांगा जाणवा.

२ तेउकाय अने वायुकाय मार्गणाएं—मिथ्यात्वगुणठाणें अनंतानुबंधिना उदय समेत ८।९।१० उदयस्थानकें कह्या २८।२७।२६ ए त्रण त्रण भांगा गणतां ९ होय.

३ त्रणवेद मार्गणाएं—प्रत्येकें मिथ्यात्वथी लई नवमां गुणठाणाना प्रथम भाग सुधी २।४।५।६।७।८।९।१० ए आठ उदयस्थानकें बेना उदयें ६ भांगा, चारना उदयें नव भांगा, पांचना उदयें सोळ भांगा, छना उदयें २१ भांगा, सातना उदयें २१ भांगा, आठना उदयें १६ भांगा, नवना उदयें ११ भांगा. अने दशना उदयें ३ भांगा एवं आठ उदयस्थानकना मली १०५ भांगा होय.

१ क्रोध मार्गणाएं—मिथ्यात्वथी अनिवृत्तिबादरगुणठाणाना बीजा भाग सुधीना १।२।४।५।६।७।८।९।१० ए नव उदयस्थानकें चारना बंधे एकना उदयें ४ भांगा, बेना उदयें ६ भांगा, चारना उदयें ९ भांगा, पांचना उदयें १६ भांगा छना उदयें २१ भांगा, सातना उदयें २१ भांगा, आठना उदयें १६ भांगा, नवना उदयें ११ भांगा. अने दशना उदयें ३ भांगा एवं १११ भांगा होय.

१ मान मार्गणाएं—मिथ्यात्वथी अनिवृत्तिबादरगुणठाणाना बीजा भाग सुधीनां १।२।४।५।६।७।८।९।१० ए नव उदयस्थानकें त्रणना बंधे एकना

उदयें ५ भांगा, चारना बंधे एकना उदयें ६ भांगा, बेना उदयें ६ भांगा, चारना उदयें ९ भांगा, पांचना उदयें १६ भांगा, छेना उदयें २१ भांगा, सातना उदयें २१ भांगा, आठना उदयें १६, नवना उदयें ११, अने दशना उदयें ३, एवं ११६ भांगा होय.

१ माया मार्गणाएं—मानमां कह्या प्रमाणें ११६ भांगा, अने अनिवृत्तिबादर गुणठाणेंना चोथा भागे बेना बंधे एकना उदयें पांच भांगा एवं १२१ भांगा होय.

१ लोभ मार्गणाएं—प्रथमना दश गुणठाणें कह्या प्रमाणें १।२।४।५।६।७।८।९।१०।० ए दश उदयस्थानकना १३० भांगा होय.

४ मत्यादि त्रणज्ञान अने अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं—प्रत्येकें अविरतिथी उपशांतमोह सुधीना आठगुणठाणें कह्या प्रमाणें ९।८।७।६।५।४।३।२।१।० ए १० उदयस्थानकें १११ भांगा होय.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण ए त्रण गुणठाणें कहेला ७।६।५।४ ए चार उदयस्थानकना ४३ भांगा, अग्यारमां गुणठाणें कहेला बंध अने उदय शून्यना ३ भांगा, दशमां गुणठाणें कहेला बंध शून्यना ४ भांगा, अने नवमां गुणठाणें कहेला २७ भांगा एवं ७७ भांगा होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन मार्गणाएं—बंधउदय अने सत्तानो संवेध भांगो नथी.

३ त्रणअज्ञान मार्गणाएं—प्रत्येकें प्रथमना त्रणगुणठाणें कहेला ७।८।९।१० ए चार उदयस्थानकना २२ भांगा होय.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें नवमां गुणठाणाना पांचों भागना २७ भांगा. अने आठमां, सातमां अने छट्ठा ए त्रण गुणठाणें कहेला ७।६।५।४ ए चार उदयस्थानकना ४३ भांगा एवं ७० भांगा होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—छट्ठा अने सातमां गुणठाणें कहेला ७।६।५।४ ए चार उदयस्थानकें सातना उदयना ८ भांगा, छेना उदयना १० भांगा, पांचना उदयना १० भांगा, अने चारना उदयना ६ भांगा एवं ३४ भांगा होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं—बंधशून्य एकना उदयें २८।२४।२१।१ ए चार भांगा होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—उपशांतमोह गुणठाणें बंध अने उदय शून्यनां २८।२४।२१ ए त्रण भांगा होय.

१ देशविरति मार्गणाएं—८।७।६।५ ए चार उदयस्थानकें आठना उदयें ४, सातना उदयें ५, छेना उदयें ५, अने पांचना उदयें ३, एवं १७ भांगा होय.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—प्रथमना छे गुणठाणें कहेला १०।९।८।७।६।५।४ ए सात उदयस्थानकें दशना उदयें ३ भांगा, नवना

उदयें ११ भांगा, आठना उदयें १६ भांगा, सातना उदयें १९ भांगा, छेना उदयें ११, पांचना उदयें ८, चारना उदयें ३ एवं सात उदयस्थानकना मली ७३ भांगा होय.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या मार्गणाए—प्रत्येकें प्रथमना छे गुणठाणें कहेला सात उदयस्थानकना ७३ भांगा, सातमा गुणठाणाना १७ भांगा एवं ९० भांगा होय.

१ अभव्य मार्गणाए—मिथ्यात्व गुणठाणें अनादिमिथ्यात्वना लीधे अनंतानुबंधि समेतना ८।९।१० ए त्रण उदयस्थानकें दशना उदयें ३ भांगा, नवना उदयें ३ भांगा अने आठना उदयें ३ भांगा एवं ९ भांगा होय.

१ उपशम मार्गणाए—चोथा गुणठाणें कहेला आठना उदयें २ भांगा, सातना उदयें २ भांगा, छेना उदयें २ भांगा. देशविरति गुणठाणें कहेला ५।६।७ ए त्रण उदयस्थानकें पण एक एक उदयना २८।२४ ए बे बे गणतां ६ भांगा. तथा प्रमत्त गुणठाणें कहेला ६।५।४ ए त्रण उदयस्थानकना बे बे भांगा गणतां ६ भांगा. अप्रमत्त गुणठाणें पण ६ भांगा. अपूर्वकरणगुणठाणें पण ६ भांगा. नवमा गुणठाणें कहेला पांच बंधस्थानकना २८।२४ ए बे बे गणतां १० भांगा. दशमागुणठाणें कहेला २८।२४ ए बे भांगा. तथा एहिज बे भांगा अग्यारमे गुणठाणे पण होय. एवं आठ गुणठाणाना मली ४४ भांगा होय.

१ क्षायक मार्गणाए—चोथे गुणठाणें ६।७।८ ए त्रण उदयस्थानकें प्रत्येकें एकवीस प्रकृतिनो एक एक भांगो गणतां त्रण भांगा. देशविरति गुणठाणें ५।६।७ ए त्रण उदयस्थानकें पण एहिज त्रण भांगा. छट्ठा, सातमा अने आठमा गुणठाणें ४।५।६ ए त्रण उदयस्थानकें पण एहिज त्रण त्रण भांगा लेतां ९ भांगा. नवमा गुणठाणें ५ ना बंधे २१।१३।१२।११ ए चार भांगा, चारना बंधे २१।११।५।४ ए चार भांगा, तथा त्रणना बंधे २१।४।३ ए त्रण भांगा, २ ना बंधे २१।३।२ ए ३ भांगा, तथा १ ना बंधे २१।२।१ ए त्रण भांगा. एवं पांचो भागना १७ भांगा. दशमा गुणठाणें लोभना उदयें एक प्रकृतिनी सत्तानो एक भांगो. अने उपशमश्रेणीवाला आश्री २१ प्रकृतिनी सत्तानो बीजो भांगो. अग्यारमा गुणठाणें एकवीस प्रकृतिनी सत्तानो एक भांगो एवं सर्व ३५ भांगा होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाए—प्रथमना पांच गुणठाणां होय. तेमां चोथा सम्यग्दृष्टिगुणठाणें तो क्षयोपशमिक १ उपशमिक २ ए बे सम्यक्त्व संख्याता वर्षायुवाला तिर्यंचमां होय अने क्षायिकसम्यक्त्व असंख्य वर्षायुवाला युगलिक [illegible] तिर्यंचमां होय, तथा देशविरति गुणठाणो संख्याता वर्षायुवाला तिर्यंचने होय, असंख्याता वर्षायुवाला तिर्यंचमां देशविरतिपणुं न होवाथी क्षायिकसम्यक्त्वनी २१

प्रकृतिनी सत्ता नथी. तथा २८ प्रकृतिनी सत्ता पण तिर्यंचने चोथे गुणठाणे संभवे पण पांचमे गुणठाणे न संभवे, अने २३ प्रकृतिनी सत्ता तो तिर्यंचगतिमां न होय माटे अहीं प्रथमना पांच गुणठाणे कहेलां ५।६।७।८।९।१० ए छ उदयस्थानके पांचना उदये देशविरतिएं–२८।२४ ए २ भांगा. छना उदये चोथा गुणठाणे–२८।२४।२१ ए त्रण भांगा. पांचमे गुणठाणे–२८।२४ ए बे भांगा, एवं ५ भांगा. तथा सातना उदये प्रथमगुणठाणे–२८ नो एक. बीजे गुणठाणे–२८ नो एक, त्रीजे गुणठाणे–२८।२७।२४ ए त्रण. चोथे गुणठाणे–२८।२४।२२।२१ ए चार अने पांचमे गुणठाणे २८।२४ ए बे एवं सातना उदयना ११ भांगा होय. आठना उदयना प्रथम गुणठाणे २८।२७।२६ ए त्रण, बीजे गुणठाणे २८ नो एक, त्रीजे गुणठाणे २८।२७।२४ ए त्रण, चोथे गुणठाणे २८।२४।२२।२१ ए चार, अने पांचमे गुणठाणे २८।२४ ए बे एवं १३ भांगा होय. तथा नवनाउदये मिथ्यात्वे–२८।२७।२६ ए त्रण. बीजे गुणठाणे २८ नो एक, त्रीजे गुणठाणे २८।२७।२४ ए त्रण, चोथे गुणठाणे २८।२४।२२ ए त्रण एवं १० भांगा होय. तथा दशना उदये मिथ्यात्व गुणठाणाना २८।२७।२६ ए ३ भांगा, एवं सर्वे छ उदयस्थानके पांच गुणठाणाना मळी ४४ भांगा होय.

१ क्षयोपशम मार्गणाए—अविरतिगुणठाणे नवना उदये ४ भांगा, ८ ना उदये ५ भांगा, ७ ना उदये ५ भांगा. ए चौद भांगामांथी २१ नी सत्ताना २ भेद क्षायिक मेळा गणिया देखी ते विना १२ भांगा. तथा देशविरतिगुणठाणे ६।७।८ ए त्रण उदयस्थानके प्रत्येके कह्या २८।२४।२३।२२ ए चार भांगा गणतां १२ भांगा. तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त गुणठाणे प्रत्येके ५।६।७ ए त्रण उदयस्थानके कह्या २८।२४।२३।२२ ए चार लेतां २४ भांगा. एवं चोथा, पांचमां, छठ्ठा अने सातमां ए चार गुणठाणाना मळी ४८ भांगा होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—मिश्रगुणठाणे कहेला ७।८।९ ए त्रण उदयस्थानके प्रत्येके २८।२७।२४ ए त्रण त्रण भांगा लेतां ९ भांगा होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं—सातना उदये अट्ठावीशनी सत्तानो १, आठना उदये अट्ठावीशनी सत्तानो १, अने नवना उदये अट्ठावीशनी सत्तानो १ एवं ३ भांगा होय.

१ मिथ्यात्वमार्गणाएं—७।८।९।१० ए चार उदयस्थानके सातना उदये अट्ठावीशनी सत्तानो १, अने आठ, नव, अने दशना उदये २८।२७।२६ ए त्रण त्रण भांगा गणतां त्रण उदयना ९ भांगा एवं १० भांगा होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं—मिथ्यात्वगुणठाणाना उदये अनंतानुबंधि समेतनां ८

९।१० ए त्रण उदयस्थानकें प्रत्येकें २८।२७।२६ ए त्रण त्रण भांगा सर्वे ९ भांगा होय. शास्वादनगुणठाणें–७।८।९. ए त्रण उदयस्थानकें अट्ठावीश प्रकृतिनी सत्तानो एक एक भांगो गणतां ३ भांगा होय. तथा चोथा गुणठाणें ६।७।८।९ ए चार उदयस्थानकें छना उदयें २८।२४।२१ ए ३ भांगा. सातना उदयें २८ २४।२३।२२।२१ ए ५ भांगा. आठना उदयें २८।२४।२३।२२।२१ ए ५ भांगा अने नवना उदयें २८।२४।२३।२२ ए ४ एवं २९. भांगा होय.

---

८७ बासठमार्गणाने विषे नामकर्मनी प्रकृतिना बंधस्थानकना भांगानुं द्वार–

नामकर्मनी प्रकृतिना आठ बंधस्थानकना भांगा कहे छे—

१–त्रेवीशना बंधे भांगा कहे छे–सूक्ष्म अने साधारण समेत त्रेवीश बांधतां प्रथम भांगो १, तथा सूक्ष्म अने प्रत्येक समेत त्रेवीश बांधतां बीजो भांगो, तथा बादर अने साधारण समेत त्रेवीशना बंधनो त्रीजो भांगो. तथा बादर अने प्रत्येक समेत त्रेवीशना बंधनो चोथो भांगो एवं त्रेवीशना बंधना चार भांगा अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य मिथ्यादृष्टि–तिर्यंच तथा मनुष्यमां आवता.

२–पचीशना बंधस्थानकना भांगा कहे छे–पूर्वोक्त त्रेवीशमध्ये पराघात अने उश्वास मेळे थके पचीशनो बंधस्थानक होय. बादर, पर्याप्त, प्रत्येक अने स्थिर साथे पचीशबांधतां एक भांगो, तेमज अस्थिर साथे पचीश बांधतां बीजो भांगो. ते वळी शुभ साथे पचीश बांधतां बे भांगा तथा अशुभ साथे पचीश बांधतां बे भांगा एवं चार भांगा थाय. ए चार यश साथे अने चार अयश साथे मळी आठ भांगा थाय. एमज बादरपर्याप्त साधारण बांधतां स्थिरे एक भांगो अने अस्थिरें एक भांगो एवं बे भांगा थाय, ए बे भांगा शुभ साथे अने अशुभ साथे मळी ४ भांगा थया. तेमां साधारण साथे यशःकीर्ति न बांधे केमके तिहां अपशनोज बंध होय ते माटे ४, तेमज सूक्ष्म पर्याप्त प्रत्येकना उपरोक्त प्रमाणें एकला अयशना चार भांगा थाय, तथा सूक्ष्म पर्याप्त साधारण साथे पण अयश साथेना ४ भांगा थाय. एम सर्व मळीने पचीशने बंधे २० भांगा पर्याप्ता एकेंद्रियप्रायोग्य मिथ्यादृष्टि तिर्यंच, मनुष्य [illegible] ते होय. ए बीश भांगा मांहेना एकेंद्रियप्रायोग्य देवता जेवारें बांधे, त्यारें तिहां बादरपर्याप्त अने प्रत्येकना आठ भांगा उपजे.

पचीशना बंधे अपर्याप्ता बेइंद्रियप्रायोग्यनो एक, तथा अपर्याप्ता तेइंद्रियप्रायोग्यनो एक, तथा अपर्याप्तचतुरिंद्रिय प्रायोग्यनो एक, तथा अपर्याप्ततिर्यंचपंचेन्द्रिय प्रायोग्यनो एक, अने अपर्याप्तमनुष्यपंचेन्द्रिय प्रायोग्यनो एक एवं ५ भांगा पचीशना बंधना मिथ्यादृष्टितिर्यंच अने मनुष्यने विषे होय. कारण अहीं अपर्याप्तनामनी साथे शुभाशुभादिक परावर्तमान प्रकृति मांहेनी अशुभज बंधाय छे पण शुभ न बंधाय, तेथी अहीं बीजो भांगो कोई उपजे नहीं मात्र एकेकज भांगो होय. एवं पर्याप्ता अपर्याप्ता प्रायोग्यना मली २५ भांगा उपजे.

३–पचीश मांहे आतपनाम अथवा उद्योतनाम ए बे मांहेनो एक मेळवियें तेवारें निश्चे छवीशप्रकृतिनो बंधस्थानक थाय. अहीं बादर एकज लेवो माटे बादरपर्याप्ता प्रत्येक स्थिर साथे एक भांगो, अने अस्थिर साथेनो एक भांगो ए बे भांगा एक शुभना बंधना अने बे भांगा अशुभना बंधना मली ४, एमज चार भांगा एक यशःकीर्त्ति साथे अने ४ भांगा अयशःकीर्त्ति साथे ८, तथा आतप अने उद्योतना बंध भणी बे प्रकारे गणतां १६ भांगा थाय ए बादर पर्याप्ता प्रत्येक एकेंद्रिय प्रायोग्यना मिथ्यादृष्टि–तिर्यंच मनुष्य अने देवता एकेंद्रिय मांहे जनार होय तेमने विषे जाणवा.

४–अठावीशना बंधना भांगा कहे छे—इहां बंधस्थानाधिकारमां प्रकृतीनां नाम कहेल होवाथी अहीं ग्रन्थ वधवाना भयथी नथी कह्यां. हवे ए अठावीश प्रकृति स्थिर साथे बांधतां एक भांगो, तेमज स्थिरनी जगायें अस्थिरना बंधे पण एक भांगो. ए बे भांगा उपजे. एमने शुभाशुभ साथे गणतां चार भांगा, तेमज चारने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे गुणतां आठ भांगा देवगतिप्रायोग्यनी २८ प्रकृति बांधतां मिथ्यात्वथी मांडी देशविरति गुणठाणां सुधीना मनुष्य अने तिर्यंचने होय. पछी छठा गुणठाणे एकला मनुष्यने होय. तथा अप्रमत्त अने अपूर्वकरणगुणठाणावाळा मनुष्यने अठावीशना बंधे–स्थिर, शुभ अने यशःकीर्त्ति बंधाय माटे तथा शुभबंध भणी एकज भांगो उपजे ते पण आठ मांहेनो छे माटे जुदो गणवो नहीं. तथा नरकप्रायोग्यनी अठावीश बांधतां सर्वप्रकृति अशुभज बंधाय माटे अहीं बादरपर्याप्ता, प्रत्येक, अस्थिर, अशुभ, अने अयशःकीर्त्तिनो एकज भांगो उपजे. ते मिथ्यादृष्टि मनुष्य अने तिर्यंचने होय. एवं २८ ना बंधस्थानना ९ भांगा जाणवा.

५–ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकें–बेइंद्रियप्रायोग्य स्थिर साथे ओगणत्रीश बांधतां एक भांगो, तथा अस्थिर साथे ओगणत्रीश बांधतां एक भांगो ए बे भांगा शुभ साथे, तेमज २ भांगा अशुभ साथे पण ओगणत्रीशना बंधना होय एवं ४ भांगा शुभाशुभ साथे उपजे. तेमज यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे चार चार गणतां ८ भांगा बेइंद्रियप्रायोग्यना उपजे, तेमज ८ भांगा तेइंद्रियप्रायोग्यना अने ८ भांगा चतुरिंद्रियप्रायोग्यना एवं त्रण विकलेंद्रियप्रायोग्यना मळी २४ भांगा मिथ्यादृष्टितिर्यंच अने मनुष्यने होय.

तथा तिर्यंचपंचेंद्रिय पर्याप्त प्रायोग्य ओगणत्रीशना बंधे भांगा देखाडे छे संघयण ६ मांथी एक संघयणना बंधे एक भांगो तेवा ६ संघयण साथे ओगणत्रीशना बंधना ६ भांगा थाय, ते वळी एक एक संस्थानना बंध साथे छे छे भांगा लेतां छे संस्थानना छत्रीश भांगा शुभखगति साथे थया, तेमज अशुभखगतिना छत्रीश मेळवतां ७२ भांगा थाय. तेमज स्थिर, अस्थिर साथे १४४ थाय, ते वळी शुभ अने अशुभ साथे बमणा करतां २८८ थाय. ते वळी सुस्वर अने दुस्वर साथे बमणा करतां ५७६ थाय. ते सौभाग्य अने दौर्भाग्य साथे बमणा करतां ११५२ थाय. ते आदेय अने अनादेय साथे बमणां करतां २३०४ ए त्रेवीशसौ चार भांगा यशःकीर्त्ति अने त्रेवीशसौ चार भांगा अयशःकीर्त्ति साथे बांधतां बेहु मळीने ४६०८ थाय ए भांगा संज्ञीपंचेंद्रिय तिर्यंचप्रायोग्य मिथ्यात्वी चारगतिना जीवोंने होय. तथा शास्वादनीने हुंडकसंस्थान अने छेवट्ठं संघयण ए बेनो बंध न होवाथी पांच संघयणने पांच संस्थान साथे गुणतां २५ थाय, पछी सात वार पूर्वनी परें बमणा करिये तेवारे ३२०० भांगा थाय ए पण भांगा तेहिज ४६०८ मांहेना जाणवा. ते माटे जुदा गुणवा नहीं.

तथा मनुष्यपर्याप्त प्रायोग्यनी ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधना मिथ्यात्वी अने शास्वादनी चार गतिना जीवोंने ४६०८ भांगा मिथ्यात्वीने होय. तेमज एहिज मांहेना ३२०० भांगा शास्वादनीने होय. तथा प्रथमनो एकज संस्थान अने प्रथमनो एकज संघयण, तथा शुभखगति, सौभाग्य, आदेय, सुस्वर ए प्रकृतियों सहेत २९ प्रकृतिना बंधस्थानकें स्थिर साथे ओगणत्रीशना बंधनो एक भांगो, तेमज अस्थिर सहित ओगणत्रीशना बंधनो एक भांगो, एवं बे भांगा शुभ साथे अने बे भांगा अशुभ साथे मळी चार भांगा, एमने वळी यशःकीर्त्ति, अयशःकीर्त्ति साथे बमणा करतां ८ भांगा

तिना बंधस्थानकें पण एकली शुभज प्रकृतियोंनो बंध होवाथी एकज भांगो देवगति प्रायोग्यनो अप्रमत्त तथा अपूर्वकरणगुणठाणें मनुष्यनेज होय.

८–यशःकीर्त्तिनी एकज प्रकृतिनुं बंधस्थानक अपूर्वकरणथी सूक्ष्मसंपराय सुधीना मनुष्यने विषे एकज भांगो होय.

एवं त्रेवीशना बंधस्थानकें अपर्याप्ता एकेंद्रियप्रायोग्यना ४, पचीशना बंधस्थानकें पर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्यना २० भांगा, बेइंद्रिय अपर्याप्ता प्रायोग्यनो १ भांगो, तथा तेइंद्रिय अपर्याप्ता प्रायोग्यनो एक भांगो, चतुरिंद्रिय अपर्याप्ता प्रायोग्यनो एक भांगो, पंचेंद्रियतिर्यंच अपर्याप्तप्रायोग्यनो १ भांगो अने मनुष्य अपर्याप्तप्रायोग्यनो एक भांगो, एवं २५ भांगा थाय. तथा छव्वीशना बंधे एकेंद्रियपर्याप्ता प्रायोग्यना १६ भांगा थाय. तथा अट्ठावीशने बंधे देवप्रायोग्यना ८, भांगा अने नरक प्रायोग्यनो एक भांगो एवं ९ भांगा थाय. तथा ओगणत्रीशना बंध स्थानकना बेइंद्रियप्रायोग्यना आठ, तेइंद्रिय प्रायोग्यना ८, चतुरिंद्रिय प्रायोग्यना ८, पंचेंद्रियतिर्यंच प्रायोग्यना ४६०८, मनुष्यप्रायोग्यना ४६०८, अने देवप्रायोग्यना ८, एवं ९२४८ भांगा थाय. तथा त्रीशना बंधे–बेइंद्रियप्रायोग्यना ८, तेइंद्रियप्रायोग्यना ८, चतुरिंद्रिय प्रायोग्यना ८, पंचेंद्रियतिर्यंचप्रायोग्यना ४६०८, मनुष्य प्रायोग्यना ८ अने देवप्रायोग्यनो एक भांगो एवं सर्वे मली ४६४१ भांगा थाय, तथा एकत्रीशना बंधस्थानकें–देवप्रायोग्यनो एकज भांगो होय. तथा एकना बंधनो पण १ भांगो थाय एवं आठ बंधस्थानकना १३९४५ भांगा नामकर्मना जाणवा.



अधिकारी आश्रयी नामकर्मना बंधस्थानकना भांगानो यंत्र–

नम्बरवार	बंधस्थानकना नाम—	पर्याप्तएकेंद्रियप्रायोग्य भांगा	अपर्याप्तएकेंद्रियप्रायोग्य भांगा	पर्याप्तविकलेंद्रियप्रायोग्य भांगा	अपर्याप्तविकलेंद्रियप्रायोग्य भांगा	पर्याप्तपंचेंद्रियतिर्यंचप्रायोग्य भांगा	अपर्याप्तपंचेंद्रियतिर्यंचप्रायोग्य भांगा	पर्याप्तमनुष्यप्रायोग्य भांगा	अपर्याप्तमनुष्यप्रायोग्य भांगा	देवगतिप्रायोग्य भांगा	नरकगतिप्रायोग्य भांगा	बंधस्थानकना भांगानी संख्या
१	त्रेवीशना बंधस्थानकना भांगा	०	४	०	०	०	०	०	०	०	०	४
२	पच्चीशना बंधस्थानकना भांगा	२०	०	०	३	०	१	०	१	०	०	२५
३	छवीशना बंधस्थानकना भांगा	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१६
४	अठ्ठावीशना बंधस्थानकना भांगा	०	०	०	०	०	०	०	०	८	१	९
५	ओगणत्रीशना बंधस्थानकना भांगा	०	०	२४	०	४६०८	०	४६०८	०	८	०	९२४८
६	त्रीशना बंधस्थानकना भांगा	०	०	२४	०	४६०८	०	८	०	१	०	४६४१
७	एकत्रीशना बंधस्थानकना भांगा	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
८	एकना बंधस्थानकना भांगा	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
	बंधस्थानकना भांगानी संख्या	३६	४	४८	३	९२१६	१	४६१६	१	१९	१	१३९४५

१ नरकगति मार्गणाए-२९।३० ए बे बंधस्थानक होय. त्यां ओगणत्रीसना बंधना मनुष्यगति अने तिर्यंचगति प्रायोग्यनी बांधतां भांगा ९२१६ होय. तथा तिर्यंचप्रायोग्य त्रीश बांधतां भांगा ४६०८ तथा मनुष्यप्रायोग्य त्रीश बांधतां ८ भांगा एवं सर्वे मळीने १३८३२ भांगा होय.

७ तिर्यंचगति, त्रणअज्ञान, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी ए सात मार्गणाए-प्रत्येकें २३।२५।२६।२८।२९।३० ए छ बंधस्थानकना मिथ्यात्व गुणठाणे पेठे प्रमाणें १३९२६ भांगा लाभे.

१ मनुष्यगति मार्गणाए-२३।२५।२६।२८।२९।३०।३१।१ ए आठ बंधस्थानकें १३९४५ भांगा कह्या ते मध्ये मनुष्यगति प्रायोग्य तीर्थंकरनाम सहित त्रीश सहितना बंधस्थानकना सम्यक्दृष्टि-देवता अने नारकी त्रीशनुं बंधस्थानक बांधतां स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्तिना भेदथी उपना जे आठ भांगा देव अने नारकीमां होय. माटे पूर्वोक्त १३९४५ भांगामांथी आठ भांगा निकालतां शेष १३९३७ भांगा लाभे.

१ देवगति मार्गणाए-२५।२६।२९।३० ए चार बंधस्थानकें पचीशना बंधना एकेंद्रिय बादर पर्याप्त प्रत्येकप्रायोग्यना ८ भांगा, छवीशना बंधे आतपना ८, अने उद्योतना बंधे ८, तथा ओगणत्रीश अने त्रीशना बंधस्थानकें मिथ्यात्वे रह्यां थकां तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्त प्रायोग्यना ९२१६ भांगा, मनुष्यपर्याप्तानो प्रायोग्यना बंधे ४६०८, तथा मनुष्यपर्याप्तप्रायोग्यना तीर्थंकरनाम सहित ३० ना बंधे सम्यक्त्व गुणठाणाना ८ भांगा एवं चार बंधस्थानकना मळी १३८५६ भांगा लाभे.

७ एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए सात मार्गणाए-प्रत्येकें २३।२५।२६।२९।३० ए पांच बंधस्थानकें त्रेवीशना बंधे अपर्याप्त एकेंद्रियना ४ भांगा, पचीशना बंधना २५ भांगा, छवीशना बंधना १६ भांगा. ओगणत्रीशना बंधे विकलेंद्रिय प्रायोग्यना २४ भांगा अने तिर्यंचपर्याप्त पंचेंद्रियप्रायोग्यना ४६०८ भांगा. तथा मनुष्यपर्याप्त प्रायोग्यना पण ४६०८ भांगा, त्रीश सहितना बंधस्थानकें विकलेंद्रिय पर्याप्तप्रायोग्यना २४ भांगा, तथा पंचेंद्रियपर्याप्त तिर्यंच प्रायोग्य ४६०८ भांगा, एवं पांच बंधस्थानकना मळी १३९१७ भांगा लाभे.

१७ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, त्रणवेद, चारकषाय, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, भव्य, संज्ञी, आहारी एवं १७ मार्गणाए-प्रत्येकें आठ बंधस्थानकना १३९४५ भांगा.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम अने क्षायिक ए छ

मार्गणाएं–नरेकें मनुष्यगतिमायोग्यना ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधे ८ भांगा, अने तीर्थंकरनाम समेत मनुष्यमायोग्यनां त्रीशप्रकृतिनां बंधना ८ भांगा, देवमायोग्यना अट्ठावीशना बंधस्थानकना ८, अने तीर्थंकरनाम समेत ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधना पण ८ भांगा, आहारकद्विक समेत देवमायोग्यनो त्रीशना बंधनो १ भांगो, आहारकद्विक अने तीर्थंकरनाम समेतना देव मायोग्य एकत्रीशना बंधनो एक भांगो, एकज यशःकीर्त्तिना बंधस्थानकनो एक भांगो. एवी रीते मनुष्यगति मायोग्य बंधस्थानकना १६, देवगति मायोग्यना १६ अने २ तथा एकना बंधनो १, ए ३२ भांगा लाभे.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं–प्रत्येकें देवगति मायोग्य अट्ठावीश प्रकृतिना बंधना ८, ओगणत्रीशना बंधना ८, त्रीशना बंधनो १, एकत्रीशना बंधनो १, तथा एकना बंधनो १ एवं १९ भांगा लाभे.

३ केवलज्ञान, यथाख्यात, अने केवलदर्शन ए त्रण मार्गणाएं–आठ बंधस्थानक मांहेथी कोई बंधस्थानक न होय माटे भांगो न लाभे.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं–देवमायोग्यना अट्ठावीशना बंधस्थानकना आठ भांगा, ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकना ८, त्रीशना बंधस्थानकनो १, अने एकत्रीशना बंधस्थानकनो १ एवं १८ भांगा लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–एक प्रकृतिना बंधनो एकज भांगो लाभे.

१ देशविरति मार्गणाएं–देवमायोग्य अट्ठावीश प्रकृतिना बंधस्थानकना ८ भांगा, तीर्थंकरनाम समेत ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकना ८ भांगा, एवं १६ भांगा लाभे.

४ अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए चार मार्गणाएं–प्रत्येकें देवमायोग्यना ३०। ३१ ए बे बंधस्थानकना बे भांगा अने एकना बंधस्थानकनो एक भांगो. एवं त्रण भांगा विना १३९४२ भांगा लाभे.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—२५। २६। २८। २९। ३०। ३१ ए छ बंधस्थानकें पचीशना बंधे एकेंद्रियबादरपर्याप्ता प्रत्येकमायोग्यना ८ भांगा, एकेंद्रियबादरपर्याप्ता प्रत्येक आतापनाम अथवा उद्योत समेत छव्वीशना बंधे १६ भांगा, देवमायोग्यना २८ ना बंधे ८ भांगा, ओगणत्रीशना बंधे पर्याप्तातिर्यंच पंचेंद्रिय मायोग्यना ४६०८ भांगा, अने पर्याप्ता मनुष्यमायोग्यना ४६०८ भांगा, तीर्थंकरनाम सहित देवमायोग्यना ८, त्रीशना बंधे मनुष्यमायोग्यना ८ भांगा, पर्याप्ता तिर्यंचपंचेंद्रिय मायोग्यना ४६०८,

---

१ बंधपूर्वककर्मादिविचार नामक पुस्तकना पृष्ट २२२ मां कृष्णलेश्याएं १३९३५ भांगा पण लखेला छे.

देवप्रायोग्यनो एक भांगो, एकत्रीशना बंधे देवप्रायोग्यनो एक भांगो, एवी रीते पचीशना बंधे ८, छवीशना बंधे १६, अट्ठावीशना बंधे ८, ओगणत्रीशना बंधे ९२२४, त्रीशना बंधे ४६१७, अने एकत्रीशना बंधे १, एवं छे बंधस्थानकना मली १३८७४ भांगा लाभे.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—२८। २९। ३०। ३१ ए चार बंधस्थानकें अट्ठावीशना बंधे देवप्रायोग्यना ८, ओगणत्रीशना बंधे ८, त्रीशना बंधे १, अने एकत्रीशना बंधे १, ए देवगति प्रायोग्यना १८ भांगा होय, तथा तिर्यंचपर्याप्त पंचेंद्रिय प्रायोग्य ओगणत्रीशना बंधे ४६०८, अने त्रीशना बंधे ४६०८, एवं ९२१६ होय. तथा मनुष्यप्रायोग्य ओगणत्रीशना बंधे ४६०८, अने तीर्थंकरनाम समेत त्रीश प्रकृतिना बंधे ८, एवं ४६१६ भांगा होय. एवी रीते सर्वे मली १३८५० भांगा लाभे.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं–२८। २९। ३०। ३१। १ ए पांच बंधस्थानकें देवप्रायोग्य अट्ठावीशना बंधे ८, ओगणत्रीशना बंधे मनुष्यप्रायोग्य ४६०८ अने देवप्रायोग्यना ८, त्रीशना बंधे मनुष्यप्रायोग्य ८, अने देवप्रायोग्य १, एकत्रीशना बंधे १, तथा यशःकीर्त्तिना बंधे १, एवं पांच बंधस्थानकना मली ४६३५ भांगा लाभे.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं–२८। २९। ३०। ३१ ए चार बंधस्थानकें देवप्रायोग्य अट्ठावीशना बंधे ८, ओगणत्रीशना बंधे ८, त्रीशना बंधे १, अने एकत्रीशना बंधे १, मनुष्यप्रायोग्य ओगणत्रीशना बंधे ८ अने त्रीशना बंधे ८, एवं चार बंधस्थानकना मली ३४ भांगा लाभे.

२ तेउकाय अने वाउकाय ए बे मार्गणाएं-प्रत्येकें २३।२५।२६।२९।३० ए पांच बंधस्थानकें तिर्यंचगति प्रायोग्य त्रेवीशना बंधे ४, पचीशना बंधे अपर्याप्त मनुष्यना भांगा विना २४, तथा छव्वीशना बंधे १६, ओगणत्रीशना बंधे ४६३२, अने त्रीशना बंधे ४६३२ एवी रीते पांच बंधस्थानकना मली ९३०८ भांगा लाभे.

१ मिश्र मार्गणाएं–२८। २९ ए बे बंधस्थानकें देवप्रायोग्य अट्ठावीश प्रकृतिना बंधे ८, तथा मनुष्यप्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधे ८, एवं १६ भांगा लाभे.

१ शास्वादन मार्गणाएं–२८। २९। ३० ए त्रणस्थानकें देवप्रायोग्य अट्ठावीशना बंधे ८, मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रायोग्य ओगणत्रीशना बंधे ६४००, पर्याप्ततिर्यंच पंचेंद्रिय प्रायोग्य उद्योत समेत त्रीश प्रकृतिना बंधे ३२०० भांगा, एवं त्रण बंधस्थानकना मली ९६०८ भांगा लाभे.

१ अनाहारी मार्गणाएं–२३। २५। २६। २८। २९। ३० ए छे बंधस्थानकें नर-

कगति मायोग्य अट्ठावीश प्रकृतिना बंधे १ भांगो, देवमायोग्य ३०।३१ प्रकृतिना बंधे २ भांगा, यशःकीर्त्तिना बंधे एक भांगो, ए चार विना १३९४१ भांगा लाभे.

---

८८ बासठमार्गणाने विषे नामकर्मना उदयस्थानकना भांगानुं द्वार-

उदयस्थानकना चार भांगा कहे छे—

१–प्रथम वीश प्रकृतिना उदयस्थानकें–सयोगीकेवलीने केवल समुद्घाते अणाहारकपणें कार्मणकाययोगे वर्त्ततां २० प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां एक भांगो जाणवुं.

२–एकवीश प्रकृतिना उदयस्थानकना भांगा कहे छे–सयोगीकेवली गुणठाणें तीर्थंकरकेवलीने केवलसमुद्घात करतां वचली त्रीजी चोथी अने पांचमी त्रण समय सुधी अनाहारी होवाथी तिहां कार्मण काययोगे वर्त्ततां तीर्थंकर नाम समेत २१ प्रकृतिना उदयनो १ भांगो. तथा एकवीशनो उदय एकेंद्रियने पूर्वलाभवनुं शरीर मूक्या पछी जिहां लगे आगले भवे जइ अवतर्यो नथी तेने वचाले जाणवो, एटले भवने अपांतराले वर्त्ततां एकेंद्रियने होय. अहीं भांगा ५ उपजे ते कहे छे–एक सूक्ष्मपर्याप्त साथे, बीजो बादर पर्याप्त साथे ए बे भांगा पर्याप्तना कह्या अने एहिज बे भांगा अपर्याप्त साथेना मळी चार भांगा थया ते मांहेना सूक्ष्मपर्याप्त अने सूक्ष्मअपर्याप्त तथा बादर अपर्याप्त ए त्रण भांगा तो अयशःकीर्त्ति साथे होय, अने बादरपर्याप्त साथे यशः-कीर्त्ति सहितनो एक भांगो, अने अयशःकीर्त्ति सहितनो बीजो भांगो ए बे भांगा पूर्वोक्त त्रण भांगा साथे मेळवतां ५ भांगा थाय अहीं जे जीव आगले पोताने योग्य सर्व पर्याप्ति पूर्ण करशे तेने योग्यपणें करी लब्धि आश्रयीने भवान्तराले पण पर्याप्तो कहिये अहियां लब्धिपर्याप्तानीज विवक्षा जाणवी. तथा बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रिय ए त्रणने भवांतरालेनी एकवीश प्रकृतिना उदयस्थानकें अपर्याप्ताने तो एकज अयशःकीर्त्तिनो एकेको भांगो लीजे अने पर्याप्ताने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्तिना मळी बे बे भांगा होय, एवं त्रण विकलेंद्रियमां त्रण त्रण भांगा गुणतां ९ भांगा थाय. तथा तिर्यंच पंचेंद्रियने भवान्तरालेनी एकवीश प्रकृतिना उदयें वर्त्ततांने सुभगना उदयनो एक अथवा दुर्भगनी अपेक्षायें दुर्भगना उदयनो एक ए बे भांगा, तथा ए बे भांगा आदेयना उदयें अने अनादेयना उदयें पण बे भांगा लीजे त्यारे चार भांगा थाय

एने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्तिनी साथे गणना करतां आठ भांगा थया अने अपर्याप्ताना उदयें सौभाग्य, आदेय अने यशःकीर्त्ति ए त्रणनो उदय न होय, माटे विकल्पना अभावे बीजो भांगो न होवाथी एकज भांगो उपजे एवं ९ भांगा थाय. तथा मनुष्यमां पण भवांतरालनी एकवीश प्रकृतिना उदयें पण तिर्यंचपंचेंद्रियनी परें ९ भांगा जाणवा. तथा देवतामां भवांतरालनी एकवीश प्रकृतिना उदयें पण पूर्वोक्त प्रमाणें सौभाग्य, दौर्भाग्य, आदेय, अनादेय, यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्तिना विकल्पें ८ भांगा उपजे. तथा नारकीमां पण भवांतराले एकवीश प्रकृतिनो उदय होय तिहां भांगो १ होय, नारकीने परावर्त्तमान प्रकृतिमांथी अशुभ प्रकृतिनोज उदय होवाथी विकल्प न होय. एवं तीर्थंकरनो एक, एकेंद्रियना पांच, विकलेंद्रियना नव, तिर्यंचना नव, मनुष्यना नव, देवताना आठ, अने नारकीनो एक, सर्व मळी एकवीश उदयस्थानकना ४२ भांगा जाणवा.

३—चोवीश प्रकृतिना उदयस्थानकें भांगा कहे छे ए चोवीशप्रकृतिनो उदयस्थानक शरीरस्थ एकेंद्रियने विषेज होवाथी तिहां अग्यारभांगा थया छे एकवीशप्रकृतिना उदयस्थानकमां एकेंद्रियना ५ भांगा कह्या ते साधारण साथे पांच अने प्रत्येक साथे पांच ए बे साथे गुणतां दशभांगा थया अने तेमां एक भांगो वैक्रियनो मेळवुं कारण के बादरवायुकाय वैक्रियशरीर करे छे त्यां पण चोवीश प्रकृतिनो उदय होय. परन्तु विशेष के औदारिकशरीरने स्थाने वैक्रियशरीर कहेवुं, तिहां बादरप्रत्येक पर्याप्त अने अयशःकीर्त्ति साथे एकज भांगो होय, केमके तेउकाय अने वायुकायने साधारण तथा यशःकीर्त्तिनो उदय न होय, तेथी तेना भांगा न उपजे एवं सर्व मळी ११ भांगा थाय.

४—पचीश प्रकृतिना उदयस्थानकें भांगा कहे छे शरीरपर्याप्तिये पर्याप्ता एकेंद्रियने ए पचीश प्रकृतिनो उदय होय छे तिहां बादरपर्याप्त अने प्रत्येकनो एक भांगो तथा बादरपर्याप्त साधारणनो एक भांगो, ए बे भांगा यशःकीर्त्ति साथे अने बे भांगा अयशःकीर्त्ति साथे गणतां चार भांगा थया, तेमज बादरनी जग्याएं सूक्ष्म साथे प्रत्येक अने साधारणना विकल्पें बे भांगा थया, ए बे भांगा एक अयशःकीर्त्तिज साथे, पण यशःकीर्त्ति न लाभे माटे तेना भांगा न होय. एवं छ भांगा थया, तथा बादरवायुकायने वैक्रिय करतां शरीरपर्याप्तिये पर्याप्ताने पचीशनां उदयनो एक भांगो एवं सर्व मळी ७ भांगा थया. तथा वैक्रियतिर्यंचने पण वैक्रिय करतां पचीश प्रकृतिनुं प्रथम उदयस्थानक थाय तिहां

सौभाग्य, दौर्भाग्य त्रिकने वे भांगा तेने आदेय, अनादेय साथे गणतां चार भांगा, तथा यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्तिये गणतां आठ भांगा थाय. अहीं वैक्रियशरीर करतां संघयण न होय, अने संस्थान एकज समचतुरस्र होय, माटे तेना भांगा न थाय तेथी ८ भांगाज कह्या. तथा वैक्रियमनुष्यने पण वैक्रियशरीर करतां पचीस प्रकृतिनोज प्रथम उदयस्थानक होय, त्यां वैक्रियतिर्यंचना समानेज ८ भांगा थाय. तथा आहारकसाधुने आहारकशरीर करतां प्रथम पचीस प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, तिहां सौभाग्य, आदेय अने यशःकीर्त्तिनोज उदय होय, पण अशुभनो उदय न होवाथी १ भांगो कह्यो. ए पचीस प्रकृतिना उदयस्थानकना सर्वे मलीने एकेन्द्रियना आठ, वैक्रियतिर्यंचना आठ, वैक्रियमनुष्यना आठ अने आहारकसाधुनो १, एवं २५ भांगा थाय.

२—छवीसना उदयस्थानकना भांगा कहे छे—श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिये पर्याप्ता एकेन्द्रियने उच्छ्वासना उदय सहित छव्वीसना उदये पण पचीसना उदयनी पेरे भांगा छ थाय. अथवा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें न थाय तिहां सुधी उच्छ्वासना उदय विना उद्योतनो उदय होय. तेवारे पण छवीसनो उदयस्थानक थाय. बादरने उद्योत सहित छवीसना उदये प्रत्येक साथे एक भांगो, तथा साधारण साथे बीजो भांगो, ते वे भांगा यशःकीर्त्ति साथे लेवा. तथा तेहिज वे भांगा अयशःकीर्त्ति साथे लेवा एम चार भांगा थाय. तथा उद्योतने स्थानके आतप मेलवतां पण छवीसनो उदय थाय. तिहां प्रत्येकने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे वे भांगा थाय, केमके आतप तो पृथ्वीकाय मांहेज होय. माटे एक प्रत्येकज लीधो अने उद्योत तो वनस्पति मांहे पण होय. माटे तिहां प्रत्येक अने साधारण ए वे लीधा, तथा आतप अने उद्योतनो उदय बादरनेज होय पण सूक्ष्मने न होय, माटे अहीं सूक्ष्मनो उदय न लीधो. तथा बादरवायुकायने वैक्रिय करतां श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वासना उदय सहित छव्वीसना उदये होय तेथी एक भांगो जाणवो, केमके वायुकायने आतप उद्योत तथा यशःकीर्त्तिनो उदय पण नथी ते माटे बीजा भांगा न पामियें. एवं छव्वीसना उदये सर्वे मली १३ भांगा एकेंद्रियने होय. तथा विकलेंद्रियने स्वस्थाने उपज्या पछी छव्वीस प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, तिहां पर्याप्ताने यशःकीर्त्ति साथे एक भांगो, अने अयशःकीर्त्ति साथे एक भांगो ए वे भांगा पर्याप्ताना. अने अपर्याप्ताने यशःकीर्त्तिनो उदय नथी माटे अयशःकीर्त्तिनो एक भांगो होय तेवारे त्रण भांगा थाय.

एवं विकलेंद्रियमां त्रण त्रण भांगा गणतां ९ भांगा थया. तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच शरीरस्थने अवतर्यां पछी छव्वीशनो उदयस्थानक होय. तिहां पर्याप्ता साथे छे संघयणने गुणतां छे भांगा थाय. तेने छे संस्थान साथे गुणतां छत्रीश थाय तेने सौभाग्य अने दौर्भाग्य साथे गुणतां बहोत्तेर थाय तेने आदेय अने अनादेय साथे गुणतां १४४ थाय. तेने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे गुणतां बशो अठयासी थाय, अने अपर्याप्ताने हुंडकसंस्थान, छेवट्ठुंसंघयण, दौर्भाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्तिना उदयें एकज भांगो होय. केमके अपर्याप्ताने परावर्त्तमान अशुभ प्रकृतिनोज उदय होवाथी एकज भांगो होय. एवं २८९ भांगा थया. तथा मनुष्यने विषे पण तिर्यंचमां कह्या प्रमाणे २८९ भांगा थाय. एवी रीते एकेंद्रियना १३, विकलेंद्रियना ९, तिर्यंच पंचेंद्रियना २८९, अने मनुष्यना पण २८९. एवं सर्वे मली ए छव्वीशना उदयस्थानकना ६०० भांगा थाय छे.

६–सत्तावीश प्रकृतिना उदयस्थानकें भांगा कहे छे–स्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता एकेंद्रियमां उद्योत अथवा आताप ए बेमांनी एक प्रकृतिनो उदय गणतां सत्तावीश प्रकृतिनो उदयस्थानक थाय तिहां पूर्वोक्त रीतें छव्वीशना उदय मांहे उद्योत मेलतां चार भांगा साधारण अने प्रत्येक ए बेना तथा आताप मेलतां एक प्रत्येकज होवाथी बे भांगा, एवं छे भांगा जे पूर्वे कह्या तेज अहीं पण जाणवा. तथा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता देवतामां २७ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां सौभाग्य दौर्भाग्यादिना विकल्पना ८ भांगा पूर्वोक्त रीते पचीशना उदय प्रमाणे जाणवा. तथा शरीरपर्याप्ता नारकीने विषे पण सत्तावीशना उदयें दौर्भाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्तिनोज उदय होवाथी बीजा भांगा न उपजे फक्त १ भांगो होय, तथा वैक्रियतिर्यंचने वैक्रियशरीरनी पर्याप्ति पूर्ण थयां पछी सत्तावीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, तिहां सौभाग्यना उदय समेत एक भांगो थाय. तेमज तेने स्थानकें दौर्भाग्य समेत सत्तावीशना उदयनो एक भांगो थाय, एवं बे भांगा आदेय अने अनादेय ए बेनी साथे गुणतां चार भांगा तथा यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे गुणतां आठ भांगा थाय एवं सर्वे मली ८ भांगा जाणवा. तथा वैक्रियमनुष्यने पण वैक्रियतिर्यंच प्रमाणे सत्तावीशप्रकृतिना उदयस्थानकें तेहिज रीतना ८ भांगा थाय. तथा आहारकसाधुने आहारकशरीरनी पर्याप्ति बांध्या पछी सत्तावीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय. तिहां सौभाग्य,

आदेय अने यशःकीर्त्ति ए सर्व शुभ प्रकृतियोनोज उदय होवाथी एकज भांगो उपजे, तथा तीर्थंकरने केवलसमुद्घात करतां छट्ठो सातमी समये औदारिकमिश्रयोगे वर्त्तनांने सत्तावीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, तिहां सर्व परावर्त्तमान प्रकृति शुभनो उदय होवाथी भांगो एकज थाय. एवं सत्तावीश प्रकृतिना उदयस्थानकने विषे एकेंद्रियना ६ भांगा, देवताना ८ भांगा, नारकीनो १, वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, अने आहारक साधुनो १, तीर्थंकरनो १ एवं सर्व मली ३३ भांगा थाय.

७–अट्ठावीश प्रकृतिना उदयस्थानकना भांगा कहे छे–विकलेंद्रियने विषे पर्याप्ता यशःकीर्त्ति साथेनो एक भांगो, अने अयशःकीर्त्ति साथेनो एक भांगो ए बे भांगा बेइंद्रियने विषे तथा तेइंद्रियने विषे बे, तथा चउरिंद्रियने विषे बे भांगा मली छ भांगा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता विकलेंद्रियमां अट्ठावीशना उदयना थाय. तथा पंचेंद्रियतिर्यंचने शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता ने अट्ठावीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय तिहां पर्याप्ताने ६ संघयण साथे गुणतां ६ भांगा थया तेने संस्थानने साथे गुणतां छत्रीश भांगा थाय तेने सौभाग्य, दौर्भाग्य १ गुणतां ७२ भांगा थाय तेने आदेय, अनादेय साथे बमणा करतां १४४ भा थाय तेने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे बमणा करतां २८८ भां थाय तेने खगतिद्विक साथे गणवाथी ५७६ भांगा होय. तथा मनुष्य विषे पण तिर्यंचमां कह्या प्रमाणे शरीरपर्याप्ताने २८नो उदयस्थानक होय तिहां भांगा सर्व तिर्यंचमां कह्या प्रमाणे ५७६ मनुष्यने पण थाय. तथा श्वासोच्छ्वास पर्याप्ता देवताने विषे २८ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, तिहां सौभाग्य साथे अट्ठावीशना उदयनो एक भांगो, तेमज दौर्भाग्य समेत अट्ठावीश प्रकृतिना उदयनो एक भांगो ए बे भांगाने आदेय अने अनादेय साथे बमणां करतां चार भांगा थाय, तथा यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे बमणा करवाथी आठ भांगा उद्योत समेत अट्ठावीशना उदयना थाय. तेमज शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने उद्योतने अनुदयें उद्योतना उदय समेत अट्ठावीशना उदयस्थानकें पण सौभाग्यादि साथे बमणा करतां आठ भांगा एवं अट्ठावीशना उदयस्थानकना बे प्रकारना मलीने १६ भांगा होय. तथा श्वासोच्छ्वास पर्याप्ता नारकीने विषे पण उच्छ्वासना उदय समेत अट्ठावीशनो उदयस्थानक होय. तिहां दौर्भाग्य अनादेय अने अयशःकीर्त्तिनोज उदय छे माटे परावर्त्तमान सर्व प्रकृति अशुभ होवाथी कोई भांगो न उपजे तेथी एक भांगो होय. तथा वैक्रियतिर्यंचने पण श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति बांध्यां पछी उच्छ्वास-

ना उदय समेत अठावीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय. तिहां सौभाग्य दौर्भाग्यादि विकल्प साथेना आठ भांगा पूर्वोक्त प्रमाणे थाय. अने शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वासना अनुदयें अने उद्योतनो उदय जोडतां पण ए अठावीशनुं उदयस्थानक बीजी रीते होय. तिहां पण पूर्वोक्त सौभाग्य दौर्भाग्यादिक विकल्पना आठ भांगा उपजे एवं १६ भांगा होय. तथा श्वासोच्छ्वासपर्याप्ता वैक्रियमनुष्यने उच्छ्वासना उदय समेत अठावीश प्रकृतिना उदयस्थानकने विषे सौभाग्यना उदयनो एक अने सौभाग्यना स्थानकें दौर्भाग्यना उदयनो एक ए बे भांगा आदेय साथे, अने बे भांगा अनादेय साथे एवं चार भांगा, ते वळी यशःकीर्ति साथे चार अने अयशःकीर्ति साथे चार ए बे मळी आठ भांगा थया. तथा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ता वैक्रिय साधुने उच्छ्वासना अनुदयें सत्तावीशनी साथें एक उद्योतना उदयनी प्रकृति गणतां पण अठावीशनो उदयस्थानक होय. तिहां तो सौभाग्य, आदेय, अने यशःकीर्तिनोज उदय होवाथी सर्व परावर्त्तमान शुभ भणी एकज भांगो उपजे एवं बे भेदना मळी ९ भांगा होय. तथा आहारकशरीरनी श्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ता आहारकसाधुने पण उच्छ्वासना उदय समेत अठावीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां पण परावर्त्तमान प्रकृति वैक्रियसाधुनी प्रमाणे शुभज होवाथी दौर्भाग्य अनादेय आदिक भांगा न होवाथी एकज भांगो उपजे तथा आहारकशरीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वासना अनुदयें उद्योतना उदय समेत अठावीशना उदयस्थानकें पण पूर्वे रीते सौभाग्यादि शुभनोज उदय होवाथी अहीं पण एकज भांगो उपजे एवं आहारकसाधुने २ भांगा होय. एवं २८ प्रकृतिना उदयस्थानकने विषे विकलेंद्रियना ६ भांगा, तिर्यंचपंचेंद्रियना ५७६ भांगा, मनुष्यना ५७६ भांगा, देवतानां १६ भांगा, नारकीनो एक भांगो, वैक्रियतिर्यंचना १६ भांगा, वैक्रिय मनुष्यना ९ भांगा, अने आहारकसाधुना २ भांगा सर्व मळी १२०२ भांगा होय.

८–ओगणत्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकना भांगा कहे छे श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता बेंद्रिय, तेंद्रिय, चतुरिंद्रिय ए त्रणने विषे उच्छ्वासना उदय समेत ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पर्याप्ताने यशःकीर्ति समेत ओगणत्रीशना उदयनो एक भांगो, तेमज अयशःकीर्तिना उदयनो एक भांगो ए बे भांगा थया. तथा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वासनो उदय न होवाथी तेने स्थानकें उद्योतनो उदय गणतां पण ओगणत्रीशना उदयस्थानकें यशःकीर्ति, अयशःकीर्ति गणतां पूर्वेनी परें बे भांगा होय. एवं

उद्योग समेत ओगणत्रीशना उदयना चे भांगा अने उद्योत विना उद्योत समेत ओगणत्रीशना उदयना चे भांगा मली विकलेंद्रियनां एकेकने विषे चार चार भांगा गणतां सर्वेना मली १८ भांगा होय. तथा श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिये पर्याप्ता तिर्यंच पंचेंद्रियने पण ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पण छ संघयण छ संस्थान साथे गुणतां छत्रीश थाय ते एकेक रीते सौभाग्यादि चार चार भंगा करवाथी ५७६ भांगा उपजे, तथा शरीरपर्याप्तिये पर्याप्ताने उद्योतना अनुदये उद्योतनो उदय गणिये तो ओगणत्रीशनो उदयस्थानक थाय तिहां पण पूर्वनी परे भांगा ५७६ होय. ए बे प्रकारना मली ११५२ भांगा थाय छे. तथा मनुष्यने विषे–श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिये पर्याप्ता उद्योतना उदय समेत ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां पण पूर्वनी परे छ संघयण अने छ संस्थान साथे गुणीने सौभाग्यादिक सर्वनि गुणी चार चार भंगा करवाथी ५७६ भांगा होय. तथा भाषापर्याप्तिये पर्याप्ता देवताने सुस्वरनो उदय मेलवाथी ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पूर्वनी परें सौभाग्य, दौर्भाग्य, आदेय, अनादेयादिक साथे गुणवाथी आठ भांगा उपजे, तेमज आठ भांगा स्वरना अनुदयें अने उद्योतना उदयें पूर्वोक्त प्रमाणे ओगणत्रीशना उदये उपजे एवं १६ भांगा थया, तथा भाषा पर्याप्तिये पर्याप्ता नारकीने दुस्वरना उदय समेत ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां परावर्तमान सर्व प्रकृति अशुभज होवाथी विकल्प न होय माटे १ भांगो उपजे तथा वैक्रियतिर्यंचने वैक्रियशरीर करतां भाषापर्याप्ता थयाने सुस्वरना उदय समेत ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पूर्वनीपरें सौभाग्यादि विकल्पना आठ भांगा थाय. तेमज आठ भांगा स्वरना अनुदयें अने उद्योतना उदयें पण ओगणत्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकना थाय. एवं बे प्रकारना मली १६ भांगा थया. तथा वैक्रियमनुष्यने वैक्रियशरीर करतां भाषापर्याप्तो थया पछी सुस्वरना उदय समेत ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पूर्वनी परें सौभाग्यादि विकल्पना मली ८ भांगा होय तथा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिये पर्याप्ता वैक्रियसाधुने स्वरना अनुदयें अने उद्योतनो उदय गणवाथी पण ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां परावर्तमान प्रकृति शुभनो उदय होवाथी दौर्भाग्यादिक विकल्प न उपजे माटे एमने विषे एकज भांगो थाय. एवं बे प्रकारना मली ९ भांगा थया. तथा आहारकसाधुने आहारकशरीर करतां भाषापर्याप्तिये पर्याप्ती

बांध्यां पछी स्वरना उदय समेत ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पूर्वनी परें परावर्त्तमान शुभ प्रकृतिनोज उदय होवाथी दौर्भाग्यादिक विकल्प न उपजे माटे एकज भांगो थाय, तेमज एक भांगो स्वरना अनुदयें अने उद्योतनो उदय गणवाथी पण ओगणत्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकें आहारक साधुने २ भांगा उपजे. तथा तीर्थंकरने वचनयोग अने उच्छ्वास रुंध्यां पछी ओगणत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां सर्व प्रकृति शुभज उदय छे माटे भांगो एकज उपजे. एवं ओगणत्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकने विषे बेइंद्रियना ४ भांगा, तेइंद्रियना ४ भांगा, चतुरिंद्रियना ४, तिर्यंचपंचेंद्रियना ११५२ भांगा, मनुष्यना ५७६ भांगा, देवताना १६, नारकीनो १, वैक्रियतिर्यंचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, आहारकसाधुना २, अने तीर्थंकरनो १ एवं सर्वे मली १७८५ भांगा होय.

९—त्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकें भांगा कहे छे—भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता विकलेंद्रियने स्वरना उदय समेत त्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां यशःकीर्त्ति साथे एक भांगो, अने अयशःकीर्त्ति साथे एक भांगो ए बे भांगा सुस्वर साथे अने बे भांगा दुस्वर साथे मली ४ भांगा थया, तथा स्वरना अनुदयें स्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ताने ओगणत्रीशना उदयमां एक उद्योतनो उदय भेलतां त्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक थाय तिहां यशःकीर्त्ति अयशःकीर्त्तिना बे भांगाज उपजे ते ऊपरना चार भांगा साथे मेलवतां एक एकना छे भांगा गणवाथी त्रणेना मली १८ भांगा होय. तथा भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता तिर्यंचपंचेंद्रियने एक स्वरना उदय समेत त्रीशप्रकृतिनो उदयस्थानक होय, तिहां छे संघयण अने छे संस्थान साथे गुणतां छत्रीश भांगा थाय. तेने सौभाग्य दौर्भाग्य साथे बमणा कीजे त्यारे बहोत्तर थाय. तेने आदेय अनादेय साथे बमणा करवाथी एकसो चुम्मालिश थाय. तेने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे बमणा करतां २८८ थाय. तेने खगतिद्विक साथे गुणतां ५७६ थाय. एने सुस्वर अने दुस्वर साथे गुणवाथी ११५२ भांगा उपजे. तथा स्वरना अनुदयें स्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें पर्याप्ताने उद्योतनो उदय गणतां त्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पूर्वनी परें स्वरनो उदय नथी. माटे खगतिद्विक साथे गणवा सुधीना ५७६ भांगा थाय. एवं बे प्रकारना मली १७२८ भांगा उपजे. तथा भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता मनुष्यने एक स्वरना उदय समेत त्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पूर्वनी परें छे संघयण अने छे संस्थान साथे गुणवाथी छत्रीश थाय. तेने सौ-

भाग्यादिक यावत् स्वर सुधीना विकल्पनी साथे पांच वार पूर्वोक्त प्रमाणे छत्रीशना आंकने भ्रमणा करवाथी अहीं ११५२ भांगा थाय. तथा भाषा-पर्याप्तिये पर्याप्ता देवताने उद्योतनो उदय गणवाथी त्रीशप्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां पूर्वोक्त रीते सौभाग्यादिक विकल्पें गणतां ८ भांगा थाय. तथा त्रियंचने वैक्रियशरीरनी पूर्ण पर्याप्तीवाल्याने उद्योतनो उदय गणवाथी त्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पण पूर्वोक्त रीते सौभाग्यादिक त्रण विकल्पें गणतां ८ भांगा थाय. तथा वैक्रियमनुष्य साधुने पण उद्योतना उदय समेत त्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां परावर्त्तमान प्रकृति सर्व शुभ होवाथी कोई विकल्प नथी. माटे १ भांगो थाय. तथा आहारक-साधुने पण उद्योतना उदय समेत त्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां पण परावर्त्तमान शुभ प्रकृतिनोज उदय होवाथी विकल्प न होय. तेथी १ भांगो उपजे, तथा तीर्थंकर भगवानने तीर्थंकर नामनो उदय होवाथी एक-त्रीश प्रकृति मांहेथी एक वचनयोग रूंध्यां स्वरनो रोध थाय तेवारे स्वरनी एक प्रकृति विना त्रीशप्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां पण सर्व प्रकृति शुभ अने एकज प्रथम संघयण अने संस्थाननो उदय होवाथी विकल्प नथी माटे १ भांगोज उपजे. एवं त्रीशना उदयस्थानकें विकलेंद्रियना १८, तिर्यचपंचेंद्रियना १७२८, मनुष्यना ११५२, देवताना ८, वैक्रियतिर्यचना ८, वैक्रियमनुष्यसाधुनो १, आहारकसाधुनो १ अने तीर्थंकरनो १, एवं सर्व मली २९१७ भांगा थाय छे.

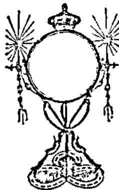
१०—एकत्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकना भांगा कहे छे सर्व पर्याप्तिये पर्याप्ता विकलेंद्रियने उद्योतना उदय समेत एकत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय, तिहां यशःकीर्त्ति साथे एकत्रीशना उदयनो एक भांगो, अने अपयशःकीर्त्ति समेत बीजो भांगो ए बे भांगा सुस्वरना उदयें लीजे तेमज बे भांगा दुस्वरना उदयना लीजे एम चार भांगा बेइंद्रियमां, चार भांगा तेइंद्रियमां अने चार भांगा चउरिंद्रियमां ए त्रण विकलेंद्रियना मली १२ भांगा थया. तथा सर्वपर्याप्तिये पर्याप्ता पंचेंद्रिय तिर्यचने उद्योतना उदय समेत एकत्रीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां छ संघयण अने छ संस्थान साथे गुणिये तेवारे छत्रीश थाय. तेने सौभाग्य दौर्भाग्यें गुणतां बहोतर थाय, तेने आदेय अने अनादेय साथे गुणतां एकसो चुम्मालिश थाय. तेने यशःकीर्त्ति अने अपयशःकीर्त्ति साथे गुणतां २८८ थाय. तेने शुभाशुभ खगति साथे भ्रमणा करतां ५७६ थाय तेने सुस्वर अने दुस्वर साथे गुणतां ११५२ थाय. एवं

सर्वे ११५२ भांगा होय तथा तीर्थंकर भगवानने तेरमें गुणठाणें तीर्थंकर नामना उदयें ३१ प्रकृतिनो उदयस्थानक होय. तिहां पण सर्व शुभ प्रकृतिनो उदय होय. माटे एक भांगो उपजे एवं ३१ प्रकृतिना उदयस्थानकें विकलेंद्रियना १२ भांगा तथा पंचेंद्रियतिर्यंचना ११५२ भांगा. अने तीर्थंकर परमात्मानो १ भांगो सर्वे मली ११६५ भांगा थाय.

११—मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसत्रिक ३, सौभाग्य १, आदेय १, अने यशःकीर्त्ति १, ए आठ प्रकृतिनो उदय अयोगीगुणठाणाना चरम समयें होय तिहां सामान्यकेवलीने १ भांगो होय.

१२—ऊपरनी आठ प्रकृतिमां तीर्थंकर नाम युक्त करवाथी नव प्रकृतिनो उदयस्थानक होय तिहां पण १ भांगो उपजे.

एवं वीशना उदयस्थानकें १, एकवीशना उदयस्थानकें ४२, चोवीशना उदयस्थानकें ११, पचीशना उदयस्थानकें ३३, छव्वीशना उदयस्थानकें ६००, सत्तावीशना उदयस्थानकें ३३, अट्ठावीशना उदयस्थानकें १२०२, ओगणत्रीशना उदयस्थानकें १७८५, त्रीशना उदयस्थानकें २९१७, एकत्रीशना उदयस्थानकें ११६५, आठना उदयस्थानकें १, अने नवना उदयस्थानकें १, एवं बार उदयस्थानकना मली ७७९१ भांगा जाणवा.



अधिकारी आश्रयी नामकर्मना उदयस्थानकना भांगानुं यंत्र—

अनुक्रमांक	उदयस्थानकना नाम	एकेंद्रिय	विकलेंद्रिय	वैक्रियतिर्यंच	वैक्रियमनुष्य	सामान्यतिर्यंच	आहारकमनुष्य	नारकी	देवता	केवली	सामान्यमनुष्य	उदयस्थानकना भांगा
१	वीशनो उदयस्थानक	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
२	एकवीशनो उदयस्थानक	५	९	०	०	९	०	१	८	१	९	४२
३	चोवीशनो उदयस्थानक	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	११
४	पचवीशनो उदयस्थानक	७	०	८	८	०	१	१	८	०	०	३३
५	छवीशनो उदयस्थानक	१३	९	०	०	२८९	०	०	०	०	२८९	६००
६	सत्तावीशनो उदयस्थानक	६	०	८	८	०	१	१	८	१	०	३३
७	अठ्ठावीशनो उदयस्थानक	०	६	१६	९	५७६	२	१	१६	०	५७६	१२०२
८	ओगणत्रीशनो उदयस्थानक	०	१२	१६	९	११५२	२	१	१६	१	५७६	१७८५
९	त्रीशनो उदयस्थानक	०	१८	८	१	१७२८	१	०	८	१	११५२	२९१७
१०	एकत्रीशनो उदयस्थानक	०	१२	०	०	११५२	०	०	०	१	०	११६५
११	आठनो उदयस्थानक	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१२	नवनो उदयस्थानक	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
	उदयस्थानकना भांगानी संख्या	४२	६६	५६	३५	४९०६	७	५	६४	८	२६०२	७७९१

१—नरकगति मार्गणाएं—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ ए पांच उदयस्थानकें एक एक भांगो गणतां पांच भांगा होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ ए नव उदयस्थानकें एकवीशना उदयें एकेंद्रियना ५, विकलेंद्रियना ९, सामान्य तिर्यंचपंचेंद्रियना ९. चोवीशना उदयें एकेंद्रियना ११. पचीशना उदयें एकेंद्रियना ७, वैक्रियना ८. छव्वीशना उदयें एकेंद्रियना १३, विकलेंद्रियना ९, सामान्यतिर्यंचपंचेंद्रियना २८९, सत्तावीशना उदयें एकेंद्रियना ६, वैक्रियतिर्यंचपंचेंद्रियना ८. अट्ठावीशना उदयें विकलेंद्रियना ६, वैक्रियतिर्यंचपंचेंद्रियना १६, अने सामान्यतिर्यंच पंचेंद्रियना ५७६, ओगणत्रीशना उदयें विकलेंद्रियना १२, वैक्रियतिर्यंचना १६, अने सामान्यतिर्यंचना ११५२ त्रीशना उदयें विकलेंद्रियना १८, वैक्रियतिर्यंचपंचेंद्रियना ८, अने सामान्यतिर्यंचपंचेंद्रियना १७२८, एकत्रीशना उदयें विकलेंद्रियना १२, अने सामान्यतिर्यंचपंचेंद्रियना ११५२ एवी रीते एकवीशना २३, चोवीशना ११, पचीशना १५, छव्वीशना ३११, सत्तावीशना १४, अट्ठावीशना ५९८ ओगणत्रीशना ११८०, त्रीशना १७५४ अने एकत्रीशना ११६४ एवं नव उदयस्थानकना मली ५०७० होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—सामान्य (सहज) मनुष्यने २१ । २६ । २८ । २९ । ३० ए पांच उदयस्थानकें—एकवीशना उदयें ९, छव्वीशना उदयें २८९, अट्ठावीशना उदयें ५७६, ओगणत्रीशना उदयें ५७६, अने त्रीशना उदयें ११५२ एवं २६०२ भांगा होय. वैक्रियमनुष्यने २५ । २७ । २८ । २९ । ३० ए पांच उदयस्थानकें पचीशना उदयें ८, सत्तावीशना उदयें ८, अट्ठावीशना उदयें ९, ओगणत्रीशना उदयें ९, अने त्रीशना उदयें १, एवं ३५ भांगा होय. आहारकमनुष्यने २५ । २७ । २८ २९ । ३० ए पांच उदयस्थानकें पचीशना उदयें १, सत्तावीशना उदयें १, अट्ठावीशना उदयें २, ओगणत्रीशना उदयें २, अने त्रीशना उदयें १, एवं ७ भांगा होय. सामान्यकेवलीने २० । ८ ए बे उदयस्थानकें वीशना उदयें १, अने आठना उदयें १, एवं बे भांगा होय अने २१ । २७ । २९ । ३० । ३१ । ९ ए छे उदयस्थानकें—तीर्थंकरकेवलीने एकवीशना उदयें १, सत्तावीशना उदयें १, ओगणत्रीशना उदयें १, त्रीशना उदयें १, एकत्रीशना उदयें १, अने नवना उदयें १, एवं छे भांगा होय. एवी रीते सामान्यमनुष्यना २६०२, वैक्रियना ३५, आहारकना ७, सामान्यकेवलीना २, तीर्थंकरना ६, एवं २६५२ भांगा होय.

१ देवगति मार्गणाएं—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० ए छे उदयस्थानकें—एकवीशना उदयें ८, पचीशना उदयें ८, सत्तावीशना उदयें ८, अट्ठावीशना उदयें १६,

ओगणत्रीसना उदयें १६, अने त्रीसना उदयें ८, एवं ६४ भांगा होय.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं—२१।२४।२५।२६।२७ ए पांच उदयस्थानकें एकवीसना उदयें ५, चोवीसना उदयें ११, पचीसना उदयें ७, छव्वीसना उदयें १३, अने सत्तावीसना उदयें ६, एवं ४२ भांगा होय.

३ विकलेंद्रिय मार्गणाएं–प्रत्येकें २१।२६।२८।२९।३०।३१ ए छे उदयस्थानकें एकवीसना उदयें ९, छव्वीसना उदयें ९, अठ्ठावीसना उदयें ६, ओगणत्रीसना उदयें १२, त्रीसना उदयें १८, एकत्रीसना उदयें १२. एवं ६६ भांगा होय.

१ पंचेंद्रिय मार्गणाएं—२०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।८।९ ए अग्यार उदयस्थानकें एकेंद्रियना ४२, अने विकलेंद्रियना ६६ एवं १०८ भांगा विना ७६८३ भांगा होय.

१ पृथ्वीकाय मार्गणाएं–२१।२४।२५।२६।२७ ए पांच उदयस्थानकें–एकवीसना उदयें एकेंद्रियनी पेरें ५. चोवीसना उदयें (साधारण तथा वायुकाय विना) ५. पचीसना उदयें (साधारणना त्रण अने वायुकायनो १, ए चार भांगा विना) ३ एवं १३ भांगा थया. छव्वीसना उदयें श्वासोच्छ्वास पर्याप्ती सहित बादरपर्याप्त साथे प्रत्येकनो एक भांगो, यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे गुणतां बे. सूक्ष्मपर्याप्ता साथे प्रत्येक अयशःकीर्त्तिनो एक, उच्छ्वासना अनुदयें उद्योतनो उदय गणतां छव्वीसनो उदय होय त्यां बादर पर्याप्ता प्रत्येकने उद्योत सहित यशःकीर्त्ति साथे एक भांगो अने अयशःकीर्त्ति साथे बीजो भांगो ए बे भांगा उद्योत साथे. तेमज पृथ्वीकाय मांहे आतापनो उदय गणतां पण छव्वीसनो उदय होय. पण उद्योतनी पेरें उद्योतनी जग्याये आतापनो उदय गणतां बे भांगा होय एवं उच्छ्वास सहित छव्वीसना उदयना बादरना भांगा २, अने सूक्ष्मनो भांगो १, एवं ३ भांगा थया. अने (उच्छ्वास विना) उद्योतना उदयना भांगा २ बादरनाज, तथा आतापना उदय सहित छव्वीसना उदयना पण बादरना भांगा २, एम छव्वीसनो उदय त्रण प्रकारनो कह्यो ए उपरोक्त रीते त्रण प्रकारना उदयस्थानकना मळी ७ भांगा होय. उच्छ्वास सहित छव्वीसना उदयमां उद्योतनो उदय भेळतां सत्तावीसनो उदय होय. त्यां बादरपर्याप्ता प्रत्येक यशःकीर्त्ति साथे एक भांगो, अने अयशःकीर्त्ति साथे बीजो भांगो ए भांगा उद्योत सहितना सत्तावीसना उदयना थाय तेमज बे भांगा उद्योतना ठेकाणे आतापनो उदय भेळतां पण सत्तावीसना उदयना बे भांगा लेतां ४ भांगा थाय एवी रीते एकवीसना ५, चोवीसना ५, पचीसना ३, छव्वीसना ७ अने सत्तावीसना ४, एवं पांच उदयस्थानकना मळी २४ भांगा लाभे.

१ अप्काय मार्गणाएं—२१।२४।२५।२६।२७ ए पांच उदयस्थानकें ए
वीशनां उदयें एकेंद्रियनी परें ५, अने चोवीशना उदयें प्रत्येकना ५, पचीशना उद
बादरपर्याप्ता प्रत्येकने यशःकीर्त्ति साथे १, अने अयशःकीर्त्ति साथे १, अने सूक्ष्मपर्या
प्रत्येकने अयशःकीर्त्ति साथे १ ए त्रण छव्वीशना उदयें पचीशना उदयनीपरें प्रत्ये
बादरपर्याप्ताना बे अने सूक्ष्मनो १, अने उच्छ्वासने ठामें उद्योतनो उदय गणत
बादरपर्याप्ता प्रत्येकने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथेना बे ए ५ भांगा; तथा उ
द्योत समेत सत्तावीशना उदयें बादरपर्याप्ता प्रत्येकने यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्
साथे बे भांगा इहां पण होय. एवं पांच स्थानकना मली २० भांगा लाभे.

१ तेऊकाय मार्गणाएं—२१।२४।२५।२६ ए चार उदयस्थानकें—यशःकीर्त्तिनो
उदय नथी माटे एकवीशना उदयें बादरपर्याप्ता यशःकीर्त्ति साथेना एक भांगा विना ४
चोवीशना उदयें सूक्ष्म पर्याप्ता प्रत्येकने अयशःकीर्त्तिनो एक, सूक्ष्मअपर्याप्ता प्रत्ये
अयशःकीर्त्ति साथें बीजो, तेमज बादरपर्याप्ता अपर्याप्ता साथे गणतां बे ए ४ भांगा,
तथा पचीशना उदयें सूक्ष्मपर्याप्ता प्रत्येकने अयशःकीर्त्तिनो एक भांगो अने बादरपर्याप्त
प्रत्येक अयशःकीर्त्तिनो बीजो भांगो ए २ भांगा, तथा छव्वीशना उदयें पण एहि
बे भांगा एवं १२ भांगा लाभे.

१ वायुकाय मार्गणाएं—२१।२४।२५।२६ ए चार उदयस्थानकें तेउकायमां
कहेला १२ भांगा. शरीरस्थे उपज्यां पछी चोवीश, पचीश अने छव्वीशना उदयें व-
र्त्ततांने वैक्रियनो एक एक भांगो वधारतां त्रण उदयस्थानकना ३ एवं १५ भांगा लाभे.

१ वनस्पतिकाय मार्गणाएं—२१।२४।२५।२६।२७ ए पांच उदयस्थानकें एक-
वीशना उदयें एकेंद्रियमां कह्या प्रमाणे ५. चोवीशना उदयें एकवीशना उदयना ५
भांगाने साधारण अने प्रत्येक साथें वमणा करतां १० भांगा. पचीशना उदयें वैक्रिय
विना ६ भांगा. छव्वीशना उदयें वैक्रियनो १, अने आतापना बे ए त्रण भांगा वि-
ना १० भांगा. सत्तावीशना उदयें उद्योतना उदय समेत स्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें प-
र्याप्ताने छव्वीशना उदयमां उद्योतनो उदय मेलतां साधारण अने प्रत्येक साथे २,
तथा यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथे २ ए ४ एवं ३५ भांगा लाभे.

१ त्रसकाय मार्गणाएं—चोवीशना उदयस्थानक विना शेष अग्यार उदय-
स्थानकें—एकेंद्रिय प्रायोग्यना ४२ भांगा विना ७७४९ भांगा लाभे.

१ मनोयोग मार्गणाएं—२५।२७।२८।२९।३०।३१ ए छे उदयस्थानकें
पचीशना उदयें वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, आहारकमनुष्यनो १, ए १७.
तथा सत्तावीशना उदयें पण १७ भांगा होय. तथा अट्ठावीशना उदयें वैक्रिय-

निर्यचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, अने आहारकमनुष्यना २ ए २७. ओगणत्रीसना उदयें वैक्रियतिर्यचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, आहारकसाधुना २, देवताना ८, अने नारकीनो १ ए १६ भांगा. त्रीसना उदयें सामान्यतिर्यचना ११५२, वैक्रियतिर्यचना ८, वैक्रियमनुष्यनो १, आहारकमनुष्यनो १, देवताना ८, अने सामान्यमनुष्यना ११५२, एवं २३००. तथा एकत्रीसना उदयें सामान्यतिर्यचना ११५२ अने केवली तीर्थंकरनो १ ए ११५३. एवं छ उदयस्थानकना मली ३५७२ भांगा लाभे.

१ वचनयोग मार्गणाएं—२६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ छ उदयस्थानकें मनोयोगमां कह्या ३५७२, तथा त्रीस अने एकत्रीसना उदयें विकलेंद्रियना २४ भांगा. एवं सर्वे मली ३५९६ भांगा लाभे.

१ काययोग मार्गणाएं—२० | २१ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ ए दस उदयस्थानकना सर्वे मली ७७८९ भांगा लाभे. अहीं आठ अने नव अ-र्हंतना वे उदयस्थानक अयोगीगुणठाणे होय. आठना उदयनो १ भांगो अने नवना उदयनो १ भांगो ए वे भांगा न लाभे.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं—२१ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ ए आठ उदयस्थानकें सामान्यतिर्यचना ४९०६ सामान्यमनुष्यना सर्व उदयस्थानकना २६०२, वैक्रियतिर्यचना ५६, वैक्रियमनुष्यना ३५, आहारकमनुष्यना ७, तथा देवताना ६४, सर्वे मली ७६७० भांगा लाभे.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—पुरुषवेदमां कह्या आठ उदयस्थानकना भांगामांथी आहारकमनुष्यना ७ भांगा विना ७६६३ भांगा लाभे.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—एकेंद्रियमां २१ | २४ | २५ | २६ | २७ ए पांच उदयस्थानकना ४२ भांगा होय. विकलेंद्रियमां २१ | २६ | २८ | २९ | ३० | ३१ ए छ उदयस्थानकना ६६ भांगा होय. सामान्यतिर्यचमां २१ | २६ | २८ | २९ | ३० | ३१ ए छ उदयस्थानकना ४९०६ भांगा होय. वैक्रियतिर्यचमां २५ | २७ | २८ | २९ | ३० ए पांच उदयस्थानकना ५६ भांगा होय. सामान्यमनुष्यमां २१ | २६ | २८ | २९ | ३० ए पांच उदयस्थानकना २६०२ भांगा होय. वैक्रियमनुष्यमां २५ | २७ | २८ | २९ | ३० ए पांच उदयस्थानकना ३५ भांगा होय. आहारक-नुष्यमां २५ | २७ | २८ | २९ | ३० ए पांच उदयस्थानकना ७ भांगा होय. अने ारकीमां २१ | २५ | २७ | २८ | २९ ए पांच उदयस्थानकना ५ भांगा होय. एवं र्वे मली ७७१९ भांगा लाभे अहीं देवतामां नपुंसकवेद नथी माटे देवताना ६४, अने नो उदय नवमां गुणठाणा उपरांत नथी माटे केवलीना ८ एवं ७२ भांगा न लाभे.
ा

८ चारकषाय, अचक्षुदर्शन, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, अने कापोतलेश्या ए आठ मार्गणाएं—प्रत्येकें २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ ए नव उदयस्थानकना ७७८३ भांगा लाभे. अहीं केवलीना ८ भांगा न होय, बाकीना सर्व होय.

३ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अने क्षयोपशम ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येकें २१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ ए आठ उदयस्थानकें प्रत्येकें २१ना उदयें युगलिकतिर्यंचना ८, सामान्यमनुष्यना ८, देवताना ८, अने नारकीनो १ एवं २५ भांगा उपजे अहीं संख्याता वर्षायुवाला सामान्यतिर्यंचने भवांतराले अपर्याप्तावस्थामां ए त्रण मार्गणा न होवाथी बीजा भांगा न लीधा. अने ३०।३१ ए बे उदयस्थानक संख्यातवर्षायुवाला तिर्यंचने ए त्रण मार्गणामां वर्त्ततां होय. अथवा २५ २७।२८।२९ ए चार उदयस्थानक संख्यात वर्षायुवाला तिर्यंचने वैक्रियशरीर करतां होय माटे भांगा पण ए चार उदयस्थानकना वैक्रियना लेवा. अने सघला ३०।३१ ए बे उदयस्थानकना लीजे तथा बाकी सर्वभांगा युगलिकतिर्यंचने होय. कारण युगलिकतिर्यंचमां जनाराने भवांतराले वेदक अथवा क्षायिकसम्यक्त्व होय छे माटे तिर्यंचने भवांतराले असंख्यात वर्षायुयुगलिक तिर्यंचना भांगा लेवा. तथा पचीशना उदयें वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, आहारकसाधुनो १, अने देवताना ८, नारकीनो १ एवं २६ भांगा होय. छव्वीशना उदयें युगलिकतिर्यंचना ८, एमां प्रथम संघयण अने प्रथमसंस्थाननो उदय होवाथी बीजा विकल्प न उपजे, तथा सामान्यमनुष्यना छ संघयण अने छसंस्थानना विकल्पथी २८८ भांगा उपजे एवं २९६ भांगा होय. सत्तावीशना उदयें वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, आहारकसाधुनो १, देवताना ८, अने नारकीनो १ एवं २६ भांगा होय. अठावीशना उदयें पूर्वोक्त ८ भांगा शुभखगतिना अने ८ भांगा अशुभखगतिना मली १६ भांगा असंख्यवर्षायु युगलिकतिर्यंचना होय, तथा सामान्यमनुष्यना २८८ भांगा बे खगतियें गुणतां ५७६, वैक्रियमनुष्यना ९, वैक्रियतिर्यंचना १६, आहारकमनुष्यना २, देवताना १६, नारकीनो १ एवं ६३६ भांगा होय. ओगणत्रीशना उदयें एम सहित ६३६ भांगा होय. त्रीशना उदयें सुस्वरना १६ अने दुःस्वरना १६ मली ३२ भांगा युगलिकतिर्यंचना होय, तथा सामान्यतिर्यंचना संख्यातवर्षायुने छ संघयण अने छसंस्थानने गुणतां तथा बे खगति अने बे स्वर तथा सौभाग्यादिक साथे पूर्वोक्त रीते गुणतां ११५२ भांगा होय एवं बे तिर्यंचना भांगा ११८४ थाय, तथा सामान्यमनुष्यने पण बे स्वर साथे गुणतां ११५२ भांगा होय, वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यसाधुनो १, आहारकसाधुनो १, देवताना ८ एवं २३५४ भांगा

होय. स्वर सहित त्रीसप्रकृति मध्ये उद्योत सहित ३१ ना उदयें संख्यातवर्षायुवाला सामान्यतिर्यंचपंचेंद्रियना ११५२० भांगा होय. एवं आठ उदयस्थानकना मळी ५१५१ भांगा होय. तथा पन्नवणासूत्रनी वृत्तिने अनुसारे अवधिज्ञानीने तिर्यंचानुपूर्वीनो उदय गणवो. तेना पछी संख्यातवर्षायुवाला तिर्यंचने एकवीशना उदयें ८, छव्वीशना उदयना २८८ भांगा, अठावीशना उदयना ५७६, ओगणत्रीशना उदयना ११५२, त्रीशना उदयना १७२८, एकत्रीशना उदयना ११५२, एवं तिर्यंचना ४९०४, मनुष्यना २६०० भांगा, वैक्रियतिर्यंचना ५६, वैक्रियमनुष्यना ३५, आहारकना ७, देवताना ६४, अने नारकीना ५ एवं सर्वे मळी ७६७१ भांगा लाभे.

२ अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए बे मार्गणाएं—मतिज्ञानादिकमां प्रथम जे कह्या ५१५१ भांगा तेमांथी युगलिकतिर्यंचना ८० भा ये मार्गणामां नथी कारण युगलिकने अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन न उपजे माटे ८० भांगा विना ५०७१ भांगा होय. तथा पन्नवणासूत्रनी टीकाने अनुसारे-तिर्यंचानुपूर्वीनो उदय गणवाथी मतिज्ञानादि त्रण मार्गणामां बीजा पदे कह्या प्रमाणे ७६७१ भांगा होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणाएं—प्रत्येकें २५ । २७ । २८ । २९ । ३० ए पांच उदयस्थानकें पचीशना उदयें सुभगादिप्रशस्तप्रकृति शुभज होवाथी वैक्रिय अने आहारकसाधुनो एक एक भांगो गणतां बे. सत्तावीशना उदयें पण पचीशना उदयनी परें वैक्रिय अने आहारकना मळी २ भांगा. अठावीशना उदयें वैक्रिय अने आहारकसाधु उद्योतना उदयसहित बे भांगा अने उद्योतना उदय विना पण बे भांगा ए ४. अने ओगणत्रीशना उदयें पण एहिज ४ भांगा. त्रीशना उदयें साधुने उद्योतना उदय सहित वैक्रिय अने आहारकनो एक एक गणतां २ भांगा एवं १४ भांगा लब्धिवंतने होय. सामान्यमनुष्यने त्रीशप्रकृतिना उदयस्थानकें छ संघयण अने छ संस्थाननी साथे गुणतां ३६ भांगा, एने खगतिद्विक साथे गणतां ७२, एने सुस्वर दुस्वरनी साथे चमणा करतां १४४. एवी रीते वैक्रियसाधुना ७, आहारकसाधुना ७, सामान्यमनुष्यना १४४ ए सर्वे मळी १५८ भांगा लाभे.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें २० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ ए दश उदयस्थानकें वीशना उदयें १. एकवीशना उदयें १. छव्वीशना उदयें छ संस्थानना विकल्पना ६. सत्तावीशना उदयें १. छव्वीश प्रकृतिना उदयस्थानकमां पराघात १, उच्छ्वास १, शुभ अथवा अशुभखगति १, सुस्वर अथवा दुस्वर १ ए चार प्रकृतिनो उदय भेळतां त्रीशप्रकृतिना उदयें पूर्वोक्त रीते २४, तीर्थंकरनाम सहित एकत्रीशना उदयें १, तीर्थंकरने वचनयोग रुंधे त्रीशना उदयें १

भांगो. तथा उच्छ्वासने रूंध्यां ओगणत्रीशना उदयें १, अने सामान्यकेवलीने पूर्वोक्त त्रीशमांथी वचनयोग रूंधे ओगणत्रीशना उदयें छे संस्थान अने खगतिद्विकना १२ तथा उच्छ्वासना रूंधे अट्ठावीशना उदयें पण छेसंस्थान अने खगतिद्विकना १२, तथा अयोगी गुणठाणें तीर्थंकरने तीर्थंकरनामना उदय समेत नवना उदयें १, तथा एहिज गुणठाणें सामान्यकेवलीने आठना उदयें पण १ एवं ६२ भांगा लाभे.

५ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अविरति, अभव्य, अने मिथ्यात्व ए पांच मार्गणाएं–२१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ ए नव उदयस्थानकें पूर्वोक्त रीते सर्व उदय भांगा ७७९१ मांथी केवलीमनुष्यना ८, आहारकमनुष्यना ७ अने वैक्रियसाधुना उद्योतोदय समेत २८।२९।३० ए त्रण उदयस्थानकना ३. एवं १८ भांगा विना ७७७३ भांगा लाभे.

१ विभंगज्ञान मार्गणाएं—संज्ञीपर्याप्तानो एकज भेद माननारना मते भवांतराले देवता अने नारकी ए बेना आश्रयी एकवीश प्रकृतिनो उदयस्थानक होय एमां पण असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंचमांथी जे जीव आवेल छे तेने अपर्याप्तावस्थामां विभंगज्ञान न होय, पर्याप्ता अवस्थामां होय छे. अने बीजा देवता नारकीने एकवीशनो उदयस्थानक होय. २५।२७।२८।२९।३० ए पांच उदयस्थानक वैक्रियतिर्यंच मनुष्य अने देवताने विषे होय अने नारकीने २५।२७।२८।२९ ए चार उदयस्थानक होय. पूर्ण पर्याप्तियें पर्याप्ता सामान्यतिर्यंच अने मनुष्यने ३०।३१ ए बे उदयस्थानक होय. एवं २१।२५।२७।२८।२९।३०।३१ ए सात उदयस्थानकें एकवीशना उदयें देवताना ८, नारकीनो १. पचीशना उदयें नारकीनो १, देवताना ८, वैक्रियतिर्यंचना ८, अने वैक्रियमनुष्यना ८ एवं २५. सत्तावीशना उदयें पण पचीशना उदयनी परें २५, अट्ठावीशना उदयें देवताना १६, नारकीनो १, वैक्रियतिर्यंचना १६, अने वैक्रियमनुष्यना ८ एवं ४१. ओगणत्रीशना उदयें ४१. त्रीशना उदयें देवताना ८, तिर्यंचना ८, सामान्यतिर्यंच पर्याप्ताना ११५२ अने सामान्यमनुष्यना ११५२. एकत्रीशना उदयें सामान्यतिर्यंचना ११५२ एवं सात उदयस्थानकना मली ३६१३ भांगा लाभे.

तथा सामान्यतिर्यंच अने मनुष्यने पर्याप्ता अने अपर्याप्तामां विभंगज्ञान माननारना मते–२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ ए आठ उदयस्थानकें–मति श्रुत ए बे अज्ञानमां कहेला ७७७३ भांगामांथी एकेंद्रियना ४२, विकलेंद्रियना ६६, अपर्याप्ता पंचेंद्रियतिर्यंचना २ अने मनुष्यना २ एवं ११२ भांगा विना ७६६१ लाभे.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं—एकज त्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकें एकज वज्रऋषभनाराचसंघयण होवाथी ६ संस्थानानी साथेना ६ भांगा एने खगतिद्विक साथे गुण-

तां १२, एने सुस्वर अने दुस्वर साथे गुणतां २४ थया. एवं २४ भांगा लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–त्रीश प्रकृतिना उदयस्थानकें प्रथमना त्रण संघयण संस्थान ६ नी साथे गुणतां १८ भांगा, एने खगतिद्विक साथे गुणतां ३६ भांगा थया एने सुस्वर दुस्वर साथे गुणतां ७२ भांगा थया. एवं ७२ भांगा लाभे.

१ यथाख्यात मार्गणाएं–२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ ए दश उदयस्थानकें उपशमश्रेणीवालाने प्रथमना त्रण संघयणनो उदय होय माटे ऋषभनाराच अने नाराचसंघयण ए बे संघयण क्षपकश्रेणीथी वधारे होय तेथी बे संघयणने ६ संस्थान साथे गुणतां १२ भांगा थाय, तेने खगतिद्विकें गुणतां २४ भांगा थया, तेने सुस्वर दुस्वर साथे गुणतां ४८ भांगा अने केवलज्ञान, केवलदर्शनमां कथा प्रमाणें ६२ भांगा एवं ११० भांगा लाभे.

१ देशविरति मार्गणाएं–२५ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ ए छ उदयस्थानकें पचीशना उदयें वैक्रियतिर्यंचनो एक अने वैक्रियमनुष्यनो एक. सत्तावीशना उदयें पण एहिज २. अट्ठावीशना उदयें तिर्यंचवैक्रियने उद्योतना उदय समेत २, अने वैक्रियमनुष्यनो १. ओगणत्रीशना उदयें पण एहिज ३. त्रीशना उदयें वैक्रिय तिर्यंचनो १, तथा सामान्यतिर्यंचना छ संघयणने छ संस्थान साथे गुणतां ३६, तेने खगतिद्विक साथे गुणतां ७२, तेने सुस्वर दुस्वर साथे गुणतां १४४, सामान्यमनुष्यना पण एहिज १४४. एकत्रीशना उदयें सामान्यतिर्यंचना १४४, एवं सर्वे मली ४४३ भांगा लाभे. कारण अहीं परावर्तमान प्रकृति शुभनोज उदय छे.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं–२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ ए आठ उदयस्थानकें–एकवीशना उदयें चतुरिंद्रियना ३, सामान्यतिर्यंचना ९, सामान्यमनुष्यना ९, देवताना ८, अने नारकीनो १. पचीशना उदयें देवताना ८, नारकीनो १, वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, अने आहारकसाधुनो १. छव्वीशना उदयें–चतुरिंद्रियना ३, सामान्यमनुष्यना २८९, सामान्यतिर्यंचना २८९. सत्तावीशना उदयें पण पचीशना उदयनी परें २६. अट्ठावीशना उदयें चतुरिंद्रियना २, सामान्यतिर्यंचना ५७६, वैक्रियतिर्यंचना १६, सामान्यमनुष्यना ५७६, वैक्रियमनुष्यना ९, आहारकना २, देवताना १६, अने नारकीनो १. ओगणत्रीशना उदयें चतुरिंद्रियना ४, सामान्यतिर्यंचना ११५२, वैक्रियतिर्यंचना १६, सामान्यमनुष्यना ५७६, वैक्रियमनुष्यना ९, आहारकना २, देवताना १६, अने नारकीनो १. त्रीशना उदयें चतुरिंद्रियना ६, सामान्यतिर्यंचना १७२८, वैक्रियतिर्यंचना ८, सामान्यमनुष्यना ११५२, वैक्रियमनुष्यनो १, आहारकमनुष्यनो १, देवताना ८ एवं २९०४.

एकत्रीशना उदये चउरिंद्रियना ४, अने सामान्यतिर्यंचना ११५२ एवं आठ उदयस्थानकना मली ७६०७ भांगा लाभे.

पक्षांतरे—चक्षुदर्शन मार्गणामां—२५।२७।२८।२९।३०।३१ ए छ उदयस्थानके पचीशना उदये—वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, आहारकमनुष्यनो १ एवं १७. सत्तावीशना उदये—पण १७ भांगा. अट्ठावीशना उदये—वैक्रियतिर्यंचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, आहारकमनुष्यना २ एवं २७. ओगणत्रीशना उदये—वैक्रियतिर्यंचना १६, मनुष्यना ९ आहारकना २, देवताना ८, नारकीनो १, एवं ३६. त्रीशना उदये—देवताना ८, सामान्यतिर्यंचना ११५२, सामान्यमनुष्यना ११५२, वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यनो १, आहारकनो १, अने चउरिंद्रियना ४ एवं २३२६. अने एकत्रीशना उदये—सामान्यतिर्यंचना ११५२, अने चउरिंद्रियना ४ एवं ११५६. ए छ स्थानकना मली ३५७९ भांगा लाभे. आ वे पक्षांतरे बीजा पक्षना ३५७९ भांगा मलता आवे छे,

१ तेजोलेश्या मार्गणाए—२१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ ए नव उदयस्थानके एकवीशना उदये एकेंद्रिय बादर प्रत्येक पर्याप्ताना यशःकीर्ति साथेनो १ अने अयशःकीर्ति साथेनो १. तथा बादरने चोवीशना उदये प्रत्येक पर्याप्ता साथेना एहिज वे भांगा, देवताना ६४, तथा सामान्यतिर्यंचपंचेंद्रियना सर्व भांगा ४९०६ छे तेमांथी २१।२६ ए वे उदयस्थानकना अपर्याप्तातिर्यंचना वे भांगा विना ४९०४, वैक्रियतिर्यंचना ५६, तथा अपर्याप्ताना वे भांगा विना सामान्यमनुष्यना २६००, अहीं लब्धि अपर्याप्ता लेवुं पण करण अपर्याप्ता न लेवुं. वैक्रियमनुष्यना ३५, आहारकना ७, एवं ९ उदयस्थानकना मली ७६७० भांगा लाभे.

१ पद्मलेश्या मार्गणाए—एकेंद्रियना ४२, विकलेंद्रियना ६६, नारकीना ५, सामान्यतिर्यंचअपर्याप्ताना २, मनुष्यअपर्याप्ताना २, अने केवलीना ८ एवं १२५ भांगा विना बार उदयस्थानकना ७६६६ भांगा लाभे.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाए—प्रथमना तेर गुणठाणे कह्या २०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ ए नव उदयस्थानके पद्मलेश्यामां कह्या ७६६६ अने केवलीना (८।९ ए वे उदयस्थानक चौदमे गुणठाणे होय माटे ए वे भांगा विना) ६ भांगा एवं ७६७२ भांगा लाभे.

१ भव्य मार्गणाए—बार उदयस्थानकना ७७९१ भांगा लाभे.

१ उपशम मार्गणाए—२१।२५।२७।२८।२९।३०।३१ ए सात उदयस्थानके एकवीशना उदये उपशमसम्यक्त्वी कोइक जीव उपशमश्रेणिये मरु [illegible]

यथा मरण पामी अनुत्तरदेवोमां उपजे त्यारे भवांतराले सौभाग्य, आदेय अने यशःकीर्त्ति सायेनो बादरपर्याप्त अनुत्तरदेवनो एक भांगो. पचीशना उदयें—वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, अनुत्तरदेवनो १ एवं १७. सत्तावीशना उदयें पण पच्चीशना उदयनी परें १७. अट्ठावीशना उदयें वैक्रियतिर्यंचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, देवनाना २ एवं २७ भांगा होय. तथा ओगणत्रीशना उदयें वैक्रियतिर्यंचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, देवनाना ८ अने नारकीनो १ एवं ३४. तथा त्रीशना उदयें सामान्यतिर्यंचना ११५२, सामान्यमनुष्यना ११५२, वैक्रियतिर्यंचना ८ वैक्रियमनुष्यनो १, देवनाना ८ एवं २३२१. तथा एकत्रीशना उदयस्थानकें पंचेंद्रियतिर्यंचपर्याप्तना ११५२ होय. एवं एकवीशना उदयनो १, पचीशना १७, सत्तावीशना १७, अट्ठावीशना २७, ओगणत्रीशना ३४, त्रीशना २३२१, अने एकत्रीशना ११५२, सर्व मली ३५६९ होय. पक्षांतरे—उपशम मार्गणामां—२१।२५।२७।२८ ए चार उदयस्थानकें—देवनाना आठ आठ भांगा गणतां ३२, अने ओगणत्रीशना उदयें—देवनाना ८, अने नारकीनो १. त्रीशनाउदयें सामान्यतिर्यंचना ५७६, अने सामान्यमनुष्यना ५७६. तथा एकत्रीशना उदयें सामान्यतिर्यंचना ५७६ एवं सात उदयस्थानकना मली १७६९ भांगा लाभे. अथवा अनादि मिथ्यात्वीमां उपशमसम्यक्त्व गणिये तो मनुष्यतिर्यंचना १७२८ भांगा प्रथम संघयणने गणतां थाय ते पक्षो अहीं छे संघयण गणिये तो ३४५६ भांगा मनुष्यतिर्यंचना गणतां सर्व ३४९७ भांगा पण होय.

१ क्षायिक मार्गणाएं—२०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।९।८ ए अग्यार उदयस्थानकें मतिश्रुतादिमां कह्या प्रमाणे असंख्याता वर्षायुवाला युगलिकतिर्यंच स्थलचरना ८० भांगा, बारदेवलोक, नवलोकांतिक, नवग्रैवेयक, पांच अनुत्तरविमान ए ३५ भेदवाला देवोमांज क्षायकसमकित थाय छे. माटे ए देवोमां २१।२५।२७।२८।२९।३० ए छ उदयस्थानकें—एक दौर्भाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्तिनो उदय न होवाथी एकवीशना उदयें, पचीशना उदयें, सत्तावीशना उदयें एकेक भांगो, अट्ठावीशना उदयें बे, ओगणत्रीशना उदयें बे, अने त्रीशना उदयें पण एक, ए छ उदयस्थानकना मली ८. नारकीमां २१।२५।२७।२८।२९ ए पांच उदयस्थानकें प्रत्येकें एक एक गणतां ५. तथा २१।२६।२८।२९।३० ए पांच उदयस्थानकें सामान्यमनुष्यना अपर्याप्तना बे भांगा विना ४४० प्रथम संघयण अने संस्थान ६ साथे गुणवाथी ४४० भांगा उपजे, एकवीशना उदयें ८, तथा छवीशना उदयें ४८, अट्ठावीशना उदयें ९६, तथा ओगणत्रीशना उदयें ९६. अने त्रीशना उदयें १९२ ए सर्व मली ४४० भांगा उपजे. वैक्रियमनुष्यना ३५, आहारकमनुष्यना ७, केवलीना ८ एवी रीतें तिर्यंचना ८०, सामान्यमनुष्यना ४४०, वैक्रियमनुष्यना ३५, आहारकमनु-

ष्यना ७, केवलीना ८, देवताना ८, नारकीना ९ सर्वे मली ५८३ भांगा लाभे. यंत्र-पूर्वककर्मादि विचारमां पृष्ठ २२२ मां ६२३ भांगा लखेल छे.

१ मिश्र मार्गणाएं—२९ । ३० । ३१ ए त्रण उदयस्थानकें ओगणत्रीशना उदयें देवताना ८, अने नारकीनो १. त्रीशना उदयें पंचेंद्रियतिर्यंचना ११५२. अने मनुष्यना ११५२. एकत्रीशना उदयें तिर्यंचपंचेंद्रियना ११५२. एवं ३४६५ भांगा लाभे.

१ शास्वादन मार्गणाएं—२१ । २४ । २५ । २६ । २९ । ३० । ३१ ए सात उदयस्थानकें नरकगति विना त्रण गतिना जीवोंनी अपेक्षायें वाटे वहेतां एकवीशनो उदयस्थानक होय. त्यां अपर्याप्ताना ७, सूक्ष्मपर्याप्तानो १, नारकीनो १, अने केवलीनो १, एवं १० भांगा विना ३२ भांगा होय. उत्पन्नमात्र एकेंद्रियमां चोवीशनो उदयस्थानक होय. त्यां सूक्ष्मसाधारण अने वैक्रियना भांगा विना बादर पर्याप्ताना यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति विकल्पे बेभांगा होय. तथा देवनामां उत्पन्नमात्र ने पचवीशनो उदयस्थानक होय त्यां देवताना ८ भांगा होय. विकलेंद्रिय तथा पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यना उत्पन्नमात्रने छावीशनो उदयस्थानक होय त्यां अपर्याप्ताना एक एक भांगा विना पर्याप्ता विकलेंद्रियना ६, पंचेंद्रियतिर्यंचना २८८, मनुष्यना २८८ एवं ५८२ भांगा होय. पर्याप्तावस्थायें प्रथम प्राप्त सम्यक्त्वथी पडतां देवता अने नारकीने ओगणत्रीशनो उदयस्थानक होय त्यां देवताना ८, अने नारकीनो १, एवं ९ भांगा सर्वपर्याप्ति पूर्ण करयां बाद उपशमसम्यक्त्वथी पडतां पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यमां होय. तथा वैक्रियें वर्त्ततां तिर्यंचमां उद्योतना उदय समेत त्रीशनो उदयस्थानक होय त्यां मनुष्यना ११५२, तिर्यंचना ११५२, अने वैक्रियतिर्यंच ८ एवं २३१२ भांगा होय. प्रथम प्राप्त सम्यक्त्व वमतां पर्याप्तातिर्यंचमां एकत्रीशनो उदयस्थानक होय त्यां पर्याप्तापंचेंद्रियतिर्यंचना ११५२ एवं ७ उदयस्थानकना मली ४०९७ भांगा लाभे.

१ संज्ञी मार्गणाएं—प्रथमना बारगुणठाणें कहेला २१ । २५ । २६ । २७ । २८ २९ । ३० । ३१ ए आठ उदयस्थानकें एकवीशना उदयें तिर्यंचना ९, मनुष्यना ९, देवनाना ८, अने नारकीनो १. पचीशना उदयें देवनाना ८, नारकीनो १, वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यना ८, आहारकसाधुनो १. छव्वीशना उदयें तिर्यंचपंचेंद्रियना २८९, मनुष्यना २८९. सत्तावीशना उदयें पचीशना उदयनी परें २६ भांगा. अठ्ठावीशना उदयें–सामान्यतिर्यंचना ५७६, सामान्यमनुष्यना ५७६, देवनाना १६, नारकीनो १, वैक्रियतिर्यंचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, आहारकमनुष्यना २. ओगणत्रीशना उदयें–सामान्यतिर्यंचना ११५२, सामान्यमनुष्यना ५७६, देवनाना १६, नारकीनो १, वैक्रियतिर्यंचना १६, वैक्रियमनुष्यना ९, अने आहारकसाधुना २.

त्रीशना उदये-सामान्यतिर्यंचना १७२८, सामान्यमनुष्यना ११५२, देवताना ८, वैक्रियतिर्यंचना ८, वैक्रियमनुष्यनो १ अने आहारकनो १. एकत्रीशना उदये-सामान्यतिर्यंचना ११५२. एवं सर्व मळी ७६७२ भांगा लाभे अथवा केवलीने पण संज्ञी गणिये तो केवलीना ८ भांगा वधारे गणवाथी ७६८० भांगा लाभे.

१ असंज्ञी मार्गणाए—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ ए नव उदयस्थानके एकवीशना उदये-एकेंद्रियना ५, विकलेंद्रियना ९, सामान्यतिर्यंचना ९, मनुष्यनो १. चोवीशना उदये-एकेंद्रियनाज ११. पच्चीशना उदये-एकेंद्रियनाज ७. छव्वीशना उदये-एकेंद्रियना १३, विकलेंद्रियना ९, सामान्यतिर्यंचना २८९, मनुष्यनो १. सत्तावीशना उदये-एकेंद्रियनाज ६. अठ्ठावीशना उदये-विकलेंद्रियना ६, सामान्यतिर्यंचना ५७६. ओगणत्रीशना उदये-विकलेंद्रियना १२, सामान्यतिर्यंचना ११५२. त्रीशना उदये-विकलेंद्रियना १८, तिर्यंचना १७२८. अने एकत्रीशना उदये-विकलेंद्रियना १२ अने सामान्यतिर्यंचना ११५२. एवं सर्व मळी ५०१६ भांगा लाभे. अथवा मतांतरे-छेवट्ठुं संघयण अने हुंडकसंस्थान गणतां ११२ भांगा पण होय.

१ आहारी मार्गणाए—भवांतरालना एकवीशना उदयना ४१, तीर्थंकरने केवलीसमुद्घात करतां अनाहारी पणानो १. तथा वीशना उदये सामान्यकेवलीनो १. चौदमा गुणठाणे आठना उदयनो १ अने नवना उदयनो १ ए ४५ विना ७७४६.

१ अनाहारी मार्गणाए-२०।२१।९।८ ए चार उदयस्थानके वीशना उदयनो १, एकवीशना उदयना ४२, नवना उदयनो १, आठना उदयनो १ एवं ४५ भांगा लाभे.

---

८९. बासठमार्गणाने विषे आयुकर्मना संवेधभांगानुं द्वार—

आयुकर्मना संवेधभांगा कहे छे—

आयुकर्मनी प्रकृति परस्पर विरोधिनी होवाथी एक काळे बे आयुनो बंध अने उदय थई नथी माटे ज्यां सुधी परभवनो आयु बांध्युं न होय त्यां सुधी एकज आयुनी सत्ता जाणवी अने परभवायु बंध काळे अथवा बांध्या पछी मरण समयपर्यंत बे आयुनी सत्ता जाणवी. एवी रीते वर्तमान गतिमां उदय तथा सत्ता अने परभवायु बांधे तेनी सत्ता ए बे सत्तास्थानक होय.

नरकगति अने देवगति आश्रयी भांगा कहे छे—

१—नरक आश्रयी परभवायु बंधकालनी पूर्वे बंधना अभावे नरकायुनो उदय अने नरकायु नी सत्ता ए प्रथम भांगो प्रथमना चार गुणठाणे होय.

२-जे नारकी आगले भवे तिर्यंच थशे तेने तिर्यंचायुनो बंध, नरकायुनो उदय अने तिर्यंचायु नरकायुनी सत्ता ए बीजो भांगो प्रथमना बे गुणठाणें होय.

३-जे नारकी आगले भवे मनुष्य थशे तेने मनुष्यायुनो बंध, नरकायुनो उदय, अने मनुष्यायु नरकायुनी सत्ता ए त्रीजो भांगो पहिले बीजे अने चोथे गुणठाणें होय.

४-परभवायु बांध्यां पछी उत्तरावस्था में बंध शून्य, नरकायुनो उदय अने नरकायु तिर्यंचायुनी सत्ता ए चोथो भांगो प्रथमना चार गुणठाणें होय.

५-बंध शून्य, नरकायुनो उदय अने नरकायु मनुष्यायुनी सत्ता ए पांचमो भांगो पहिला चार गुणठाणें होय ए पांच भांगा नरकगति आश्रयी जाणवा, देवगति आश्रयी पण पांच भांगा नरकगतिनी पेरें जाणवा, परंतु एटलुं विशेष छे के नरकायुना ठेकाणें देवायु कहेवुं. एवं नारकगति अने देवगतिना मली दश भांगा थया.

तिर्यंचगति आश्रयी नव भांगा कहे छे-

१-परभवायु बंधकालना पूर्वे बंधना अभावे तिर्यंचायुनो उदय अने तिर्यंचायुनी सत्ता ए प्रथम भांगो प्रथमना पांच गुणठाणें होय.

२-जे तिर्यंच आगले भवे तिर्यंच थशे तेने तिर्यंचायुनो बंध, तिर्यंचायुनो उदय, अने बे तिर्यंचायुनी सत्ता ए बीजो भांगो पहिला बे गुणठाणें होय.

३-जे तिर्यंच आगले भवे मनुष्य थशे तेने मनुष्यायुनो बंध, तिर्यंचायुनो उदय अने मनुष्यायु तिर्यंचायुनी सत्ता ए त्रीजो भांगो प्रथमना बे गुणठाणें होय.

४-जे तिर्यंच आगले भवे देवता थशे तेने देवायुनो बंध, तिर्यंचायुनो उदय अने देवायु तिर्यंचायुनी सत्ता ए चोथो भांगो पहिला बीजा चोथा अने पांचमा गुणठाणें होय.

५-जे तिर्यंच आगला भवे नरकमां जशे तेने नरकायुनो बंध, तिर्यंचायुनो उदय, अने नरकायु तिर्यंचायुनी सत्ता ए भांगो मिथ्यात्व गुणठाणें होय.

६-आयु बंध कर्या पछी उत्तरावस्थायें बंध शून्य, तिर्यंचायुनो उदय, अने बे तिर्यंचायुनी सत्ता ए छठो भांगो जाणवो.

७-बंध शून्य, तिर्यंचायुनो उदय अने मनुष्यायु तिर्यंचायुनी सत्ता.

८-बंध शून्य, तिर्यंचायुनो उदय अने तिर्यंचायु देवायुनी सत्ता.

९-बंध शून्य, तिर्यंचायुनो उदय अने तिर्यंचायु नरकायुनी सत्ता.

मनुष्यगति आश्रयी नव भांगा कहे छे-

१-परभवायु बंधकालना पूर्वे बंधना अभावे मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता ए प्रथम भांगो चौदगुणठाणें होय.

२-परभवायु बंधावस्थायें जे मनुष्य आगला भवे मनुष्य थशे तेने मनुष्यायुनो बंध, मनुष्यायुनो उदय अने बे मनुष्यायुनी सत्ता ए बीजो भांगो प्रथमना बे गुणठाणें होय.

३-जे मनुष्य आगला भवे तिर्यंच थशे तेने तिर्यंचायुनो बंध, मनुष्यायुनो उदय अने तिर्यंचायु मनुष्यायुनी सत्ता ए त्रीजो भांगो पहिला बे गुणठाणें होय.

४-जे मनुष्य आगला भवे देवता थशे तेने देवायुनो बंध, मनुष्यायुनो उदय अने देवायु मनुष्यायुनी सत्ता ए चोथो भांगो पहिला बीजा चोथा पांचमां अने छट्ठा गुणठाणें होय.

५-जे मनुष्य आगला भवे नारकी थशे तेने नरकायुनो बंध, मनुष्यायुनो उदय अने नरकायु मनुष्यायुनी सत्ता ए पांचमो भांगो मिथ्यात्व गुणठाणें होय.

६-आयु बंध काल पछी उत्तरावस्थायें बंध शून्य, मनुष्यायुनो उदय अने बे मनुष्यायुनी सत्ता ए छट्ठो भांगो जाणवो.

७-बंध शून्य, मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायु तिर्यंचायुनी सत्ता.

८-बंध शून्य, मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायु नरकायुनी सत्ता एवं छट्ठो, सातमो, आठमो ए त्रण भांगा प्रथमना छ गुणठाणा सुधी होय.

९-बंध शून्य, मनुष्यायुनो उदय, मनुष्यायु देवायुनी सत्ता ए नवमो भांगो अग्यारमां गुणठाणा सुधी होय. एवी रीते नरकना ५, देवताना ५, तिर्यंचना ९, मनुष्यना ९, सर्वे आयुकर्मनी प्रकृतियोना २८ भांगा जाणवा.

४ नरकगति मार्गणाए-नरकना ५ भांगा लाभे. तिर्यंचगति मार्गणाए-तिर्यंचना ९ भांगा लाभे. मनुष्यगति मार्गणाए-मनुष्यना ९ भांगा लाभे. देवगति मार्गणाए-देवताना ५ भांगा लाभे.

७ एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए सात मार्गणाए-बन्नेमें तिर्यंचायुनो उदय अने सत्ता १. तिर्यंचायुनो बंध, तिर्यंचायुनो उदय, अने बे तिर्यंचायुनी सत्ता १. मनुष्यायुनो बंध तिर्यंचायुनो उदय अने मनुष्यायु तिर्यंचायुनी सत्ता १. तिर्यंचायुनो उदय अने तिर्यंचायुनी सत्ता १. तिर्यंचायुनो उदय अने मनुष्यायु तिर्यंचायुनी सत्ता १ एवं पांच भांगा लाभे.

२३ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, त्रणयोग, चारकषाय, त्रण अज्ञान, अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, संज्ञी अने आहारी ए त्रेवीश मार्गणाएं—प्रत्येके चार गतिना मली २८ भांगा लाभे.

२ पुरुषवेद अने स्त्रीवेद ए बे मार्गणाएं—प्रत्येके देवगतिना ५, मनुष्यगतिना ९, अने तिर्यंचगतिना ९ एवं २३ भांगा लाभे.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—देवगति विना त्रण गतिना २३ भांगा लाभे.

५ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशम ए पांच मार्गणाएं-प्रत्येके परभवायु बंधकाले तिर्यंचायुनो बंध, नरकायुनो उदय अने तिर्यंचायु नरकायुनी सत्ता १. तथा तिर्यंचायुनो बंध, देवायुनो उदय अने देवायु तिर्यंचायुनी सत्ता १. परभवायुबंधकाले तिर्यंचायुना बंधनो १, मनुष्यायुना बंधनो १, अने नरकायुना बंधनो १, तेमज मनुष्यगतिना पण तिर्यंचगतिनी परें ३, ए ८ भांगा विना नरकगतिना ४, देवगतिना ४, तिर्यंचगतिना ६, अने मनुष्यगतिना ६, एवं २० भांगा लाभे.

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, अने परिहारविशुद्धि ए चार मार्गणाएं—परभवायु बांधतां पूर्वे मनुष्यायुनो उदय अने सत्ता १. अने परभवायुबंधकाले देवायुनो बंध, मनुष्यायुनो उदय, अने देवायु मनुष्यायुनी सत्ता १. तथा परभवायुबंध पछीना ४ एवं ६ भांगा लाभे.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—प्रत्येके मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता ए एकज भांगो लाभे.

२ सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए बे मार्गणाएं—प्रत्येके श्रेणीवालाने मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता १. तथा मनुष्यायुनो उदय अने देवायु मनुष्यायुनी सत्ता १ ए बे भांगा आयुर्बंधपछीना काले होय. कारण पूर्वे देवायुनो बंध कर्या विना उपशमश्रेणी न पडिवज्जे अने क्षपकश्रेणीवालाने परभवायुनो बंध न थयेलो होय. तेने मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता ए एकज भांगो होय. परन्तु श्रेणीनी विवक्षा कर्या विना तो बेज भांगा लाभे.

१ देशविरति मार्गणाएं—देशविरति छतां देवायुज बांधे माटे मनुष्यतिर्यंचने प्रत्येके बंधकालावस्थायें एक एक भांगो तथा परभवायु बंधकालथी पूर्वे एक एक भांगो उपजे अने आयुर्बंधकाल पछी चार भांगा होय कोईएक तिर्यंच अथवा मनुष्य चार आयुमांथी एक आयु बांधीने पछी देशविरतिपणुं पामे तेनी अपेक्षायें उत्तरावस्थाना चार चार भांगा होय. ए रीते मनुष्यना ६ अने तिर्यंचना ६ मली १२ भांगा लाभे.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाएं—नरकगतिना २, तथा मनुष्य अने

तिर्यंचनो नरकायु बंधावस्थानो एक एक भांगो एवं ७ भांगा विना २१ भांगा लाभे.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—नरकगतिना ५, नरकायुबंधवर्जितना २, अने तिर्यंचा-
युबंध वर्जितना ३ एवं १० विना देवनाना ४, मनुष्यना ७ अने तिर्यंचना ७ ए १८.

२ उपशम अने मिश्र मार्गणाएं—चारगतिना आयुबंधावस्थाना १२ भांगा विना १६.

१ क्षायिक मार्गणाएं—क्षायिकसम्यक्त्विदेवना १ मनुष्यायुनोज बंध करे परंतु
तिर्यंचायु न बांधे माटे देवनाने आयुबंधथी पूर्वावस्था ए देवनाना आयुनो उदय अने
देवायुनी सत्ता ए प्रथम भांगो. तथा आयुबंधकाले देवायुनो उदय, मनुष्यायुनो बंध,
अने देवायु मनुष्यायुनी सत्ता ए बीजो भांगो. तथा आयुबंधकाल पछी देवायुनो उदय
अने देवायु मनुष्यायुनी सत्ता ए त्रीजो. तथा एहिज आयुबंधावस्थानो १. तथा पूर्वाव-
स्थानो १. तथा परावस्थानो १. ए ३ भांगा देवनानी पेरें मनुष्य पणने अंगीकार
करीने नारकीमां पण होय. तथा तिर्यंचमां तो क्षायकसम्यक्त्व असंख्यवर्षायुवाला
युगलिकने होय माटे तिर्यंचायुनो उदय अने तिर्यंचायुनी सत्ता १. देवायुनो बंध,
तिर्यंचायुनो उदय अने देवायु तिर्यंचायुनी सत्ता १. आयु बंध्या पछी तिर्यंचायुनो
उदय, अने देवायु तिर्यंचायुनी सत्ता १ ए ३ भांगा होय. तथा मनुष्यना परभवायुना
पूर्वे मनुष्यायुनो उदय अने सत्ता १. आयुबंधकाले देवायुनो बंध, मनुष्यायुनो उदय
अने देवायु मनुष्यायुनी सत्ता. तथा परभवायुबंध पछी चारगतिना आयुनी सत्ता होय,
केम के क्षायिकसम्यक्त्व उपजतां पहेली चारगतिना आयुनोबंध होय छे, कोईकने प-
हिली आयुनो बंध थयो अने पछी क्षायिकसम्यक्त्व प्राप्त थयो तेने चारगतिना
आयुनी सत्ता मनुष्यायुनां उदयनी साथे जुदी जुदी गणतां चार भांगा उपजे ए ६ थया
एवी रीतें देवनाना ३, नारकीना ३, तिर्यंचना ३, अने मनुष्यना ६ मली १८ लाभे.

१ शास्वादन मार्गणाएं—मनुष्य अने तिर्यंचगतिना जीवोंने आयुबंधावस्थायें नर-
कायुना बंधना बे भांगा विना २६ भांगा लाभे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—प्रत्येकें तिर्यंचायुनो उदय अने तिर्यं-
चायुनी सत्ता १. तिर्यंचायुनो बंध, तिर्यंचायुनो उदय अने बे तिर्यंचायुनी सत्ता १.
तिर्यंचायुनो उदय अने बे तिर्यंचायुनी सत्ता १ एवं त्रण भांगा लाभे.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—परभवायु पूर्वेना मनुष्यनो १. अने तिर्यंचनो १. परभ-
वायुबंधावस्थाना मनुष्यना २. अने तिर्यंचसंमूर्छिमने चारगतिना आयुनो बंध होय
माटे ४ भांगा. तेमज उत्तरावस्थाना पण मनुष्यसमूर्छिमना २. तथा तिर्यंचना ४.
एवं १४ भांगा लाभे.

१ अनाहारी मार्गणाएं—भवान्तरालें चारगतिना जीवोंने परभवायुबंधथी पूर्वाव-
स्थाना ४ भांगा लाभे.

---

१० बासठमार्गणाने विषे गोत्रकर्मना संवेधभांगानुं द्वार–

गोत्रकर्मना संवेधभांगा कहे छे—

ऊंचगोत्र अने नीचगोत्र ए बे प्रकृति परस्पर बंधविरोधिनी अने उदयविरोधिनी छे तेथी एक प्रकृतिनो बंध अने एकप्रकृतिनो उदय थाय छे, तथा एकप्रकृति अथवा बेप्रकृतिनी सत्ता थाय छे तेउकाय अने वायुकायमां रहेलां कोई जीव ऊंचगोत्रनी सत्तानो क्षय करी बीजा भवांतरमां जाय त्यारे ज्यां सुधी फरी ऊंचगोत्रनो बंध न करे त्यां सुधी नीचगोत्रनी सत्ता थाय. अने चौदमां गुणठाणांना चरिम समयमां एक ऊंचगोत्रनी सत्ता थाय. हवे एना भांगा कहे छे—

१–नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने नीचगोत्रनी सत्ता ए प्रथम भांगो तेउकाय अने वायुकायमां ऊंचगोत्रने खपाव्यां पछी होय.

२–नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय, अने ऊंचगोत्र नीचगोत्रनी सत्ता.

३–नीचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय, अने ऊंचगोत्र नीचगोत्रनी सत्ता. एरीते बीजो अने त्रीजो भांगो ए २ भांगा प्रथमना बे गुणठाणें होय.

४–ऊंचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय, अने बे गोत्रनी सत्ता ए चोथो भांगो प्रथमना पांच गुणठाणां सुधी होय.

५—ऊंचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय अने बे गोत्रनी सत्ता ए पांचमो भांगो प्रथमना दश गुणठाणा सुधी होय.

६—ऊंचगोत्रनो उदय अने ऊंचगोत्र नीचगोत्रनी सत्ता ए छट्ठो भांगो अग्यारमां गुणठाणांथी चौदमां गुणठाणाना द्विचरिम समय सुधी होय.

७—ऊंचगोत्रनो उदय अने ऊंचगोत्रनो सत्ता ए सातमो भांगो चौदमां गुणठाणानां अंतिम समय सुधी होय एरीते गोत्रकर्मनी प्रकृतिना ७ भांगा जाणवा.

१ नरकगति मार्गणाएं—नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने नीचगोत्र ऊंचगोत्रनी सत्ता ए प्रथमभांगो पहिला बे गुणठाणे. तथा ऊंचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता ए चोथो भांगो चोथा गुणठाणा सुधी होय. एरीते बे भांगा जाणवे.

१ देवगति मार्गणाएं—नीचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय, अने बेनी सत्ता ए भांगो प्रथमना बे गुणठाणें, तथा ऊंचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय, अने बेनी सत्ता ए भांगो प्रथमना चारगुणठाणे होय एरीते २ भांगा जाणे.

* तिर्यंचगति, एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, असंज्ञि

एवं ९ मार्गणाएं–प्रत्येकें नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने नीचगोत्रनी सत्ता ए प्रथम भांगो तेउकाय अने वायुकायमां ऊंचगोत्रनी सत्ताने खपावी तेउकायथी निकली पृथ्व्यादिक तथा विकलेंद्रियादिक मध्ये उपजे अने ज्यां सुधी ऊंचगोत्रनो बंध करयो नथी त्यां सुधी होय. ऊंचगोत्रनो बंध पछीना काले नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने नीचगोत्र ऊंचगोत्रनी सत्ता ए बीजो भांगो. अने ऊंचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता ए त्रीजो एवं त्रण भांगा लाभे.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—सत्तायें ऊंचगोत्र उवेल्यां पछी नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय, अने नीचगोत्रनी सत्ता ए प्रथम विना ६ भांगा लाभे.

४ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, भव्य अने अनाहारी ए चार मार्गणाएं–सातें भांगा लाभे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं—ऊंचगोत्रनी सत्ता उवेली नथी त्यां सुधी नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने नीचगोत्र ऊंचगोत्रनी सत्ता ए प्रथम भांगो. अने उवेल्यां पछी नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने नीचगोत्रनी सत्ता ए बीजो भांगो एवं बे भांगा लाभे.

४ मनोयोग, वचनयोग, चक्षुदर्शन अने शुक्ललेश्या ए चार मार्गणाएं–प्रत्येकें तेउकाय अने वायुकाय आश्रयी नीचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने नीचगोत्रनी सत्ता १. तथा चौदमां गुणठाणाना अंतिम समयमां ऊंचगोत्रनो उदय अने ऊंचगोत्रनीज सत्ता १ ए बे भांगा विना ५ भांगा लाभे.

४ काययोग, अचक्षुदर्शन, संज्ञी अने आहारी ए चार मार्गणाएं–प्रत्येकें अयोगी गुणठाणाना चरिम (अंतिम) समयना सातमां भांगा विना ६ भांगा लाभे.

१९ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, क्रोध, मान, माया, लोभ, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अविरति, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, अभव्य, मिथ्यात्व ए पंदर मार्गणाएं–प्रत्येकें अंतना छट्ठा अने सातमां भांगा विना ५ भांगा लाभे.

५ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम ए पांच मार्गणाएं–प्रत्येकें ऊंचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता १. ऊंचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता १. अने दशमां गुणठाणाना उपरांतनो बंधशून्य, ऊंचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता १ एवं त्रण भांगा लाभे.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—ऊंचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय, अने बेनी सत्ता. अने बंधशून्यनो अग्यारमां गुणठाणानो ऊंचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता- एवं २ भांगा लाभे.

३ केवलज्ञान, केवलदर्शन अने यथाख्यात ए त्रण मार्गणाएं–प्रत्येकें दशमां गु-

णगणा उपरांतनो वंधशून्यनो छट्ठो अने सातमो ए वे भांगा लाभे.

३ देशविरति, क्षयोपशम अने मिश्र ए ३ मार्गणाएं-ऊंचगोत्रनो बंध, नीचगोत्रनो उदय, अने बेनी सत्ता १. अने ऊंचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता. एवं बे भांगा लाभे.

४ विभंगज्ञान, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने सास्वादन ए चार मार्गणाएं-प्रत्येकें प्रथमनो १. अंतिमनो छट्ठो अने सातमो ए त्रण भांगा विना चार भांगा लाभे.

४ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि अने सूक्ष्मसंपराय ए ४ मार्गणाएं-प्रत्येकें ऊंचगोत्रनो बंध, ऊंचगोत्रनो उदय अने बेनी सत्ता ए १ भांगो लाभे.

१ क्षायिक मार्गणाएं-प्रथमना त्रण भांगा विना चोथो, पांचमो, छट्ठो अने सातमो एवं ४ भांगा लाभे.

---

९१ बासठमार्गणाने विषे बंधहेतुना भांगानुं द्वार-

प्रथम षट्कायिक संयोगीक भांगा कहे छे—

असंयोगी भांगा ६

१ पृथ्वीकाय. २ अप्काय. ३ तेउकाय.
४ वायुकाय. ५ वनस्पतिकाय. ६ त्रसकाय.

द्विकसंयोगी भांगा १५

१ पृथ्वी अप्. २ पृथ्वी तेउ. ३ पृथ्वी वायु. ४ पृथ्वी वनस्पति.
५ पृथ्वी त्रस. ६ अप् तेउ. ७ अप् वायु. ८ अप् वनस्पति.
९ अप् त्रस. १० तेउ वायु. ११ तेउ वनस्पति. १२ तेउ त्रस.
१३ वायु वनस्पति. १४ वायु त्रस. १५ वनस्पति त्रस.

त्रिकसंयोगी भांगा २०

१ पृथ्वी अप् तेउ. २ पृथ्वी अप् वायु. ३ पृथ्वी अप् वनस्पति.
४ पृथ्वी अप् त्रस. ५ पृथ्वी तेउ वायु. ६ पृथ्वी तेउ वनस्पति.
७ पृथ्वी तेउ त्रस. ८ पृथ्वी वायु वनस्पति. ९ पृथ्वी वायु त्रस.
१० पृथ्वी वनस्पति त्रस. ११ अप् तेउ वायु. १२ अप् तेउ वनस्पति.
१३ अप् तेउ त्रस. १४ अप् वायु वनस्पति. १५ अप् वायु त्रस.
१६ अप् वनस्पति त्रस. १७ तेउ वायु वनस्पति. १८ तेउ वायु त्रस.
१९ तेउ वनस्पति त्रस. २० वायु वनस्पति त्रस.

चतुस्संयोगी भांगा १५

१ पृथ्वी अप् तेउ वायु.
२ पृथ्वी अप् तेउ वनस्पति.
३ पृथ्वी अप् तेउ त्रस.
४ पृथ्वी अप् वायु वनस्पति.
५ पृथ्वी अप् वायु त्रस.
६ पृथ्वी अप् वनस्पति त्रस.
७ पृथ्वी तेउ वायु वनस्पति.
८ पृथ्वी तेउ वायु त्रस.
९ पृथ्वी तेउ वनस्पति त्रस.
१० पृथ्वी वायु वनस्पति त्रस.
११ अप् तेउ वायु वनस्पति.
१२ अप् तेउ वायु त्रस.
१३ अप् तेउ वनस्पति त्रस.
१४ अप् वायु वनस्पति त्रस.
१५ तेउ वायु वनस्पति त्रस.

पंचसंयोगी भांगा ६

१ पृथ्वी अप् तेउ वायु वनस्पति.
२ पृथ्वी अप् तेउ वायु त्रस.
३ पृथ्वी अप् तेउ वनस्पति त्रस.
४ पृथ्वी अप् वायु वनस्पति त्रस.
५ पृथ्वी तेउ वायु वनस्पति त्रस.
६ अप् तेउ वायु वनस्पति त्रस.

षट्संयोगी भांगो १

१ पृथ्वी अप् तेउ वायु वनस्पति त्रस.

पंचकायिक संयोगीक भांगा—

असंयोगी भांगा ५

१ पृथ्वीकाय. २ अप्काय. ३ तेउकाय. ४ वायुकाय. ५ वनस्पतिकाय.

द्विकसंयोगी भांगा १०

१ पृथ्वी अप्. २ पृथ्वी तेउ. ३ पृथ्वी वायु. ४ पृथ्वी वनस्पति.
५ अप् तेउ. ६ अप् वायु. ७ अप् वनस्पति. ८ तेउ वायु.
९ तेउ वनस्पति. १० वायु वनस्पति.

त्रिकसंयोगी भांगा १०

१ पृथ्वी अप् तेउ. २ पृथ्वी अप् वायु. ३ पृथ्वी अप् वनस्पति.
४ पृथ्वी तेउ वायु. ५ पृथ्वी तेउ वनस्पति. ६ पृथ्वी वायु वनस्पति.
७ अप् तेउ वायु. ८ अप् तेउ वनस्पति. ९ अप् वायु वनस्पति.
१० तेउ वायु वनस्पति.

चतुस्संयोगी भांगा ५

१ पृथ्वी अप् तेउ वायु.
२ पृथ्वी अप् तेउ वनस्पति.

३ पृथ्वी अप् वायु वनस्पति. ४ पृथ्वी तेउ वायु वनस्पति.
५ अप् तेउ वायु वनस्पति.

पंचसंयोगी भांगो १

१ पृथ्वी अप् तेउ वायु वनस्पति.

चौदगुणठाणा आश्रयी बंधहेतुना भांगा कहे छे—

१ मिथ्यात्वगुणठाणें—विशिष्टचारित्रना अभावे आहारकलब्धि न होय माटे मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कपाय २५, (आहारकशरीर तथा आहारकमिश्र ए बे योग विना) योग १३ एवं ५५ बंधहेतु ओघें सर्वजीवनी अपेक्षायें होय. अने विशेषादेशें तो एक समये एक जीवने मिथ्यात्वें जघन्य थकी दशबंधहेतु होय. अने उत्कृष्टा अढार कर्मबंधना हेतु होय. एम १०। ११ १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८ ए नव स्थानक जाणवा. केमके पांच मिथ्यात्व मांथी एक मिथ्यात्व होय १. तथा छकायमध्यें एक कायनो वध होय २. केमके छकाय मध्यें कोई एक जीव केवल कायनोज वध करे तेमां पण पृथ्वीकायनोज वध करे अथवा अप्कायनोज वध करे ए रीते छकायना छे भांगा थाय. तेमज वली कोई एक जीव एक समये बे कायनो पण वध करे तेना द्विक संयोगीया पंदर भांगा थाय. तथा कोईएक जीव त्रणकायनो वध करे तेना त्रिकसंयोगीया वीश भांगा थाय. तथा कोईएक जीव चारकायनो वध करे तेना चतुःसंयोगी पंदर भांगा थाय. तथा कोईएक जीव पांचकायनो वध करे तेना पंचसंयोगी छे भांगा थाय. अने कोईएक जीव छकायनो वध करे तेनो षट्संयोगी एक भांगो थाय. पांच इंद्रियमांथी एक इंद्रियनो विषय होय तेनी अविरति होय ३. त्रणवेद मध्यें एक वेद होय ४. हास्य अने रति तथा शोक अने अरति ए बे युगलमांथी एक युगलनी २ होय एवं ६ थया. तथा चार कपाय मांथी एक कपायना अप्रत्याख्यानी एक, प्रत्याख्यानी बीजो, संज्वलननो त्रीजो ए त्रण वेदे जे भणी क्रोधादिक उदय विरोधी छे, तेथी क्रोधादिकने उदयें मानादिकनो उदय न होय. तथा उपशमश्रेणियें अनंतानुबंधियानी विसंयोजना करे, तेवारे तेनी सत्ता टले ते श्रेणीथी पडतो अनुक्रमें पहेले गुणठाणें आवे त्यां वली मिथ्यात्वने उदयें अनंतानुबंधिया बांधे अने बीजी आवलियें तेने संक्रमावें, ते एक बंधावली अने बीजी संक्रमावली ए बे आवली लगें अनंतानुबंधियानो उदय न पामिए तेथी ए अप्रत्याख्यानादिक कपाय त्रणनोज वध पामियें एटले एक कपायना त्रणज भेद पामियें.

एवं नव थया, तथा मिथ्यात्व गुणठाणे अनंतानुबंधियाना उदय विना मरे नहीं तेथी अपर्याप्तावस्थाभावी एक कार्मण, बीजो औदारिकमिश्र, त्रीजो वैक्रियमिश्र ए त्रण योग पण न लाभे. अने आहारकना बे योग तो पूर्वेज काढी नाख्या छे शेष दश योग मांथी एक योग होय एम जघन्यथी दश हेतु एक समये मिथ्यात्वी जीवने होय त्यां भांगा छत्रीश हजार होय, जे भणी पांच मिथ्यात्वने छकायना वध साथे गुणतां त्रीश थाय, तेने पांच इंद्रिय साथे गुणतां दोढसो थाय, तेने हास्य अने रति तथा शोक अने अरति ए बे युगल साथे गुणतां त्रणसो थाय, तेने त्रणवेद साथे गुणतां नवसो थाय. तेने चार कषाय साथे गुणतां छत्रीशसो थाय, तेने दश योग साथे गुणतां छत्रीशहजार थाय, ए दश हेतुना भांगा थया.

ते मध्ये भय अथवा जुगुप्सा अथवा बे कायनो वध अथवा अनंतानुबंधि एक मेलतां चार प्रकारे अग्यार हेतु होय त्यां भांगा २०८८०० थाय. तथा बे मेलतां बार बंधहेतुये ५४६६०० भांगा होय. अने त्रण मेलतां तेर बंधहेतुये ८२६८०० भांगा होय. अने चार मेलतां चौद बंधहेतुये ८८२००० भांगा होय. पांच मेलतां पंदर बंधहेतुये भांगा ६०४८०० होय. अने छे मेलतां सोल बंधहेतुये भांगा २६६४०० थाय. तथा सात मेलतां सत्तरह बंधहेतुये भांगा ६८४०० थाय. अने भय १, जुगुप्सा २, अनंतानुबंधि ३, छकायनो वध ९, मिथ्यात्व १०, एक युगलनो बे १२, वेदएक १३, त्रणकषाय १६, एकइंद्रियनो अविरति एक १७, अने योग १ ए उत्कृष्ट एक समयमां अढार बंधहेतु होय अहियां भांगा ७८०० एवं सर्व मली ३४७७६०० भांगा होय.

तथा छकायमां एककाय वधना भांगा ६, बेकायना वधना भांगा पंदर. त्रणकाय वधना भांगा वीश, चारकाय वधना भांगा पंदर, पांचकाय वधना भांगा छे, अने छे कायवधनो भांगो एक, तेथी ज्यां जेटली कायनो वध होय, त्यां तेटला भांगा साथे पांच मिथ्यात्व गुणिये तेने पांच इंद्रिय साथे गुणिये. एम गुणतां भांगा नीपजे तथा जिहां अनंतानुबंधिया सहित गुणिये तिहां तेरयोग साथे गुणिये अहियां मननो अविरति इंद्रिय मांहे आवी गई जे भणी साथे पांचेंद्रियनी विरति, मनोविरति पूर्वक छे अहिंमां विशेष खुलासा माटे पंचसंग्रह जोवो. हवे ते भांगा विवरीने देखाडे छे.

दश बंधहेतुना प्रथम ३६००० भांगानी रीत ऊपर कही छे तेनी साथे भय मेलिये तेवारे अग्यार हेतु थाय त्यां पण प्रथम ३६००० भांगा थाय. तथा

कुच्छा मेळिये तेवारे पण ३६००० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि कषाय मेळवियें तेवारे पण चार कषायें अग्यार बंधहेतु थाय परंतु पूर्वोक्त रीतें ३६०० ना आंकने दश योगे गुण्यो छे तेने ठेकाणें तेर योग साथे गुणियें तेवारे ४६८०० भांगा थाय तथा छकायमांहेथी बेकायनो वध विवक्षियें तेवारे द्विकसंयोगी पंदर भांगा थाय तेनी साथे पूर्वोक्तरीते गुणीने एटले पंदरने पांच मिथ्यात्व साथे गुणतां ७५ थाय तेने पंचेंद्रिय साथे गुणतां ३७५ थाय तेने युगल साथे रमणा करतां ७५० थाय. तेने त्रण वेद साथे गुणतां २२५० थाय तेने चार कषाय साथे गुणतां ९००० थाय, तेने दश योग साथे गुणतां ९०००० थाय ए अग्यार हेतुना चार विकल्प भेळा करिये तेवारे सरवाळे २०८८०० भांगा थाय.

हवे पूर्वोक्त दश मध्ये भय अने कुच्छा मेळियें तेवारे बारहेतु थाय. तिहां ३६००० भांगा थाय तथा भय अने बे काय लेखवियें तेवारे बे कायना पंदर भांगा साथे गुणतां ९०००० भांगा थाय, तथा कुच्छा अने बे काय साथे गुणतां ९०००० भांगा थाय. तथा त्रण कायनो वध लेखवियें तेवारे वीशभांगा साथे गुणतां १२०००० थाय, तथा अनंतानुबंधिनो उदय होय तेवारे अनंतानुबंधि अने भय मेळवियें तिहां योग तेर होय तेवारें ४६८०० भांगा थाय. तेमज अनंतानुबंधि अने कुच्छा मेळतां पण ४६८०० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि अने बे काय लेखतां ११७००० भांगा थाय ए बार हेतुना सात विकल्पें करीने ५४६६०० भांगा थाय छे.

हवे पूर्वोक्त दश मध्ये भय अने कुच्छा मेळियें अने बे काय लेखवियें तेवारें तेर हेतु थाय तिहां ९०००० भांगा थाय. तथा भय अने त्रणकाय लेखवियें तेवारें १२०००० भांगा थाय. तथा कुच्छा अने त्रणकाय लेखवियें तेवारे पण १२०००० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधिने उदयें भय अने कुच्छा मेळिये तेवारे तेरयोग साथें गुणतां ४६८०० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि, भय अने बे काय साथे लेखवतां ११७००० भांगा थाय. तेमज अनंतानुबंधि, कुच्छा अने बे काय लेखवतां पण ११७००० भांगा थाय. तेमज वळी अनंतानुबंधि अने त्रणकाय लइयें तेवारे त्रिकसंयोगी वीश भांगे गुणतां १५६००० भांगा थाय. तेमज पूर्वोक्त दश साथे चार काय लेखवियें तेवारें ९०००० भांगा थाय. ए तेर हेतुना आठ विकल्पें करीने ८५६८०० थाय छे.

हवे पूर्वोक्त दश मध्ये भय अने कुच्छा मेळिये अने त्रणकाय मेळिये तेवारे

चौद हेतु थाय तिहां १२०००० भांगा थाय. भय मेलिये अने चारकाय लेखविये तेवारें ९०००० भांगा थाय. कुच्छा मेलीने चारकाय लेखविये तेवारे पण ९०००० भांगा थाय. पांचकाय गणियें तेवारें पंचसंयोगी छ भंगे गुणतां ३६००० भांगा थाय. अनंतानुबंधिने उदयें भय, कुच्छा मेलिये अने वेकाय गणियें त्यां योग तेर होय तेवारे ११७००० भांगा थाय. अनंतानुबंधि, भय अने त्रणकाय गणतां १५६००० भांगा थाय. तेमज अनंतानुबंधि, कुच्छा अने त्रणकाय गणतां १५६००० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि अने चारकाय गणतां ११७००० भांगा थाय. एम चौदहेतुना आठ विकल्पें थईने ८८२००० भांगा थाय छे.

हवे पूर्वोक्त दसमध्यें भय, कुच्छा मेलियें अने चारकाय लेखवियें तेवारे पंदरहेतु थाय तिहां भांगा ९०००० थाय. भय अने पांच कायना ३६००० थाय. कुच्छा अने पांचकायना ३६००० थाय. छकाय मेले ६००० थाय. तथा अनंतानुबंधिने उदयें योगतेर होय. तिहां अनंतानुबंधि अने भय, कुच्छा मेलियें अने कायत्रण गणिये तेवारे १५६००० थाय. अनंतानुबंधि तथा भय मेलिये तथा चारकाय गणियें तेवारें ११७००० थाय. अनंतानुबंधि, कुच्छा अने चार काय मेलवियें तेवारें ११७००० थाय. अनंतानुबंधि अने पांच काय लेखवियें तेवारे ४६८०० थाय ए पंदर हेतुना आठ विकल्पें थईने सरवाले ६०४८०० भांगा थया.

पूर्वोक्त दसमां भय, कुच्छा अने पांचकाय एवं सोल हेतुना भांगा ३६००० थाय. तथा भय अने छकाय लेखवियें तेवारे ६००० भांगा थाय. तेमज कुच्छा अने छकाय लेखवियें तेवारें पण ६००० भांगा थाय. अनंतानुबंधि भय, कुच्छा अने चार काय साथे गुणतां ११७००० थाय. अनंतानुबंधि, भय तथा पांचकाय साथे गणतां ४६८०० भांगा थाय. तेमज अनंतानुबंधि, कुच्छा अने पांचकाय साथे गुणतां पण ४६८०० भांगा थाय. अनंतानुबंधि अने छकाय मेलिये तेवारें ७८०० भांगा थाय. ए सोलहेतुना सात विकल्पें थईने २६६४०० भांगा थाय छे.

हवे पूर्वोक्त दसमध्ये भय, कुच्छा अने छकायनो वध लइये. तेवारे सत्तर बंधहेतु थाय तिहां भांगा ६००० थाय अने अनंतानुबंधि ने उदयें भय, कुच्छा तथा पांचकायनो वध लेखवियें तेवारें ४६८०० भांगा थाय. अनंतानुबंधि, भय अने छकाय लेखवतां ७८०० भांगा थाय. तेमज अनंता-

नुबंधि, कुच्छा अने छकाय लेखवतां पण ७८०० भांगा थाय. ए सत्तर हेतुना चार विकल्पें थईने ६८४०० भांगा थाय.

हवे छकाय, एक मिथ्यात्व, एक ईंद्रिय, चार कषाय, एक हास्यादियुग्मना बे, एक वेद, एक योग, एक भय अने एक कुच्छा ए अढार हेतुना ७८०० भांगा थाय.

हवे सर्व भांगानो सरवाळो करी देखाडे छे दशबंधहेतुना भांगा ३६०००, अग्यारबंधहेतुना भांगा २०८८००, बारबंधहेतुना भांगा ५४६६००, तेरबंधहेतुना भांगा ८५६८००, चौदबंधहेतुना भांगा ८८२०००, पंदरबंधहेतुना भांगा ६०४८००, शोलबंधहेतुना भांगा २६६४००, सत्तरबंधहेतुना भांगा ६८४००, अढार बंध हेतुना भांगा ७८०० ए रीते मिथ्यात्वगुणठाणें अढारबंधहेतुना नव विकल्पें थईने ३४७७६०० भांगा थाय.

२. सास्वादनगुणठाणें—(पांच मिथ्यात्व विना) अविरति १२, कषाय २५ अने योग १३ एवं ५० बंधहेतु ओघें होय. तथा विशेषादेशें एक जीवने एक समयें जघन्यपदें दशहेतु होय. एम एक एक वधारतां उत्कृष्टपदें सत्तर बंध हेतु होय. एवी रीतें १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ ए आठ बंधहेतुना स्थानक जाणवा.

जघन्य हेतु दश होय ते भणी अहीं मिथ्यात्व न होय. पण एक कषायना चार भांगा होय. केमके अनंतानुबंधि पहेला कषायोदय विना ए बीजुं गुणठाणुं न होय तेथी ए कषायचार, एक वेद, एक युगलनो बे, एक इंद्रियनी अविरति एवं आठ, एक कायनो वध, अने तेरयोग मध्यें एक काययोग ए दश हेतु होय, अने उत्कृष्टा सत्तरहेतु एक समये होय. तेवारे दशथी सत्तर पर्यंत आठ विकल्प होय. पण एटलुं विशेष जे नपुंसकवेदें वैक्रियमिश्रयोग न होय. केमके नारकी अपर्याप्तावस्थायें सास्वादनी न होय. तेथी वर्गीकृत तेरयोग मांहे गुणतां ३९ थाय. ते मांहेथी एकरूप काढीए तेवारे ३८ होय. ते छकायना वध मांहे गुणतां २२८ थाय, तेने पांच इंद्रिय मांहे गुणतां ११४० थाय, तेने युगल मांहे बमणां करतां २२८० थाय, तेने चार कषायशी चारगुणा करतां ९१२० भांगा थाय, ए दशबंध हेतुना भांगा जाणवा.

हवे दशहेतु मध्ये भय मेळिये तेवारे अग्यार हेतु थाय तिहां ९१२० भांगा थाय. एमज कुच्छा मेळतां पण ९१२० भांगा थाय, तथा बेकाय मेळविये तिहां बेकायना द्विकसंयोगी १५ने भांगा मांहे गुणाकार करतां २२८००

भांगा थाय. एम त्रण विकल्पें थई अग्यार हेतुना भांगा ४१०४० थाय.

हवे पूर्वोक्त दशमाथें भय अने जुगुप्सा बे मेळवे तेवारें बार हेतु थाय तिहां ९१२० भांगा थाय. तथा एक भय अने षट्कायनो वध लहये तेवारें २२८०० थाय, तेमज एक जुगुप्सा अने षट्कायनो वध लेतां पण २२८०० थाय. तथा त्रणकायनो वध लहयें तेवारें त्रणकायना त्रिकसंयोगी वीश भांगा साथें गुणाकार करतां ३०४०० भांगा थाय, ए चार विकल्पें बारहेतुना ८५१२० भांगा थाय.

हवे पूर्वोक्त दशहेतु मांहे भय, जुगुप्सा मेळवियें अने बेकायनो वध लहयें तेवारें तेरहेतु थाय तिहां भांगा २२८०० थाय. तथा एक भय अने त्रण काय लहये तेवारें ३०४०० थाय. तथा एक जुगुप्सा अने त्रणकाय लहयें तेवारें ३०४०० थाय. अने मात्र चारकायनोज वध लहये तेवारें २२८०० थाय. ए चार विकल्पें तेरहेतुना १०६४०० भांगा थाय.

हवे पूर्वोक्त दशमध्यें भय, जुगुप्सा अने त्रणकायनो वध लहये तेवारे चौद हेतु थाय तिहां ३०४०० भांगा थाय. तथा एक भय अने चारकाय लहयें तेवारे २२८०० थाय. जुगुप्सा अने चारकाय लीजे तेवारें २२८०० थाय. पांचकाय लीधे ९१२० थाय. ए चार विकल्पें चौदहेतुना ८५१२० भांगा थाय.

हवे पूर्वोक्त दशमध्ये भय, जुगुप्सा अने चारकाय मेळवियें तेवारें पंदर हेतु थाय तिहां भांगा २२८०० थाय. भय अने पांचकाय लीधे ९१२० थाय. जुगुप्सा अने पांचकाय लीधे ९१२० भांगा थाय. तथा छकाय लीधे १५२० भांगा थाय. एवं चार विकल्पें पंदरहेतुना ४२५६० भांगा थाय.

पूर्वोक्त दशमध्यें भय, जुगुप्सा अने पांचकाय मेळवियें तेवारें सोळ हेतु थाय तिहां भांगा ९१२० थाय. भय अने छकाय मेळे तेवारे १५२० थाय. जुगुप्सा अने छकाय मेळे १५२० थाय. एम त्रण विकल्पें थईने १२१६० भांगा थाय.

हवे छकाय, एक इंद्रिय, चार कषाय, एक युगलना बे, वेद एक, भय एक, जुगुप्सा एक, योग एक ए सत्तरहेतुना भांगा १५२० थाय. ए रीतें सास्वादनगुणठाणे आठविकल्पें थईने सरवाळे ३८३०४० भांगा थाय छे.

सम्यग्गुणठाणें—औदारिकमिश्र, वैक्रियमिश्र, अने कार्मणयोग ए त्रण योग अने अनंतानुबंधि कषाय चार एवं सात बंधहेतु विना शेष अविरति बार, कषाय एकवीश अने योग दश एवं तेतालिश बंधहेतु ओघें होय. अने विशेषादेशें एक जीव प्रत्यें एक समयें पंचेंद्रियमध्यें इंद्रियनी अविरति एक, छकायना वध मध्यें एक कायनो वध, बे युगल मध्यें एक युगलना बे, तथा त्रण

वेद मध्यें एकवेद, तथा चारकषाय मध्येंना त्रण भेद होय तथा दशयोग मध्यें एक योग एवं नव बंधहेतु जघन्यथी होय. अने उत्कृष्टथी तो छ कायनो वध, एक इंद्रियनी अविरति, एकयुगलना बे, एक वेद, कषायना त्रणभेद, भय, जुगुप्सा अने एकयोग ए १६ बंध हेतु लाभे. ए मिश्रगुणठाणे जीव काल न करे. तेथी अपर्याप्तावस्थायें भावी त्रण योग न होय. अने बंधहेतु स्थानक नवथी मांडीने सोल लगें आठ होय. तिहां एककायना भांगा ६ तेने पांच- इंद्रिय साथे गुणतां त्रीश थाय. तेने चार कषाय साथे गुणतां १२० थाय. ते युगलना बे साथे गुणतां २४० थाय ते त्रणवेद साथे गुणतां ७२० थाय. तेने दशयोग साथें गुणतां ७२०० थाय ए नव हेतुना भांगा कह्या.

पूर्वोक्त नवमध्यें भय मेलतां दशबंधहेतुना ७२०० भांगा थाय. तथा कुच्छा मेलतां ७२०० भांगा थाय. तथा बेकायनो वध लेतां १८००० थाय एम त्रण विकल्पें थई दशहेतुना ३२४०० भांगा थाय.

पूर्वोक्त नवमध्यें कुच्छा अने भय ए बे मेलतां अग्यार बंधहेतुना ७२००, कुच्छा अने बेकाय साथे १८०००, भय अने बेकाय लीधे १८०००, त्रणकाय लेतां २४००० एम चार विकल्पें अग्यार हेतुना ६७२०० भांगा थाय.

पूर्वोक्त नवमध्यें भय कुच्छा अने बेकाय लीधे बारहेतुना १८०००, भय अने त्रणकाय लीधे २४०००, कुच्छा अने त्रणकाय लीधे २४०००, तथा चार- काय लीधे १८००० ए चार विकल्पें बारहेतुना ८४००० भांगा होय.

पूर्वोक्त नवमध्यें भय, कुच्छा अने त्रणकाय लेतां तेरहेतुना २४०००, भय अने चारकाय लीधे १८०००, कुच्छा अने चारकाय लीधे १८०००, अने पांचकायना लीधे ७२०० ए चार विकल्पें तेरहेतुना ६७२०० भांगा होय.

हवे पूर्वोक्त नवमध्यें भय, कुच्छा अने चारकाय मेले चौदहेतुना १८०००, भय अने पांचकाय लीधे ७२००, कुच्छा अने पांचकाय लीधे ७२००, छकायना लीधे १२०० ए चार विकल्पें ३३६०० भांगा होय.

पूर्वोक्त नवमध्यें भय, कुच्छा अने पांचकाय मेलवतां पंनरहेतुना भांगा ७२००, भय अने छकाय लीधे १२००, कुच्छा अने छकाय लीधे १२०० ए त्रण विकल्पें पंनर हेतुना ९६०० भांगा होय.

छकाय, एकेंद्रिय, त्रणकषाय, एक युगलना बे, वेदएक, योगएक, भयएक, कुच्छाएक एवं सोलहेतुना १२०० भांगा थाय ए आठ विकल्पें थईने मिश्रगुणठाणें ३०२४०० भांगा थाय.

४ अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणठाणे—मिश्रगुणठाणे कहेला ४३ तथा अपर्याप्तावस्थायें आ गुणठाणें होवाथी वैक्रियमिश्र १, औदारिकमिश्र १, अने कार्मण १ ए त्रणयोग एवं ४६ बंधहेतु ओघें होय. अने विशेषादेशें जघन्यथी मिथ्यनीपरें नव अने उत्कृष्टा सोल बंधहेतु होय. तथा बंधस्थानक मिश्रनी परें आठ होय.

स्त्रीवेदें एक औदारिकमिश्र, बीजो वैक्रियमिश्र, त्रीजो कार्मण ए त्रण योग मायें न होय. तथा नपुंसक वेदें औदारिकमिश्र न होय जे भणी स्त्रीवेदीने मायें अपर्याप्तावस्थायें चोथुं गुणठाणुं न होय. परंतु ब्राह्मी, सुंदरी, मल्लीनाथ तथा राजीमत्यादिक अनुत्तरविमानथी आव्यां तेने सम्यक्त्व पण होय. ते भणी मायें कह्युं अने नपुंसकवेदी सम्यग्दृष्टि जीव मनुष्य तथा तिर्यंच मांहे न आवे. तेथी तेने औदारिकमिश्र निश्चें न होय. तेथी तेरयोग त्रण वेद मायें गुणतां ओगणचालिस थाय. ते मांहेथी चार रूप काढिये तेवारें पांत्रीश रहे तेने छकायना वध मायें गुणतां २१० थाय. तेने पांच इंद्रिय मायें गुणतां १०५० थाय तेने युगल मायें घरणा करतां २१०० थाय. तेने चार कषाय मायें गुणतां ८४०० भांगा नव बंधहेतुना थाय, ते मध्ये भय दुगंछा तथा एक कायनो वध भेलतां दशहेतुयें भांगा १७८०० थाय. तथा बे कायनो वध भेलतां अग्यार हेतुयें ७८४००, त्रण कायनो वध भेलतां बारहेतुयें ९८०००, चार कायनो वध भेलतां तेरहेतुयें ७८४००, पांचकायनो वध भेलतां चौदहेतुयें ३०२००, छकायनो वध भेलतां पंदर हेतुयें ११२००, भय, दुगंछा अने छकाय मायें सोलहेतुयें १४०० थाय. एम सर्वे मली चोथे गुणठाणे ३५२८०० भांगा थाय.

[illegible]विरति गुणठाणे—अविरति मध्यें एक त्रसकायनी अविरति तथा योग मध्यें एक कार्मणयोग, बीजो औदारिकमिश्रयोग एवं बेयोग, तथा [illegible]ाय मध्यें बीजा अप्रत्याख्यानावरण कषाय चार एवं सात हेतु देशविरति [illegible]णठाणें न होय. माटे ते टालियें तेवारें देशविरति गुणठाणें ओगणचालिस [illegible]हेतु होय. अविरति अग्यार, कषाय सत्तर, योग अग्यार एवं ओगणचालिस हेतु ओघें होय. अने विशेषादेशें जघन्यपदें पांच कायना वध [illegible]मां एक कायनो वध, इंद्रियनी अविरति मध्ये एकेंद्रियनी अविरति एक, [illegible] युगलना बे, एक वेद, चार कषाय मध्ये एक कषायना बे भेद, अग्यार [illegible] मध्यें एक योग एवं ८ हेतु जाणे.

[illegible]ते पांचमें देशविरति गुणठाणें १६३६८० भांगा हवे वेदके ए जीव

त्रसकायथी विरम्यां माटे पांच कायना एकसंयोगी भांगा पांच. द्विसंयोगी भांगा दश अने त्रिकसंयोगी भांगा दश, तथा चतुःसंयोगी भांगा पांच अने पंचसंयोगी भांगो एक, अहियां एक जीव आश्रयी जघन्यथी आठ, नव, दश, अग्यार, बार, तेर उत्कृष्टा चौदहेतु ए रीते सात विकल्प थाय. तिहां जघन्यथी काय एक. इंद्रिय एक, कषाय चे. एक युगलना २, वेद १, योग अग्यारमांथी एक ए आठ हेतु होय तिहां पांचकायना भांगा पांच होय.

अहियां पांचकायना वधने पंचेंद्रिय साथे गुणतां २५ थाय. तेने युगल साथे वमणां करतां ५० थाय तेने त्रणवेद साथे गुणतां १५० थाय. तेने चार कषाय साथे गुणतां ६०० थाय. तेने अग्यार योग साथे गुणतां ६६०० भांगा आठ हेतुना थाय.

ते मध्यें भय, जुगुप्सा तथा बेकायना वध साथे नवहेतु करियें तेवारें भयथी ६६००, तेमज जुगुप्सा साथें ६६०० अने बेकायना वध साथे १३२०० थाय एम त्रण विकल्पें नवबंधहेतुना भांगा २६४०० थाय.

तथा भय कुच्छा लीधे दशबंधहेतुना भांगा ६६००, भय, तथा बेकाय वधे भांगा १३२००, कुच्छा अने बेकाय वधे १३२००, तथा त्रण काय वधे पण १३२०० भांगा थाय, एवं दशहेतुना चारविकल्पें थई ४६२०० भांगा थाय.

एमज भय, जुगुप्सा अने बेकाय वधे अग्यारहेतुना भांगा १३२००, भय अने त्रणकाय लीधे १३२००, कुच्छा अने त्रणकाय लीधे १३२००, चारकाय भेले ६६०० ए चार विकल्पें अग्यारहेतुना ४६२०० भांगा थाय.

भय अने चतुष्काय वधें बारहेतुयें भांगा ६६००, जुगुप्सा अने चतुष्काय वधे भांगा ६६००, भय, जुगुप्सा अने त्रणकाय वधे भांगा १३२००, पंच काय वधे भांगा १३२०, एम सर्व मली बारहेतुना चारविकल्पें २७७२० होय.

पूर्वोक्त आठ मध्यें भय, कुच्छा अने चारकाय लीधे तेरहेतुना ६६००, भय अने पांचकाय लीधे १३२०, कुच्छा अने पांचकाय लीधे १३२० ए त्रण विकल्पें थईने तेरहेतुना ९२४० भांगा थाय.

पूर्वोक्त आठ मांहे भय, कुच्छा अने पांचकाय लीधे चौदहेतुना १३२० भांगा थाय. एम पांचमे गुणठाणें सात विकल्पें थईने १६३६८० भांगा थाय.

६ प्रमत्तगुणठाणें—पांचइंद्रिय अने छट्ठुं मन ए ६ अविरति, तथा छ स्थावरनी अविरति एवं अग्यार अविरति. तथा त्रीजा प्रत्याख्यानावरण कषाय चार एवं पंदर बंधहेतु वर्जवा. तेवारें शेष छव्वीश बंधहेतु आंहे होय

अने विशेषादेशें पण वेद मध्यें एक वेद, संज्वलनना चार कषाय मध्यें एक कषाय. हास्यादि युगल मध्यें एक युगलना बे, तेर योग मध्यें एक योग ए पांच हेतु जघन्यपदें एक जीवने एक समयें होय अने उत्कृष्टा सात होय. तिहां स्त्रीवेदें आहारक अने आहारकमिश्र ए बे योग न होय तेथी त्रण वेद तेर योग सायें गुणतां भांगासंचालित थाय. तेमांथी बे रूप काढिये तेवारे ३७ रहे तेने युगल सायें गुणतां ७४ थाय. तेने चार कषाय सायें गुणतां २९६ भांगा ए पांच बंधहेतुना थया. ते मध्ये भय मेलवतां पण २९६ थाय, तथा जुगुप्सा मेलवतां पण २९६ एवं ५९२ छ हेतुना भांगा थाय. अने भय तथा जुगुप्सा बे मेलें सात हेतुना भांगा २९६ थाय. एम ५ । ६ अने ७ ए त्रण बंधस्थानकें सर्वविकल्पना ११८४ भांगा प्रमत्त गुणठाणे आवे.

७ अप्रमत्तगुणठाणें—आहारकमिश्र अने वैक्रियमिश्र ए बे योग न होय. जे भणी आहारक तथा वैक्रियशरीर करवा मांडतां तेनी पर्याप्तियें अपर्याप्ताने ए योग होय. तिहां जो लब्धि मर्युंजवा भणी प्रमत्त होय. वलतो अप्रमत्तगुणठाणें आवे. तिहां ए बे मिश्रयोग न आवे. तेथी कषाय तेर अने योग अग्यार एवं चोवीश बंधहेतु ओघें होय. अने विशेषादेशें एकजीवने एक समयें जघन्यपदें संज्वलननो एक कषाय, एक वेद, एक युगलना बे, अने अग्यार योग मध्यें एक योग एवं पांच होय. त्यां अग्यार योग त्रणवेद सायें गणतां तेत्रीश थाय. तेमांथी स्त्रीवेदें आहारक न होय. ते भणी एकरूप काढिए तेवारे बत्रीश रहे तेने युगल सायें बमणा करतां ६४ थाय. तेने संज्वलन चार कषाय सायें गुणतां २५६ भांगा पांच बंधहेतुना थाय. तथा भय मेलवतां २५६ अने जुगुप्सा मेलवतां २५६ एवं ५१२ भांगा छ बंधहेतुना थाय. अने भय तथा जुगुप्सा बे मेलवाथी सात हेतुना २५६ थाय एम त्रण बंध हेतुस्थानकें १०२४ भांगा सातमे अप्रमत्तगुणठाणें होय.

८ अपूर्वकरणगुणठाणें—वैक्रिय अने आहारक ए बे योग न होय जे भणी श्रेणी औदारिकशरीरी पडिवजे पण वैक्रिय अने आहारकशरीरी पडिवजे नहीं माटे ए बे काढी बाकीनां शेष संज्वलन चारकषाय, वेदत्रण, हास्यादिक छ, तथा योग ९. एवं सर्व मली बावीश हेतुबंध ओघें होय. तिहां पूर्वनी परें जघन्यहेतु पांच होय तेमां हास्यादि युगलने त्रणवेद सायें गणतां छ भांगा थाय. ते चार कषाय सायें गणतां चोवीश थाय, ते नवयोग सायें गणतां २१६ थाय. तेमां भय नाखतां २१६ तथा जुगुप्सा नाखतां पण २१६

एवं ४३२ छ बंधहेतुना भांगा थाय. तथा भय अने जुगुप्सा मेळवतां २१६ भांगा सात बंधहेतुना थाय. एवं सर्व मळी बंधहेतुस्थानकना ८६४ भांगा जाणवा.

९. बादरसंपराय गुणठाणे–हास्यषट्क विना कषाय ७ अने योग ९ एवं १६ बंधहेतु भोगे होय. अने जघन्यपदे एक जीवने बे बे बंध हेतुनां स्थानक होय. संज्वलनो कषाय एक, तथा योगएक एवं बे होय अने उत्कृष्ट एकवेद सहित त्रण होय एम ए बंधस्थानक होय, तिहां कषायचार ने योग नव माटे गुणतां बे बंधहेतुना ३६ भांगा थाय, तथा वळी कषाय चार ने त्रणवेद साथे गुणतां १२, तेने नवयोग साथे गुणतां १०८ भांगा थाय. ए बे स्थानना मळीने सरवाळे १४४ भांगा होय.

१० सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे—संज्वलननो क्रोध, मान अने माया तथा त्रणवेद एवं छ बंधस्थानक विना शेष संज्वलननो लोभ एक अने योगना नव एवं दशबंधहेतु भोगे होय तथा जघन्यपदे तो एक जीवने एक समये बे बे बंधहेतु होय. अने उत्कृष्टथी पण एक संज्वलनलोभ अने एकयोग एवं बे बंधहेतु होय. अहीं उत्कृष्ट जघन्यपणुं नथी. माटे नवयोगना नव भांगा थाय.

११ उपशांतमोह अने १२ क्षीणमोह गुणठाणे–पूर्वोक्त दश हेतुमांथी वीतराग पणे लोभ न होवाथी नवयोगना बंधहेतु भोगे होय अने एक जीवने एक समये जघन्यपदे एक योग होवाथी नव नव भांगा बे गुणठाणे होय.

१३ सयोगी गुणठाणे—२ मनना, २ वचनना, अने ३ कायाना एवं सात योग रूप सात हेतु सामान्ये होय. अने विशेषे एक जीवने एक समये एक योग होय. ते माटे सातयोगना सात भांगा होय. एवी रीते मिथ्यात्वना ३४७७६००, सास्वादनना ३८३०४०, मिश्रना ३०२४००, अविरतिना ३५२८००, देशविरतिना १६३६८०, प्रमत्तना ११७६४, अप्रमत्तना १०७६, अपूर्वकरणना ८६४, अनिवृत्तिकरणना १४४, सूक्ष्मसंपरायना ९, उपशमना ९, क्षीणमोहना ९, सयोगी ७ एवं सर्व गुणस्थानकमां [illegible] भांगा जाणवा.

१ [illegible]—[illegible] ४, उत्कृष्ट [illegible] एक जीवने [illegible] एक समये १०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८ ए नव स्थानक होय. तिहां [illegible] १०, एने [illegible] १००, एने [illegible] १०००, [illegible]

मारनयचनना, अने वैक्रियकायपयोग ए नव योग साथे गुणतां १०८०० भांगा अनंतानुबंधिना उदय विना ७ प्रकृति मोहनीयनी ए गुणठाणे जेमने उदय होय तेमने होय ॥१॥ अग्यारहेतुना स्थानकना भांगा कहे छे-भययुक्त अग्यार हेतुना नवयोगे अने ए नपुंसकवेदे गुणतां १०८००, तथा जुगुप्सायुक्त ११ हेतुना नवयोगे अने एकज नपुंसकवेदना १०८००, तथा अनंतानुबंधि सहित अग्यार हेतुना पूर्वोक्त नवयोग, वैक्रियमिश्र अने कार्मण एवं ११ योगना साथे एकज नपुंसकवेदना १२०० भांगाने गुणतां १३२०० भांगा थया, तथा बे कायनो वध गणिये तो पण ११ हेतुनो स्थानक होय तेने पांच मिथ्यात्व देकायना संयोगीक १५ भांगानी साथे गुणतां ७५ थाय, तेने वली पांच इंद्रियनी अविरति साथे गुणतां ३७५ थाय, तेने वली युगलनी साथे द्विगुणा करतां ७५० थाय, एने वली चार कषाय साथे गुणिये तेवारे ३००० थाय तेने वली पूर्वोक्त नवयोगनी साथे गुणतां २७००० भांगा थाय, एवं चारे विकल्पना ११ हेतुना सर्व ६१८०० भांगा थया ॥ २ ॥ बारहेतुना सात विकल्पना भांगा-पूर्वोक्त दशहेतुनी साथे भय अने जुगुप्सा गणतां बार हेतुना नवयोग अने एक नपुंसक वेद भणी १०८०० भांगा थाय. तथा भय अने बेकायनो वध गणतां संयोगीक १५ भांगाने ५ मिथ्यात्वे गुणतां ७५ थाय. तेने वली पांच इंद्रियना अविरतिये गुणतां ३७५, तेने युगलना बे साथे गुणतां ७५०, तेने चारकषाय साथे गुणतां ३०००, तेने वली नवयोग साथे गुणतां २७००० भांगा थाय. तेमज जुगुप्सा अने बेकायनो वध गणतां पण १२ हेतु होय तेना पण २७००० भांगा थाय. तथा त्रणकायनो वध गणतां पण १२ हेतु थाय तेना भांगा त्रिकसंयोगीक २० ने एक वेद अने नवयोग गणतां ३६००० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि अने भय सहित पण १२ हेतु होय. तथा अनंतानुबंधि अने जुगुप्सा ए बे सहित पण १२ हेतु होय माटे एमना पण अग्यार योग अने एकज नपुंसकवेदनी साथे गुणतां १३२००, १३२०० बेहुना थाय. तथा अनंतानुबंधि अने बेकायना वधे अग्यार योगने गणतां ३३००० थाय एवं साते विकल्पना मली १६०२०० भांगा थया ॥३॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय, दुगंछा अने बेकायनो वध भेलविये त्यारे तेर हेतु थाय तिहां २७०००, तथा भय अने त्रणकाय गणतां तेरहेतुना ३६०००, तथा जुगुप्सा अने त्रणकायने गणतां पण तेरहेतुना ३६०००, तथा अनंतानुबंधिना उदये भय अने जुगुप्सा भेलिये तेवारे अग्यार योग साथे गुणतां १३२००, तथा अनंतानुबंधि भय अने बेकायनो वध गणतां ३३०००, तेमज जुगुप्सा, अनंतानुबंधि अने बेकाय साथे तेरयोगना ३३०००, तथा वली अनंतानुबंधि अने त्रण काये त्रिकसंयोगी वीश भांगा साथे गुणतां ४४०००, तथा चारकाये गुणतां २७०००, एवं

तेर हेतुना ८ विकल्पें थइने शरवाले २४९२०० भांगा थाय ॥ ४ ॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय अने कुच्छा मेलियें अने त्रणकाय गणिये तेवारे चौदहेतु थाय तिहां भांगा ३६०००, तथा भय अने चारकायनो वध लेखविये तेवारे २७००० भांगा थाय. तथा कुच्छा अने चारकाय गणतां पण चौदहेतुना २७००० भांगा थाय, तथा कायपांच गणिये तेवारे पंचसंयोगीक छे भांगाने पांच मिथ्यात्वें गुणतां ३०, तथा त्रीशने पांचइंद्रिय साथे गुणतां १५०, तेमने युगल साथे बमणा करतां ३००, एने वली चारकषाय साथें गणतां १२००, तथा वली नवयोग साथे १०८००, तथा अनंतानुबंधि भय कुच्छा अने बे कायानो वध मेलिये तेवारे ३३०००, तथा अनंतानुबंधि, भय अने त्रणकाय गणतां चौदहेतुना ४४०००, तेमज अनंतानुबंधि, कुच्छा अने त्रणकायनो वध गणतां पण ४४०००, तथा अनंतानुबंधि अने चारकाय गणतां ३३०००, एवं चौदहेतुना आठ विकल्पें थइने २५४८०० भांगा होय ॥ ५ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय, कुच्छा अने चारकायनो वध लेखविये तेवारे पंदर हेतु थाय तिहां भांगा २७००० थाय. भय अने पांचकाय साथे पंदर हेतु थाय तिहां भांगा १०८००, तथा कुच्छा अने पांच काया साथे पंदर हेतुना १०८०० भांगा थाय, तथा छकाय भेले पंदर हेतु थाय तेना भांगा १८००, तथा अनंतानुबंधि, भय, अने कुच्छा मेलिये अने कायत्रण गणिये तेवारे ४४००० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि, भय मेलिये अने काया चार गणिये तेवारे ३३००० भांगा थाय. अनंतानुबंधि, कुच्छा अने चारकाय मेलिये तेवारे ३३०००, तथा अनंतानुबंधि, पांचकायना वधे १३२०० एवं पंदर हेतुना आठविकल्पना शरवाले १७३६०० भांगा होय ॥ ६ ॥ पूर्वोक्त दशहेतु मध्ये भय, कुच्छा अने पांचकाय एवं शोलहेतुना भांगा १०८००, तथा भय अने छेकाय लेखविये तेवारे १८०० भांगा थाय. तेमज कुच्छा अने छे काय लेखविये तेवारे शोल हेतुना १८०० भांगा थाय. अनंतानुबंधि भय, कुच्छा अने चारकाय सहित शोलहेतुना ३३००० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि भय अने पांचकायने गणतां शोलहेतुना १३२००, तेमज अनंतानुबंधि, कुच्छा अने पांचकाया सहित पण शोलहेतुना १३२०० भांगा थाय. अनंतानुबंधि अने छेकायने भेलतां शोलहेतुना २२०० भांगा थाय. एवं सात विकल्पना मली ७६००० भांगा होय ॥ ७ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय, कुच्छा अने छेकाया सहित १७ हेतुना १८०० भांगा, तथा अनंतानुबंधि, भय, कुच्छा अने पांचकायानो वध गणतां सत्तर हेतुना १३२०० भांगा, तथा अनंतानुबंधि, भय अने छेकायनो वध लेखवतां सत्तरहेतुनां २२०० भांगा थाय. तथा अनंतानुबंधि, कुच्छा अने छेकायना वध सहित सत्तर हेतुना पण २२०० भांगा थाय. एवं चार विकल्पना मली १९४०० भांगा होय. ॥ ८ ॥

छकाय, एक मिथ्यात्व, एक इंद्रिय, चार कषाय, एक हास्यादियुगलना बे, एक नपुंसकवेद, एक योग, एक भय, अने एक कुत्सा ए अढार हेतुना २२०० भांगा थाय. ते आवी रीते पांचमिथ्यात्वने छकायाना संयोगीकनो एकज भांगो होवाथी गुणतां पांचनोज आंक आवे तेमने वली पांच इंद्रिय साथे गुणतां २५ थाय, एने युगल साथे बमणा करतां ५० थाय. तेने वली चार कषाय साथे गुणतां २०० थाय. तेने वली नरकना अग्यार योगने साथे गुणतां २२०० भांगा थाय एवं अनुवाले ए मिथ्यात्व-गुणठाणे बंधहेतुस्थानकना ४८ विकल्पना मली सर्वे १००८००० भांगा होय.

शास्वादने ८ बंधहेतुना स्थानकना भांगाना नाम—इंद्रियनी अविरति एक, कायाना वधनी अविरति एक, एकयुगलना बे, चारकषाय, नपुंसकवेद एक, नारकीना पर्याप्ता नवयोग मांहेनो योग एक, एवं जघन्य दशहेतु कह्या. हवे एमना भांगा कहे छे—प्रथम पांच इंद्रियनो आश्रव छकायाना वधे छे गुणो करतां ३० थाय एने वली युगल साथे बमणां करतां ६०, एने वली चार कषाय साथे गुणतां २४० थाय. तेमने वली शास्वादननारकीने वैक्रियमिश्र अने कार्मण ए बे योग नथी अने बाकीना नव योगनी साथे गुणतां २१६० भांगा थाय ॥ १ ॥ ए दश साथे भय मेलवतां ११ हेतुना २१६०, तथा कुत्सा मलेथी २१६०, अथवा बेकायानो वध गणतां पंदर भांगा द्विकसंयोगीकना होय तेमने उपरोक्त रीते पांच इंद्रिये गुणतां ७५, युगले बमणा करतां १५०, चारकषाये गुणतां ६००, एने वली वेद तो एक नपुंसकहीज छे माटे ६००, एने नवयोगनी साथे गुणतां ५४००, एवं त्रण विकल्पनामलीने ९७२० भांगा थाय ॥२॥ पूर्वोक्त दशहेतुनी साथे भय अने कुत्सा ए बे मेलवतां बारहेतुना भांगा २१६० उपरोक्त प्रमाणे होय. तथा एक भय अने बेकायानो वध लेतां पण बारहेतुना ५४००, तथा कुत्सा अने बे कायानो वध गणतां ५४००, अथवा त्रणकायनो वध त्रिकसंयोगीकना २० भेदनी साथे उपरोक्त रीते गुणतां ७२००. ए चारविकल्पे बारहेतुना २०१६० भांगा थाय ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त दशहेतु मध्ये भय, जुगुप्सा अने बेकायानो वध गणतां तेरहेतुना ५४०० भांगा थाय. तथा एक भय अने त्रणकाय लेतां तेरहेतुना ७२०० भांगा. अथवा कुत्सा अने त्रणकायानो वध गणतां तेरहेतुना ७२०० भांगा थाय. तथा चारकायना वधे पण तेरहेतुना ५४०० एवं सर्व मली चार विकल्पना २५२०० भांगा थाय ॥ ४ ॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय, कुत्सा अने त्रणकायानो वध गणतां चौद हेतु होय तेना भांगा ७२००, तथा एकभय अने चारकाय गणतां ५४००, तथा कुत्सा अने चारकायना पण ५४००, तथा पांचकायना २१६०. एवं चारविकल्पना मली २०१६० भांगा थाय ॥५॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय अने जुगुप्सा तथा चारकाया मलेथी १६ हेतुना ५४०० थाय. तथा भय अने पांचकायाना मली १६ हेतुना २१६०, तेमज कुत्सा अने पांच-

काया समेत १५ हेतुना पण २१६० भांगा थाय. तथा छे कायानो वध गणतां पण १५ हेतुना ३६० भांगा थाय. एवं चार विकल्पना मली १००८० भांगा होय. ॥६॥ पूर्वोक्त दश मध्यें भय, जुगुप्सा अने पांचकाया समेत १६ हेतुना २१६० भांगा थाय, तथा भय अने छेकाया समेत ३६० भांगा, तेमज जुगुप्सा अने छेकाया समेत १६ हेतुना पण ३६० भांगा होय. एवं त्रण विकल्पना मली २८८० भांगा होय ॥७॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय, जुगुप्सा अने छेकाया समेत सत्तर बंधहेतुनो एकज विकल्प होय तेना ३६० भांगा होय. एवं आठ बंधहेतुस्थानकना ४४ विकल्पना मलीने ९०७२० भांगा थाय. ॥ ८ ॥

मिश्रें नरकगतिमां बंधहेतुना भांगा–मिश्रें छेकायामांथी एककायानी अजतना १, पांचमांहेलुं एकइंद्रियनो आश्रव १, हास्यादि बे युगलमांथी एक युगलनी बे, नपुंसकवेद, 'अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी अने संज्वलन' ए त्रण कषाय, एक योग एवं नवहेतुना भांगा बतावे छे–एक कायाने छे गुणा करीने पांच इंद्रियें गुणीजे त्यारे ३०, ते वली युगल साथे बमणा करतां ६०, ते वली क्रोधादि चारकषाय साथे गुणतां २४०, ते वलीचार मनना, चारवचनना अने वैक्रियकाययोग ए नवयोग साथे गुणतां २१६० भांगा थाय॥१॥ ए नवने भय समेत १० हेतुना २१६०, तथा जुगुप्सा समेत पण २१६०, अथवा बेकायाना वधे ५४००, एवं त्रण विकल्पना मली ९७२० भांगा थाय ॥ २ ॥ पूर्वोक्त नवहेतुमां भय अने जुगुप्सा क्षेपतां ११ हेतु थाय तेना २१६० भांगा थाय तथा भय अने बेकाय समेत अग्यार हेतुना ५४०० भांगा, तेमज जुगुप्सा अने बेकाया गणतां पण अग्यार हेतुना ५४०० भांगा अने त्रणकायानो वध गणतां ११ हेतुस्थानकना ७२०० भांगा एवं चार विकल्पना २०१६० भांगा थाय ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त नव मध्ये भय अने जुगुप्सा तथा बेकायानो वध गणतां बारबंधहेतुनो स्थानक थाय तेना भांगा ५४०० थाय, तथा भय अने त्रण काय गणतां १२ हेतुनां ७२००, तेमज कुच्छा अने त्रणकायनो वध गणतां पण ७२००, तथा चारकायानो वध गणतां ५४०० भांगा थाय. एवं चारे विकल्पना मली २५२०० भांगा थाय ॥ ४ ॥ पूर्वोक्त नव अने भय, जुगुप्सा, त्रणकायनो वध गणतां तेरबंधहेतु स्थानकनां ७२०० थाय. तथा भय अने चारकाया मली ५४००, तेमज कुच्छा अने चारकाया मली ५४००, तथा पांचकायाना वधे २१६० भांगा एवं चार विकल्पमा मली २०१६० भांगा थाय ॥५॥ पूर्वोक्त नवमध्ये भय, कुच्छा अने चारकाया गणतां चौदहेतुना ५४००, तथा भय अने पांचकाया मली २१६०, अथवा जुगुप्सा अने पांच कायाना मली २१६० थाय. अथवा छेकायाना वधे ३६० थाय. एवं चार विकल्पमा मली १००८० भांगा थाय ॥६॥ पूर्वोक्त नवने भय कुच्छा अने पांच कायायुक्त १५ हेतुना २१६०, तथा भय अने

हेकाया समेत ३६०, तथा कुच्छा अने छे कायायें पण ३६० भांगा एवं त्रण विकल्पना मली २८८० भांगा थाय ॥ ७ ॥ पूर्वोक्त नवने भय कुच्छा अने छे कायानो वध गणतां ३६० भांगा शोल बंध हेतुस्थानकना होय. एवं सर्वे आठ विकल्पना मली ९०७२० भांगा थाय ॥ ८ ॥

चोथा गुणठाणाना अविरतियें काया एक, इंद्रिय एक, युगलना बे, वेद एक, अनन्तानुबंधि वर्ज त्रण कषाय, योग एक एवं जघन्य एकसमयें नवहेतुनो प्रथमस्थानक होय तेहना भांगा अहीं योग अग्यार छे माटे अग्यारना आंक साथे गुणतां २६४० भांगा थाय॥१॥ ए नव मध्यें भय अथवा कुच्छा अथवा बेकायानो वध ए त्रणमांनो एक एक गणतां त्रण प्रकारना अनुक्रमें दशबंधस्थानकना विकल्प होय तिहां भांगा प्रथम विकल्पें २६४०, बीजाना २६४०, अने त्रीजाना ६६००, एवं त्रणे विकल्पना मली ११८८० भांगा होय ॥२॥ पूर्वोक्त नवहेतुमां भय अने जुगुप्सा ए बे साथे गणतां २६४० भांगा अग्यार हेतुना होय. तथा भय अने बे कायानो वध गणतां अग्यार हेतुना ६६०० भांगा, अथवा कुच्छा अने बेकाया गणतां ६६०० भांगा, तथा त्रण कायानो वध गणतां पण ११ हेतुना ८८०० भांगा उपजे एवं चार विकल्पना मली, २४६४० भांगा थाय ॥३॥ पूर्वोक्त नव मध्यें भय, कुच्छा अने बे कायानो वध मेलतां १२ हेतुना ६६००, भांगा थाय. अथवा भय अने त्रणकाय समेत ८८००, तेमज कुच्छा अने त्रणकायायें पण ८८००, तथा चारकायानो वध गणतां ६६०० भांगा एवं चार विकल्पना मली ३०८०० भांगा थाय ॥४॥ पूर्वोक्त नव मध्यें भय, कुच्छा अने त्रण कायानो वध ए चार मेलतां १३ बंध हेतुनुस्थानक होय तेमना भांगा ८८०० थाय. तथा भय अने चार काया समेत १३ हेतुना भांगा ६६०० थाय. अथवा कुच्छा अने चार काया समेत ६६०० थाय. अने पांच कायानो वध गणता पण २६४०, एवं चारविकल्पना मली २४६४० भांगा थाय ॥५॥ पूर्वोक्त नव मध्यें भय, कुच्छा अने चार काया समेत १४ हेतुना ६६००, तथा भय अने पांच काया समेत २६४०, तेमज जुगुप्सा अने पांच कायाना पण २६४० थाय, तथा छेकायाना वध समेत ४४० भांगा थाय. एवं चार विकल्पना मलीने १२३२० भांगा थाय ॥६॥ पूर्वोक्त नव मध्यें भय जुगुप्सा अने पांचकाय समेत १५ हेतुना २६४० भांगा, तथा भय अने छेकाया समेत १५ हेतुना ४४० भांगा, तेमज कुच्छा अने छेकाया समेत १५ हेतुना ४४० भांगा थाय. एवं त्रण विकल्पना मली ३५२० भांगा थाय ॥७॥ पूर्वोक्त नव मध्यें भय जुगुप्सा अने छेकायानो वध गणतां १६ बंधहेतुना ४४० भांगा थाय. एवं ८ बंधहेतुस्थानकना २४ विकल्पना मलीने ११०८८० भांगा थाय. एवं सर्व मली ए मार्गणाए १३००१२० भांगा होय. ॥ ८ ॥

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—मिथ्यात्वगुणठाणें नवें बंधहेतुस्थानकना ४८ विक

ल्पना मळीने ३४७७६०० भांगा ओघे कह्या प्रमाणे होय. शास्वादनें आठ बंधहेतु-स्थानकें २४ विकल्पना मळी ३८३०४० भांगा ओघें कह्या प्रमाणे होय. मिश्र-गुणठाणें आठ बंधहेतुस्थानकना २४ विकल्पना मळी ३०२४०० भांगा ओघें कह्या प्रमाणे होय. चोथे गुणठाणें आठ बंधहेतुस्थानकना २४ विकल्पना मळी ३५२८०० भांगा ओघें कह्या प्रमाणे होय. पांचमें देशविरतिगुणठाणें-सात बंधहेतुस्थानकना ओघें कह्या प्रमाणें २० विकल्पना मळीने १६३६८० भांगा होय. एवं सर्वे मळी ४६७९९२० भांगा जाणवा.

९ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, काययोग, अचक्षुदर्शन, भव्य, शुक्लेश्या, संज्ञी अने आहारी ए नव मार्गणाएं-ओघें कह्या प्रमाणे १३ गुणठाणांना ५६ बंधहेतुना १५५ विकल्पना मळी ४६८२७७० भांगा थाय. अर्थात् मिथ्यात्वना-३४७७६००, शास्वादनना-३८३०४०, मिश्रना-३०२४००, अविरतिना-३५२८०० देशविरतिना-१६३६८०, प्रमत्तना-११८४, अप्रमत्तना-१०२४, अपूर्वकरणना-८६४, अनिवृत्तिकरणना-१४४, सूक्ष्मसंपरायना ९, उपशांतमोहना ९, क्षीणमोहना-९, अने सयोगीना-७, एवी रीते तेरगुणठाणाना मळी ४६८२७७० भांगा जाणवा.

१ देवगति मार्गणाएं-मिथ्यात्वगुणठाणें-पांच मिथ्यात्व मांथी १, पांच इंद्रिय ना आश्रवमांथी एक, छकायना वधमांथी १, पुरुष अने स्त्री ए बे वेदमांथी एक, हास्यादि बे युगलमांथी एक युगलनी बे प्रकृति, चार कषायमांथी (अनंतानुबंधि विना) अप्रत्याख्यानादिक त्रण कषाय. नव योग मांथी (आहारकद्विक २, औदारिकमिश्र ३, वैक्रियमिश्र ४, कार्मण ५, अने औदारिक ६ ए छे विना) एक, एवं दश बंधहेतुनो प्रथमस्थानक होय तेना भांगा कहे छे-पांच मिथ्यात्वने छकाया साथे गुणतां ३०, एमने पांच इंद्रिय साथे गुणीजे त्यारे १५०, एहने वळी युगलना बे साथे बमणा करिये तेवारे ३००, एमने वळी क्रोधादिक चारकषाय साथे गुणतां १२००, एमने वळी देवगतिमां बेज वेद होवाथी बे गुणा करतां २४०० थाय. एहने वळी नवयोगे गुणतां २१६०० भांगा थाय, अग्यार बंधहेतुस्थानकथी यावत् १८ बंधहेतुना स्थानक सुधी नरकगति मार्गणामां कहेला बंधहेतुस्थानकें सर्वे विकल्पना भांगानी संख्या कही ते थकी देवगतिमां बे वेद होवाथी नरकना भांगाथी बमणा भांगा कहीजे एटले अग्यार बंधहेतुना चार विकल्पना मळी ६१८०० भांगा नारकीने कह्या ते थकी बमणा देवताने १२३६०० भांगा होय. तेमज बारहेतु स्थानकना आठ विकल्पना मळी बे वेदना ३२०४०० भांगा थाय, तथा तेरबंध हेतुस्थानकना आठ विकल्पना बे वेदे गुणतां ४९८४०० भांगा थाय. तथा १४ बंधहेतुस्थानकना आठ विकल्पने बे वेद साथे गुणतां ५०९६०० भांगा थाय. तथा पंदर बंधहेतुस्था-

नंकना आठविकल्पना वे भेदें गुणतां ३४७२००, तथा १६ बंधहेतुस्थानकना सात विकल्पना वे भेद साथे गुणतां १५२००० भांगा थाय. तथा १७ बंधहेतुस्थानकना चार विकल्पना ३८८०० भांगा वे भेद साथे गुणतां होय. तथा १८ बंधहेतुस्थानकना एकविकल्पना वे भेदें गुणतां ४४०० भांगा थाय. एवं सर्वे नव बंधहेतुस्थानकना ४८ विकल्पना मली २०१६००० भांगा मिथ्यात्वगुणठाणाना थाय.

सास्वादनगुणठाणें—पांचइंद्रियनी अविरतिमांथी अविरति एक, छकायमांथी एक कायानो वध, चार कषायमांथी अनंतानुबंधियादिक चार, पुरुषवेद अने स्त्रीवेदमांथी एकवेद, हास्यादि वे युगलमांथी एक युगलना बे, अने मनना चार, वचनना चार, वैक्रियमिश्र, वैक्रियकाययोग अने कार्मण ए अग्यार योगमांथी एक योग ए दशबंधहेतु एक समये जघन्य पदे होय तेना भांगा कहे छे–प्रथम पांच इंद्रियने छेकाया साथे गुणतां ३०, एने युगलना वे साथे गुणतां ६०, तेने चार कषायें गुणतां २४०, तेने वली वे वेदें गुणतां ४८०, तेने वली अग्यार योगे गुणतां ५२८० भांगा थाय ॥ १ ॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय समेतना अग्यार बंधहेतुनो स्थानक थाय तेना भांगा पूर्व रीते ५२८० थाय, तेमज कुत्सा समेत अग्यार बंधहेतु स्थानकना पण ५२८० भांगा थाय. तथा बेकायानो वध गणतां पण ११ बंधहेतुस्थानकना पंदरे संयोगीक भांगा साथे गुणतां १३२०० भांगा थाय. एवं त्रण विकल्पना मली २३७६० थया ॥ २ ॥ पूर्वोक्त दश मध्यें भय अने जुगुप्सा वे एक साथे गुणतां १२ बंधहेतुना ५२८० भांगा थाय. भय अने वे कायाना वधे १२ हेतुना भांगा १३२००, कुत्सा अने वे कायाना वधे भांगा १३२००, अने त्रणकायानो वध गणतां संयोगीक वीसना भांगा साथे गुणतां १७६०० भांगा थाय. एवं १२ बंधहेतुस्थानकें चार विकल्पना मली ४९२८० भांगा थाय ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त दशने भय जुगुप्सा अने वे कायाना वध साथे जोडतां १३ हेतुना १३२०० भांगा थाय, भय अने त्रणकायाना वधे पण १३ हेतुना भांगा १७६००, तेमज कुत्सा अने त्रणकायानो वध गणतां पण १३ हेतुनां भांगा १७६०० थाय, चारकायाना वध साथे पण १३ हेतुना १३२०० भांगा. एवं तेरबंधहेतुस्थानकें चार विकल्पना मली ६१६०० भांगा थया ॥ ४ ॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय जुगुप्सा अने त्रणकायानो वध गणतां १४ हेतु थाय तेना भांगा १७६०० थाय. तथा भय अने चारकाया समेत १४ हेतुना भांगा १३२००, अथवा कुत्सा अने चारकाया समेत १४ हेतुना भांगा १३२००. तथा पांच काया समेत १४ हेतुना भांगा ५२८० थाय, एवं चौद हेतुस्थानकें चार विकल्पना मली ४९२८० भांगा थाय ॥ ५ ॥ पूर्वोक्त दश मध्ये भय, कुत्सा अने चार कायानो वध गणतां १५ हेतु थाय तेना भांगा १३२०० थाय. तथा भय अने पांचकायानो वध गणतां ५२८०

हेतुना ६०० भांगा तथा त्रणकाया गणतां १३ हेतुना ८०० भांगा थाय. एवं चार विकल्पना मळी २२४० भांगा थाय. ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त ११ मां भय जुगुप्सा अने बेकाया समेत १४ हेतुना ६०० भांगा, तथा भय अने त्रणकायाना भांगा ८०० तेमज कुच्छा अने त्रणकायाना मळी १४ हेतुना पण ८०० भांगा, तथा चारकाया गणतां १४ हेतुना ६००, एवं चार विकल्पना मळी २८०० भांगा थाय ॥ ४ ॥ पूर्वोक्त ११ मध्ये भय, कुच्छा अने त्रणकाय समेत पंदर हेतुना ८०० भांगा, तथा भय अने चार काया समेत ६०० भांगा, तेमज कुच्छा अने चारकाया समेत पण ६०० भांगा. तथा पांच काया गणतां पण २४० भांगा. एवं १५ बंधहेतुना ४ विकल्पना मळी २२४० भांगा थाय ॥ ५ ॥ पूर्वोक्त ११ मां भय जुगुप्सा अने चारकाया समेत १६ हेतुना ६००, तथा भय अने पांच काया समेत १६ हेतुना २४०, अथवा कुच्छा अने पांच काया समेत १६ हेतुना २४०, तथा ६ काया समेत १६ हेतुना ४० भांगा एवं चार विकल्पना मळी ११२० भांगा थाय ॥ ६ ॥ पूर्वोक्त ११ मध्ये भय, कुच्छा अने पांच काय समेत १७ हेतुना भांगा २४०, तथा भय अने छ काया समेत १७ हेतुना ४०, कुच्छा अने छ काया समेत १७ हेतुना भांगा ४०, एवं त्रण विकल्पना मळी ३२० भांगा थाय ॥७॥ पूर्वोक्त ११ मध्ये भय तथा कुच्छा अने छ काया समेत १८ बंधहेतुस्थानकना ४० भांगा, एवं मिथ्यात्वगुणठाणें ८ बंधहेतुस्थानकें २४ विकल्पना मळी १००८० भांगा जाणवा ॥ ८ ॥ एकेंद्रिय अने वायुकाय मार्गणामां १००८० भांगा कह्या माटे ए भांगा मिथ्यात्वगुणठाणेज होवाथी वायुकाय मार्गणामां होय. तथा एकेंद्रिय मार्गणामां पण मिथ्यात्वगुणठाणें तो पहिल १००८० भांगा जाणवा. अने सास्वादन गुणठाणें पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए त्रणमां भवपरिणतें होय तिहां कार्मण काययोग अने औदारिकमिश्रकाययोगज होय. माटे एना आठस्थानक कहे छे–प्रथम इंद्रिय १, छ कायमांनो काया १, एक युगलनो २, नपुंसकवेद १, अनंतानुबंधिआदि क-षाय ४, बे योगमांनो योग १ एवं दशथी यावत् १७ मां स्थानक सुधी मिथ्यात्व गुणठाणा प्रमाणे गणतां आठस्थानकें २४ विकल्प थाय तेना भांगा कहे छे—दशना स्थानकें एक विकल्पना ९६ भांगा. अने चोवीश विकल्पना ४०३२ भांगा थाय. एवं मिथ्यात्वें एकेंद्रियना १००८० अने सास्वादनें एकेंद्रियना ४०३२ ए बे गुणठा-णाना मळी १४११२ भांगा जाणवा.

३ पृथ्वीकाय, अप्काय, अने वनस्पतिकाय ए त्रण मार्गणाए–मिथ्यात्व गुणठाणें औदारिक १, औदारिकमिश्र २, अने कार्मण ए त्रण योगने उद्योतक ४८ ना भांगानें त्रण गुणा करीने तेत्रणे अनंतानुबंधिना दशस्थानकना प्रथम विकल्पें १४४ भांगा थयानें हवणां १८ ना स्थानक सुधी पूर्वोक्त रीते चोवीश विकल्पना मळी १०४८ भांगा

होय अने सास्वादने ४८ नो अंक बे योग साथे गुणतां ९६ भांगा प्रथम विकल्पना
होय. ए प्रमाणे २४ विकल्पना मली ४०३२ भांगा थाय. एवं बे गुणठाणाना मली
१००८० भांगा जाणवा.

१ तेउकाय मार्गणाएं—एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं होवाथी पूर्वोक्त त्रण योगे गु-
णवाथी ऊपर प्रमाणे ६०४८ भांगा ऊपजे अहीं पण बंधहेतुस्थानक तो ११। १२।
१३। १४। १५। १६। १७। १८ ए आठना चोवीश विकल्पना मली ६०४८ भांगा थाय.

३ विकलेन्द्रिय मार्गणाएं—अणाभोगीकमिथ्यात्व १, बेइंद्रियनी अविरति २,
छेकायानी अविरति ६, (पुरुषवेद अने स्त्रीवेद ए बे वेद विना) कषाय २३,
औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्मण, अने असत्यामृषा एक ए चार योग एवं ३६
बंधहेतु मांहेना जघन्य पदे ११ बंधहेतु अने उत्कृष्टपणे १८ बंधहेतु एक जी-
वने एक समयमां होय. प्रथम मिथ्यात्व १, इंद्रिय १, छेकायमांनी काय १,
हास्यादि बेयुगलमांथी एक युगलनी बे, अनंतानुबंधियादि चार, वेद १, योग १,
एवं ११ प्रकृतिना स्थानके भांगा कहे छे–मिथ्यात्व १ बे इंद्रिये गुणतां २ थया, तेने
छे कायाये गुणतां १२, एने वली हास्यादि युगलथी बमणा करतां २४, तेने वली चार
क्रोधादि कषाये गुणतां ९६ थाय. तेने वली चार योग साथे गुणतां ३८४ भांगा ११
बंधहेतुस्थानकना थया ॥ १ ॥ पूर्वोक्त ११ हेतु मध्ये भय क्षेपतां १२ हेतुस्था-
नकना भांगा ३८४, तथा कुच्छा समेत १२ हेतुस्थानकना पण ३८४ भांगा थाय.
तथा बेकायाना वधे पण १२ हेतुना द्विकसंयोगीक १५ भेद साथे गणतां ९६०
भांगा थाय एवं त्रण विकल्पना मली १७२८ भांगा जाणवा ॥ २ ॥ पूर्वोक्त ११
मध्ये भय अने कुच्छा ए बे मेलतां १३ हेतुना ३८४, तथा भय अने बेकाया समेत
१३ हेतुना ९६०, तेमज कुच्छा अने बेकाया समेत १३ हेतुना पण ९६०, तथा त्रण
काया गणतां १३ हेतुना १२८०, एवं चार विकल्पना मली ३५८४ भांगा. जाणवा ॥३॥
पूर्वोक्त ११ मध्ये भय, कुच्छा अने देकाया गणतां १४ हेतुना ९६०, तथा भय
अने त्रण काया समेत १४ हेतुना १२८०, अथवा कुच्छा अने त्रण काया समेत
१४ हेतुना १२८० तथा चार काया गणतां १४ हेतुना ०६० भांगा एवं ४ विकल्पना
मली ४४८० भांगा जाणवा ॥ ४ ॥ पूर्वोक्त ११ मध्ये भय, कुच्छा अने त्रण काय
समेत १५ हेतुना १२८०, तथा भय अने चार काया गणतां १५ हेतुना ०६०, अथवा
कुच्छा अने चार काया गणतां पंदरहेतुना ९६०, तथा ५ काया गणतां १५ हेतुना
३८४ भांगा, एवं चार विकल्पनां मली ३५८४ भांगा जाणवा ॥ ५ ॥ पूर्वोक्त ११
मध्ये भय कुच्छा अने चार काया समेत ९६० भांगा, तथा एक भय अने पांच काया

समेत १६ हेतुना ३८४, तथा कुच्छा अने पांच काया समेत १६ हेतुना ३८४, अने छे काया गणतां १६ हेतुना ६४ एवं चार विकल्पना मली १७९२ भांगा जाणवा. ॥ ६ ॥ पूर्वोक्त ११ मध्ये भय, कुच्छा अने पांच काया समेत १७ हेतुना ३८४ भांगा, तथा भय अने छे कायाना वध समेत १७ हेतुना ६४ भांगा, तथा कुच्छा अने छे कायाना वध समेत १७ हेतुना ६४ भांगा. एवं त्रण विकल्पना मली ५१२ भांगा जाणवा. ॥ ७ ॥ पूर्वोक्त ११ हेतु मध्ये भय, कुच्छा, अने छे कायानो वध गणतां १८ बंधहेतुनो स्थानक थाय तेना भांगा ६४, एवी रीते मिथ्यात्वगुणठाणें ८ स्थानकें चोवीशविकल्पना मली १६१२८ भांगा होय ॥ ८ ॥

शास्वादनगुणठाणें–मिथ्यात्व नथी माटे जघन्य १० हेतुथी यावत् १७ हेतुपीना आठस्थानक जाणवा. अने मिथ्यात्वगुणठाणा प्रमाणे चोवीशविकल्प जाणवा परंतु एटलुं विशेष छे के ए शास्वादनगुणठाणुं बेइंद्रियमांकरण अपर्याप्ताने होय. अने पर्याप्ता मध्ये तो मिथ्यात्वज होय. माटे तिहां शास्वादनें बेइंद्रियने औदारिकमिश्र, अने कार्मण ए बेज योग होय. अने मिथ्यात्वें चारयोग होवाथी १६१२८ भांगा उपजे. अने अहीं शास्वादनमां बे योगना ते थकी अर्धा ८०६४ भांगा २४ विकल्पना पूर्वोक्त रीते धारवा. एवी रीते बे गुणठाणाना मली २४१९२ भांगा थाय छे अने तेइंद्रियने पण मिथ्यात्व अने शास्वादन ए बे गुणठाणा होय. तिहां मिथ्यात्वगुणठाणें बेइंद्रिय प्रमाणें ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ ए आठ बंधहेतुस्थानक होय. अने एमना चोवीश विकल्पना भांगा बेइंद्रियने एकमिथ्यात्व तेना आंक साथे गुणतां यावत् ११ ना विकल्पना सर्वे ३८४ भांगा कह्या अने अहीं तो तेइंद्रियनी त्रण इंद्रियना आंक साथे एक मिथ्यात्वादिक गुणीजे तेवारे अग्यार बंधहेतुस्थानकना पूर्वोक्त बेइंद्रियना ३८४ भांगाने ड्योढा करतां ५७६ भांगा लीजे तेमज बारना हेतुना बेइंद्रियमे १७२८ कह्या अने अहीं ड्योढा गणतां २५९२ भांगा थाय. एवं आठे बंध हेतुना २४ विकल्पना १६१२८ भांगा थया ते अहीं त्रण इंद्रिय भणी ड्योढा कीजे एटले सर्वे २४१९२ भांगा, तेइंद्रियने मिथ्यात्वगुणठाणें थाय. अने शास्वादनें बेइंद्रियना प्रमाणे एमने पण बेज योग होवाथी एना २४१९२ आंकने अर्धा करतां १२०९६ भांगा पूर्वोक्त प्रमाणे होय एवं बे गुणठाणाना मली ३६२८८ भांगा थाय. तेमज चतुरिंद्रियने बेइंद्रिय थकी इंद्रियो बमणी होवाथी भांगा पण बेगुणठाणा ना बमणां गणतां सर्वे विकल्पना मली ४८३८४ भांगा बेइंद्रियमां गणी लीधा ते प्रमाणे चार इंद्रिय साथे लेखवतां थाय छे.

२ मनोयोग अने वचनयोग ए बे मार्गणाए–ओघें १३ गुणठाणा होय परंतु एटलुं विशेष छे के ओघें तो यथायोग्यपणें योग तो सर्व गण्या अने आ बे मार्गणा मध्यें मि-

थ्यात्व सास्वादन अने अविरति ए त्रण गुणठाणामध्ये कार्मण अने औदारिकमिश्र ए बे योग ओछा गणीजे, मिथ्यात्वे १०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८ ए नव बंधहेतुस्थानक होय तेमां १० बंधहेतुस्थानकनो १ विकल्प, ११ बंधहेतु स्थानकना ४ विकल्प, १२ बंधहेतुथानकना ७ विकल्प, १३ बंध हेतुस्थानकना ८ विकल्प, १४ बंधहेतुस्थानकना ८ विकल्प, १५ बंधहेतुस्थानकना ८ विकल्प, १६ बंधहेतुस्थानकना ७ विकल्प, १७ बंधहेतुस्थानकना ४ विकल्प, १८ बंधहेतुस्थानकनो १ विकल्प एवं नव बंधहेतुस्थानकना मली ४८ विकल्प थाय तेना भांगा कहे छे-दसनास्थानकें—एकज विकल्पना भांगा ३९६०० ॥ १ ॥ अग्यारना स्थानकें प्रथम विकल्पना अग्यार योगे गुणतां ३९६००, बीजाविकल्पना पण ३९६००, त्रीजा-विकल्पना ३९६००, चोथा विकल्पना ९९०००, एवं चार विकल्पना २१७८०० होय ॥ २ ॥ बारहेतुस्थानकें-प्रथमविकल्पना ३९६००, बीजाविकल्पना ९९०००, त्रीजाविकल्पना ९९०००, चोथाविकल्पना १३२०००, पांचमांना ३९६००, छट्ठाविकल्पना ३९६००, सातमांविकल्पना ९९००० एवं सातविकल्पना ५४७८०० भांगा जाणवा ॥ ३ ॥ तेरहेतुस्थानकें-प्रथमविकल्पना ९९०००, बीजाविकल्पना १३२०००, त्रीजाविकल्पना १३२०००, चोथाविकल्पना ३९६००, पांचमांविकल्पना ९९०००, छट्ठाविकल्पना ९९०००, सातमांविकल्पना १३२०००, आठमांविकल्पना ९९००० एवं आठ विकल्पना मली ८३१६०० भांगा थाय ॥ ४ ॥ चौदहेतुस्थानकें-प्रथमविकल्पना १३२०००, बीजाविकल्पना ९९०००, त्रीजाविकल्पना ९९०००, चोथाविकल्पना ३९६००, पांचमांविकल्पना ९९०००, छट्ठाविकल्पना १३२०००, सातमांना १३२०००, आठमांना ९९००० एवं आठविकल्पना ८३१६०० होय ॥ ५ ॥ पंदरहेतुस्थानकें-प्रथमविकल्पना ९९०००, बीजाविकल्पना ३९६००, त्रीजाविकल्पना ३९६००, चोथाविकल्पना ६६००, पांचमांविकल्पना १३२०००, छट्ठाना ९९०००, सातमांना ९९०००, आठमांविकल्पना ३९६०० एवं आठविकल्पना ५५४४०० होय ॥ ६ ॥ शोलहेतुस्थानकें-प्रथमविकल्पना ३९६००, बीजाविकल्पना ६६००, त्रीजा विकल्पना ६६००, चोथाविकल्पना ९९०००, पांचमांविकल्पना ३९६००, छट्ठाविकल्पना ३९६००, सातमांविकल्पना ६६००, एवं सातविकल्पना २३७६०० होय ॥७॥ सत्तर हेतुस्थानकें-प्रथमविकल्पना ६६००, बीजाविकल्पना ३९६००, त्रीजाविकल्पना ६६००, चोथाविकल्पना ६६००, एवं चारविकल्पना मली ५९४०० भांगा होय॥८॥ अढार हेतुस्थानकें—प्रथम विकल्पना ६६०० भांगा जाणवा ॥ ९ ॥

एवी रीते दश हेतुना ३९६००, अग्यार हेतुना २१७८००, बार हेतुना ५४७८००, तेर हेतुना ८३१६००, चौदहेतुना ८३१६००, पंदर हेतुना ५५४४००,

एवं चार बंधहेतुस्थानकें चार विकल्पना मली ८९६०० भांगा होय ॥ ४ ॥ पूर्वोक्त नवमध्ये भय तथा जुगुप्सा अने त्रण कायानो वध मेलिये तेवारे तेर हेतुना २५६०० थाय, तथा भय अने चार काया गणतां १९२०० भांगा, तेमज जुगुप्सा अने चार काया गणवाथी १९२०० भांगा थाय, तथा नव मध्ये पांच काया गणवाथी पण ७६८०, एवं तेर बंधहेतु स्थानकें चारेविकल्पना मलीने ७१६८० भांगा होय ॥ ५ ॥ पूर्वोक्त नवमध्यें भय अने जुगुप्सा तथा चार कायानो वध मेलिये तेवारे १४ बंधहेतुना भांगा १९२०० थाय, तथा भय अने पांच काया गणवाथी भांगा ७६८०, तेमज जुगुप्सा अने पांच कायानो वध गणतां पण ७६८० भांगा होय अने पूर्वोक्त नव मध्ये छ कायानो वध मेलवतां भांगा १२८० थाय एवंचार विकल्पना मली १४ बंध हेतुस्थानकना ३५८४० भांगा होय ॥ ६ ॥ पूर्वोक्त नवमध्यें भय जुगुप्सा अने पांच काया मेलवाथी १५ हेतु स्थानकना ७६८०, तथा एक भय अने छे काया गणतां १२८०, तेमज जुगुप्सा साथे पण छे कायानो वध गणतां १२८०, एवं त्रण विकल्पना मली १०२४० भांगा होय ॥ ७ ॥ पूर्वोक्त नवमध्ये भय जुगुप्सा अने छे कायानो वध गणतां १६ बंधहेतुना भांगा १२८० होय ॥ ८ ॥ एवी रीते आठ बंधहेतुस्थानकें २४ विकल्पना मली ३२२५६० भांगा जाणवा. एवं चार गुणठाणें ऊपर प्रमाणे भांगा ४२८४००० होय.

देशविरतियें–१६३६८०, प्रमत्ते–११८४, अप्रमत्ते १०२४, अपूर्वकरणें ८६४, अनिवृत्ति बादर गुणठाणें १४४, सूक्ष्मसंपरायें ९, उपशांतमोहें ९, क्षीणमोहें ९, सयोगीगुणठाणें ७, ए नव गुणठाणें मली ओगे कह्या प्रमाणे १६६९३० भांगा होय, एवं तेर गुणठाणाना सर्वे मली ४४५०९३० भांगा होय.

१ पुरुषवेद मार्गणायें—ओगें कह्या प्रमाणें मिथ्यात्व गुणठाणें नव बंधहेतुस्थानकें ४८ विकल्पना त्रण वेद साथे गुणतां ३४७७६०० भांगा उपजे अने अहीं एकज पुरुषवेद मार्गणा एक एक स्थानकें ओगें कह्या ते थकी त्रीजा भागनो अंक लीजे एटले दशबंधहेतुस्थानकना एकवेद साथे गुणतां १२०००, अग्यार बंध हेतुस्थानकना एक वेद साथे गुणतां ६०६००, बारबंध हेतुस्थानकना १८०२००, तेर बंधहेतुस्थानकना २८९६००, चौद बंधहेतुस्थानकना २९४०००, पंदर बंधहेतु स्थानकना २०१६००, सोल बंधहेतु स्थानकना ८८८००, सत्तर बंधहेतुस्थानकना २१८००, अढार बंधहेतु स्थानकना २६०० एवं नव बंधहेतुस्थानकें ४८ विकल्पना एकज पुरुषवेद साथे गुणतां मिथ्यात्वगुणठाणें ११५०२०० भांगा जाणवा.

सास्वादन गुणठाणें—पांचमिथ्यात्व अने आहारकना बे एवं ७ विना ५० बंधहे

होय. तेमां जघन्य एक समये दशथी सघर सुधीना आठ बंधहेतुना स्थानक होय ते
दशनुं स्थानकादि सर्व ओघे प्रमाणे जाणवुं. आटलुं विशेष छे के एकज पुरुषवेदना भांगा
गणवा. दशबंध हेतुस्थानकें-प्रथम छेकाया अने पांचईंद्रिय साथे गुणीजे त्यारे ३० थाय,
तेने हास्यादि युगल्ना बे साथे गुणतां ६० थाय, तेने चारकषाय साथे गुणतां २४०,
तेने तेर योग साथे गुणतां ३१२० भांगा होय ॥ १ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय गणतां
११ हेतुनां ३१२० भांगा थाय, तेमज जुगुप्सा समेत अग्यार हेतुना ३१२० थाय, तथा
बेकाया गणतां अग्यार हेतुना ७८०० एवं त्रण विकल्पना मली १४०४० भांगा
होय ॥ २ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय अने कुच्छा ए बे गणतां १२ हेतुना ३१२० थाय,
तथा भय अने बेकाया गणवाथी ७८००, तेमज जुगुप्सा अने बेकायायें ७८००,
एने त्रणकायानो वध गणतां १०४००, एवं चार विकल्पना मली २०१२० भांगा
होय ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय, कुच्छा अने बे काया गणतां १३ हेतुना ७८००,
तथा भय अने त्रणकाया समेत १०४००, तेमज कुच्छा अने त्रणकाया समेत
१०४००, तथा चार कायायें गणतां ७८०० एवं चारविकल्पना मली ३६४००
भांगा होय ॥ ४ ॥ पुर्वोक्त दशमध्ये भय, कुच्छा अने त्रणकाया गणतां १४ हेतुना
१०४०० थाय, तथा भय अने चार काया गणतां १४ हेतुना ७८००, तेमज कुच्छा
अने चार कायाना ७८००, तथा पांच काया गणतां १४ हेतुना ३१२० एवं चार
विकल्पना २०१२० भांगा होय ॥ ५ ॥ पूर्वोक्त दशमध्यें भय, जुगुप्सा अने चार
काया गणतां १५ हेतुना ७८००, तथा भय अने पांच कायायें १५ हेतुना ३१२०,
तेमज कुच्छा अने पांच कायाना ३१२०, तथा छेकाया गणतां १५ हेतुनां ५२०
एवं चार विकल्पना मली १४५६० भांगा होय ॥ ६ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय, जुगु-
प्सा अने पांच काया समेत १६ हेतुना ३१२०, तथा भय अने छेकाया गणतां १६
हेतुना ५२०, तेमज कुच्छा अने छे काया गणतां पण ५२० एवं त्रण विकल्पना मली
४१६० भांगा होय ॥ ७ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय, जुगुप्सा अने छेकायानो वध
गणवाथी १७ हेतुना ५२० भांगा होय ॥ ८ ॥ एवं आठबंधहेतुस्थानकें २४ विक-
ल्पना मली १३१०४० भांगा जाणवा.

मिश्रे—आठ हेतुस्थानकें २४ विकल्पना ओघे कह्या प्रमाणे एकवेदना १००८००,
अविरति सम्यग्दृष्टिगुणठाणे-मिश्र गुणठाणा प्रमाणे ९ । १० । ११ । १२ । १३ ।
१४ । १५ । १६ ए आठस्थानक होय तिहां चोवीश विकल्पना भांगा ऊपर सास्वा-
दनगुणठाणे कह्या ते प्रमाणे १३१०४० भांगा अहीं पण जाणवा.

पांचमागुणठाणे—आठना स्थानकें २२००, नवना ८८००, दशना १५४००,
अग्यारना १५४००, बारना ९२४०, तेरना ३०८०, अने चौद हेतुना भांगा ४४०,

एवं साते स्थानकना मली ओघे त्रणवेदना एकठा कया ते थकी अहीं एकज पुरुषवेद होवाथी एक एक स्थानकें त्रीजा भागना भांगा होय छे माटे सात बंधहेतुना स्थानकें ओघें त्रणवेदना मली १६३६८० भांगा कया तेना त्रीजा भागना ५४५६० भांगा होय छे.

छठ्ठेगुणठाणें—ओघें कह्या प्रमाणें जघन्य पांच हेतु अने उत्कृष्ट सातहेतुना स्थानक गणतां त्रणस्थानकें चार विकल्पना मली एकज पुरुषवेदना पांचना स्थानकें एकविकल्पना १०४, तथा छना स्थानकें बे विकल्पना २०८, अने सातना स्थानकें एक विकल्पना १०४ एवं सर्वे मली ४१६ भांगा होय.

सातमां गुणठाणें—पण तेहिज त्रण हेतुस्थानकना चारविकल्पना एकज पुरुषवेदे भांगा करे छे-तिहां पांचबंधहेतुना स्थानकें ८८, तथा छना स्थानकें बे विकल्पना १७६, अने सातना स्थानकें-एक विकल्पना ८८ एवं चार विकल्पना ३५२ भांगा होय

आठमांगुणठाणें चारे विकल्पना त्रणवेदना मली ओघे ८६४ भांगा कह्या अने अहीं तो एकज पुरुषवेद होवाथी पूर्वोक्त ८६४ ना त्रण भाग करवाथी एक भागना २८८ भांगा आवे ते अहीं पुरुषवेदमां २८८ जाणवा.

नवमांगुणठाणें-पण त्रण वेदना उदय थकी बेविकल्पना १४४ भांगा होय ते मांहेथी त्रणवेदसंबंधी १०८ भांगा त्रणवेद साथे गण्या ते अहीं एकज वेदनो उदय होवाथी ३६ भांगा थाय एवी रीते-प्रथम गुणठाणें ११५९२००, बीजें गु० ३३१०४०, त्रीजे गु० १००८००, चोथे गु० १३१०४०, पांचमें गु० ५४५६०, छठ्ठे गु० ४१६, सातमें गु० ३५२, आठमें गु० २८८, नवमे गु० ३६ एवं नवगुणठाणाना मली १७७७१३२ भांगा जाणवा.

१ स्त्रीवेद मार्गणाए-मिथ्यात्वगुणठाणें-पुरुषवेदमां कह्या प्रमाणे ११५९२००, सास्वादनें-पुरुषवेदमां कह्या प्रमाणें ३३१०४०, मिश्रे-पण पुरुषवेदमां कह्या प्रमाणें १००८०० भांगा जाणवा. अविरतियें पुरुषवेदने तेरयोग साथे गणी भांगा गुणवाथी १३१०४० भांगा कह्या अने स्त्रीवेदने औदारिकमिश्र १, वैक्रियमिश्र १, अने कार्मण १, ए त्रण योग चोथे गुणठाणें न होवाथी १३१०४० ना आंकने तेरनो भाग दई दशगुणा करीये त्यारे १००८०० भांगा थाय. देशविरतियें-पुरुषवेद प्रमाणें ५४५६० भांगा जाणवा. प्रमत्तें-पुरुषवेदने तो तेरयोगें गुणवाथी ४१६ भांगा होय, अने स्त्रीवेदे आहारकद्विकनो उदय न होवाथी आहारकना बे योग विना ११ योग साथे गुणवाथी ३५२ होय. अप्रमत्तें-पुरुषवेदने औदारिकमिश्र, वैक्रियमिश्र, आहारकमिश्र, अने कार्मण ए ४ योग विना ११ योग गणवाथी ३५२ भांगा कह्या. अने स्त्रीवेदने तो आहारक काय अने आहारकमिश्रयोग ए २ विना बाकी दशयोग होवाथी

चारे विकल्पना मली ३२० भांगा होय. अपूर्वकरणें-पुरुषवेद प्रमाणें २८८ भांगा, अने अनिवृत्तिबादरें पुरुषवेद प्रमाणे ३६ भांगा होय. एवं नवगुणठाणाना मली १५४७१९६ भांगा जाणवा.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—मिथ्यात्वें पुरुषवेद प्रमाणें ११५९२०० भांगा होय. सास्वादनें ओघें आठबंध हेतुस्थानकें-प्रथमस्थानकना २८८०, द्वितीयना १२९६०, तृतीयना २६८८०, चतुर्थना ३३६००, पंचमना २६८८०, षष्टना १३४४०, सप्तमना ३८४०, अष्टमना ४८०, एवं सर्व मली १२००९० भांगा होय, मिश्रें-पुरुषवेद प्रमाणें १०८००० भांगा होय, अविरतिगुणठाणें-पुरुषवेदमां १३ योग साथे गणवाथी १३१०४० भांगा थया, अने अहीं ए गुणठाणें वर्त्तमान नपुंसकवेदने औदारिकमिश्र-योग न होवाथी बार योगनांज भांगा होय छे माटे १३१०४० ना आंकने तेरना आंकथी भाग दीजे त्यारे १००८० नो आंक आवे एने बारथी गुणा करियें त्यारे १२०९६० भांगा होय, देशविरतियें-पुरुषवेद प्रमाणें ९४५६० भांगा होय, प्रमत्तें-पुरुषवेद प्रमाणें ४१६, अप्रमत्तें-पुरुषवेद प्रमाणें ३५२, अपूर्वकरणें-पुरुषवेदप्रमाणें २८८, तेमज अनिवृत्तिकरणें ३६ एवं नवगुणठाणाना सर्व मली १५५७०७२ भांगा जाणवा.

१ क्रोध मार्गणाएं—मानादिक त्रण कषायनो उदय न होवाथी ओघें जे जे बंध-हेतुस्थानकें भांगा कह्या छे ते थकी एक कषायना उदय भणी चोथा भागमां आवे तेटला भांगा जाणवा. एटले ओघें नवगुणठाणें ४६८२७३६ भांगा कह्या तेना चोथा भागना ११७०६८४ भांगा होय.

१ मान मार्गणाएं—पण ओघेना आंकथी चोथा भागे ११७०६८४ भांगा होय.

१ माया मार्गणाएं—पण ओघेयकी चोथा भागना ११७०६८४ भांगा होय.

१ लोभ मार्गणाएं-प्रथमना नवगुणठाणा सुधी तो ओघेना भांगाने चोथा भागथी मांगा लीजे. अने दशमां सूक्ष्मसंपरायना नवभांगा अधिक होय. एटले ११७०६८४ मध्ये नव क्षेपनां ११७०६९३ भांगा होय.

४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन ए चार मार्गणाएं-अविरति सम्यक्दृष्टि गुणठाणें-३५२८००, देशविरति गुणठाणें-१६३६८०, प्रमत्त गुणठाणें-११८४, अप्रमत्त गुणठाणें-१०२४, अपूर्वकरणगुणठाणें-८६४, अनिवृत्तिबादरगुणठाणें १४४, सूक्ष्मसंपरायें-९, उपशांतमोहगुणठाणें-०, अने क्षीणमोहगुणठाणें-०, एवं नव गुणठाणाना सर्व मली ५१०७२१ भांगा जाणवा.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—चोथो, पांचमो, छट्ठो, अने सातमो ए चार गुणठा-णाने विषे ओघें कह्या ते प्रमाणें ५१८६८८ भांगा जाणवा.

१ क्षायिक सम्यक्त्व मार्गणाएं—चोथा अविरतिसम्यक्दृष्टि गुणठाणाथी तेरमां सयोगीकेवली गुणठाणा सुधीना ओघे कह्या ते प्रमाणे ५१९७३० भांगा होय.

३ त्रणअज्ञान मार्गणाएं—प्रथमना त्रण गुणठाणाने विषे ओघे कह्या ते प्रमाणे ४१६३०४० भांगा होय.

१ अविरति मार्गणाएं—प्रथमना चार गुणठाणाने विषे ओघे कह्या ते प्रमाणे ४५१५८४० भांगा होय.

१ अभव्य मार्गणाएं—एक मिथ्यात्वगुणठाणो होवाथी मिथ्यात्वगुणठाणें ओघें ३४७७६०० भांगा कह्या ते थकी अनंतानुबंधिना उदयनी नियमा छे माटे अनंतानुबंधिउदय विना दशना हेतुस्थानकें-प्रथमविकल्पना ३६०००, तथा अग्यारहेतुस्थानकें-प्रथम विकल्पना ३६०००, द्वितीय विकल्पना ३६०००, तृतीय विकल्पना ९००००, बारहेतुस्थानकें-प्रथम विकल्पना ३६०००, बीजा विकल्पना ९००००, त्रीजाना ९००००, चोथाना १२००००, तेर बंधहेतुस्थानकें-प्रथम विकल्पना ९००००, बीजा विकल्पना १२००००, त्रीजा विकल्पना १२००००, चोथा विकल्पना ९००००, चौदहेतुस्थानकें-प्रथम विकल्पना १२००००, बीजा विकल्पना ९००००, त्रीजा विकल्पना ९००००, चोथा विकल्पना ३६०००, पंदर बंधहेतुस्थानकें-प्रथम विकल्पना ९००००, बीजा विकल्पना ३६०००, त्रीजा विकल्पना ३६०००, चोथा विकल्पना ६०००, शोल बंधहेतुस्थानकें-प्रथम विकल्पें ३६०००, बीजा विकल्पना ६०००, त्रीजा विकल्पना ६०००, अने सत्तरबंधहेतुस्थानकें-एकज विकल्पना ६०००, एवं आठ बंधहेतुस्थानकें चोवीश विकल्पना मली सर्वे भांगा १५१२०००, पूर्वोक्त ३४७७६०० मां बाद करतां बाकी ११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८ ए आठ बंधहेतुस्थानकना चोवीश विकल्पना मली १९६५६०० भांगा होय.

१ मिथ्यात्व मार्गणाएं—ओघें कह्या प्रमाणे १०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८ ए नव बंधहेतुस्थानकें ४८ विकल्पना मली ३४७७६०० भांगा होय.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं—छट्ठा गुणठाणाथी यावत् बारमां सुधीना ओघें कह्या ते प्रमाणे ३२४३ भांगा होय.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं—प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति बादर ए चार गुणठाणें ओघें कह्या ते प्रमाणे ३२१६ भांगा होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं—सत्यमनोयोग, व्यवहारमनोयोग, सत्यवचनयोग, व्यवहारवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, अने कार्मणकाययोग ए सात योगना सात भांगा होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं–स्त्रीवेद आहारकद्विक तथा वैक्रियद्विकनो उदय न होवाथी वेद बे होय, अने मनना चार, वचनना चार, औदारिक एक, एवं ९ योग होय, तेथी बे वेदने हास्यादि युगल साथे गुणतां ४ थाय, तेने चार कषाय साथे गुणतां १६, तेने नवयोग साथे गुणतां १४४ भांगा छट्टे गुणठाणे अने १४४ भांगा सातमे गुणठाणे एवं २८८ भांगा होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–दशमां गुणठाणे कह्या ते प्रमाणे ९ भांगा होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—अग्यारना ९, बारना ९, अने तेरना ७, एवं २५.

१ देशविरति मार्गणाएं–पांचमां गुणठाणे कह्या ते प्रमाणे १६३६८० भांगा होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं–जघन्यें एकसमयें मिथ्यात्व१, छेकायामांनी एक कायानी अत्रतना १, पांच इंद्रियमांथी इंद्रियनो आश्रव १, हास्यादि बेयुगलमांथी एक युगल- नी बे, अप्रत्याख्यानादि त्रण कषाय, त्रण वेदमांथी वेदएक, मनना चार, वचनना चार, औदारिकएक, वैक्रियएक ए दश योग अनंतानुबंधियाना उदय विना ओगे कह्या. परंतु आ मार्गणामां वैक्रियमिश्रयोग गणीने अग्यारयोग अनंतानुबंधियाना उदय विना तथा उदयपणे पण कह्या ते लब्धिप्रत्ययी वैक्रियमिश्रयोग गणीने परंतु भ- वप्रत्ययी वैक्रियमिश्रयोग न लेवो. एवं उपरोक्त अग्यारयोगमांथी योग १, ए दश नुं जघन्य अने १८ बंधहेतुनो उत्कृष्ट स्थानक होय.

दशहेतुना एक विकल्पना ३०६००, अग्यारहेतुना चार विकल्पना २१७८००, बारहेतुना सात विकल्पना ५४७८००, तेर हेतुना आठ विकल्पना ८३१६००, चौद हेतुना आठ विकल्पना ८३१६००, पंदर बंधहेतुना आठ विकल्पना ५५४४००, शोळ बंधहेतुना सात विकल्पना २३७६००, सत्तर बंधहेतुस्थानकना चार विकल्पना ५९४००, अढार बंधहेतुना एकज विकल्पना ६६०० एवं नव बंधहेतुस्थानकें–४८ विकल्पना मळी ३३२६४०० भांगा मिथ्यात्वें होय.

सास्वादनें–पण ३ वेद अने अग्यारयोगने गुणीजे अहीं नपुंसकवेदीने वैक्रियमिश्र योगनो कह्यो परंतु ए वात तो नारकीना जीवने सास्वादनी पणे ए योग भवप्रत्ययी न होय, मनुष्य अने तिर्यचने लब्धिप्रत्ययी वैक्रियमिश्रयोग गणियो छे माटे अनंता- नुबंधिनो उदय अवश्य होवाथी जघन्य दश बंधहेतु अने उत्कृष्टा १७ बंधहेतु सुधीना आठ स्थानक अने २४ विकल्प होय. तेना भांगा कहे छे–दश बंधहेतुना–एक विकल्पना ७९२०, अग्यार बंधहेतुना–त्रण विकल्पना ३५६४०, बार बंधहेतुना–चार विकल्पना ७३९२०, तेर बंधहेतुना–चार विकल्पना ९२४००, चौद बंधहेतुना–चार विकल्पना ७३९२०, पंदर बंधहेतुना–चार विकल्पना ३६९६०, शोळ बंधहेतुना–त्रण विकल्पना

१०५६०, सत्तर बंधहेतुना-एक विकल्पना १३२०, एवं आठ बंधहेतुस्थानकें चोवीश विकल्पना मली ३३२६४० भांगा जाणवा.

मिश्रगुणठाणें ओघे नवथी यावत् शोलसुधीना आठ स्थानकें दशयोगे गुणतां ३०२४०० कह्या ते अहीं लब्धिप्रत्ययी वैक्रियमिश्रयोग वधारे गण्यो तेथी अग्यार योगना भांगा कहेवा, एटले ऊपरना ३०२४००ना अंकने दशनो भाग देवाथी ३०२४० ना अंक रहे तेने अग्यारयोगना आंकमाये गुणीजे तेवारे ३३२६४० भांगा होय.

अविरतिसम्यक्दृष्टि गुणठाणें-ओघें कह्या ते प्रमाणे ९ बंधहेतुथी यावत् १६ बंधहेतुसुधीना ८ स्थानक अने चोवीश विकल्प होय छे. हवे ए गुणठाणें भांगा उपजे तिके कहे छे-अहीं पण उपरोक्त वैक्रियमिश्रयोग लब्धिप्रत्ययी ग्रहण करतां अग्यार योग लेवा. नव बंधहेतुना एक विकल्पना ७०२०, दश बंधहेतुना-त्रण विकल्पना ३५६४० अग्यार बंधहेतुना-चार विकल्पना ७३०२०, बार हेतुना-चार विकल्पना ९२४०० तेर हेतुना-चार विकल्पना ७३०२०, चौद बंधहेतुना-चार विकल्पना ३६०६०, पंदर बंधहेतुना-त्रण विकल्पना १०५६०, शोल बंधहेतुना-एक विकल्पना १३२० एवं आठ बंधहेतुस्थानकें चोवीश विकल्पना मली ३३२६४० भांगा होय.

पांचमांथी यावत् बारमां गुणठाणा सुधीना आठ गुणठाणाने विषे बंधहेतुना स्थानक तथा तेना विकल्प अने भांगा विगेरे सर्व ओघे कह्या प्रमाणे जाणवा. एटले पांचमे गुणठाणें-सातस्थानक अने वीशविकल्पना भांगा १६३६८०, छट्ठे-त्रणस्थानकना चार विकल्पना भांगा ११८४, सातमें-त्रणस्थानकना चार विकल्पना भांगा १०२४, आठमें-त्रण स्थानकना चार विकल्पना भांगा ८६४, नवमें-बे बंधहेतुस्थानकना बे विकल्पना भांगा १४४, दशमें-एक बंधहेतुस्थानक अने एक विकल्पना भांगा ९, अग्यारमें-एक बंधहेतुस्थानक अने एकज विकल्पना भांगा ९, बारमें-एक बंधहेतुस्थानक अने एकज विकल्पना भांगा ९, एवी रीते बार गुणठाणांना १ । २ । ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ ए सत्तर बंधहेतुस्थानकें १५७ विकल्पना सर्वे मली ४५०१२४३ भांगा जाणवा.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं-प्रथमना छे गुणठाणा सुधी बंधहेतु, तथा विकल्प अने भांगा वगेरे ओघप्रमाणे गणीजे तेवारे ४६८०७०४ होय.

२ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्या ए बे मार्गणाएं-प्रथमना सात गुणठाणें ओघे कह्या ते प्रमाणें ४६८१७२८ भांगा होय.

१ उपशमभार्गणाएं—चोथा गुणठाणाना भांगा तेरयोग साथे गणवाथी ३९२८००*

* उपशमिकने औदारिकमिश्रयोग संभवतो नथी पण बहुश्रुत कहे ते खरं ।

अने पांचमां गुणठाणाना अग्यारयोग साथे गुणवाथी भांगां १६३६८० उपजे, तथा
छट्ठे गुणठाणे ओघे तेरयोग गणवाथी ११८४ भांगा कह्या. अने अहीं आहारकना
बेयोग नथी माटे अग्यारयोग त्रण वेद साथे गुणतां ३३, तेने हास्यादि युगलंना बे
साथे गणतां ६६, तेने वली चारकषायें गुणतां २६४ भांगा एक विकल्पना उपजे
एम छट्ठा गुणठाणाना चार विकल्पना मली १०५६ भांगा उपजे, तथा सातमे
गुणठाणें मनना चार, वचनना चार, अने औदारिककाययोग १, तथा वैक्रिय-
काययोग १, ए दस योग साथे त्रणवेद गुणतां ३०, तेने हास्यादि युगल साथे
गुणतां ६०, तेने वली चार कषाय साथे गुणतां २४० ए एक विकल्पना थाय.
तेमज चार विकल्पना मली ९६० भांगा उपजे. तथा आठमे गुणठाणे-ओघे २१६
भांगा एक विकल्पना थाय, तेमज चार विकल्पना मली ८६४ भांगा थाय. नवमे गुण-
ठाणे-पण ओघे १४४ भांगा उपजे. तथा दसमें अने अग्यारमें गुणठाणे-प्रत्येके नव
नव भांगा उपजे एवं सर्व मली ५१०५२२ भांगा जाणवा. अने मतांतरे-छट्ठे गुणठाणें
मनना चार, वचनना चार, अने औदारिककाययोग ए नव योग लेखवतां ८६४
भांगा उपजे. तेमज सातमे गुणठाणे-पण नवयोगना ८६४ भांगा उपजे. ए रीते गणतां
५१०२३४ भांगा जाणवा.

१ मिश्र मार्गणाएं-मिश्रगुणठाणें ओघे कह्या प्रमाणे ८ बंधहेतुस्थानकना चोवीश
विकल्पना १०७४०० भांगा होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं-ओघे सास्वादनगुणठाणें कह्या ते प्रमाणे आठे बंधहेतुना
चोवीश विकल्पना सर्व मली १८३०४० भांगा होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं-अणाभोगीक एकज मिथ्यात्व, छकायमांनो एक कायानो
वध, पांच इंद्रियमांथी एक इंद्रिय, हास्यादि युगलमांथी एक युगलनो बे, अनंतानुबंधियादि
चार कषाय, एकज नपुंसकवेद, 'औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रिय, वैक्रियमिश्र, कार्मण,
असत्यमृषावचनयोग ए छ योगमांथी' योग १. ए जघन्यपणे एकसमयें ११ बंधहेतुनो
उदय होय. अने उत्कृष्टा १८ हेतुनो उदय होय माटे अग्यारना हेतुथी यावत् अढा-
रना हेतुसुधी गणतां ८ स्थानक थाय, तेना २४ विकल्प थाय तेना भांगा करे छे-
एक अणाभोगीक मिथ्यात्व छकाया साथे गुणतां ६ थाय, तेने पांच इंद्रिय साथे
गुणतां ३० थाय, तेने हास्यादि युगल साथे गुणतां ६० थाय, तेने वली क्रोधादिक
चार कषाय साथे गुणतां २४० थाय. तेने वली छयोगनी साथे गुणीये तेवारे
१४४० भांगा थाय. प्रथम ११ हेतुना कह्या ते प्रमाणे आगल सर्वविकल्पना भांगा कर-
वानी रीति-भयादिक लेखवाथी अथवा बे कायाः त्रणकाया; चारकाया, पांचकाया,

अने छेकाया क्षेपवाथी संयोगीक भांगा साथे गुणीजे त्यारे अग्यार हेतुना १४४०, बार हेतुना त्रण विकल्पना ६४८०, तेर हेतुना चार विकल्पना १३४४०, चौद हेतुना चार विकल्पना १६८००, पंदर बंधहेतुना चार विकल्पना १३४४०, शोल बंधहेतुना ४ विकल्पना ६७२०, सत्तर बंधहेतुना त्रण विकल्पना १९२०, अढार बंधहेतुना एकज विकल्पना २४० एवं अढार बंधहेतुस्थानके २४ विकल्पना मली ६०४८०-भांगा जाणवा.

शास्वादनगुणठाणें—मिथ्यात्वनो उदय न होवाथी १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ ए आठ बंधहेतुस्थानक थाय, तथा विकल्प २४ होय, अने भांगा ऊपर मिथ्यात्वगुणठाणें छे छे योग गणवाथी एक एक बंधहेतुना स्थानक दीठ जे भांगानो आंक बताव्यो ते थकी अहीं शास्वादनगुणठाणुं ए मार्गणावाला अपर्याप्ता सुधीज होय, अर्थात् पूर्णपर्याप्तो थयाने अवश्य एक मिथ्यात्वज होय. माटे अपर्याप्त अवस्थामां कार्मणकाययोग १, अने औदारिकमिश्र १ ए बे योगनोज उदय होवाथी बे योगे भांगा गणीजे त्यारे प्रथम १० बंधहेतुना ४८० भांगा ऊपजे ते कहे छे—प्रथम छेकाया, पांचइंद्रिय साथे गणतां ३०, तेने हास्यादियुगल साथे गणतां ६०, एने चारकषाय साथे गुणवाथी २४०, तेने वली औदारिकमिश्र अने कार्मण बे योग साथे गुणतां ४८० भांगा थया. ए रीते सर्व बंधहेतुस्थानके गणतां दश बंधहेतुना ४८०, अग्यार बंधहेतुना २१६०, बार बंधहेतुना ४४८०, तेर बंधहेतुना ५६००, चौद बंधहेतुना ४४८०, पंदर बंधहेतुना २२४०, शोल बंधहेतुना ६४०, सत्तर बंधहेतुना ८०, एवं चोवीश विकल्पना मली २०१६० भांगा होय, एवं बे गुणठाणाना मली ८०६४० भांगा जाणवा.

१ अनाहारी मार्गणाएं—जघन्ये एक समये अणाभोगीक मिथ्यात्व १, छेकायामांनी काय १ नो वध, त्रण वेदमांनो वेद १, बे युगलमांथी एक युगलनी बे, अनंतानुबंधियादिक चार कषाय, कार्मणकाययोग, ए दश बंधहेतुस्थानक कह्यो अने उत्कृष्ट सत्तर बंधहेतु होय माटे १०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७ ए ८ स्थानकना २४ विकल्पना भांगा बतावे छे—मिथ्यात्वगुणठाणें—दशहेतुना एक मिथ्यात्वने छेकाया साथे गुणवाथी ६ भांगा थाय. तेने त्रणवेदें गुणतां १८ थया, एने वली हास्यादि युगलें गणतां ३६ थाय, तेने वली चार कषायें गुणतां १४४ थाय, अने योग एकज कार्मण भणी गुणा न थाय माटे १४४ भांगा उपजे ॥१॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय मेलतां ११ हेतुनां पण १४४ भांगा, तथा कुच्छा समेत अग्यार हेतुना भांगा १४४ थाय, तथा बे कायानो वध गणतां पण अग्यार हेतुना भांगा द्विकसंयोगीक पंदर साथे गुणवाथी ३६० भांगा उपजे एवं त्रण विकल्पना मली ६४८ भांगा होय ॥ २ ॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय अने कुच्छा मेलतां बार हेतुना भांगा १४४, तथा भय अने बेकाया समेतना बार हेतुना भांगा ३६०, तेमज कुच्छा अने बेकाया समेत बार हेतुना ३६०, तेमज त्रणका-

यानो वध गणनां बारहेतुना भांगा ४८० थाय. सर्व चार विकल्पना मली १३४४ भांगा
होय ॥३॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय तथा कुच्छा अने बे कायानो वध गणनां १२ हेतुना ३६०
भांगा, तथा भय अने त्रण कायायेँ १२ हेतुना ४८०, तेमज कुच्छा अने त्रण काया समेत
ना ४८०, अने चार काया गणतां १३ हेतुना भांगा ३६०, एवं चार विकल्पना मली
१६८० भांगा होय ॥४॥ पूर्वोक्त दशमध्यें भय, कुच्छा अने त्रणकाया गणतां १४ हेतुना
४८० भांगा, तथा भय अने चारकाया समेत चौदहेतुना ३६० भांगा, तथा कुच्छा अने
चार काया समेत भांगा ३६०, तथा पांच काया समेत चौदहेतुना भांगा १४४, एवं चार
विकल्पना मली १३४४ होय ॥५॥ पूर्वोक्त दशमध्यें भय, कुच्छा अने चारकाया मेलतां
पंदर हेतुना ३६० भांगा, तथा भय अने पांचकाया मेलतां पंदर हेतुना १४४, तेमज
कुच्छा अने पांचकाया समेत पंदरहेतुना १४४ भांगा उपजे, तथा छ कायानो वध
गणतां पण पंदरहेतुना भांगा २४ उपजे. एवं चार विकल्पना मली ६७२ भांगा होय
॥६॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय, कुच्छा अने पांच काया मेलतां शोलहेतुना १४४ भांगा,
तथा भय अने छेकाया समेत २४, तेमज कुच्छा अने छेकाया समेतना २४ भांगा
एवं त्रण विकल्पना मली १९२ भांगा होय ॥ ७॥ पूर्वोक्त दशमध्ये भय, कुच्छा
अने छेकाया समेत सत्तरहेतुना २४ भांगा एवं सर्व आठस्थानकें चोवीश विकल्पना
मली ६०४८ भांगा जाणवा.

शास्वादनगुणठाणें—जघन्य एकसमये ९ बंध हेतुनो उदय होय, अने उत्कृष्ट १६
नो उदय थाय तेथी ९।१०।११।१२।१३।१४।१५।१६ ए आठ बंधहेतुस्थानक थाय तिहां
प्रथम नव बंधहेतुस्थानक कहे छे—छेकायामांनी एक कायानो वध १, त्रणवेदमांनो एक
वेद, बेयुगलमांनो एकयुगल, अनंतानुबंधिआदि चारकषाय, अने एककार्मणकाययोग,
ए नव हेतु कह्या. हवे उपरोक्त आठस्थानकना चोवीशे विकल्पना मली ऊपर मिथ्यात्व
गुणठाणे कह्या ते प्रमाणे ६०४८ भांगा जाणवा.

अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणठाणें—जघन्य एकसमयें ८ बंधहेतुनो उदय होय. अने
उत्कृष्टा १५ नो उदय होय तेथी ८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ ए आठ बंध
हेतुना स्थानक थाय. तिहां प्रथम आठ बंधहेतु कहे छे—छेकायामांनी एक कायानो वध,
पुरुषवेद अने नपुंसकवेद ए बे वेदमांथी एकवेद, बे युगलमांथी एकयुगल, अप्रत्या-
ख्यानी १, प्रत्याख्यानी १, संज्वलन १ ए त्रण कषाय, अने कार्मणकाययोग ए आठ
हेतु कह्या, हवे उपरोक्त आठस्थानकना चोवीश विकल्पना ४०३२ भांगा उपजे.
कारण ऊपर मिथ्यात्व अने शास्वादनगुणठाणें त्रणवेद साथे गुणवाथी ६०४८ भांग
कह्या. अने अहीं पुरुष अने नपुंसकवेद ए बे वेद होवाथी एकवेदना २०१६ भांग
टालीने बाकीना बे वेदना ४०३२ भांगा होय.

सयोगीकेवली गुणठाणें केवलसमुद्घात करतां वचली त्रणसमय लगण अनाहारीपणें होवाथी एकज कार्मणकाययोगनो एकज भांगो उपजे एवं चार गुणठाणाना मली सर्वे १६१२९ भांगा जाणवा.

---

९२ बासठमार्गणाने विषे जीवायोनीनुं द्वार—

१ नरकगति मार्गणाएं—४०००००० जीवायोनी लाभे.

१ देवगति मार्गणाएं—४०००००० जीवायोनी लाभे.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—१४०००००० जीवायोनी लाभे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं-पृथ्वीकायनी ७००००००, अप्कायनी ७००००००, तेउकायनी ७००००००, वायुकायनी ७००००००, प्रत्येकवनस्पतिकायनी १००००००, साधारणवनस्पतिकायनी १४००००००, पंचेंद्रियनी ४००००००, बेइंद्रियनी २००००००, तेंइंद्रियनी २००००००, चतुरिंद्रियनी २०००००० एवं सर्वे मली ६२००००००जीवायोनी लाभे.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं-पृथ्वीकायनी ७००००००, अप्कायनी ७००००००, तेउकायनी ७००००००, वायुकायनी ७००००००, वनस्पतिकायनी २४०००००० एवं सर्वे मली ५२०००००० जीवायोनी लाभे.

३ बेइंद्रिय,तेइंद्रिय,अने चतुरिंद्रिय ए त्रण मार्गणाएं-प्रत्येकें बेलाख जीवायोनी लाभे.

१० पंचेंद्रिय, मनोयोग, अवधिज्ञान, विभंगज्ञान, अवधिदर्शन, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिश्र अने संज्ञी ए दश मार्गणाएं-२६०००००० जीवायोनी लाभे.

२ मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान ए बे मार्गणाएं-२६०००००० जीवायोनी लाभे तथा मतांतरे-त्रणविकलेंद्रियमां अपर्याप्तावस्थामां शास्वादनसम्यक्त्व गणवाथी मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान ए बे ज्ञान गण्या. तेथी त्रणविकलेंद्रियनी मली ६०००००० जीवायोनी भेगी गणिये तो ३२०००००० जीवायोनी लाभे.

४ पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय ए चार मार्गणाएं-७ लाख लाभे.

१ वनस्पतिकायमार्गणाएं-प्रत्येकनी १००००००,अने साधारणनो १४००००००, एवं २४०००००० जीवायोनी लाभे.

२ त्रसकाय अने वचनयोग ए बे मार्गणाएं—पंचेंद्रियनी २६०००००० अने त्रण विकलेन्द्रियनी ६०००००० एवं ३२०००००० जीवायोनी लाभे.

१७ काययोग, चारकषाय, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अविरति, अचक्षुदर्शन,

णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, आहारी अने अना-
ी एवं १७ मार्गणाएं-८४०००० जीवायोनी लाभे.
४ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या ए चार मार्गणाएं—देवतानी
००००, तिर्यंचपंचेंद्रियनी ४००००० अने मनुष्यनी १४००००० एवं २२०००००
ीवायोनी लाभे.
१ नपुंसकवेद मार्गणाएं—देवतानी ४००००० विना शेष ८०००००० लाभे.
८ मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सू-
क्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन एवं आठ मार्गणाएं-मनुष्यनी १४००००० लाभे.
१ देशविरति मार्गणाएं-तिर्यंचपंचेंद्रियनी ४००००० अने मनुष्यनी १४०००००
एवं १८००००० जीवायोनी लाभे.
१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—पंचेंद्रियनी २६०००००, अने चतुरिंद्रियनी २०००००
एवं २८००००० जीवायोनी लाभे.
१ तेजोलेश्या मार्गणाएं-पृथ्वीकायनी ७०००००, अप्कायनी ७०००००, प्रत्येक
वनस्पतिकायनी १००००००, देवतानी ४०००००, मनुष्यनी १४००००० अने पंचे-
न्द्रियतिर्यंचनी ४०००००, एवं सर्व मली ४६००००० जीवायोनी लाभे.
१ सास्वादन मार्गणाएं-पंचेंद्रियनी २६०००००, विकलेंद्रियनी ६००००० एवं
१२०००००, तथा पक्षांतरे-पृथ्वीकायनी ७०००००, अप्कायनी ७००००० अने
प्रत्येकवनस्पतिकायनी १०००००० ए चोवीशलाखने मेलवाथी ५६००००० लाभे.
१ असंज्ञी मार्गणाएं-एकेंद्रियनी ५२०००००, विकलेंद्रियनी ६०००००, तिर्य-
चपंचेंद्रियनी ४०००००, मनुष्यनी १४००००० एवं सर्वमली ७६००००० लाभे.

---

९२ बासठमार्गणाने विषे कुलकोडीनुं द्वार—

१ नरकगति मार्गणाएं—२५००००० कुलकोडी लाभे.
१ देवगति मार्गणाएं—२६००००० कुलकोडी लाभे.
१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—एकेंद्रियनी ५७०००००, बेइंद्रियनी ७०००००, तेइं-
द्रियनी ८०००००, चतुरिंद्रियनी ९००००० अने पंचेंद्रियमां जलचरनी १२५००००,
खेचरनी १२०००००, थलचरनी १००००००, उरपरीसर्पनी १००००००, भुज-
परिसर्पनी ९००००० एवं सर्व मली १३४५०००० कुलकोडी लाभे.
१ मनुष्यगति मार्गणाएं—१२००००० कुलकोडी लाभे.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं—५७०००००० कुलकोड़ी लामे.

१ बेइंद्रिय मार्गणाएं—७०००००

१ तेइंद्रिय मार्गणाएं—८००००० कुलकोड़ी लामे.

१ चोरिंद्रिय मार्गणाएं—९००००० कुलकोड़ी लामे.

११ पंचेंद्रिय, मनोयोग, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, विभंगज्ञान, अवधिदर्शन, मिश्र, संज्ञी, उपशम, क्षयोपशम एवं अग्यार मार्गणाएं–नारकीनी २५०००००, देवतानी २६०००००, मनुष्यनी १२०००००, तिर्यचपंचेंद्रियजलचरादि पांचों भेदनी ५३५०००० एवं सर्वे मलीने ११६५०००० कुलकोड़ी लामे.

१ पृथ्वीकाय मार्गणाएं—१२०००००० कुलकोड़ी लामे.

१ अप्काय मार्गणाएं—७०००००० कुलकोड़ी लामे.

१ तेउकाय मार्गणाएं—३०००००० कुलकोड़ी लामे.

१ वायुकाय मार्गणाएं—७०००००० कुलकोड़ी लामे.

१ वनस्पतिकाय मार्गणाएं—२८०००००० कुलकोड़ी लामे.

२ त्रसकाय अने वचनयोग ए बे मार्गणाएं—विकलेंद्रियनी २४०००००, अने पंचेंद्रियनी ११६५०००० एवं १४०५०००० कुलकोड़ी लामे.

१७ काययोग, क्रोधादिचारकषाय, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अविरति, अचक्षुदर्शन, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, भव्य, अभव्य, मिथ्यात्व, आहारी अने अनाहारी ए सत्तर मार्गणाएं–सर्वे मली १९७५०००० कुलकोड़ी लामे.

४ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या ए चार मार्गणाएं–देवतानी २६०००००, मनुष्यनी १२०००००, पंचेंद्रियतिर्यंचनी ५३५००००, एवं९१५०००० कुलकोड़ी लामे.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं–नारकीनी २५०००००, मनुष्यनी १२०००००, अने तिर्यंचगतिनी १३४५०००० एवं सर्वे मली १७१५०००० कुलकोड़ी लामे.

८ मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, केवलदर्शन, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, ए आठ मार्गणाएं–१२००००० कुलकोड़ी लामे.

१ देशविरति मार्गणाएं–मनुष्यनी १२०००००, अने पंचेंद्रियतिर्यंचनी ५३५०००० एवं ६५५०००० कुलकोड़ी होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं–चतुरिंद्रियनी ९०००००, अने पंचेंद्रियनी ११६५०००० एवं १२५५०००० कुलकोड़ी होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं–देवतानी २६०००००, मनुष्यनी १२०००००, पृथ्वीकायनो १२०००००, अप्कायनी ७००००००, वनस्पतिकायनी २८०००००, अने

जलचरादि पांच प्रकारना पंचेंद्रियतिर्यंचनी ५३५०००० एवं सर्वे ११८५०००० लाभे.

१ क्षायिक मार्गणाएं–नारकीनी २५०००००, देवतानी २६०००००, मनुष्यनी १२०००००, अने पंचेंद्रियतिर्यंचमांहे एक स्थलचरचतुष्पदनी १००००००, एवं सर्व मली ७३००००० कुलकोडी होय.

१ सास्वादन मार्गणाएं–देवतानी २६०००००, नारकीनी २५०००००, मनुष्यनी १२०००००, पृथ्वीकायनी १२०००००, अप्कायनी ७०००००, वनस्पतिकायनी २८०००००, बेइंद्रियनी ७०००००, तेइंद्रियनी ८०००००, चउरिंद्रियनी ९००००० अने पंचेंद्रियतिर्यंचनी ५३५०००० एवं सर्वे मली १८७५०००० कुलकोडी लाभे.

१ असंज्ञी मार्गणाएं–एकेंद्रियनी ५७०००००, विकलेंद्रियनी २४०००००, मनुष्यनी १२०००००, पंचेंद्रियतिर्यंचनी ५३५०००० एवं सर्वे मली १४६५०००० लाभे.

---

९४ बासठमार्गणाने विषे मार्गणानुं द्वार–

१ नरकगति मार्गणाएं–नरकगति १, पंचेंद्रिय १, त्रसकाय १, योग ३, नपुंसकवेद १, कषाय ४, प्रथमना ज्ञान ३, अज्ञान ३, अविरति १, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, प्रथमनी लेश्या ३, भव्य १, अभव्य १, उपशमादिकसम्यक्त्व ६, संज्ञी १, आहारी १, अने अनाहारी १, एवं ३५ मार्गणा होय.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं–तिर्यंचगति १, इंद्रिय ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ३, अज्ञान ३, देशविरति १, अविरति १, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अने अनाहारी १, एवं ५१ मार्गणा होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं–मनुष्यगति १, पंचेंद्रिय १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १ अने अनाहारी १ एवं ५० मार्गणा होय.

१ देवगति मार्गणाएं–देवगति १, पंचेंद्रिय १, त्रसकाय १, योग ३, पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १, कषाय ४, प्रथमना ज्ञान ३, अज्ञान ३, अविरति १, प्रथमना दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, आहारी १ अने अनाहारी १ एवं ३९ मार्गणा होय.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं–तिर्यंचगति १, एकेंद्रिय १, (त्रसकाय विना) काया ५, काययोग १, नपुंसकवेद १, कषाय ४, प्रथमना अज्ञान २, अविरति १, अचक्षु-

दर्शन १, प्रथमनी लेश्या ४, भव्य १, अभव्य १, सास्वादन १, मिथ्यात्व १, असंज्ञी १, आहारी १ अने अनाहारी १ एवं २८ मार्गणा होय.

१ बेइंद्रिय मार्गणाएं–तिर्यंचगति १, बेइंद्रियजाति १, त्रसकाय १, वचनयोग १, काययोग १, नपुंसकवेद १, कषाय ४, प्रथमनाज्ञान २, प्रथमना अज्ञान २, अविरति १, अचक्षुदर्शन १, प्रथमनी लेश्या ३, भव्य १, अभव्य १, सास्वादन १, मिथ्यात्व १, असंज्ञी १, आहारी १, अने अनाहारी १ एवं २६ मार्गणा होय.

१ तेइंद्रिय मार्गणाएं–बेइंद्रियनी परें २६ मार्गणा जाणवी. परंतु विशेष छे के बेइंद्रियना ठेकाणे तेइंद्रिय कहेवुं.

१ चतुरिंद्रिय मार्गणाएं–तेइंद्रियमां कहेली २६ मार्गणा अने चक्षुदर्शन एवं २७ मार्गणा होय. परंतु विशेष छे के बेइंद्रियना ठेकाणे चतुरिंद्रिय जाति कहेवी.

१ पंचेंद्रिय मार्गणाएं–गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १ अने अनाहारी १ एवं ५३ मार्गणा होय.

१ पृथ्वीकाय मार्गणाएं–तिर्यंचगति १, एकेंद्रियजाति १, पृथ्वीकाय १, काययोग १, नपुंसकवेद १, कषाय ४, प्रथमना अज्ञान २, अविरति १, अचक्षुदर्शन १, प्रथमनी लेश्या ४, भव्य १, अभव्य १, मिथ्यात्व १, सास्वादन १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं २४ मार्गणा होय.

२ अप्काय अने वनस्पतिकाय ए बे मार्गणाएं–पृथ्वीकायनी परें २४ मार्गणा होय. एवं परंतु विशेष छे के पृथ्वीकायने ठेकाणे अप्काय अने वनस्पतिकाय कहेवुं.

२ तेउकाय अने वायुकाय मार्गणाएं–पृथ्वीकायनी २४ मांथी सास्वादन अने तेजोलेश्या विना २२ होय अने पृथ्वीकायने ठेकाणे तेउकाय अने वायुकाय कहेवी.

१ त्रसकाय मार्गणाएं–गति ४, (एकेंद्रिय विना) जाति ४, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ५६ मार्गणा होय.

१ मनोयोग मार्गणाएं–गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, आहारी १ एवं ५१ मार्गणा होय.

१ वचनयोग मार्गणाएं–गति ४, (एकेंद्रियविना) जाति ४, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, लेश्या ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, अने आहारी १ एवं ५५ मार्गणा होय.

२ काययोग अने भव्य मार्गणाएं–६२ मार्गणा होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं–(नारकी विना) गति ३, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद १, कषाय ४, प्रथमना ज्ञान ४, अज्ञान ३, सामायिक १, छेदोपस्थापनीय १, परिहारविशुद्धि १, देशविरति १, अविरति १, (केवल विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ४५, तथा मतांतरे–छेल्लोज्ञान १, अने केवलदर्शन १ ए बे वधारे गणवाथी ४७ मार्गणा होय.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं–पुरुषवेदनी पेरे मार्गणा कहीजे परंतु एटलुं विशेष छे के, पुरुषवेदने ठामे स्त्रीवेद गणवो. अने (परिहारविशुद्धि विना) संयमचार लेवाथी अहीं ४४ अथवा मतांतरे–४६ मार्गणा होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं–(देव विना) गति ३, जाति ५, काया ६, योग ३, नपुंसकवेद १, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, (सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात विना) संयम ५, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अने अनाहारी १, एवं ५७. अथवा मतांतरे–छेल्लोज्ञान अने केवलदर्शन ए बे विना ५५ मार्गणा होय.

४ चारकषाय मार्गणाएं–गति ४, जाति ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय क्रोधमार्गणामां एकज क्रोधकषाय, मान मार्गणामां एकज मान कषाय, मायामार्गणामां एकज माया कषाय, अने लोभ मार्गणामां एकज लोभ गणवो एटले आप आपना कषाय सिवाय प्रतिपक्षी न लेवो, (केवल विना) ज्ञान ४, अज्ञान ३, (सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात विना) संयम ५, (केवलविना) दर्शन ३, भव्य १, अभव्य १, लेश्या ६, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ५५ मार्गणा क्रोध १, मान २, माया ३ ए त्रणमां होय. अने लोभमां सूक्ष्मसंपरायनी वधारे गणतां ५६ मार्गणा होय.

२ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान ए बे मार्गणाएं–(एकेंद्रिय विना) जाति ४, गति ४, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, प्रथमना ज्ञान ४, संयम ७, (केवल विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, उपशम १, क्षयोपशम १, क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ४६ मार्गणा होय.

२ अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए बे मार्गणाएं–गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, प्रथमना ज्ञान ४, संयम ७, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, उपशम १, क्षयोपशम १, क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ४३ मार्गणा होय.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय एवं त्रण मार्गणाएं–मनुष्यगति १

पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, संज्वलनकषाय ४, ज्ञान ४, (अविरति अने देशविरति विना) संयम ५, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, उपशमादिसम्यक्त्व ३, संज्ञी १, आहारी १, एवं ३७ मार्गणा मनःपर्यवज्ञानमां होय. तथा सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मध्ये-(अविरति, देशविरति, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए चार विना) संयम ३ गणतां ३८ मार्गणा होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं-मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, केवलज्ञान १, यथाख्यात १, केवलदर्शन १, शुक्लेश्या १, भव्य १, क्षायक १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं १५ मार्गणा होय.

२ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान ए बे मार्गणाएं-गति ४, जाति ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४, अज्ञान ३, अविरति १, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन १, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, मिथ्यात्व १, शास्वादन १, मिश्र १, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ४६ मार्गणा होय.

१ विभंगज्ञान मार्गणाएं-गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, त्रणअज्ञान ३, अविरति १, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन १, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, मिथ्यात्व १, शास्वादन १, मिश्र १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ३६ मार्गणा होय.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं-मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, (स्त्रीवेद विना) वेद २, कषाय ४, ज्ञान ४, प्रथमना संयम ३, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, उपशम १, क्षयोपशम १, क्षायिक १, संज्ञी १ अने आहारी १ एवं ३४, अथवा मतांतरे-उपशम विना ३३ मार्गणा होय.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं-मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, लोभकषाय १, प्रथमना ज्ञान ४, सूक्ष्मसंपराय १, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, भव्य १, शुक्लेश्या १, उपशम १, क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, एवं २१ होय.

१ यथाख्यात मार्गणाएं-मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, ज्ञान ५, यथाख्यात १, दर्शन ४, शुक्लेश्या १, भव्य १, उपशम १, क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं २३ मार्गणा होय.

१ देशविरति मार्गणाएं-मनुष्यगति १, तिर्यंचगति १, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, प्रथमना ज्ञान ३, देशविरति १, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, उपशम १, क्षयोपशम, क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, एवं ३१.

१ अविरति मार्गणाएं-गति ४, जाति ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४,

यमना ज्ञान १, अज्ञान ३, अविरति १, (केवल विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १,
अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ५१ होय.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—गति ४, चतुरिंद्रिय अने पंचेंद्रिय ए बे जाति २, त्रसका-
य १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, मयमना ज्ञान ४, अज्ञान ३, संयम ७, (केवलदर्शन
विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १,
आहारी १, एवं ५१ मार्गणा होय.

१ अचक्षुदर्शन मार्गणाएं—गति ४, जाति ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४,
मयमना ज्ञान ४, अज्ञान ३, संयम ७, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १,
अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ६० होय.

१ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाएं—गति ४, जाति ५,
काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ४, अज्ञान ३, (सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात
विना) संयम ५, (केवल विना) दर्शन ३, लेश्या पोत पोताना नामनी १, भव्य १,
अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ५३ होय.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—(नरकगति विना) गति ३, एकेंद्रिय अने पंचेंद्रिय ए
बे जाति २, (तेउकाय अने वायुकाय विना) काया ४, योग ३, वेद ३, कषाय ४,
ज्ञान ४, अज्ञान ३, (सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात विना) संयम ५, तथा (केवल
विना) दर्शन ३, तेजोलेश्या १, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १,
आहारी १, अनाहारी १ एवं ४७ मार्गणा होय.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—(नरकगति विना) गति ३, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १,
योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ४, अज्ञान ३, (सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात विना)
संयम ५, (केवलदर्शन विना) दर्शन ३, पद्मलेश्या १, भव्य १, अभव्य १, सम्य-
क्त्व ६, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ४२ मार्गणा होय.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—(नरक विना) गति ३, पंचेन्द्रियजाति १, त्रसकाय १,
योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, शुक्ललेश्या १,
भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ४६ मार्गणा होय.

१ अभव्य मार्गणाएं—गति ४, जाति ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४,
अज्ञान ३, अविरति १, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन १, लेश्या ६, अभव्य १, मिथ्यात्व १,
संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ४३ मार्गणा होय.

१ उपशमसम्यक्त्व मार्गणाएं—गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३,
वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ४, (परिहारविशुद्धि विना) संयम ६, (केवल विना) दर्शन ३,

लेश्या ६, भव्य १, उपशम १, उपशमश्रेणीने विषे क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ४१ मार्गणा होय.

१ क्षयोपशम मार्गणाएं—गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ४, (यथाख्यात अने सूक्ष्मसंपराय ए बे विना) संयम ५, (केवळ विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, क्षयोपशमसम्यक्त्व १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ३९ मार्गणा होय.

१ क्षायिकसम्यक्त्व मार्गणाएं—गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ४३ मार्गणा होय.

१ मिश्र मार्गणाएं—गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, अज्ञानमिश्रज्ञान ३, अविरति १, (केवलविना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, मिश्रसम्यक्त्व १, संज्ञी १, आहारी १, एवं ३३ मतांतरे-केवलदर्शन अने अवधिदर्शन विना ३२ मार्गणा पण होय.

१ शास्वादन मार्गणाएं—गति ४, जाति ५, (तेउकाय अने वायुकाय विना) काया ४, योग ३, वेद ३, कषाय ४, अज्ञान ३, अविरति १, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन १, लेश्या६, भव्य१, शास्वादन १, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ४१ होय.

१ मिथ्यात्व मार्गणाएं—गति ४, जाति ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४, अज्ञान ३, अविरति १, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन १, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, मिथ्यात्व १, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १ एवं ४४ मार्गणा होय.

१ संज्ञी मार्गणाएं—गति ४, पंचेंद्रियजाति १, त्रसकाय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ५२ मार्गणा होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं—मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गति २, जाति ५, काया ६, वचनयोग १, काययोग १, नपुंसकवेद १, कषाय४, अज्ञान २, अविरति १, चक्षुदर्शन१, अचक्षुदर्शन १, प्रथमनी लेश्या ४, भव्य १, अभव्य १, मिथ्यात्व १, शास्वादन १, असंज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, एवं ३६ मार्गणा होय.

१ आहारी मार्गणाएं—गति ४, जाति ५, काया ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ५, अज्ञान ३, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, सम्यक्त्व ६, संज्ञी १, असंज्ञी १, आहारी १, एवं ६१ मार्गणा होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं–गति ४, जाति ५, काया ६, केवली आश्रयी योग १, कषाय ४ (मनःपर्यवज्ञान विना) ज्ञान ४, अज्ञान ३, अविरति १, यथाख्यात १, (चक्षुदर्शन विना) दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, (उपशम अने मिश्र विना) सम्यक्त्व ४, संज्ञी १, असंज्ञी १, अनाहारी १ एवं ५२, तथा मतांतरे–उपश्रेणिये मरण पामनारने देवगतिमां उपजतां अनाहारी पणे उपशमसम्यक्त्व वधारे गणिये तो ५३ होय.

---

५ बासठमार्गणाने विषे ध्यानना मूल अने उत्तरभेदोनुं द्वार—

आर्तध्यान १, रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३, अने शुक्लध्यान ४ ए ध्यानना चार मूल भेद जाणवा.

आर्तध्यानना चार भेद—

१ इष्टवियोग—ते पोताने प्राप्त थयेला धन, धान्य, क्षेत्र, वस्तु, रौप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, अने चतुष्पदादिकनो रखे वियोग थाय! एवुं मनमां चिंतवन कर्या करवुं.

२ अनिष्टसंयोग—ते पांचइंद्रियोंना सुखने विघ्नकारक खराब स्पर्श, रस, गंध, रूप शब्दादिनो रखे संयोग थाय! एवुं चिंतवतां रहेवुं.

३ रोगचिंता—ते मारा शरीरमां कोई वखते अमुक अमुक रोग उत्पन्न थाय छे ते नहीं थाय तो सारुं एवो विचार अथवा रोगनी चिकित्सा वगेरहनी चिंता आखा दिवसे करता रहेवुं.

४ अग्रशोच—ते भविष्यमां पापारंभनां अमुक कार्य करीन अथवा अमुक व्यापारमां मने लाभ थशे अथवा अमुक वैरियोंनो नाश थशे त्यारे आपणे नाग जातिमां महोटा कहेवाशुं अने अमुककार्य साधी नकीशुं इत्यादि चिंताकरतां रहेवुं.

रौद्रध्यानना चार भेद—

१ हिंसानुबंधी—ते छ कायाना जीवोंने वध करीने मनमां बहु आनंद माने, जीव-हिंसा थती देखी आनंद माने, अथवा हिंसाना कृत्यने वखाणे यंत्रपीलणादि महारंभना कार्यों करवामां आनंद माने इत्यादिक हिंसाना कार्योमां आनंदी थवुं.

२ मृषानुबंधी—ते झूठ बोली छल कपटकरी मनमां बहु खुशी थाय, बीजानी पासे झूठ बोलावी आनंद मानवुं अने झूठ बोलनारनो वखाण करवुं.

३ स्तेयानुबंधी—ते अनेक प्रकारना छल कपट, दगाबाजी, प्रपंच, विश्वासघातकरी भद्रकजीवोंनी बहुमूल्यवाली वस्तुनी थोडी कीमत आपीने लेवी. अने मनमां खुशी थवुं, वली चोरी, रस्तानी लूंट, ताला भांगवा, खातर पाडवुं, वीजोरी

लुंटवी, इत्यादिक कार्यो करी परधन मेलववामां तथा चोर लुंटारा, गंठीया पासेथी मीलकत लेवामां अने तेमने मदद करवामां बहुज हिम्मतथी प्रवर्त्तवुं तथा तेवा कार्योमां आनंद मानवुं.

४ परिग्रहानुबंधी—ते धनधान्यादि नवप्रकारनुं परिग्रह वधारी मनमां बहु खुशी थाय, तथा धन, दौलत एज जगतमां सार छे, वस्तु विना नर पशु छे तेथी द्रव्य अवश्य जोइए ते संबंधी अनेक दृष्टांतोना संकल्प विकल्पादिक मनमां करयां करवुं.

धर्मध्यानना चार भेद—

१ आज्ञाविचय—ते वीतराग भगवंते छेद्रव्यनुं स्वरूप, नय, प्रमाण, निक्षेपा, तथा सिद्धस्वरूप, निगोदस्वरूप, लोकस्वरूपादि सर्व पदार्थ जेम प्ररूप्या तेमज साचा मानी तेमां शंका कांक्षादिक न राखे, अने आज्ञा प्रमाणे यथार्थ उपयोग भासन थयो तेमांज निरधार भावन, रमण, अनुभवता, वेदवता, तन्मयपणे रहेवुं.

२ अपाय विचय—ते हे चेतन! तुं हवे जाणे छे के ए आश्रव पुद्गल छे अनादि कालथी आत्मानी साथे लागेलुं छे तुं एनाथी न्यारो छे, ए पुद्गलनो स्वभाव जड छे, तुं तो चेतन छे, तुं अनंत ज्ञानमय छे, अनंतदर्शन अने अनंत चारित्रमय छे, तुं शुद्ध छे, बुद्ध छे, अविनाशी छे, अज छे, अनादि, अनंत, अक्षय, अक्षर, अचल, अकल, अगम्य, अनामी, अकर्मी, अबंधक, अनुदयि छे, स्वभावरमणीय छे, विभाव त्यागी छे, लोकालोक ज्ञायक छे एवो शुद्धचिदानंद मारो आत्मा छे एवुं जे एकाग्रतारूप तन्मयपणे परिणमवुं.

३ विपाकविचय—ते क्षणे क्षणे कर्मफलनो उदय जे अनेक प्रकारनो उत्पन्न थाय छे तेनाथी सुख दुःख भोगवतां हर्ष शोक नहीं करतां विचारवुं जे पूर्वकृत कर्मनो विपाक छे एवुं चिंतवन करवुं.

४ संस्थानविचय—ते चौदराजलोकनो स्वरूप चिंतववुं एटले आ लोक अनादि अनंत छे, उत्पाद व्यय अने ध्रुवयुक्त छे धर्मास्तिकायादि छे द्रव्य चौदराजलोकमां व्यापी रह्या छे, तथा निगोदना गोळामां पण असंख्याति निगोद रही छे, एक निगोदमां पण अनंता जीव रह्या छे, तेमां एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे, एकेका प्रदेशे अनंति अनंति कर्मोनी वर्गणा छे, एक कर्मवर्गणामां अनंता पुद्गल परमाणु रह्या छे. बे परमाणु मेळा थाय तेवारे द्व्यणुक स्कंध कहेवाय छे, त्रण परमाणु मेळा थाय तेवारे त्र्यणुक स्कंध कहेवाय छे. एम संख्याता परमाणुओ मेळा मळवाथी संख्याताणुक स्कंध कहेवाय छे. अने अनंता परमाणु मेळा थाय तेवारे अनंतपरमाणुस्कंध कहेवाय छे. एटला परमाणुओनो स्कंध थाय

ते सर्व संयोगोथी छूटा करवानो प्रयत्न करी रहेवुं. आत्मगुणोना तीव्र भावो
जेटला अंशे छे ते सर्वो आत्मगुणोनी वृद्धि करनारा थाय तेवा भाव केळवीने एक
चैतन्यस्वरूपमां स्थिरतापूर्वक वर्तवा थाय. इत्यादिक भावे वर्तवानो प्रयत्न
निरंतर करवो.

शुक्लध्यानना चार भेद—

१ पृथक्त्ववितर्क सविचार—जे पृथक्पणे द्रव्यगुण अने पर्यायोनुं श्रुतज्ञानना
आलंबन वडे एक चिंतवना करी जाय. एम विकल्प सहित ध्यान करवामां
आवे ते.

२ एकत्ववितर्क अविचार—जे द्रव्यगुण पर्यायनी एकता करी श्रुतज्ञानना
आलंबननुं विकल्प रहित दीर्घ ध्यानधाराएं ध्याववुं थवुं.

३ सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाती—जे केवळज्ञानी पोतानां बादर मन वचन अने
कायाना योगने रुंधी शैलेशीकरण करवुं अने अप्रतिपाति निर्मळ ध्यानना
बळ वडे आवे ते.

४ व्युपरतक्रियानिवृत्ति—जे योगनिरोध करवो पछी बाकी रहेला भेद प्रकृति
क्षय थवो. सर्वोत्कृष्ट क्रियाथी रहित थवुं. सर्व क्रियानो उच्छेद
करवा अवस्था थवुं. सर्वोत्कृष्ट सिद्धस्थानमां जई सादि अनंतमां स्थिर
थवुं ते.

ए चार ध्यानना मळी १६ भेद जाणवा.

१ नरकगति, देवगति, अविरति ए त्रण मार्गणाए—आर्तध्यानना चार अने रौद्र
ध्यानना चार ए आठ, अथवा धर्मध्यानना प्रथम भेद ए नव भेद लाभे.

४ मनुष्यगति, पंचेंद्रिय, त्रसकाय, क्षायिक ए चार मार्गणाए—पूर्व चार ध्या-
नना सोळ भेद लाभे.

८ तिर्यंचगति अने देशविरति मार्गणाए—आर्त अने रौद्रना आठ भेद अथवा ध-
र्मध्यानना प्रथमना बे भेद एवं १० भेद लाभे.

१७ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय,
वायुकाय, वनस्पतिकाय, मतिअज्ञान, अभव्य, मिश्र, सास्वादन, मिथ्यात्व, अने असंज्ञी
ए १७ मार्गणाए—आर्तना ४, रौद्रना ४, एवं ८ भेद लाभे.

५ मनोयोग, वचनयोग, काययोग, शुक्ललेश्या, अने आहारी ए ५ मार्गणाए—आ-
र्तना ४, रौद्रना ४, धर्मध्यानना ४ अने शुक्लध्यानना प्रथमना बे एवं १४ भेद लाभे.
अथवा शुक्लना बीजा भेद गणिये तो पंदर भेद पण होय.

७ त्रणवेद अने चारकषाय एवं ७ मार्गणाए—आर्त, रौद्र अने धर्मध्यान ए
त्रणना बारभेद अने शुक्लध्याननो प्रथम भेद एवं १३ भेद लाभे.

६ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अने अवधिदर्शन ए ६ मार्गणाएं–आर्त्त, रौद्र, धर्मध्यान ए त्रणना चार भेद अने शुक्लध्यानना प्रथमना बे भेद एवं १४ भेद लाभे.

१ मनःपर्यवज्ञान मार्गणाएं–धर्मध्यानना चार अने शुक्लना बे, एवं ६. अथवा आर्त्तना निदानार्त्तध्यान विना त्रण भेद पण वधारे गणिये तो ९ भेद होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–शुक्लध्यानना छेला बे भेद लाभे.

२ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए बे मार्गणाएं–धर्मध्यानना ४, अने शुक्लध्याननो प्रथम एवं ५ भेद, अथवा आर्त्तध्यानना निदानार्त्तध्यान विना त्रण भेद समेत गणिये तो ८ भेद लाभे.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणाएं–धर्मध्यानना चार, अथवा आर्त्तध्यानना निदानार्त्तध्यान विना प्रथमना त्रणभेद समेत ७ भेद लाभे.

१ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाएं–शुक्लध्याननो प्रथमनो एक भेद लाभे.

१ यथाख्यात मार्गणाएं—शुक्लध्यानना चार भेद लाभे.

६ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने क्षयोपशम ए ६ मार्गणाएं–आर्त्तना चार, रौद्रना चार अने धर्मना चार एवं १२ भेद लाभे.

२ भव्य अने संज्ञी ए बे मार्गणाएं–बारमां गुणठाणासुधी गणिये तो आर्त्तना चार, रौद्रना चार, धर्मना चार अने शुक्लना प्रथमना बे एवं १४, अथवा केवलीने भव्य अने संज्ञीपणे गणिये तो पूर्वोक्तना १६ भेद अने संज्ञीमां १५ भेद होय.

१ उपशम मार्गणाएं–आर्त्तना चार, रौद्रना चार, धर्मध्यानना ४. अने शुक्लध्याननो प्रथम भेद एवं १३ भेद लाभे.

१ अनाहारी मार्गणाएं–आर्त्तना ४, रौद्रना ४, अने धर्मध्यानना प्रथमना २, एवं १० भेद लाभे, अथवा आर्त्तना ४, रौद्रना ४ मली आठ भेद पण होय. अथवा चौदमे गुणठाणें पण अनाहारी होय. माटे तिहां शुक्लध्यानना छेला बे भेद होय.

---

९६ बासठमार्गणाने विषे जीवना ५६३ भेदोंनुं द्वार–

पांचसो त्रेसठ जीवना भेद कहे छे–

देवगतिना १९८ भेद—

भुवनपति १०, परमाधामी १५, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, किल्बिषी ३, लोकांतिक ९, ग्रैवेयक ९, अनुत्तरविमान ५ एवं ९९ पर्याप्ता, तथा एज ९९ अपर्याप्ता मलीने १९८ भेद होय.

नरकगतिना १४ भेद—

रत्नप्रभा १, शर्करप्रभा २, वालुकप्रभा ३, पंकप्रभा ४, धूमप्रभा ५, तमःप्रभा ६, अने तमस्तमःप्रभा ७ ए सात पर्याप्ता तथा एज सात अपर्याप्ता मळी १४ भेद होय.

मनुष्यगतिना ३०३ भेद—

कर्मभूमि–भरत ५, ऐरवत ५, अने महाविदेह ५, एवं १५.

अकर्मभूमि–हेमवन्त ५, ऐरण्यवत ५, हरिवर्ष ५, रम्यकवर्ष ५, देवकुरु ५, अने उत्तरकुरु ५, एवं ३०.

अंतरद्वीप–जंबूद्वीपना हिमवंत तथा शिखरी ए बे पर्वतनी चार चार दाढाओ लवणसमुद्रमां पडे छे, ते एकेकी दाढा ऊपर सात सात अंतरद्वीप छे तेथी आठे दाढाओना मळीने ५६. एवं कर्मभूमिना १५, अकर्मभूमिना ३०, अंतरद्वीपना ५६, ए १०१ गर्भजपर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता अने १०१ संमूर्छिम अपर्याप्ता–चौदस्थानकना ए सर्व मळी मनुष्यगतिना ३०३ भेद होय.

तिर्यंचगतिना ४८ भेद.

जळचर—गर्भज अने संमूर्छिम ए बे पर्याप्ता तथा बे अपर्याप्ता मळी चार,

स्थलचर—गर्भज अने संमूर्छिम ए बे पर्याप्ता तथा बे अपर्याप्ता मळी चार,

खेचर—गर्भज अने संमूर्छिम ए बे पर्याप्ता तथा बे अपर्याप्ता मळी चार,

उरपरिसर्प—गर्भज अने संमूर्छिम ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी चार,

भुजपरिसर्प—गर्भज अने संमूर्छिम ए बे पर्याप्ता तथा बे अपर्याप्ता मळी चार, एवं तिर्यंचपंचेंद्रियना २० भेद होय.

विकलेंद्रिय—द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय ए त्रण पर्याप्ता तथा एज त्रण अपर्याप्ता मळी ६ भेद विकलेंद्रियना होय.

पृथ्वीकायना—सूक्ष्म अने बादर ए बे पर्याप्ता तथा एज बे अपर्याप्ता मळी चार,

अप्कायना—सूक्ष्म अने बादर ए बे पर्याप्ता तथा एज बे अपर्याप्ता मळी चार,

तेउकायना—सूक्ष्म अने बादर ए बे पर्याप्ता तथा एज बे अपर्याप्ता मळी चार,

वायुकायना—सूक्ष्म अने बादर ए बे पर्याप्ता तथा एज बे अपर्याप्ता मळी चार,

साधारणवनस्पतिकायना—सूक्ष्म अने बादर ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी चार,

प्रत्येकवनस्पतिकायना—बादर पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे एवं पांचे स्थावरना मळी २२ भेद होय एवी रीते तिर्यंचपंचेंद्रियना २०, त्रणविकलेंद्रियना ६, अने पांच स्थावरना २२ एवं तिर्यंचगतिना ४८ भेद होय.

ए चार गतिना सर्व मळी ५६३ भेद होय.

१ नरकगति मार्गणाएं—नरकना सात पर्याप्ता अने सात अपर्याप्ता मळी १४ भेद लाभे.

१ देवगति मार्गणाएं—१० भुवनपति, १५ परमाधामी, १६ व्यंतर, १० तिर्यग्जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्बिषी, ९ लोकांतिक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमान, ए सर्व मळी ९९ पर्याप्ता तथा ९९ अपर्याप्ता एवं १९८ भेद लाभे.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—१०१ गर्भजपर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, अने १०१ संमूर्छिममनुष्य अपर्याप्ता ए सर्व मळी ३०३ भेद लाभे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—तिर्यंचपंचेंद्रियना २०, विकलेंद्रियना ६, अने पांच स्थावरना २२ एवं ४८ भेद लाभे.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं—पृथ्वीकायना ४, अप्कायना ४, तेउकायना ४, वायुकायना ४, अने वनस्पतिकायना ६, एवं २२ भेद लाभे.

१ द्वीन्द्रिय मार्गणाएं—द्वीन्द्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मळी बे भेद लाभे.

१ त्रीन्द्रिय मार्गणाएं—त्रीन्द्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मळी बे भेद लाभे.

१ चतुरिन्द्रिय मार्गणाएं—चतुरिन्द्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मळी बे भेद लाभे.

१ पंचेंद्रिय मार्गणाएं—देवताना १९८, मनुष्यना ३०३, तिर्यंचपंचेंद्रियना २०, अने नारकना १४, एवं ५३५ भेद लाभे.

१ पृथ्वीकायमार्गणाएं—पृथ्वीकायना सूक्ष्म बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ४ भेद.

१ अप्कायमार्गणाएं—अप्कायना सूक्ष्म बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ४ भेद लाभे.

१ तेउकायमार्गणाएं—तेउकायना सूक्ष्म बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ४ भेद लाभे.

१ वायुकायमार्गणाएं—वायुकायना सूक्ष्म बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ४ भेद लाभे.

१ वनस्पतिकाय मार्गणाएं—साधारणवनस्पतिकायना सूक्ष्म अने बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ४ अने प्रत्येकवनस्पतिकायना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी २ एवं ६ भेद लाभे.

१ त्रसकाय मार्गणाएं—देवताना १९८, मनुष्यना ३०३, नारकना १४, अने तिर्यंचपंचेंद्रियना २० तथा विकलेंद्रियना ६ एवं ५४१ भेद होय.

१ मनोयोग मार्गणाएं—देवताना पर्याप्ता ९९, गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता १०१, गर्भजतिर्यंच पंचेंद्रियना पर्याप्ता ५, अने नारकीना पर्याप्ता ७ एवं २१२ भेद लाभे.

१ वचनयोग मार्गणाएं—देवताना पर्याप्ता ९९, गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता १०१, तिर्यंचपंचेंद्रियगर्भज पर्याप्ता ५, तिर्यंचपंचेंद्रिय संमूर्छिमना ५, अने विकलेंद्रियपर्याप्ता ३ नारकीना पर्याप्ता ७ एवं २२० भेद लाभे.

९ काययोग चारकषाय, अविरति, अचक्षुदर्शन, भव्य, आहारी ए नव मार्गणाएं—देवताना १९८, मनुष्यना ३०३, तिर्यंचना ४८, अने नारकीना १४ एवं ५६३ भेद लाभे.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—भुवनपति १०, परमाधामी १५, व्यंतर १६, तिर्यग्जृंभक १०,

...षिर्या १०, पांचमुं अने मीजुं देवलोक २, किल्बिषी १, ए ६४ पर्याप्ता अने ६४
...र्याप्ता मली देवनाना १२८, गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २०२, गर्भज-
...र्यच पंचेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली १० एवं ३४० भेद लाभे.

१ पुरुषवेद मार्गणाए-देवनाना १०८, गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २०२,
गर्भजतिर्यच पंचेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली १० एवं ४१० भेद लाभे.

१ नपुंसकवेद मार्गणाए—कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०,
संमूर्छिममनुष्यना १०१, तिर्यचना ४८, अने नारकोना १४ एवं १९३ भेद लाभे.

३ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने सम्यक्त्व ए त्रण मार्गणाए—देवनाना १०८, गर्भज
मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २०२, गर्भजतिर्यच पंचेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता
मली १०, ६ नरकना पर्याप्ता अपर्याप्ता १२, सातमी नरकनो पर्याप्तो १ एवं ४२३.

२ अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए बे मार्गणाए—देवनाना १०८, कर्मभूमि
मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, गर्भजतिर्यचपंचेंद्रियना पर्याप्ता ५, सातमीनरकना
अपर्याप्ताविना नरकना १३, एवं २५६ अथवा मतांतरे—गर्भजतिर्यचपंचेंद्रियना अप-
र्याप्ता ५ भेगा गणतां २६१ भेद लाभे.

६ मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, सामायिक, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, केवलदर्शन
ए ६ मार्गणाए-कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता १५ भेद लाभे.

३ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने मिथ्यात्व ए त्रण मार्गणाए—नवलोकांतिक
अने पांच अनुत्तरविमानना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २८ भेद विना ५३२ भेद लाभे.

१ विभंगज्ञान मार्गणाए—भुवनपति १०, परमाधामी १५, व्यंतर १६, तिर्यग्-
जृंभक १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, किल्बिषी ३ अने ग्रैवेयक ९ ए ८५ पर्या-
प्ता अने ८५ अपर्याप्ता मली देवनाना १७०, कर्मभूमिगर्भजमनुष्यना पर्याप्ता १५, गर्भ-
जतिर्यच पर्याप्ता ५, नरकना १४, एवं २०४. अथवा मतांतरे—कर्मभूमिगर्भज मनुष्यना
अपर्याप्ता १५, अने गर्भजतिर्यचना अपर्याप्ता ५ ए २० भेद भेगा गणतां २२४ भेद
लाभे. अने असंज्ञी तिर्यचमांथी आवेला देवनाने पण अपर्याप्तावस्थाए विभंग न
होय, अने बीजाने होय.

२ छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धि मार्गणाए—पांचभरतना गर्भज मनुष्य
ना पर्याप्ता ५ अने पांच ऐरवतना गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता ५ एवं १० भेद लाभे.

१ देशविरति मार्गणाए—कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता १५, अने गर्भज
तिर्यचना पर्याप्ता ५ एवं २० भेद लाभे.

१ चक्षुदर्शन मार्गणाएं—देवताना पर्याप्ता ९९, गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता १०१, गर्भजतिर्यंचना पर्याप्ता ५, सम्मूर्छिम तिर्यंचना पर्याप्ता ५, अने चतुरिंद्रिय पर्याप्ता १, नरकना पर्याप्ता ७ एवं २१८ भेद लाभे.

१ कृष्णलेश्या मार्गणाएं—भुवनपति १०, परमाधामी १५, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ए ५१ पर्याप्ता तथा ५१ अपर्याप्ता मली देवताना १०२, मनुष्यना ३०३, तिर्यंचना ४८, अने छेल्ली त्रण नरकना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ६, एवं ४५९ भेद लाभे.

१ नीललेश्या मार्गणाएं—भुवनपति १०, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ए ३६ पर्याप्ता तथा एज ३६ अपर्याप्ता मली देवताना ७२, मनुष्यना ३०३, तिर्यंचना ४८ अने पांचमी, चोथी, त्रीजी, नरकना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ६, एवं ४२९. अथवा मतांतरे—परमाधामीना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० भेद भेगा गणतां ४५९. भेद लाभे.

१ कापोतलेश्या मार्गणाएं—भुवनपति १०, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ए ३६ पर्याप्ता तथा एज ३६ अपर्याप्ता मली देवताना ७२, मनुष्यना ३०३, तिर्यंचना ४८, त्रीजी, बीजी, अने पहेली नरकना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ६ एवं ४२९. अथवा मतांतरे—परमाधामीना १५ पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० भेगा गणतां ४५९ लाभे.

१ तेजोलेश्या मार्गणाएं—भुवनपति १०, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, प्रथमना देवलोक २, किल्बिषी १, ए ४९ पर्याप्ता तथा एज ४९ अपर्याप्ता मली देवताना ९८, गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २०२, गर्भजतिर्यंचना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली १०, पृथ्वीकाय, अप्काय, अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ए त्रण बादर अपर्याप्ता ३ एवं ३१३ भेद लाभे.

१ पद्मलेश्या मार्गणाएं—त्रीजुं, चोथुं, पांचमुं देवलोक ३, किल्बिषी १, लोकांतिक ९, ए १३ पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली देवताना २६, कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, गर्भज तिर्यंचना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली १० एवं ६६ भेद लाभे.

१ शुक्ललेश्या मार्गणाएं—छठाथी बारमां सुधी देवलोक ७, किल्बिषी १, ग्रैवेयक ९, अनुत्तरविमान ५, ए २२ पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली देवताना ४४, कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता ३०, गर्भजतिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता १० एवं ८४ भेद लाभे.

१ उपशम मार्गणाएं—भुवनपति १०, परमाधामी १५, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, किल्बिषी ३, ग्रैवेयक ९, ए ८५ पर्याप्ता तथा अनुत्तर विमानना अपर्याप्ता ५, सर्व मली देवताना ९०, गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता १०१, गर्भज तिर्यंचना पर्याप्ता ५ अने नरकना पर्याप्ता ७ एवं २०३ भेद लाभे.

१ अभव्य मार्गणाएं—भुवनपति १०, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०,

देवलोक १२, किल्बिपी ३, ग्रैवेयक ९ ए ७० पर्याप्ता तथा एज ७० अपर्याप्ता
मली १४० देवताना, कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, संमूर्च्छिम
मनुष्यना १०१, तिर्यंचना ४८, अने नरकना १४ एवं ३३३, अथवा एक आचार्यना
मते—अकर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ६०, अंतरद्वीपना गर्भजमनु-
ष्यना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मली ११२ एवं १७२ वधारे गणतां ५०५, तथा बीजा
आचार्यना मते–परमाधामीना पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० भेगा गणिये तो ५३५ भेद लाभे.

१ क्षायिक मार्गणाए–देवलोक १२, लोकांतिक ९, ग्रैवेयक ९, अनुत्तरविमान ५,
ए ३५ पर्याप्ता तथा एज ३५ अपर्याप्ता मली देवताना ७०, कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना
पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ३०, अकर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ६०,
तिर्यंचपंचेंद्रिय गर्भजचतुष्पद युगलिया पर्याप्ता अपर्याप्ता २, पहेली, बीजी, त्रीजी ना-
रकीना पर्याप्ता अपर्याप्ता ६, एवं १६८ भेद लाभे.

१ मिश्र मार्गणाए—भुवनपति १०, परमाधामी १५, व्यंतर १६, तिर्यग्जृंभक १०,
ज्योतिषी १०, देवलोक १२, किल्बिपी ३, ग्रैवेयक ९ ए ८५ पर्याप्ता देवताना,
गर्भज मनुष्यपर्याप्ता १०१, तिर्यंचपंचेंद्रिय गर्भजपर्याप्ता ५, नरकगतिना पर्याप्ता ७
एवं १०८ भेद लाभे.

१ शास्वादन मार्गणाए–भुवनपति १०, परमाधामी १५, व्यंतर १६, तिर्यग्जृंभ-
क १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, किल्बिपी ३, ग्रैवेयक ९ ए ८५ पर्याप्ता तथा एज
अपर्याप्ता मली देवताना १७०, गर्भज मनुष्य पर्याप्ता १०१ तथा एज १०१ अपर्याप्ता
मली २०२, तिर्यंचपंचेंद्रिय गर्भजपर्याप्ता अपर्याप्ता १०, तिर्यंचपंचेंद्रिय संमूर्च्छिम अ-
पर्याप्ता ५, विकलेंद्रिय अपर्याप्ता ३, पृथ्वीकाय, अप्काय, अने प्रत्येकवनस्पतिकाय ए
त्रण बादर अपर्याप्ता ३, नारकी पर्याप्ता ७ एवं ४०० भेद लाभे.

१ संज्ञी मार्गणाए—देवताना १९८, गर्भजमनुष्यना २०२, गर्भज तिर्यंचपंचेंद्रिय
पर्याप्ता अपर्याप्ता १०, नारकीना १४ एवं ४२४ भेद लाभे.

अत्संज्ञी मार्गणाए–संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, संमूर्च्छिम तिर्यंचपंचेंद्रियना पर्याप्ता
अपर्याप्ता १०, विकलेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता ६, एकेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता २२
एवं १३९ भेद लाभे.

१ अनाहारी मार्गणाए—देवताना अपर्याप्ता ९९, गर्भजमनुष्यना अपर्याप्ता १०१,
संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, कर्मभूमि गर्भज मनुष्यनापर्याप्ता १५, एकेंद्रिय अपर्याप्ता ११,
विकलेंद्रिय अपर्याप्ता ३, तिर्यंचपंचेंद्रिय अपर्याप्ता १०, नारकी अपर्याप्ता ७ एवं ३४७.

९७ बासठमार्गणाने विषे पांचसोत्रेसठ भेदना जीवोनी आगतिनुंद्वार–

१ नरकगति मार्गणाएं–कर्मभूमि मनुष्यना १५, संमूर्च्छिमतिर्यंचना ५ अने गर्भजतिर्यंचना ५ एवं २५ भेदना जीव आवे.

१ देवगति मार्गणाएं–गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता १०१, गर्भजतिर्यंचना ५, अने संमूर्च्छिम तिर्यंचना ५, एवं १११ भेदना जीव आवे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रियना पांच भेद, संमूर्च्छिमना पांच भेद एवं १० पर्याप्ता अने १० अपर्याप्ता मली २० भेद. तथा पांच सूक्ष्मस्थावर, पांच बादरस्थावर, एक प्रत्येकवनस्पति ए अग्यार पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २२ भेद. अने त्रणविकलेंद्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मली ६ एवं ४८ भेद तिर्यंचना होय. तथा पंदर कर्मभूमि, त्रीश अकर्मभूमि अने छप्पनअंतरद्वीपना मली संमूर्च्छिममनुष्यना १०१ भेद. अने पंदरकर्मभूमिना गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० भेद, तेमज पंदर परमाधामी, दश भुवनपति, शोल व्यंतर, दश तिर्यंकजृंभक, दश ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशान आदि ८ देवलोक, अने त्रण किल्बिषी. नव लोकांतिक, सर्व मली ८१ भेद देवताना, तेमज नारकीना ७ भेद एवं सर्वे मली २६७ भेदना जीव आवे.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं–पंदरकर्मभूमिना मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, (तेउकायना ४, अने वायुकायना ४ ए आठभेद विना) तिर्यंचना ४० भेद, तथा संमूर्च्छिममनुष्यना १०१ भेद, अने देवताना ९९. एवं सर्वे मली २७० भेदना जीव आवे.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं–संमूर्च्छिम मनुष्यना १०१, तिर्यंचना ४८, गर्भजमनुष्य पंदरकर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० भेद. एवं १७९ भेदना जीव आवे.

३ त्रणविकलेंद्रिय मार्गणाएं—उपरोक्त एकेंद्रियनी परें १७९ भेदना जीव आवे.

१९ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, योगत्रण, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, चारकषाय, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अविरति, भव्य, मिश्र, संज्ञी, आहारी, अनाहारी एवं १९ मार्गणाएं–नरकना ७, तिर्यंचना ४८, देवताना ९९, तथा पंदर कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, अकर्मभूमिना पर्याप्ता ३० भेद, अने अंतरद्वीपना पर्याप्ता ५६ भेद एवं ११६ भेद गर्भजमनुष्यना. तेमज कर्मभूमिना १५, अकर्मभूमिना ३०, अने अंतरद्वीपना ५६ एवं १०१ संमूर्च्छिमना, सर्व मली ३७१ भेदना जीव आवे.

३ पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए त्रण मार्गणाएं–तिर्यंचना ४८, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, अने पंदरकर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मलीने ३०, परमाधामी १५, भुवनपतिना १०, व्यंतरना १६, तिर्यंकजृंभक १०, ज्योतिषी १०, सौधर्म १,

ईशान १ अने किल्बिषी १ ए ६४ देवनाना एवं सर्वे मली २४३ भेदना जीव आवे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं–तिर्यचना ४८, संमूर्छिममनुष्यना १०१, अने गर्भज पंदर कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० एवं १७९ भेदना जीव आवे.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं–नरकना ७, तिर्यचना ४८, संमूर्छिममनुष्यना १०१, कर्मभूमिगर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता ३०, देवना पर्याप्ता९९, एवं २८५ भेदना जीव आवे.

७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशम, उपशम, क्षायिक, ए ७ मार्गणाएं–पृथ्वीकायना सूक्ष्म, बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता ४, तेमज अप्कायना ४, तथा वनस्पतिकायना ६, पंचेंद्रियतिर्यंच संमूर्छिमना पांच, गर्भजतिर्यंच पंचेंद्रियना पांच ए दश पर्याप्ता अने दश अपर्याप्ता मली २०, विकलेंद्रियना ६, देवनाना ९९, संमूर्छिममनुष्यना १०१, कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता ३०, अकर्मभूमि गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता ३०, अंतरद्वीपनापर्याप्ता ५६, अने नारकीना ७ एवं सर्वे ३६३ भेदना जीव आवे.

६ त्रणअज्ञान, मिथ्यात्व, अभव्य, अने सास्वादन ए ६ मार्गणाएं–पंचेंद्रियादि १०. मार्गणामां कह्या प्रमाणे ३७१ भेदना जीव आवे*

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, अने परिहारविशुद्धि ए चार मार्गणाएं–प्रथमनी नरकना ५, पृथ्वीकायना ४, अप्कायना ४, वनस्पतिकायना ६, विकलेंद्रियना ६, गर्भज अने संमूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २०, कर्मभूमि मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, संमूर्छिममनुष्यना १०१ पर्याप्ता, देवनाना ९९ एवं सर्वे मली २७० भेदना जीव आवे.

२ सूक्ष्मसंपराय, अने यथाख्यात ए बे मार्गणाएं–प्रथमनी नारकीना ४, पृथ्वीकायनो १, अप्कायनो १, प्रत्येक वनस्पतिकाय १, गर्भजतिर्यंच ५, कर्मभूमिगर्भज मनुष्यना १५, भुवनपतिना १०, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, लोकांतिक ९, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर ५ एवं सर्वे मली १०८ भेदना जीव आवे.

१ देशविरति मार्गणाएं—प्रथमनी नारकीना ६, पृथ्वीकायना ४, अप्कायना ४, वनस्पतिकायना ६, विकलेंद्रियना ६, गर्भज तिर्यंचपंचेंद्रियना पांच, संमूर्छिमना पांच ए दश पर्याप्ता अने दश अपर्याप्तामली २०, कर्मभूमिगर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, संमूर्छिममनुष्यना १०१, देवनाना ९९ एवं २७६ भेदोना जीव आवे.

२ केवलज्ञान, अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–प्रथमनी नरक ४, पृथ्वीकाय १, अप्काय १, प्रत्येकवनस्पतिकाय १, गर्भजतिर्यंच ५, कर्मभूमिगर्भजमनुष्यना १५ भुवन-

*आ ६ मार्गणाओमां नवलोकांतिक अने पांच अनुत्तरविमान एवं १४ भेदना जीवनी मार्गणा संभवति नथी. कारण तेमां सम्यक्त्व अवश्य होय छे, पछी बहुश्रुत कहे ते खरुं.

१७ बासठमार्गणाने विषे पांचसोत्रेसठ भेदना जीवोंनी आगतिनुंद्वार–

१ नरकगति मार्गणाएं–कर्मभूमि मनुष्यना १५, संमूर्च्छिमतिर्यंचना ५ अने गर्भजतिर्यंचना ५ एवं २५ भेदना जीव आवे.

१ देवगति मार्गणाएं–गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता १०१, गर्भजतिर्यंचना ५, अने संमूर्च्छिम तिर्यंचना ५, एवं १११ भेदना जीव आवे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रियना पांच भेद, संमूर्च्छिमना पांच भेद एवं १० पर्याप्ता अने १० अपर्याप्ता मली २० भेद. तथा पांच सूक्ष्मस्थावर, पांच बादरस्थावर, एक प्रत्येकवनस्पति ए अगयार पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २२ भेद. अने त्रणविकलेंद्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मली ६ एवं ४८ भेद तिर्यंचना होय. तथा पंदर कर्मभूमि, त्रीश अकर्मभूमि अने छप्पनअंतरद्वीपना मली संमूर्च्छिममनुष्यना १०१ भेद. अने पंदरकर्मभूमिना गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० भेद, तेमज पंदर परमाधामी, दश भुवनपति, सोल व्यंतर, दश तिर्यक्जृंभक, दश ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशान आदि ८ देवलोक, अने त्रण किल्बिषी. नव लोकांतिक, सर्व मली ८१ भेद देवताना, तेमज नारकीना ७ भेद एवं सर्व मली २६७ भेदना जीव आवे.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं–पंदरकर्मभूमिना मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, (तेउकायना ४, अने वायुकायना ४ ए आठभेद विना) तिर्यंचना ४० भेद, तथा संमूर्च्छिममनुष्यना १०१ भेद, अने देवताना ९९. एवं सर्व मली २७० भेदना जीव आवे.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं–संमूर्च्छिम मनुष्यना १०१, तिर्यंचना ४८, गर्भजमनुष्य पंदरकर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० भेद, एवं १७९. भेदना जीव आवे.

३ त्रणविकलेंद्रिय मार्गणाएं—उपरोक्त एकेंद्रियनी परें १७९. भेदना जीव आवे.

१९. पंचेंद्रिय, त्रसकाय, योगत्रण, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, चारकषाय, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अविरति, भव्य, मिथ्र, संज्ञी. आहारी, अनाहारी एवं १९. मार्गणाएं–नारकना ७, तिर्यंचना ४८, देवताना ९९, तथा पंदर कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, अकर्मभूमिना पर्याप्ता ३० भेद, अने अंतरद्वीपना पर्याप्ता ५६ भेद एवं ११६ भेद गर्भजमनुष्यना. तेमज कर्मभूमिना १५, अकर्मभूमिना ३०, अने अंतरद्वीपना ५६ एवं १०१ संमूर्च्छिमना, सर्व मली ३७१ भेदना जीव आवे.

३ पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए त्रण मार्गणाएं–तिर्यंचना ४८, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, अने पंदरकर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मलीने ३०, परमाधामी १५, भुवनपतिना १०, व्यंतरना १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, सौधर्म १,

ईशान १ अने किल्बिषी १ ए ६४ देवताना एवं सर्वे मली २५३ भेदना जीव आवे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणाएं-तिर्यचना ४८, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, अने गर्भज पंदर कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३० एवं १७९ भेदना जीव आवे.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं-नरकना ७, तिर्यचना ४८, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, कर्मभूमिगर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता ३०, देवना पर्याप्ता९९, एवं २८५ भेदना जीव आवे.

७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशम, उपशम, क्षायिक, ए ७ मार्गणाएं-पृथ्वीकायना सूक्ष्म, बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता ४, तेमज अप्कायना ४, तथा वनस्पतिकायना ६, पंचेंद्रियतिर्यंच संमूर्च्छिमना पांच, गर्भजतिर्यच पंचेंद्रियना पांच ए दश पर्याप्ता अने दश अपर्याप्ता मली २०, विकलेंद्रियना ६, देवताना ९९, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता ३०, अकर्मभूमि गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता ३०, अंतरद्वीपनापर्याप्ता ५६, अने नारकीना ७ एवं सर्व ३६३ भेदना जीव आवे.

६ त्रणअज्ञान, मिथ्यात्व, अभव्य, अने सास्वादन ए ६ मार्गणाएं-पंचेंद्रियादि १० मार्गणामां कह्या प्रमाणे ३७१ भेदना जीव आवे*

४ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, अने परिहारविशुद्धि ए चार मार्गणाएं-प्रथमनी नरकना ५, पृथ्वीकायना ४, अप्कायना ४, वनस्पतिकायना ६, विकलेंद्रियना ६, गर्भज अने संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली २०, कर्मभूमि मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१ पर्याप्ता, देवताना ९९ एवं सर्व मली २७० भेदना जीव आवे.

२ सूक्ष्मसंपराय, अने यथाख्यात ए बे मार्गणाएं-प्रथमनी नारकीना ४, पृथ्वीकायनो १, अप्कायनो १, प्रत्येक वनस्पतिकाय १, गर्भजतिर्यच ५, कर्मभूमिगर्भज मनुष्यना १५, भुवनपतिना १०, व्यंतर १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, लोकांतिक ९, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर ५ एवं सर्व मली १०८ भेदना जीव आवे.

१ देशविरति मार्गणाएं—प्रथमनी नारकीना ६, पृथ्वीकायना ४, अप्कायना ४, वनस्पतिकायना ६, विकलेंद्रियना ६, गर्भज तिर्यचपंचेंद्रियना पांच, संमूर्च्छिमना पांच ए दश पर्याप्ता अने दश अपर्याप्तामली २०, कर्मभूमिगर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, देवताना ९९ एवं २७६ भेदोना जीव आवे.

२ केवलज्ञान, अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं-प्रथमनी नरक ४, पृथ्वीकाय १, अप्काय १, प्रत्येकवनस्पतिकाय १, गर्भजतिर्यच ५, कर्मभूमिगर्भजमनुष्यना १५ भुवन-

* आ ६ मार्गणाओमां नवलोकांतिक अने पांच अनुत्तरविमान एवं १४ भेदना जीवनी मार्गणा संभवति नथी. कारण तेमां सम्यक्त्व अवश्य होय छे, एटलो बहुश्रुत कहे ते सत्यं

९७ बासठमार्गणाने विषे पांचसोत्रेसठ भेदना जीवोंनी आगतिनुंद्वार-

१ नरकगति मार्गणाएं-कर्मभूमि मनुष्यना १५, संमूर्च्छिमतिर्यंचना ५ अने गर्भजतिर्यंचना ५ एवं २५ भेदना जीव आवे.

१ देवगति मार्गणाएं-गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता १०१, गर्भजतिर्यंचना ५, अने संमूर्च्छिम तिर्यंचना ५, एवं १११ भेदना जीव आवे.

१ तिर्यंचगति मार्गणाएं—गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रियना पांच भेद, संमूर्च्छिमना पांच भेद एवं १० पर्याप्ता अने १० अपर्याप्ता मळी २० भेद. तथा पांच सूक्ष्मस्थावर, पांच बादरस्थावर, एक प्रत्येकवनस्पति ए अग्यार पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी २२ भेद. अने त्रणविकलेंद्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मळी ६ एवं ४८ भेद तिर्यंचना होय. तथा पंदर कर्मभूमि, त्रीश अकर्मभूमि अने छप्पनअंतरद्वीपना मळी संमूर्च्छिममनुष्यना १०१ भेद. अने पंदरकर्मभूमिना गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ३० भेद, तेमज पंदर परमाधामी, दश भुवनपति, शोल व्यंतर, दश तिर्यक्जृंभक, दश ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशान आदि ८ देवलोक, अने त्रण किल्बिषी. नव लोकांतिक, सर्वे मळी ८१ भेद देवताना, तेमज नारकीना ७ भेद एवं सर्वे मळी २६७ भेदना जीव आवे.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं-पंदरकर्मभूमिना मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ३०, (तेउकायना ४, अने वायुकायना ४ ए आठभेद विना) तिर्यंचना ४० भेद, तथा संमूर्च्छिममनुष्यना १०१ भेद, अने देवताना ९९. एवं सर्वे मळी २७० भेदना जीव आवे.

१ एकेंद्रिय मार्गणाएं-संमूर्च्छिम मनुष्यना १०१, तिर्यंचना ४८, गर्भजमनुष्य पंदरकर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ३० भेद. एवं १७९ भेदना जीव आवे.

३ त्रणविकलेंद्रिय मार्गणाएं—उपरोक्त एकेंद्रियनी परें १७९ भेदना जीव आवे.

१९ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, योगत्रण, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, चारकषाय, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अविरति, भव्य, मिश्र, संज्ञी, आहारी, अनाहारी एवं १९ मार्गणाएं-नरकना ७, तिर्यंचना ४८, देवताना ९९, तथा पंदर कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ३०, अकर्मभूमिना पर्याप्ता ३० भेद, अने अंतरद्वीपना पर्याप्ता ५६ भेद एवं ११६ भेद गर्भजमनुष्यना. तेमज कर्मभूमिना १५, अकर्मभूमिना ३०, अने अंतरद्वीपना ५६ एवं १०१ संमूर्च्छिमना, सर्व मळी ३७१ भेदना जीव आवे.

३ पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए त्रण मार्गणाएं-तिर्यंचना ४८, संमूर्च्छिममनुष्यना १०१, अने पंदरकर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने ३०, परमाधामी १५, भुवनपतिना १०, व्यंतरना १६, तिर्यक्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, सौधर्म १,

पाय, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अविरति, भव्य, संज्ञी, आहारी ए १८ मार्गणावाला नरकना १४, तिर्यंचना ४८, मनुष्यना ३०३, अने देवनाना १९८ एवं सर्व मली ५६३ भेदना जीवोंमां उपजे.

२ तेउकाय अने वायुकाय ए बे मार्गणावाला–तिर्यंचना ४८ भेदोंमां उपजे.

१ स्त्रीवेद मार्गणावाला–सातमीनरकना बे भेद विना नरकना १२, तिर्यंचना ४८, मनुष्यना ३०३ अने देवताना १९८ एवं सर्व मली ५६१ भेदना जीवोंमां उपजे.

५ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन अने क्षयोपशम ए ५ मार्गणावाला–६ नारकीना पर्याप्ता अपर्याप्ता मली १२, विकलेंद्रियना अपर्याप्ता ३, संमूर्छिम-तिर्यंचपंचेंद्रिय अपर्याप्ता ५, गर्भजतिर्यंचपर्याप्ता अपर्याप्ता मली १०, कर्मभूमि गर्भज-मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३०, देवनाना १९८, एवं २५८ भेदना जीवोंमां उपजे.

५ त्रणअज्ञान, मिथ्यात्व अने अभव्य ए पांच मार्गणावाला–नारकीना १४, तिर्यंचना ४८, मनुष्यना ३०३, अने देवनाना नवलोकांतिक अने पांचअनुत्तर ए चौद पर्याप्ता अपर्याप्ता मली अट्ठावीश विना १७०, एवं सर्व मली ५३५ भेदना जीवोमां उपजे.

१ शास्वादन मार्गणावाला–तिर्यंचना ४८, मनुष्यना ३०३, (नवलोकांतिक अने पांच अनुत्तर ए चौद पर्याप्ता अपर्याप्ता मली अट्ठावीश भेद विना) देवताना १७० भेद, एवं सर्व मली ५२१ भेदना जीवोमां उपजे.

३ मनःपर्यवज्ञान, सामायिक अने छेदोपस्थापनीय ए त्रण मार्गणावाला–देवलोक १२, लोकांतिक ९, ग्रैवेयक ९, अनुत्तरविमान ५ ए ३५ पर्याप्ता अने ३५ अपर्याप्ता मली ७० भेदना जीवोंमां उपजे.

१ परिहारविशुद्धि मार्गणावाला–प्रथमना देवलोक ८, अने लोकांतिक ९ ए १७ पर्याप्ता अपर्याप्ता मली ३४ भेदना जीवोंमां उपजे.

२ सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए बे मार्गणावाला–अनुत्तरदेवना पर्याप्ता अपर्याप्ताना मली १० भेदना जीवोंमां उपजे.

१ देशविरति मार्गणावाला–देवलोक १२, लोकांतिक ९ ए २१ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मली ४२ भेदना जीवोंमां उपजे.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणावाला–मोक्षगतिमां जाय.

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणावाला–तिर्यंचना ४८, नारकीना १४, संमूर्छिममनुष्यना १०१, अने गर्भजमनुष्यना २०२, तथा परमाधामीना १५, भुवनपति १०, व्यंतर १६, तिर्यग्जृंभक १० ए ५१ पर्याप्ता अपर्याप्ता मली देवनाना १०२ भेद, एवं सर्व मली ४६७ भेदना जीवोंमां उपजे.

१ तेजोलेश्या मार्गणावाला—भुवनपतिना १०, व्यंतरना १६, तिर्यग्जृंभक १०, ज्योतिषी १०, प्रथमना देवलोक २, किल्बिषी १, एना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ९८ भेद देवताना, तथा पृथ्वीकाय, अप्काय, अने प्रत्येकवनस्पतिकाय ए त्रणना बादर अपर्याप्ता ३, गर्भजतिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी १० भेद, गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मळी २०२ भेद, एवं ३१३ भेदना जीवोमां उपजे (?)

१ पद्मलेश्या मार्गणावाला—गर्भजतिर्यंचना पांच पर्याप्ता अने पांच अपर्याप्ता मळी १०, कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ३०, तथा सनत्कुमार, माहेंद्र, अने ब्रह्म, किल्बिषी, अने लोकांतिक ९. ए तेर देवताना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मळी २६. एवं ६६ भेदना जीवोमां उपजे.

१ शुक्ललेश्या मार्गणावाला—छठाथी बारमां सुधीना देवलोक ७, किल्बिषी १, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर ५ ए २२ पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ४४ देवताना, गर्भज कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ३०, गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी १०, एवं सर्व मळी ८४ भेदना जीवोमां उपजे (?)

१ उपशम मार्गणावाला—ज्यां सुधी उपशमपणो होय त्यां सुधी मरे नहीं, कोईजीव उपशमश्रेणीए काल करे तो तिहांथी पांच अनुत्तरविमानमां उपजे ... अपर्याप्ता मळी दशभेदना जीवोमां उपजे.

१ क्षायिकसम्यक्त्व मार्गणावाला—देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, लोकांतिक ९, ... ५ ए ३५ पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ७० भेद देवताना, पंदर कर्मभूमि गर्भजमनुष्यना ... (चतुष्पद) असंख्यवर्षायु युगलिकपर्याप्ता अने अपर्याप्ता मळी २ भेद, ... नरकना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ६ भेद एवं १०८ भेदना जीवोमां उपजे.

१ असंज्ञी मार्गणावाला—परमाधामी १५, भुवनपति १०, व्यंतर १६, ति... १०, ए ५१ देवताना, तथा अंतरद्वीपना ५६, पहेली नारकीनो १ ए १०८ अपर्याप्ता मळी २१६ तेमां तिर्यंचना ४८, संमूर्छिममनुष्यना १०१, ... मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी ३० भेदनां एवं सर्व ३०५ भेदना जीवोमां ...

२ मिश्र अने अनाहारी मार्गणावाला—मरण न होवाथी परभवे ...

---

९९. बासठमार्गणाने विषे ग्रंथीसद्दर्शनानुं द्वार—

ग्रंथीसद्दर्शनो स्वरूप कहे छे—

१—चोत्रीश अतिशय अने वाणीना पांत्रीश गुणे करी बिराजमान, ... पूजनीक, सम कुटनना स्वामी अने बारगुणे तथा आठ प्रातिहार्ये अने...

ज्ञानलब्धियें करी शोभित जे होय ते 'अरिहंत पदवी' जाणवी.

२—सम्यक्ज्ञान दर्शन अने चारित्रना धारणहार, केवलज्ञान अने केवलदर्शनें करी चौदराजलोकमां रहेला रूपी अरूपी पदार्थोने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी जाणें देखे अने अलोकना भाव पण जाणे देखे ते 'केवलीपदवी' जाणवी.

३—पंचमहाव्रत, ब्रह्मचर्यव्रत, पांचसमिति अने त्रण गुप्तिना पालनार, निदान रहित तपना करणहार, निर्दोष भिक्षाना लेनार अने क्षांत्यादिक दशविध यति धर्मना पालक जे होय तेने 'साधु पदवी' जाणवी.

४—षट्खंडपृथ्वीमां जेनी अखंड आज्ञा मनाती होय, बत्रीस हजार देश, चौद रत्न, नवनिधान, चोसठ हजार अंतेउर, चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख घोडा, छिन्नुं क्रोड पायदल अने बत्रीस हजार मुकुटबद्धराजाना स्वामी (मालिक) होय, पचवीस हजार देवता जेनी सेवा करता होय अने मनुष्यभव संबंधी सघी भोग-सामग्री जेने मलेली होय तेने 'चक्रवर्ती पदवी' जाणवी.

५—चक्रवर्तीथकी अर्द्धऋद्धिना धणी, आठ हजार देवता हमेश जेनी सेवा करता होय, छिन्नुं क्रोड मणनी शिलाने पोताना भुजबलथी उपाडी ले, त्रणखंडना अने शोलहजार अंतेउर (राणी)ना भोक्ता होय तेने 'वासुदेव पदवी' जाणवी.

६—वासुदेवनीथी सर्व ऋद्धि जेने होय अने बल पराक्रम अर्धुं होय अने पोताना भुजबलथीज सर्व शत्रुओने वश करवामां समर्थ होय तेने 'बलदेव पदवी' जाणवी.

७—बारव्रतने देश थकी अने सर्व थकी पालनार होय, सद्क्रियापात्र साधुओना उपासक होय, अरिहंत प्रवचनना दृढ विश्वास राखनार होय अने जिनाज्ञा प्रमाणे क्रिया कुशल होय तेने 'श्रावक पदवी' जाणवी.

८—श्रीदेववीतराग भगवानना वचनोंनो पूर्ण श्रद्धालु होय जैनधर्म सिवाय बीजा धर्मोने सार रूपें न समझतुं होय, निर्ग्रन्थगुरुनो उपासक होय, धर्मबुद्धियें करी चैत्य १, प्रतिमा २, ज्ञान ३, साधु ४, साध्वी ५, श्रावक ६, अने श्राविका ७ ए सात क्षेत्रोंनी पूजा प्रभावनामां पोतानो धन व्यय करतो होय अने धर्मकार्योमां कुशलता राखतो होय तेने 'सम्यक्त्व पदवी' जाणवी.

९—चारों दिशामां हजार हजार कोश सुधी जेनी आज्ञा चालती होय, नव हजार हाथी, नव लाख घोडा, नव हजार रथ, सवा क्रोड पायदलनो स्वामी होय तेने 'मांडलिक पदवी' जाणवी.

१०—त्रणलोकमां प्रशंसवा लायक, कंचनवर्णी, सुकोमल, दिव्यशरीर, कांतिनी धारण करनारी मधुर-प्रिय अने अत्यन्त सरागयुक्त वचन बोलनारी, प्रसन्न-

वदनें करी हाव भावथी मनुष्य अने देवेन्द्रोंना चित्तने वश करनारी, काम-केली करवामां सदा विलासवंत, अनुपमरूप अने बळने धारण करनारी जे होय तेने 'स्त्रीरत्न पदवी' जाणवी.

११–संग्रामनी सर्व युद्धनीतिनो जाणनार, दुर्जयसैन्य बळने जोइने पण पाछो न हठे अने पोतानो विजय मेळववामां अडग थईने युद्ध करवामां कुशलता राखनार होय तेने 'सेनापतिरत्न पदवी' जाणवी.

१२–भोजन, वस्त्र, गृह, ताम्बूलादिक सर्व सामग्री चक्रवर्तीने अने तेना सर्व परिवारने पूरे तेने 'गाथापतिरत्न पदवी' जाणवी.

१३–चक्रवर्तीने अने तेना कटकने योग्य उतारा (आवास) नी व्यवस्था करी आपे तेने 'वार्द्धिकरत्न पदवी' जाणवी.

१४–चौदविद्याने सारी रीतें जाणनार–शांतिपाठयंत्र होमादि अने कला केळववामां चतुर अने अवसर प्रमाणे शांतिनां उपायने बनावनार होय तेने 'पुरोहित रत्न पदवी' जाणवी.

१५–शरीरें लष्ट पुष्ट, सर्वलक्षणें करी शोभित, इन्द्रना ऐरावण हाथीनी ओपमा धारण करनार गढ कोटनी पोल भांगवामां अत्यंत दक्ष अने वैरियोंनी सैन्यानो अहंकार उतारवामां अखंड बलवीर्यवालो होय तेने 'हस्तिरत्न पदवी' जाणवी.

१६–विनयवंत, स्वामीभक्त, सदा यौवनवंत, संपूर्ण अश्वगुणें करी शोभित अने स्वामीनी मर्जी प्रमाणे चालनार, मानोन्मान शरीरवालो होयते 'अश्वरत्न पदवी'.

१७–दुश्मनोंना मस्तकने छेदनार, वज्रने पण भेदनार, विद्याधर अने देवताओंना ऊपर चालनार, महाशक्तिने धारण करनार अने कोईनाथी पण न रोकी शकाय एवो होय तेने 'चक्ररत्न पदवी' जाणवी.

१८–पंच वर्णारत्नोंथी बनेलो (उत्पन्न थयेलो) चक्रवर्तीनी सैन्याने चालवा माटे विषम, खाडा, पर्वत, अने ऊंची भूमिने भांजी सममार्ग करी आपनार होय तेने 'दंडरत्न पदवी' जाणवी.

१९–नाना वर्णोंना रत्नें करी चित्रित, अत्यंत सुगंधी, फूलोंनी सुगंधीने धारण करनार, नीलापुष्पनी पांखडीना समान वर्णवालो, पर्वत अने वज्रने चूर्ण करवामां समर्थ, शत्रुओंनी सैन्याने कंपावनार, अत्यंत तीक्ष्ण धारवालो अने अनेक शस्त्रोंथी पण न तोडी शकाय एवो होय तेने 'खड्गरत्न पदवी' जाणवी.

२०–शरदऋतुना चन्द्रमा समान, निन्याणुं हजार रेखायें करी शोभित, स्वर्णदंड स-

हित, नाना चित्रोंथी चित्रित, पट्ऋतुने सुख आपनार, देवविमान सदृश, मोती प्रवालें करी अलंकृत, अने मूंठाहाथ प्रमाण छतां काम पड़े त्यारे अ-ड्तालिशकोपनो विस्तारवालो थनार एवो होय तेने 'छत्ररत्नपदवी' जाणवी.

२१–श्रीवत्सना आकारे-वज्रसमान अभेद्य, समस्तप्रकारना धान्य अने शाकादिकने तत्काल उत्पन्न करनार, मोटी नदी अने समुद्रथी पार लंगाववामां समर्थ, होय हाथ प्रमाणवंत छतां काम पड़े त्यारे अड़तालिश कोश प्रमाण भूमिमां विस्तरी सके, मेघ वगेरेनो उपद्रव शांत करे तेने 'चर्मरत्न पदवी' जाणवी.

२२–प्रणजगतने आनंद देनार, रोग शोकनो हरण करनार, देवना, विद्याधर, मनुष्य, अने तिर्यचोंना उपद्रवोंनो नाशक, अंधकारमां उद्योत करनार, संग्राममां विजय मेलववनार अने शरणागतने शमाववनार होय तेने 'मणीरत्न पदवी' जाणवी.

२३–अनेक प्रकारना विषना उपद्रवोंने हटाववनार, अने नाना प्रकारना तोला मापानो करनार, अद्भुत तेजनो प्रकाशक अने चार अंगुल प्रमाणवालो होय तेने 'काकिणीरत्न पदवी' जाणवी.

उपर लखेल त्रेवीश पदवियोंमां नंबर १० थी २३ सुधीना चौदरत्न कहेला छे तेना प्रथमना सात रत्न पंचेंद्रिय अने अंतिमना सात रत्न एकेंद्रिय समजना जोइयें.

१ नरकगति मार्गणाएं—एक सम्यक्त्व पदवी लाभे.

१ तिर्यचगति मार्गणाएं—चक्र१, छत्र२, चर्म३, दंड४, खड्ग५, मणी६, काकिणी७, अश्वरत्न ८, हस्तिरत्न ९, सम्यक्त्व १०, देशविरति ११, एवं ११ पदवी होय.

१ देवगति मार्गणाएं—एक सम्यक्त्व पदवीज होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं–तीर्थंकर १, चक्रवर्ती २, वासुदेव ३, बलदेव ४, मांड-लिक ५, सेनापति ६, गाथापति ७, वार्द्धिक ८, पुरोहित ९, स्त्रीरत्न १०, सम्यक्त्व ११, देशविरति १२, सर्व विरति १३, अने केवली १४ एवं चौद पदवी होय.

३ एकेंद्रिय, पृथ्वीकाय अने [1]नपुंसकवेद मार्गणाएं–एकेंद्रियरत्ननी ७ पदवी होय.

८ त्रण विकलेंद्रिय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, अने अभव्य [illegible] मार्गणाएं–त्रेवीस पदवीमांथी कोई पदवी न होय, कदापि अभव्यजीवा लींदे [illegible]ण द्रव्यथी साधु पदवी जाणवी.

७ पंचेंद्रिय, त्रसकाय, मनोयोग, वचनयोग, पुरुषवेद, चक्षुदर्शन, संज्ञी ए ७

१ नपुंसकवेदमां तो एकेंद्रियनां ७ अने सम्यक्त्व, देशविरति, अने साधुनां, [illegible]य पदवी होय.

१ मिथ्यात्व मार्गणाएं-अनंतकालनी भवस्थिति होय.

१ असंज्ञी मार्गणाएं-पूर्वकोटीनी भवस्थिति होय.

१ अनाहारी मार्गणाएं-त्रणसमयनी भवस्थिति होय.

१०१ बासठमार्गणाने विषे जघन्योत्कृष्ट कायस्थितिनुं द्वार-

२ नरकगति अने देवगति ए बे मार्गणाएं-जघन्य दशहजारवर्ष अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी कायस्थिति होय.

१ मनुष्यगति मार्गणाएं—जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट त्रणपल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक कायस्थिति होय.

८ तिर्यंचगति, एकेंद्रिय, वनस्पतिकाय, काययोग, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अविरति, असंज्ञी ए ८ मार्गणाएं-जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, अने उत्कृष्ट अनंताकालनी होय.

३ त्रणविकलेंद्रिय मार्गणाएं—जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, अने उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्षनी.

१ पंचेंद्रिय मार्गणाएं—जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, अने उत्कृष्ट एकहजार सागरोपम साधिकनी कायस्थिति होय.

४ पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय ए चार मार्गणाएं-जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, अने उत्कृष्ट असंख्यातकालनी कायस्थिति होय.

१ त्रसकाय मार्गणाएं-जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट बेहजार सागरोपम संख्यातवर्ष अधिकनी कायस्थिति होय.

४ मनोयोग, वचनयोग, लोभ, सूक्ष्मसंपराय ए ४ मार्गणाएं-जघन्य एक समयनी, अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनी कायस्थिति होय.

१ पुरुषवेद मार्गणाएं-जघन्य अंतर्मुहूर्त्त अने उत्कृष्ट पृथक्त्व १०० सागरोपमनी.

१ स्त्रीवेद मार्गणाएं—जघन्य एकसमयनी अने उत्कृष्ट एकसोंदश पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिकनी कायस्थिति होय.

१ नपुंसकवेद मार्गणाएं-जघन्य एकसमयनी, उत्कृष्ट अनंतकालनी कायस्थिति होय.

५ क्रोध, मान, माया, उपशम. अने मिश्र ए पांच मार्गणाएं-जघन्य अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनी कायस्थिति होय.

३ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, क्षयोपशम ए त्रण मार्गणाएं, जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, अने उत्कृष्ट छासठ सागरोपमसाधिक होय.

२ अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन ए बे मार्गणाएं-जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट ६६ सागरोपमनी कायस्थिति होय.

२ मनःपर्यवज्ञान अने यथाख्यात ए बे मार्गणाएं-जघन्य एकसमयनी अने उत्कृष्ट देशेऊनी एक पूर्वकोटीनी होय.

? सामायिक, छेदोपस्थापनीय, अने देशविरति ए त्रण मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्तनी अने उत्कृष्ट देशेऊनी पूर्वक्रोडीनी कायस्थिति होय.

२ केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे मार्गणाएं–जघन्य एक जीवाश्रित सादि अनंत, अने उत्कृष्ट अनंता जीवाश्रित अनादि अनंतकालनी कायस्थिति होय.

? विभंगज्ञान मार्गणाएं—जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम अधिक कायस्थिति होय.

? परिहारविशुद्धि मार्गणाएं–अढारमासनी कायस्थिति होय.

? चक्षुदर्शन मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट एकहजार सागरोपम अधिकनी कायस्थिति होय.

? अचक्षुदर्शन मार्गणाएं–अभव्य आश्रयी अनादि अनंत अने भव्य आश्रयी अनादिसांतकालनी होय.

? कृष्णलेश्या मार्गणाएं—जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम ऊपर अंतर्मुहूर्तनी कायस्थिति होय.

? नीललेश्या मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्ट दशसागरोपम ऊपर एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय.

? कापोतलेश्या मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट त्रणसागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय.

? तेजोलेश्या मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट बेसागरोपम ऊपर पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय.

? पद्मलेश्या मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट दस सागरोपम अंतर्मुहूर्ते अधिक.

? शुक्ललेश्या मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम अधिक होय.

? भव्य मार्गणाएं–अनादि अनंत अने अनादि सांतकालनी कायस्थिति होय.

? अभव्य मार्गणाएं–अनादि अनंतकालनी कायस्थिति होय.

? क्षायिक मार्गणाएं–सादि अनंतकालनी कायस्थिति होय.

? सास्वादन मार्गणाएं–जघन्य एकसमय, उत्कृष्ट छ आवली कायस्थिति होय.

? मिथ्यात्व मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अभव्य आश्रयी अनादि अनंत कालनी कायस्थिति अने भव्य आश्रयी अनादि सांत होय.

? संज्ञी मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्ट सो पृथक्त्व सागरोपम साधिक कालनी कायस्थिति होय.

? आहारी मार्गणाएं–जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट असंख्यातकालनी होय.

? अनाहारी मार्गणाएं–जघन्य एकसमय अने उत्कृष्ट अनंतकाल एकसिद्ध आश्रयी सादि अनंतकालनी कायस्थिति होय.

आ ग्रन्थमां आवेल प्रकृतियोंनी संज्ञा–

१ निद्राद्विक–निद्रा १ अने प्रचला २.

२ स्त्यानर्द्धि (थीणद्धि) त्रिक–निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला २ अने थीणद्धि ३.

३ निद्रापंचक–निद्रा १, निद्रानिद्रा २, प्रचला ३, प्रचलाप्रचला ४ अने थीणद्धि ५.

४ दर्शनद्विक–चक्षुदर्शन १, अने अचक्षुदर्शन २.

५ दर्शनत्रिक–चक्षु १, अचक्षु २ अने अवधिदर्शन ३.

६ दर्शनचतुष्क–चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३ अने केवलदर्शन ४.

७ दर्शनमोहनीयत्रिक–समकितमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय २ अने मिश्रमोहनीय ३.

८ कषायचतुष्क–अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३ अने संज्वन ४.

९ अनंतानुबंधिचतुष्क—अनंतानुबंधी–क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४.

१० अप्रत्याख्यानीचतुष्क—अप्रत्याख्यानी–क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४.

११ प्रत्याख्यानीचतुष्क—प्रत्याख्यानी–क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४.

१२ संज्वलनचतुष्क–संज्वलन-क्रोध १ मान २, माया ३ अने लोभ ४.

१३ कषायषोडशक–अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४ अने संज्वलन ४.

१४ नवनोकषाय–हास्य १, रति २, अरति ३, भय ४, शोक ५, दुगंछा (जुगुप्सा) ६, पुरुषवेद ७, स्त्रीवेद ८ अने नपुंसकवेद ९.

१५ हास्यषट्क–हास्य १, रति २, अरति ३, भय ४, शोक ५ अने दुगंछा ६.

१६ हास्यादियुगल—हास्य, रति १, अने शोक, अरति २.

१७ गतिचतुष्क–मनुष्यगति १, तिर्यंचगति २, देवगति ३ अने नरकगति ४.

१८ आनुपूर्वीचतुष्क–मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी २, देवानुपूर्वी ३ अने नरकानुपूर्वी ४.

१९ मनुष्यद्विक–मनुष्यगति १, अने मनुष्यानुपूर्वी २.

२० तिर्यंचद्विक–तिर्यंचगति १, अने तिर्यंचानुपूर्वी २.

२१ देवद्विक–देवगति १, देवानुपूर्वी २.

२२ नरकद्विक–नरकगति १ अने नरकानुपूर्वी २.

२३ मनुष्यत्रिक–मनुष्यगति १, मनुष्यायु २ अने मनुष्यानुपूर्वी ३.

२४ तिर्यंचत्रिक–तिर्यंचगति १ तिर्यंचायु २. अने तिर्यंचानुपूर्वी ३.

२५ देवत्रिक–देवगति १, देवायु २ अने देवानुपूर्वी ३.

२६ नरकत्रिक–नरकगति १, नरकायु २ अने नरकानुपूर्वी ३.

२७ शरीरपंचक–औदारिक १, वैक्रिय २, आहारक ३, तैजस ४ अने कार्मण ५.

२८ औदारिकद्विक–औदारिकशरीर १ अने औदारिकांगोपांग २.

२९ औदारिकचतुष्क–औदारिकशरीर १, औदारिकांगोपांग २, औदारिकबंधन ३ अने औदारिकसंघातन ४.

३० वैक्रियद्विक–वैक्रियशरीर १, अने वैक्रियांगोपांग २.

३१ वैक्रियचतुष्क–वैक्रियशरीर १, वैक्रियांगोपांग २, वैक्रियबंधन ३ अने वैक्रियसंघातन ४.

३२ आहारकद्विक–आहारकशरीर १, अने आहारकांगोपांग २.

३३ आहारकचतुष्क–आहारकशरीर १, आहारकांगोपांग २, आहारकबंधन ३ अने आहारकसंघातन ४.

३४ प्रकारांतरे–औदारिकद्विक–औदारिककाययोग १ अने औदारिकमिश्रकाययोग २.

वैक्रियद्विक–वैक्रियकाययोग १, अने वैक्रियमिश्रकाययोग २.

आहारकद्विक–आहारककाययोग १ अने आहारकमिश्रकाययोग २.

प्रथम संघयण–वज्रर्षभनाराच.

प्रथमना त्रणसंघयण–वज्रर्षभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३.

३९ वर्णचतुष्क–वर्ण १, गंध २, रस ३ अने स्पर्श ४.

४० खगतिद्विक–शुभविहायोगति १, अने अशुभविहायोगति २.

४१ प्रत्येकाष्टक–पराघात १, उच्छ्वास २ आताप ३, उद्योत ४, अगुरुलघु ५, तीर्थंकर ६, निर्माण ७, उपघात ८.

४२ अगुरुलघुचतुष्क–अगुरुलघु १, उच्छ्वास २, उपघात ३ अने पराघात ४

४३ त्रसद्विक–त्रस १ अने बादर २.

४४ त्रसत्रिक–त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३.

४५ त्रसचतुष्क–त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३ अने प्रत्येक ४.

४६ स्थिरषट्क–स्थिर १, शुभ २, सौभाग्य ३, आदेय ४, सुस्वर ५ अने यशःकीर्ति ६.

४७ त्रसदशक–त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३, प्रत्येक ४, स्थिर ५, शुभ ६, सौभाग्य ७, आदेय ८, सुस्वर ९ अने यशःकीर्ति १०.

४८ स्थावरद्विक–स्थावर १, सूक्ष्म २.

४९ स्थावरत्रिक–स्थावर १, सूक्ष्म २, अने अपर्याप्त ३.

५० स्थावरचतुष्क–स्थावर १, सूक्ष्म २, अपर्याप्त ३ अने साधारण ४.

५१ अस्थिरषट्क–अस्थिर १, अशुभ २, दौर्भाग्य ३, दुःस्वर ४, अनादेय ५ अने अयशःकीर्ति ६.

५२ स्थावरदशक–स्थावर १, सूक्ष्म २, अपर्याप्त ३, साधारण ४, अस्थिर ५, अशुभ ६, दौर्भाग्य ७, दुःस्वर ८, अनादेय ९ अने अयशःकीर्ति १०.

आ ग्रन्थमां आवेल प्रकृत्तियोंनी संज्ञा–

१ निद्राद्विक–निद्रा १ अने प्रचला २.

२ स्त्यानर्द्धि (थीणद्धि) त्रिक–निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला २ अने थीणद्धि ३.

३ निद्रापंचक–निद्रा १, निद्रानिद्रा २, प्रचला ३, प्रचलाप्रचला ४ अने थीणद्धि ५.

४ दर्शनद्विक–चक्षुदर्शन १, अने अचक्षुदर्शन २.

५ दर्शनत्रिक–चक्षु १, अचक्षु २ अने अवधिदर्शन ३.

६ दर्शनचतुष्क–चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३ अने केवलदर्शन ४.

७ दर्शनमोहनीयत्रिक–समकितमोहनीय १, मिथ्यात्वमोहनीय २ अने मिश्रमोहनीय ३.

८ कषायचतुष्क–अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३ अने संज्वन ४.

९ अनंतानुबंधिचतुष्क—अनंतानुबंधी–क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४.

१० अप्रत्याख्यानीचतुष्क—अप्रत्याख्यानी–क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४.

११ प्रत्याख्यानीचतुष्क—प्रत्याख्यानी–क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४.

१२ संज्वलनचतुष्क–संज्वलन–क्रोध१ मान २, माया ३ अने लोभ ४.

१३ कषायषोडशक–अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४ अने संज्वलन ४.

१४ नवनोकषाय–हास्य १, रति २, अरति ३, भय ४, शोक ५, दुगंछा (जुगुप्सा) ६, पुरुषवेद ७, स्त्रीवेद ८ अने नपुंसकवेद ९.

१५ हास्यषट्क–हास्य १, रति २, अरति ३, भय ४, शोक ५ अने दुगंछा६.

१६ हास्यादियुगल—हास्य, रति १, अने शोक, अरति २.

१७ गतिचतुष्क–मनुष्यगति१, तिर्यंचगति २, देवगति ३ अने नरकगति ४.

१८ आनुपूर्वीचतुष्क–मनुष्यानुपूर्वी१, तिर्यंचानुपूर्वी २, देवानुपूर्वी ३ अने नरकानुपूर्वी ४.

१९ मनुष्यद्विक–मनुष्यगति १, अने मनुष्यानुपूर्वी २.

२० तिर्यंचद्विक–तिर्यंचगति१, अने तिर्यंचानुपूर्वी २.

२१ देवद्विक–देवगति १, देवानुपूर्वी २.

२२ नरकद्विक–नरकगति १ अने नरकानुपूर्वी २.

२३ मनुष्यत्रिक–मनुष्यगति १, मनुष्यायु २ अने मनुष्यानुपूर्वी ३.

२४ तिर्यंचत्रिक–तिर्यंचगति १ तिर्यंचायु २. अने तिर्यंचानुपूर्वी ३.

२५ देवत्रिक–देवगति १, देवायु २ अने देवानुपूर्वी ३.

२६ नरकत्रिक–नरकगति १, नरकायु २ अने नरकानुपूर्वी ३.

२७ शरीरपंचक–औदारिक १, वैक्रिय २, आहारक ३, तैजस ४ अने कार्मण ५.

२८ औदारिकद्विक–औदारिकशरीर १ अने औदारिकांगोपांग २.

२९ औदारिकचतुष्क—औदारिकशरीर १, औदारिकांगोपांग २, औदारिकबंधन ३ अने औदारिकसंघातन ४.

३० वैक्रियद्विक–वैक्रियशरीर १, अने वैक्रियांगोपांग २.

३१ वैक्रियचतुष्क—वैक्रियशरीर १, वैक्रियांगोपांग २, वैक्रियबंधन ३ अने वैक्रियसंघातन ४.

३२ आहारकद्विक–आहारकशरीर १, अने आहारकांगोपांग २.

३३ आहारकचतुष्क–आहारकशरीर १, आहारकांगोपांग २, आहारकबंधन ३ अने आहारकसंघातन ४.

३४ प्रकारांतरे–औदारिकद्विक–औदारिककाययोग १ अने औदारिकमिश्रकाययोग २.

वैक्रियद्विक—वैक्रियकाययोग १, अने वैक्रियमिश्रकाययोग २.

आहारकद्विक–आहारककाययोग १ अने आहारकमिश्रकाययोग २.

प्रथम संघयण–वज्रर्षभनाराच.

प्रथमना त्रणसंघयण–वज्रर्षभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३.

३९ वर्णचतुष्क–वर्ण १, गंध २, रस ३ अने स्पर्श ४.

४० खगतिद्विक—शुभविहायोगति १, अने अशुभविहायोगति २.

४१ प्रत्येकाष्टक–पराघात १, उच्छ्वास २ आतप ३, उद्योत ४, अगुरुलघु ५, तीर्थंकर ६, निर्माण ७, उपघात ८.

४२ अगुरुलघुचतुष्क–अगुरुलघु १, उच्छ्वास २, उपघात ३ अने पराघात ४

४३ त्रसद्विक–त्रस १ अने बादर २.

४४ त्रसत्रिक–त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३.

४५ त्रसचतुष्क–त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३ अने प्रत्येक ४.

४६ स्थिरषट्क–स्थिर १, शुभ २, सौभाग्य ३, आदेय ४, सुस्वर ५ अने यशःकीर्त्ति ६.

४७ त्रसदशक–त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३, प्रत्येक ४, स्थिर ५, शुभ ६, सौभाग्य ७, आदेय ८, सुस्वर ९ अने यशःकीर्त्ति १०.

४८ स्थावरद्विक–स्थावर १, सूक्ष्म २.

४९ स्थावरत्रिक–स्थावर १, सूक्ष्म २, अने अपर्याप्त ३.

५० स्थावरचतुष्क–स्थावर १, सूक्ष्म २, अपर्याप्त ३ अने साधारण ४.

५१ अस्थिरषट्क–अस्थिर १, अशुभ २, दौर्भाग्य ३, दुस्वर ४, अनादेय ५ अने अपयशःकीर्त्ति ६.

५२ स्थावरदशक–स्थावर १, सूक्ष्म २, अपर्याप्त ३, साधारण ४, अस्थिर ५, अशुभ ६, दौर्भाग्य ७, दुस्वर ८, अनादेय ९ अने अपयशःकीर्त्ति १०.

५३ त्रसनवक–त्रस१, बादर२, पर्याप्त३, प्रत्येक ४, स्थिर५, शुभ६, सौभाग्य ७, सुस्वर ८ अने आदेय ९.

५४ वैक्रियाष्टक–वैक्रियशरीर१, वैक्रियांगोपांग २, वैक्रियबंधन ३, वैक्रियसंघातन ४, नरकगति५, नरकानुपूर्वी ६, देवगति७, देवानुपूर्वी८.

५५ एकेन्द्रियत्रिक–एकेन्द्रिय १, स्थावर २, अने आताप ३.

५६ उद्योतचतुष्क–उद्योत १, तिर्यंचगति २, तिर्यंचायु ३ अने तिर्यंचानुपूर्वी ४.

५७ जातिपंचक–एकेन्द्रिय १, द्वीन्द्रिय २, त्रीन्द्रिय ३, चतुरिन्द्रिय ४ अने पंचेन्द्रिय ५.

५८ जातिचतुष्क–एकेंद्रिय १, द्वीन्द्रिय २, त्रीन्द्रिय ३ अने चतुरिंद्रिय ४.

५९ सौभाग्यचतुष्क–सौभाग्य १, सुस्वर २, आदेय ३, यशःकीर्त्ति ४.

६० दौर्भाग्यचतुष्क–दौर्भाग्य १, दुस्वर २, अनादेय ३, अयशःकीर्त्ति ४.

६१ सूक्ष्मद्विक–सूक्ष्म १ अने अपर्याप्त २

६२ सूक्ष्मत्रिक–सूक्ष्म १, अपर्याप्त २ अने साधारण ३.

६३ वैक्रियाष्टक–वैक्रियद्विक २, देवत्रिक ३ अने नरकत्रिक ३.

६४ त्रसअष्टक–त्रस १, बादर २, प्रत्येक ३, पर्याप्त ४, सौभाग्य ५, सुस्वर ६, आदेय ७ अने यशःकीर्त्ति ८.

पंदर वन्धनना अर्थ–

१ औदारिकऔदारिकबंधन––चक्रवर्ती पोते भोग करवा निमित्ते बीजो औदारिक शरीर करे ते.

२ औदारिकतैजसबंधन–औदारिक शरीर वडे मुनिराज जे तैजस पूतलुं निकाले ते.

३ औदारिककार्मणबंधन–मरण समयमां आत्मप्रदेश निकली बीजी गतिने स्पर्शवा माटे पोताना औदारिक पुद्गल ग्रहण करे ते.

४ औदारिकतैजसकार्मणबंधन––औदारिकशरीर सहित मुनिराज तैजसशरीर निकालवां साथे कार्मणनुं निकाले ते.

५ वैक्रियवैक्रियबंधन–देवता अने नारकी क्रीडा करवा माटे अथवा शत्रुने मारवा माटे बीजुं वैक्रिय शरीर बनावे ते.

६ वैक्रियतैजसबंधन–देवता अने नारकी अत्यंत क्रोधना कारणथी तैजसरूप आत्मप्रदेश निकाले ते.

७ वैक्रियकार्मणबंधन––देवता अने नारकी मरण समयमां बीजी गतिने स्पर्शवा माटे आत्मप्रदेश काढी वैक्रियनुं ग्रहण करे ते.

८ वैक्रियतैजसकार्मणबंधन–देवता अने नारकी अत्यंत क्रोधथी तैजसरूप आत्मप्रदेशने तैजसकार्मणरूप आत्मप्रदेश संयुक्त निकाले ते.

९ आहारिकआहारिकबंधन—चौद-पूर्वधारी मुनिराज संदेह पूछवा निमित्ते आहारक पूतलुं करी केवली भगवान पासे मोकले, जो केवली न मले तो आहारक पूतलाथी आहारक करी केवली पासे जइ संदेह पूछे ते.

१० आहारिकतैजसबंधन—संदेह पूछवा निमित्ते आहारिकशरीरथी निकल्यो त्यारे कोइक मुनिने उपसर्ग थतुं देखी सुखी करवा निमित्ते शुभतैजस करे ते.

११ आहारककार्मणबंधन—मुनिराज आहारकरूप आत्मप्रदेश साथे कार्मणरूप आत्मप्रदेश निकाले ते.

१२ आहारिकतैजसकार्मणबंधन—मुनिराज आहारकशरीरी कोइकने सुखी करवा माटे तैजसतनु करे ते साथे कार्मणरूप आत्मप्रदेश निकाले ते.

१३ तैजसतैजसबंधन—शत्रु मित्रने मारवा अथवा सुखी करवा निमित्ते तैजसशरीर करे, जो त्यां शत्रु मित्र न मले तो तैजसथी बीजुं तैजस तनु बनावे ते.

१४ तैजस कार्मणबंधन—मुनिवर तैजसतनु साथे कार्मणरूप आत्मप्रदेश निकाले ते.

१५ कार्मणकार्मणबंधन—मुनिराज कार्मणदेशसंयुक्त आहारकथी आहारक करे, तैजसथी तैजस करे ते.

प्रमाणसिद्धान्तविरुद्धमत्र, यत्किंचिदुक्तं मतिमान्द्यदोषात् ।
मात्सर्यमुत्सार्य तदार्यविज्ञाः, प्रसादभावाय विशोधयन्तु ॥ १ ॥

श्रीगुरुगुणाष्टकम् ।

भुजङ्गप्रयातं-छन्दः-

गुरोः पादपद्मद्वये संप्रलग्नं,
मिलिन्दायमानं मदीयं मनः स्यात् ।
विशुद्धाऽऽत्मनः श्रीलराजेन्द्रसूरे-
र्विचित्रं पवित्रं चरित्रं तनोमि ॥ १ ॥
प्रशान्तस्वरूपं सदा ध्यानमग्नं,
जगज्जीवजीवातुभूताऽऽगमाऽऽढ्यम् ।
तपःकर्मनिष्ठं मनोज्ञप्रतिष्ठं,
गुरुं पूज्यराजेन्द्रसूरिं नमामि ॥ २ ॥

चिरोलापुरस्थान् चिराद् जातिवाह्यान्,
स्वकीयप्रभावाज्जनानुद्दधार ।
जिनेशप्रतिष्ठां पुराऽऽहोरसंज्ञे,
महासङ्घसंभारतोऽचीकरद् यः ॥ ३ ॥
तथा त्रिस्तुतिं हारिभद्रीययुक्त्या,
समक्षं बुधानां स्फुटं व्याकरोद् यः ।
जिनाऽऽज्ञाविहीनं मतं लुम्पकानां,
निरास्थद् जिनाऽऽदर्शसंस्थापनेन ॥ ४ ॥
भवस्थान् जनान् दुःषमारप्रसूता-
नमन्दाज्ञताध्वान्तनष्टान् निरीक्ष्य ।
निधानं समस्ताऽऽगमानामकार्षीत्,
तदुद्धारहेतुं च राजेन्द्रकोशम् ॥ ५ ॥
भवाब्धिं व्यथोर्वाङ्गिना संपरीतं,
विना संयमं न क्षमा निस्तरीतुम् ।
सकर्णा जना देशनां मे शृणुध्वं,
द्रुतं यूयमित्थं दिदेश प्रशस्तम् ॥ ६ ॥
सदा श्रावकाणां यथाऽऽलोचनाभि-
र्मुनीनां तथा सारणावारणाभिः ।
द्रुतं दूरमापादयन् दोषमार्गान्,
स्वमाचार्ययोग्यं व्यनक्ति स्म लोके ॥ ७ ॥
समस्ताऽऽगमानां गृहीत्वा तु सारं,
जनानां मुदं देशनाभिर्दिशन् यः ।
निजोत्कृष्टचारित्रसंपालनार्थं,
मरौ मालवे गुर्जरे च व्यहार्षीत् ॥ ८ ॥
मुनिश्रीयतीन्द्रेण श्रीमच्चरित्रं,
भुजङ्गप्रयातेन वृत्तेन बद्धम् ।
पठेत् कोऽपि भक्त्या पवित्रान्तराऽऽत्मा,
सुखं तस्य सर्वं भवेद् भावशुद्धेः ॥ ९ ॥

सिद्ध थवानो मान–

१ पहेली नरकना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
२ बीजी नरकना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
३ त्रीजी नरकना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
४ चोथी नरकना नीकल्या एकसमये ४ सिद्ध थाय.
५ भवनपति देवना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
६ भवनपति देवीना नीकल्या एकसमये ५ सिद्ध थाय.
७ पृथ्वीना नीकल्या एकसमये ४ सिद्ध थाय.
८ पाणीना नीकल्या एकसमये ४ सिद्ध थाय.
९ वनस्पतिना नीकल्या एकसमये ६ सिद्ध थाय.
१० पंचेंद्रिय तिर्यंच गर्भजना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
११ तिर्यंच स्त्रीना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
१२ मनुष्य पुरुषना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
१३ मनुष्य स्त्रीना नीकल्या एकसमये २० सिद्ध थाय.
१४ व्यंतर देवना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
१५ व्यंतरनी देवीना नीकल्या एकसमये ५ सिद्ध थाय.
१६ ज्योतिषी देवना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
१७ ज्योतिषी देवीना नीकल्या एकसमये २० सिद्ध थाय.
१८ वैमानिक देवना नीकल्या एकसमये १०८ सिद्ध थाय.
१९ वैमानिक देवीना नीकल्या एकसमये २० सिद्ध थाय.
२० स्वलिंगी सिद्ध थाय तो १०८ सिद्ध थाय.
२१ अन्यलिंगी सिद्ध थाय तो १० सिद्ध थाय.
२२ गृहस्थलिंगी सिद्ध थाय तो ४ सिद्ध थाय.
२३ स्त्रीलिंगे २० सिद्ध थाय.
२४ पुरुषलिंगे १०८ सिद्ध थाय.
२५ नपुंसकलिंगे १० सिद्ध थाय.
२६ ऊर्ध्वलोके ४ सिद्ध थाय.
२७ अधोलोके २० सिद्ध थाय.
२८ तिर्छालोके १०८ सिद्ध थाय.
२९ उत्कृष्ट अवगाहनावाला एकसमये २ सिद्ध थाय.

३० जघन्य अवगाहनावाला एकसमये ४ सिद्ध थाय.
३१ मध्यम अवगाहनावाला एकसमये १०८ सिद्ध थाय.
३२ समुद्रमां २ सिद्ध थाय.
३३ नदीप्रमुख शेषजलमां ३ सिद्ध थाय.
३४ तीर्थमां १०८ सिद्ध थाय.
३५ अतीर्थमां १० सिद्ध थाय.
३६ तीर्थंकर २० सिद्ध थाय.
३७ अतीर्थंकर १०८ सिद्ध थाय.
३८ स्वयंबुद्ध ४ सिद्ध थाय.
३९ प्रत्येकबुद्ध १० सिद्ध थाय.
४० बुद्धबोधि १०८ सिद्ध थाय.
४१ एक सिद्धा ते एकसमये १ सिद्ध थाय.
४२ अनेक सिद्धा ते एकसमये उत्कृष्टा १०८ सिद्ध थाय.
४३ विजय विजय प्रत्ये एकसमये वीश वीश सिद्ध थाय.
४६ भद्रशालवन ४४, नंदनवन ४५, सोमनसवन ४६, ए त्रणमां चार चार सिद्धथाय.
४७ पंडकवनमां २ सिद्ध थाय.
४८ अकर्मभूमिमां अपहरणवडे १० सिद्ध थाय.
४९ कर्मभूमिमां १०८ सिद्ध थाय.
५३ पहेले ५०, बीजे ५१, पांचमे ५२, छट्ठे ५३ ए चार आरे अपहरणथी १० सिद्ध थाय.
५५ त्रीजे ५४, चोथे ५५ ए बे आरे १०८ सिद्ध थाय.
५७ अवसर्पिणी ५६, उत्सर्पिणी ५७ ए बेमां १०८ सिद्ध थाय.
५८ नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमां १०८ सिद्ध थाय.
५९ एकथी आरंभीने बत्रीश सिद्ध थाय तो ८ समय सुधी.
६० तेत्रीशथी आरंभीने अडतालीश सुधी सिद्ध थाय तो ७ समय सुधी.
६१ ओगणपचासथी आरंभीने साठ सुधी सिद्ध थाय तो ६ समय सुधी.
६२ एकसठथी आरंभीने बोंतेर सुधी सिद्ध थाय तो ५ समय सुधी.
६३ तोंतेरथी आरंभीने चोराशी सुधी सिद्ध थाय तो ४ समय सुधी.
६४ पंचाशीथी आरंभीने छन्नु सुधी सिद्ध थाय तो ३ समय सुधी.
६५ सत्ताणुथी आरंभीने एकसो ने बे सुधी सिद्ध थाय तो २ समय सुधी.
६६ एकसो त्रणथी आरंभीने एकसो आठ सुधी सिद्ध थाय तो १ समय सुधी.

शुद्धि-पत्रक-

अशुद्ध—	शुद्ध—	पृष्ठ	पंक्ति
अज्ञान	अज्ञानत्व	१५	२८
अज्ञान	अज्ञानत्व	१६	१
अज्ञान	अज्ञानत्व	"	११
अज्ञान	अज्ञानत्व	"	१५
अज्ञान	अज्ञानत्व	"	२६
अज्ञान	अज्ञानत्व	१७	१९
आहारकद्विक	देवायु अने नरकायु	३३	२४
आहारकद्विक	देवायु अने नरकायु	"	२६
त्रण मार्गणाए	चार मार्गणाए	४१	१८
गति १	नरकगति १	४२	१
प्रथमना	प्रथम विना	४८	१२
स्थिर	अस्थिर	५४	१६
अनंतानुबंधीचतुष्क, मिश्रमोहनीय विना	अनंतानुबंधिचतुष्क विना	५८	१०
कषायचतुष्क चार	कषाय चार	६१	२१
कषायचतुष्क चार	कषाय चार	६३	१२
१३ प्रकृतिमां चार	तेर प्रकृतिनो च चार	७१	११
नहि ते पण वेद	पण पुरुषवेद	७९	२१
६६ अने ६७ प्रकृतिमां च वे	६६ प्रकृतिनो पण	८७	२०
उपरोक्त मार्गणामां-	च मार्गणामां	"	"
मान १ माया २ अने लोभ ३ च त्रण	प्र-मान ४. माया ४. लोभ ४ च १२ प्र-	९४	२
"	"	"	६
"	"	"	७
"	"	"	८
"		"	९
मिश्रमोहनीय विना	मिश्रमोहनीय समेत	९८	१२
अनंतानुबंधी	अनंतानुबंध्यादि	१०२	१९
३१।३१	३०।३१	११४	२
सत्तरमां उदयस्थानकमां बीजी रीते कहेल ५०	सोलमां उदयस्थानकमां बीजी रीते कहेल ४९	१२०	७
५२ प्रकृति	५१ प्रकृति	१२०	८
अढारमां उदयस्थानकमां आठमी रीते कहेली ५१	सत्तरमां उदयस्थानकमां छठ्ठी रीते कहेली ५०	१२१	११
५३ प्रकृति	५२ प्रकृति	१२१	२०
वैक्रियद्विक	वैक्रियत्रिक	१२४	१४
मनुष्यने	वैक्रियमनुष्यने	१२७	२१
विकलेन्द्रियनी पेठे	पंचेन्द्रियनी पेठे	१३०	२१
वेदनीय विना	वेदनीय, आयु विना	१४२	१०
कमी	कमती	१४४	१४
मिथ्यात्वमोहनीय विना २३	मिथ्यात्वमोहनीय अने	१५०	२१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
जीयने	जीयने, तथा	१५२	१
तें ममयमां	जे ममयमां	१५४	४
७५।७६।७९।८०	७५।७६।७९।८०।८८।८९।९२।९३	१७६	१३
त्रण गुणठाणें	त्रणगुणठाणामांथी मिश्रगुणठाणें	१७९	४
नवमां गुणठाणाना	९ नी सत्ता अनिवृत्तिना प्रथम भागे	१८८	८
१३ भांगा	१३ भांगामांना	"	"
मतांतरे	मतांतरेनो	"	२४
४ ना उदयना १, अने ५ ना उदयनो१	९ना बंधे ४ना उदयनो१अने५नाउदयनो१	१८९	८
त्रण कषाय १२	त्रण कषायनी १२	१९१	८
गुणठाणें होय	गुणठाणा होय	२००	१८
सुधी त्रण	सुधी चार	२०१	२
प्रमनना	प्रथमना	२०५	११
१ चोवीशी लाभे	१ षट्पद लाभे	२०७	३
मनःपर्यय	मनःपर्यव	२०९	२०
२८।२७।२६	२८।२७।२४	२१०	२५
उदयस्थानकें	ए त्रण उदयस्थानकें	२१४	१८
उदयस्थानकना चार	चार उदयस्थानकना	२२७	४
भाषापर्याप्तियें पर्याप्ता	भाषापर्याप्ति	२३३	३०
उदयस्थानकें	उदयस्थानकें उपजे एवं	२३४	४
आहारक	एवं आहारक	"	५
उदयस्थानक होय	उदयस्थानक न होय	२४४	१२
तिर्यंचना ८	वैक्रियतिर्यंचना ८	"	२३
गणीये	प्रातपणा आश्रयी गणिये	२४७	१५
३४५६ भांगा	३४५६ भांगा थाय	"	१७
मनुष्यतिर्यंचना	ए प्रकारे मनुष्य.तिर्यंचना छ संघयणे "		"
बध पामीये	उदय पामीये	२५८	३०
एक काययोग	एक योग	२६२	२०
एक कायाना भांगा ६	छ कायाना भांगा ६	२६४	६
त्रण विकल्पना	चार विकल्पना	२६७	१०
हेतुबंध	बंधहेतु	"	२७
१५५ विकल्पना	१२८ विकल्पना	२७४	१०
आठ विकल्पना	आठ स्थानकना	२७६	१५
गुणठाणें	गुणठाणो	२७८	१९
योगनो कह्यो	योगनो ना कह्यो	२८९	२४
अक्ल	अकल	३०४	१६
अपर्यायनुं	पर्यायनुं	३०५	६
तमस्तमःपभा	तमस्तमःप्रभा	३०७	३
मार्गणा गति	मार्गणानी गति	३१४	१५
भयस्थिति होय	भयस्थिति होय	३२१	३०